

गीत-काव्य
में
राष्ट्रीय
भावना

प्रकाशक • सुशील प्रकाशन
पुरानी मण्ठी अजमेर

मूल्य • पन्द्रह रुपये

आवरण • निओ आर्ट मत्रिस
अजमेर

मुद्रक • रावहंस प्रिंटर्स
बाबू माहलना अजमेर

ममतामयी माँ को

● प्राक्चयन

विषय प्रवेश	१
राष्ट्रीय भावना	५
भारत में राष्ट्रीय भावना का उद्भव और विकास	१७
स्वतन्त्रता पूर्व राष्ट्रीय भावना एक सर्वेक्षण	२५
स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और राष्ट्रीय भावना	३१
राष्ट्र-स्वातन्त्र्य सम्बन्धी भावों की अभिव्यक्ति	४०
राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी भावों का अभिव्यक्ति	६०
राष्ट्रीय एकता की अभिव्यक्ति	७६
राष्ट्र सुरक्षा सम्बन्धी भावों की अभिव्यक्ति	१०६
बालक और राष्ट्रीय भावना	१३१
नारी और राष्ट्रीय भावना	१४६
गीत काव्य कला और शिल्प	१७५
उपसंहार	१९६
आधार ग्रन्थों की सूची	२१४

पञ्चाशकीय

•

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय जन मन ने अनेक दिशाओं में प्रगति की है साहित्य भी इससे अछूता नहीं रह सका है। इस अवधि में विभिन्न साहित्यिक विधाओं में अनेक नवीन तिनवीन कवियों का उदय हुआ है। प्रस्तुत ग्रंथ में लेखिका ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी गीत काव्य में प्रवहमान राष्ट्रीय भावना के विभिन्न स्रोतों की अनेक सदाओं में रक्षने की चेष्टा की है। वस्तुतः राष्ट्रीय भावना आज के युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस दृष्टि से विषय विषय का महत्व निर्विवाद है।

पाठकों की सेवा में अपना यह नवीन प्रकाशन प्रस्तुत करते हुए हम अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

स्वाधीनता से पूर्व हिन्दी का कवि जिन परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करता रहा था, उनमें उसकी अनुभूतियों और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति के लिए बसा मुक्त वातावरण उपलब्ध नहीं था जसा एक स्वतन्त्रचेता साहित्यकार के लिए आवश्यक होता है। उन कवियों का बात छोड़िए जो राजाओं व आश्रय में परते थे अथवा जो सांसारिक जीवन से विरक्त होकर अपनी भावनाओं की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति कर सकते थे। परन्तु जो कवि न तो सांसारिक जीवन से पलायन करना चाहते थे और न किसी के आश्रित रहना चाहते थे उनके सामने काव्य रचना की कई समस्याएँ थी। आधुनिक काल के भारत में युगीन और द्विवेदी युगान्तर कवियों ने स्वतन्त्रचेता साहित्यकार का जीवन व्यतीत करना चाहा तो उन्हें एक विपरीत दिशा में काव्य-सृजन के लिए विवश होना पड़ा। इस दिशा से होकर काव्य रचना का जो मार्ग जाना था उसमें कवि का तटस्थ अनुभूतिवर्ती धनपर सृजन करने का अवकाश बहुत कम था। उस समय के लिए भी उद्यत रहना पड़ता था और यही क्या राष्ट्रीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करने पर बाराणसी की हवा भी पानी पड़ती थी। स्वाधीनता के पश्चात् हिन्दी कवि को जीवन की एक मुक्त निशा मिली और वह निष्पक्ष, तटस्थ प्रेक्षक के रूप में जीवन का अभिव्यक्ति करने के लिए स्वतन्त्र हुआ। उस नई परिस्थिति ने उसके काव्य-सृजन में गह्राय भावना के जिस माह पर ला गड़ा किया उसको स्वतन्त्रता से धब धब निम्न गये काव्य के आश्रय में समझ लेना एक महत्वपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत प्रबंध में मैं इस कार्य का अपने हाथ में लिया है और स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतकाव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति का अनुपादन करके उसका महत्वपूर्ण उपलब्धिदायक पदचिह्न भी चिह्नित कर रहा हूँ।

हिन्दी में आधुनिक काव्य का आरंभ १९१८-१९ वर्ष आसपास और शोध के दृष्टि से १९२०-२१ के आसपास ही हुआ। इसी बीच राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति पर कोई मौखिक महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला। इससे मरना यह प्रमाण प्राथमिक प्रमाण तो है ही साथ ही मौखिक भी है।

राष्ट्रीय भावना

विषय का मूल स्वर है राष्ट्रीय भावना। अतः काव्य एवं गीत के सदम में विस्तृत विवेचन न करके मैं इस सदम में इतना ही कहूँगी कि जो गेय है उसे मैंने गीत के अतम माना है। टेक चाहे छोटा न होकर प्रथम दो पंक्तियों की पुरावृत्ति लिए हुए है। उसका पद्य रूप काव्य है ही। राष्ट्रीय चेतना का आग्रह किञ्चित् परिवर्तन के साथ उपेक्षित एवं अपेक्षित होते रहे हैं। युगानुरूप राष्ट्रीय भावना अभिव्यक्त होती रही है। गीता की प्राचीन परम्परा को चतुर्चित्र एवं रङ्गियों से भी समुचित प्रोत्साहन मिला है। सन् १९४७ से पूर्व राष्ट्रीय काव्य चरम उत्कर्ष पर पहुँच चुका था। तदुपरांत वह धारा मद पड़ गई और नये परिधान में अभिव्यक्त हुई। किन्तु चीन की धार से घिर जाये सकट के बान्हो को देगकर गीतकार पुनः ललवार उठा और देश प्रेम का भावना से अनुप्राणित गीता की रचना हुई। अमा युद्ध विराम से मुक्ति की सीमा भी न ले पाये थे कि पाकिस्तानियों का उत्पात काश्मीर में बढ़ गया और १९६५ का भयानक युद्ध भारत पर आक्रमण की योजना बन गई। जुलाई अगस्त में पाक-भक्ति मुजाहिद नाम से काश्मीर में घुमपैठ करने लगे और भारत पर आक्रमण करने वाली सेना का नाम जिब्राल्टर नाम रखा गया था। अगस्त २४ अगस्त १९६५ से अमनी युद्ध प्रारम्भ हुआ और २२ सितम्बर तक अर्थात् ३० दिन रहा। सयुक्त राष्ट्र सच के कहने पर भारत और पाकिस्तान में २३ सितम्बर का मुद्रा माइ तीन बजे में युद्ध विराम स्वीकार किया। तब समा में युद्ध विराम स्वागत करने की घोषणा करने वाले स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा था मैं उस समय और समस्त देश की ओर से अपनी मनामा के प्रति नार्तिक दृष्टिकोण प्रकट करता हूँ। उन्होंने अपने अल्प साहस और वीरता से देश के लोगों में नया विराम भरा है (नेलिए विजय-वाहिनी का सूत्रधार)।

बाबूराम पानावाल ने उन समस्त वारों के प्रति अपनी काव्य-बद्धा जति धर्मात्ता के जिन्होंने पाक-युद्ध के समय वारतापूर्वक मन्थान किया परन्तु वे गाँव न हाकर अन्य अन्य वारों के नाम एवं गुण के आधार पर काव्य रचना है। अतः मेरे इस प्रबंध में उन्हें स्थान नहीं दिया जा सता।

अन्त पुस्तक एम. ए. के लिए जिस गद्य शान निबंध का परिवर्तित रूप है। इस नाम अंतरा जाह है या अन्त पत्रिका का है। यह शान निबंध सन् १९९४ के मध्य भाग में सम्पादन कर दिया था। अतः पाक-युद्ध सम्बन्धी युद्ध का सम्बन्ध इसमें था। यह कि युद्ध का प्रत्यक्ष प्रकाशन अब हो रहा है या युद्ध

आवश्यक गीता का आवलन करके इस विस्तार देना पड़ा। स्वतंत्रता के पश्चात् गीतकारों ने कम सृजन नहीं किया किन्तु पुस्तक रूप में राष्ट्रीय भावना से पूर्ण गीत बहुत कम उपलब्ध हुए। अतः विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री को एकत्र करके ही सन्तुष्ट करना पड़ा। यथासम्भव १९४७ के पश्चात् की सभी यह पत्रिकाएँ मर चुकी हैं अनुसन्धान का विषय नहीं। जिनमें राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीता की उपलब्धि हो सकती थी। तथापि जो उपलब्ध हुई उनसे ही गीत एकत्रित कर सके। विषय अधिक विस्तार या सरिता या किन्तु मरे प्रवृत्ति की सीमाएँ थी जिनका उल्लेख उपसंहार में अंतर्गत किया है। समस्त सामग्री मैंने स्वयं संकलित की है और अपने ढंग से उसका वर्गीकरण विवेचन तथा मूल्यांकन किया है। जिन प्रयोगों और पत्र-पत्रिकाओं में सहायता ली गई है उनका नाम प्रवृत्ति के अन्त में परिशिष्ट में दिया गया है।

मानव घनाति कान से मौल्य एवं आनन्द का उपासक रहा है। स्वभावतः मौल्य आवृष्ट करना है और उसमें आनन्द की प्राप्ति होती है। मनुष्य को इन वृत्तियों का समस्त अस्ति मनुष्य काय करना ही करती है। काय क द्वारा प्रत्येक हानि जाना शास्त्रन सत्य शिव एवं सौम्य जो अनिवार्य नाम आनन्द का अनुभव कराना है—इसी शक्ति का ज्ञान या समाज विनोद की सम्पत्ति महा होती अपितु वह मन्त्रों के लिए समान है एवं सभी वाङ्मय में उद्योग उत्पन्न होता है। मानव जीवन में सभी कारण काय की मन्त्रा अधिष्ठ है। कवि काय क माध्यम से अपने मनाद्वारा को स्वरूप प्रदान करता है पाठक अपने भावा का प्रतिक्रिया उमम देखकर आनन्द का प्राप्ति करता है। हार्मोनम में गुनगुनान गता है। जब तान में मुक्त सरस वाद्य का एक अंग है गान जिमका गुनगुनाहृ हृदय गत का मन्त्र कर देता है। गुनगुनाया भा भाव विभाज्य हा भूमन गता है। नवान चन्ना नव उत्तम से पूछ उगाह में मरा हृदय कुल वग्न का प्रेरित हो उठता है। ऐसी शक्ति है गान वाद्य में।

गीत का अर्थ निरिक्त का हिली रूपान्तर है जिसका मूल अर्थ है वह जाना जा लाकर वाद्य के माध्यम से गाया जा सके। सामान्यतः गानवाद्य करिता के लिए प्रयुक्त वह शक्ति है जो जिसमें गीतवाद्य के साथ गाया जाता है या गाना जा सके। सामान्यतः गीत वाद्य विचारों का अभिव्यक्ति है जो मंत्रिम ज्ञान के माध्यम से जाना जा सके स्वरूप निम्न मानवाद्य रंग में भरपूर होता है। मन्त्र के लक्ष्य-मय में दम हानि के वाङ्मय शक्ति मन्त्र प्रकार गाया जा सकता है। गीत एवं हानि के माध्यम-माध्यम मन्त्रों भावा एवं विचारों का अभिव्यक्ति विद्य रहता है। गीत का गीत विधान मन्त्राभिव्यक्ति मन्त्रों का मुद्रा मुद्रा, मन्त्र मन्त्रों का मन्त्र मन्त्रों का उचित चन्त्र मन्त्रों का भावना में मानवाद्य मन्त्राभिव्यक्ति और मन्त्रों प्राप्ति नवा पर आधारित गता है। मन्त्र मन्त्रों के लिए उद्योग में है मन्त्रों का माध्यम एवं गान उद्योग

वीररस परिपूर्ण आज्ञास्वी भाषा में सृजित गीतअधिक उत्साहवद्धक होते हैं। क्योंकि उनमें भावार्थ अधिक रहता है। शृंगार के दाना पक्षा पर गीत-रचना प्रचुर मात्रा में हुई है तथापि समीप एवं विप्ररस्य गीता की भावना व्यक्तिगत स्तर तक ही अभिव्यक्त होती है। भक्तिपूर्ण हृदय में निहित गीत भी शांत रस से परिपूर्ण, व्यक्तिगत भावना से सृजित होता है। किंतु वाग रस से ज्ञात प्राप्त गीतों का रचना चेतना के स्वर लिए हुए अधिक उदात्त धरातल पर प्रतिष्ठित होती है, जहाँ समष्टि की भावना का प्राधान्य होता है। जन जागरण के लिए वीररस से परिपूर्ण गीतों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के गीता के लिए महत्त्वपूर्ण आवश्यक गुण नहीं। भावना का पूर्णता या अपूर्णता पर ही गीत का विस्तार अवलम्बित है।

गीत-वाच्य का मूलन प्रवृत्ति के मूल मौल्य के प्रथम प्रस्तुतन के साथ हुआ। संसार के प्राचीनतम साहित्य कालों की गीत वाच्य ही मानना चाहिए। सामवेद के विषय में तो कोई संशय ही नहीं है क्योंकि वह सगात प्रधान है। ऋग्वेद भी गीत तथा मुक्तक वाच्य है। महाभारत का गीत-वाच्य मधुर अनुभूति की अभिव्यक्ति की सगात रचना है मधुर जिस गीत गीतों में लिखा गया है। जयश्रवण का गीत-गीत-मूल मूल अधिक लोकप्रिय संस्कृत का गीतवाच्य है। इतने सरस कामल पद एवं मधुर, प्रवाह्यगुणगीत उसी पद्यति पर लिखने का प्रयास यदि किसी का है तो महिल कोविल विद्यापति का। राधाकृष्ण की लीलाया के सरस एवं मनोहारी बिज गीत हैं। लोक भाषा में इस गीत-वाच्य की रचना प्रशमनीय प्रयास है। हिन्दी में राजभाषा गीत-वाच्य की परम्परा में मूल का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। जयदेव एवं विद्यापति के गीतों का धर्म चारों समझ में आए, चारों न आए वे मन की आह्वान पहुँचाने हैं परन्तु मूल तथा अन्य राज भाषा के गीतकारों के गीतों के अधः समझ के बिना उतना जानना नहीं आता जितना जानना चाहिए। गीतवाच्य की इस परम्परा में एक स्वर और बहुत मधुर, कोमल एवं रसीला मितता है वह है 'मर तो मिरधर गोपाल झूमरो न कोई' गा-गाकर नाच उठने वाली मोरों का स्वर। उनके गीतों में पावन तमयना एवं सरसता है। निंदी के यष्टनम् भवि गोस्वामी तुलसीदास ने भी राम कथा का गीतों में गाकर ध्यान रमिक पाठकों का मनोरंजन किया था। उनकी विनयपत्रिका, गीतावली एवं कृष्ण-गीतावली, गीतवाच्य-परम्परा की अद्भुत कृतियाँ हैं। विनय-पत्रिका के सभी गीत गीतरस-परिपूर्ण हैं। उनमें विद्यापति जयदेव मूल आदि गीतकारों के जसा

श्रु गार रस के बहनों का अभाव है। रीतिकान्त में गीतकाव्य की धारा पयास
 मद पड़ गई थी किंतु आधुनिक काल के प्रारम्भ में हिन्दा के युगांतरकारी
 कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सरस गीतों ने फिर उसे तीव्र वेग प्रदान किया।
 मत्स्यनारायण कविरत्न ने भी गीतकाव्य की परम्परा में पर्याप्त योग दिया।
 यजमापा के गीत काव्य की परम्परा का विकास आधुनिक युग में नई मापा के
 नये परिवेश में हुआ। खड़ी बोली में भी सरस गीतों की रचना सम्भव हुई
 तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर आत्मा परमात्मा का मिलन विरह आदि प्रवृत्तियों
 में नवीन विधाओं को जन्म दिया। काव्य के विस्तृत क्षेत्र में नये वाद के
 ज्वर उग आए। पतन छायावादी रहस्यवाद नई भावधारा में गीतों में जन्म
 दिया। खड़ी बोली के गीतों में प्रेम मिलन विरह आशा निराशा प्रकृति
 बलान् राधियता नये जागरण आदि का भावनाएँ पनपन गयीं। छायावाद के
 जनक यशोधर गीतों के गायक जयशंकर प्रसाद जी की रचनाएँ थीं धीरे-धीरे
 भरना आदि। उनके भावों में भी गीतों को पर्याप्त स्थान मिला। इसके
 अतिरिक्त कामायनी महाकाव्य में भी गीत काव्य को स्थान दिया है।
 गुप्तजी जय शक्तिव्रतात्मक गानों के कविता ने भी यथास्थान गीतों की प्रतिष्ठा
 की है। पतजा निगनात्रा मन्नादेव बसो बरन नरन प्रेमी आदि प्रेय
 गायक के मधुर स्वरा में खड़ी बोली का गानकाव्य गौरवशाली एवं समृद्ध
 बना। ऐसा है। राष्ट्रीय भावनाओं में भरपूर काव्य की रचना करने वाला
 बालकृष्ण 'ममा नयन' गुप्तकुमारी चोहान माधनलाल चतुर्वेदी माधनलाल
 त्रिपाठी एवं रामधारीशंकर त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। राष्ट्रीय भावना
 पर आधारित उनके गान अत्यन्त प्रभावशाली तथा गयना के गुण से परिपूर्ण
 हैं। नयनलाल का कवि कुल्लू लाल मुनाषा गुप्तकुमारी चोहान का
 'मामा की रानी माधनलाल चतुर्वेदी का काकिल त्रिपाठी जी का बरना
 एवं त्रिपाठी का त्रिपाठी आदि गान एवं गीतों में पर्याप्त व्यापारिता के बरतन
 हैं। 'गतिशाली कविता ने मा श्रमिका का परिस्थितियाँ का चित्रण अत्यन्त
 सार लक्ष्यों में किया है। आत्मिका का गान उन गीतों में सर्वाधिक मात्रा में
 मगर मिलता है। निम्न 'गतिशाली' तक आन-आन गीतों का गान-काव्य पर
 भारी विकास का चरम माना जा सकता है। प्रयोगवादी में भी ही
 उनके गीत स्थान न हों परन्तु राष्ट्रवादी में खूब। उसका साथ नया छाया है।
 हम प्रेम में एक आर प्रहरी 'गतिशाली' कवि का सामर्थ्य के माधव स्वर-महरी
 सुनसुनाने दान है वही दूसरे और राष्ट्रवादी का भी गान के स्वर में राष्ट्र

विषय-प्रवेश

प्रेम की अभिव्यक्ति करते देखते हैं—

जय भारत है !^१

जाग्रत भारत है !

स्वर्ग गड पडःशु परिश्रमित

आम्र मजरित मधुप गुजरित

वृसुमित फलद्रुम पिच कन कूजित

उवर अभिमत ह ।

१ पु० चिन्मया ले० मुमित्रानन्त पत्र प्रका० राजकमल प्रकाशन दिल्ली
पृ० स० ८२ प्र० संस्करण १९५९

जीवन में भावना का स्थान

शशव मे वृद्धावस्था तक हमारी प्रत्येक क्रिया के मून मे कोई न कोई भावना काय करता है। जगत में हम जो कुछ अनुभव करते हैं दुःखात्मक अथवा सुखात्मक वह सब भावना का ही फल होता है। भावना की भूमि मे ही उन भावों का विकास होता है, जिनकी प्रेरणा से हम बड़े से बड़े और अच्छे मे अच्छे काय करने मे समय होते हैं। भावना के समाव मे जीवन मे कोई भी काय सम्भव नहीं। जय भावना ही नहीं होगी तब व्यक्ति करेगा ही क्या? प्रत्येक क्षण मे व्यक्ति कुछ न कुछ अनुभव करता है और वह अनुभूति उसका हृदय मे किसी भाव का आविर्भाव करता है। भावना अपने सवेदनारम्भ रूप मे अनुभूति करता है और उसका गत्यात्मक रूप शरीर को सामान्य तत्परता प्रदान करता है। जिना गति के जीवन का महत्त्व हां क्या रह जाता है? गति के लिए भावना का हाना अत्यन्त आवश्यक है। भावना ही विचार का रूप धारण करता है। अतः भावना का जीवन मे सर्वोपरि स्थान है।

भावना के भेद

जीवन में मानव दो प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है—सुखात्मक एवं दुःखात्मक। अतः उसकी भावना भी दो प्रकार की होती है।

१ सुख की भावना

२ दुःख की भावना

जो भावनाएं प्रतिकूल होती हैं उनसे दुःख का अनुभव होता है किन्तु जो भावनाएं अनुकूल होती हैं उनसे सुख का अनुभव होता है। इन दोनों प्रकार का भावनाओं का अध्ययन जब विस्तृत रूप मे किया जाय तो ज्ञात होगा कि उनको भी हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। वह भावना जिससे व्यक्तिगत सुख या दुःख का अनुभव होता है, व्यक्तिपरक भावना होता है।

जब सुख एवं दुःख की अनुभूति व्यक्तिगत न रहकर सामाजिक बन जाती है तब उस व्यापक अनुभूति में समष्टिपरक भावना होती है ।

व्यक्तिपरक भावनाएँ व्यक्ति में अनुभवों के अनुसार अनेक प्रकार की होती हैं । प्रत्येक भावना का संबंध एक क्रियात्मक प्रवृत्ति से होता ही है । यथा क्रोध की भावना होने पर लड़ाई लड़ने की प्रवृत्ति होती है इसी प्रकार और भी भावनाएँ हैं — मय की भावना घृणा की भावना आनन्द की भावना दुःख की भावना ईर्ष्या की भावना एक सौंदर्य की भावना आदि । किन्तु यह भावनाएँ अस्थिर होती हैं तभी हम क्रोध मय भयवा दुःख आदि से शीघ्र मुक्त हो सुख का अनुभव करते हैं । यदि दुःख मय भयवा क्रोध की भावना बहुत गिन तक रहे तो व्यक्ति पागल हो जायेगा । भावना से ही हम प्रेरणा मिलती है परिस्थिति के अनुसार प्रत्येक भावना का विशिष्ट महत्व है । पर प्रेम का भावना के आधिक्य से मानव जीवन सदा सुखी रह सकता है । यह कहना कठिन है कि सबसे महत्वपूर्ण भावना कौन सी है । वास्तव में जीवन की सफलता के लिए विभिन्न भावनाओं में सामंजस्य की आवश्यकता है । परिस्थिति के ज्ञान और उससे उत्पन्न क्रिया के मध्य में भावना आती है । व्यक्ति और समाज के विकास में भावना का बड़ा भारी हाथ रहता है क्योंकि हमारी बहुत सी क्रियाएँ भावना से ही उत्पन्न होती हैं । हम जितना वस्तुओं में ध्यान करते हैं उन सबका हमारी आत्मा में संबंध होता है । उनसे उत्पन्न भावनाएँ व्यक्तिपरक भावनाएँ हैं ।

राष्ट्रीय भावना का महत्व

समष्टिपरक भावनाओं में हम जिन भावनाओं को सम्मिलित कर सकते हैं, उनमें कतिपय प्रमुख भावनाएँ इस प्रकार हैं —

- १ पारिवारिक भावना
- २ क्रांति की भावना
- ३ धार्मिक भावना
- ४ सांस्कृतिक भावना
- ५ राष्ट्रीय भावना
- ६ अन्तर्राष्ट्रीय भावना इत्यादि ।

इस प्रकार की भावनाओं में राष्ट्रीय भावना का अत्यधिक महत्व है। पारिवारिक भावना परिवार की एकता और अखंडता का विश्वास उपजाती है। परिवार राष्ट्र से बाहर नहीं है। क्रांति की भावना भी राष्ट्र को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए ही उत्पन्न होता है। अतः वह भी प्रत्यक्षतः राष्ट्रीय भावना का ही पोषण करती है। धार्मिक भावना मानव को जीवन की एक दृष्टि देती है जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र सुखी बनता है तथा मानवता का प्रसार होता है। ये सब बातें राष्ट्रीय भावना में ही किसी न किसी रूप में समा जाती हैं। धार्मिक भावना का सर्वथा रुढ़ि धर्म के पोषण से नहीं है। वास्तव में यह भावना मनुष्य को ईश्वर और जीव के प्रति आस्थावान बनाती है। राष्ट्रीय भावना के बिना धार्मिक भावना का विकास उसी प्रकार संभव नहीं जिस प्रकार पारिवारिक भावना आदि का अस्तित्व राष्ट्रीय भावना के बिना नहीं रह सकता। राष्ट्रीय भावना राष्ट्र के निवासियों में परस्पर प्रेम, एकता, अखंडता, सहानुभूति, सहकारिता आदि के भाव जगाती है तथा साथ साथ जीने मरने और जीवन-संघर्ष की प्रेरणा देती है। 'यक्ति' के सुख-दुःख का विधान इसी भावना के अनुसार होता है। शासन की सत्ता का गौरव भी यही भावना सुरक्षित रखती है। अतः राष्ट्रीय भावना मानव-हृदय की एक सर्वोच्च भाव-भक्ति है।

राष्ट्रीय भावना की परिभाषा

राष्ट्रीय भावना राष्ट्र राज्य का विशेषण रूप है। राष्ट्र का शासन काय के अनुसार अर्थ है—वह लोग समुदाय जो एक ही देश में बसता हो या एक ही राज्य या शासन में रहता हुआ एकता-पट्ट हो। (नासना नीय पृष्ठ ११२) अंग्रेजी में राष्ट्र राज्य का पर्यायवाची शब्द है। 'नेशन (Nation)' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द नेशियो (Natio) से हुई है, जिसका अर्थ है 'पन होना'। यह इसे नैतिक अर्थवादी (Ethical) अर्थ प्रदान करता है। फलतः व्युत्पत्ति की दृष्टि से एक राष्ट्र में प्रतिभाष्य वह लोग हैं जिसका विकास एक नस्ल से हो। इस अर्थ में प्रयोग किये जाने पर राष्ट्र का अर्थ होता है एक लोग जो एक-सदस्यो द्वारा एक राजनीतिक समाज में परस्पर सम्बद्ध हो।^१

१ पु० राजनीति विज्ञान के सिद्धांत में डॉ० अनूपचन्द्र बख्श पृ० ५२ सं० १९५८

विदेशी विद्वान बर्गस (Burgess) ने लिखा है— भौगोलिक एकता वाले एक प्रदेश में उसी हुई नृ-वर्गीय एकता (Ethnic Unity) वाली जन सख्या राष्ट्र है ^{१२} किंतु वंश और राष्ट्र दो भिन्न अर्थ वाले शब्द हैं। वस्तुतः तो बंधन योग्य की एक राष्ट्र बनाने के लिए जोड़ते हैं व मनावनामिक तथा प्राध्यात्मिक हैं। विदेशी शत्रुता के विरुद्ध सामाज्य सघन और मिनकर

रहने की इच्छा तथा समस्त समाज की समृद्धि के लिए उनका सामाज्य प्रयास-य विचार लोगों को देश भक्ति की भावनाओं वाला समुदाय बनाते हैं। यही राष्ट्र शब्द का अर्थ है। ^३ राष्ट्रियता के अर्थ में राष्ट्र शब्द का प्रयोग भी कई विद्वान करते हैं। किंतु राष्ट्र और राष्ट्रियता में अन्तर है। नेशन (राष्ट्र) और नेशनलिटी (राष्ट्रियता) दोनों की 'युत्पत्ति' नेदरस ^४ हुई है। राष्ट्र का अर्थ है राजनीतिक एकता अर्थात् ऐसे लोगों का समुदाय जिनका निजि राजनीतिक अस्तित्व हो। राष्ट्रियता का राजनीतिक एकता से कोई संबंध नहीं है। ^५ मिन वाइस आदि ने कतिपय बंधना द्वारा संगठित जनसख्या को एक राष्ट्रियता माना है। राष्ट्रियता स्वतंत्रता की इच्छा से राजनीतिक समूह का संगठन है। परंतु हेज ने राष्ट्र और राष्ट्रियता के बीच राजनीतिक संगठन का अंतर नहीं माना है। कोई राष्ट्रियता एकता और राजसत्तापूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने पर एक राष्ट्र बन जाता है। जहां एक राष्ट्र भिन्न सामाजिक वंश समूहों का बना हो उनमें से प्रत्येक समूह को राष्ट्रियता कहा जा सकता है। ^६

श्री वासुदेव शरण अग्रवाल ने राष्ट्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया— राष्ट्र का सम्मिलित अर्थ पृथिवी उस पर रहने वाली जनता और उस जनता की सत्कृति है। ^७ डा० सुधीन्द्र ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी कविता में युगान्तर' में लिखा है कि भूमि भूमिवासी जन और जन सत्कृति तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। भूमि अर्थात् भौगोलिक एकता जन अर्थात् जनसंख्या की राजनैतिक एकता और जन सत्कृति अर्थात् सांस्कृतिक 'एकता' तीनों के समुच्चय का नाम राष्ट्र है। ^८

२ पु०, राजनीति विधान के सिद्धान्त से डा० अनुपचंदकपूर पृ ५२ स १९५८

३ वही पृ० स ५३

४ वही पृ० स० ५५

५ वही पृ० स० ५६

६ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ० ६

७ पु० हिन्दी कविता में युगान्तर से० डा सुधीन्द्र पृ० स० ४३

वाजपेयीजी के मतानुसार राष्ट्रीय धारणा स्थूल और सकीण नहीं है, वह सूक्ष्म और यापक है। राष्ट्रियता से उनका आशय राजनीति से कमी नहीं रहा। राजनीति से सीधा और तात्कालिक प्रेरणा ग्रहण करने से काव्यात्मक व्यापकता में बाधा पहुँचती है। 'सोहनलाल द्विवेदी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा है— यहाँ राष्ट्रियता से मरा आशय किसी राजनातिक मत या सिद्धांत विशेष से नहीं है। यहाँ राष्ट्रियता से मरा मतलब स्वदेश प्रेम की 'यापक भावना' से है।^९ राष्ट्रियता की भावना को व मानवता की उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित करते हैं जहाँ मर्यादा और सामयिकता आदि के घघन भस्मसात् हो जाते हैं और एक उच्चतर अनुभूति बाध रह जाती है।^{१०}

डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी भी राष्ट्रियता के उन तत्त्वों की प्रशंसा करते हैं जिनसे मानवतावाद का समर्थन होता है। उनके अनुसार प्रजातन्त्र की भावनाओं का विकास के साथ ही राष्ट्रियता की नवीन विचारधारा का जन्म हुआ है।^{११} राष्ट्रियता का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का अंग है और उस राष्ट्र की सेवा के लिए इसको धन धान्य से समृद्ध बनाने के लिए इसने प्रत्येक नागरिक को मुखी और सम्पन्न बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सब प्रकार के स्वाग और बख्श स्वीकार करना चाहिए।^{१२} तथा यह राष्ट्रियता मनुष्य के उच्चतर उद्देश्यों के अनुकूल है मानवतावाद की समर्थक है।

द्विवेदीजी ने मानवता अविरোধी राष्ट्रियता का समर्थन किया है परन्तु जहाँ राष्ट्रियता और मानवता में विरोध है वहाँ वे मानवतावाद का ही समर्थन करते हैं। उनका मत है कि राष्ट्रियता एक विशेष सीमा का व्यक्तित्व बनने के उपरांत अत्यन्त कुत्सित रूप धारण कर लेती है। यह अपने देश का धन धान्य से समृद्ध बनाने के लिए दूसरे देशों का लोभण करने लगती है अपने देश के प्रासाद मवारने के लिए दूसरे देश की भौंपडियाँ जलने लगती हैं।^{१३} सभी ही हमारे देश के विद्वानों ने राष्ट्रीय भावना को मानवतावाद से जोड़ कर देखा है।

१० पु० हिन्दी की सैद्धांतिक समीक्षा, से० डा० रामाधर तमा भूमिका से उद्धृत नन्नुसारे वाजपेयीजी का कथन

६ वही भूमिका से उद्धृत, वाजपेयीजी का कथन

१० वही

११ वही भूमिका

१२ वही भूमिका

१३ वही भूमिका

राष्ट्रीय भावना के मूल तत्त्व

राष्ट्रियता के मूल तत्वों में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं—

१. नस्ल की एकता (Unity of Race) — वंशगत एकता राष्ट्रियता का प्रबलतम बंधन है। वंश का संबंध रक्त के संबंध से है। परन्तु आधुनिक काल में दश-परिवर्तन (Tigration) और समागम की अवस्थाओं से परिचित होने पर रक्त की शुद्धता का दावा कुछ वास्तविक जमा नगता है। किसी भी एक संयुक्त राष्ट्र की जनसंख्या कई नस्लों अथवा मिश्रित रक्त की बनी हो सकती है। विदेशी विज्ञान काल्वा (Calvo) अपनी अंतर्राष्ट्रिय विधान (Inter National Law) नामक पुस्तक में इस बात पर जोर देती हैं कि राष्ट्र का विचार मूल या जन्म वंश के समुदाय भाषा के समुदाय आदि के साथ जुड़ा हुआ है। '४ किंतु किसी भी एक राष्ट्र के जनसमूह में एक ही वंश भाषा या धर्म की समानता होना असंभव है क्योंकि यह घटना अथवा विचारों की समानता का नाव है। अतः वंशगत एकता को राष्ट्रियता का प्रबलतम बंधन मानना उचित नहीं।

२. भाषा सभ्यता और परम्पराओं की एकता (Unity of Language Culture & Traditions)

विदेशी विज्ञान म्योर (Muir) कहते हैं—'५ विभिन्न जातियों और नस्लों को प्रेम मूल में बांधने वाली शक्ति केवल भाषा है। बोहेम (Bohem) कहते हैं— हमारा मातृभाषा ने हमारी भाषा को वह शक्ति प्रदान की है कि हमारे समाज का नैतिक और भौतिक अस्तित्व भाषा के बल पर ही टिका हुआ है। '१६ जर्नेस्ट बाकर मानते हैं कि राष्ट्र और भाषा को अलग अलग समझा जा नहीं जा सकता। '१७ तथा राष्ट्रीय एकता के निर्माण में भाषा और साहित्य का भी महत्वपूर्ण योग्य रहता है। भाषा धर्मों से ऊपर है। एक युग विशेष की जो भाषा या उस समय के धर्म कलम्बिया ने अपनाया। राष्ट्र भाषा के पद पर बड़ी भाषा आसीन हो सकती है जिसको बहु

१४ पु. राजनीतिक विज्ञान के सिद्धांत, वे० डा. अनुपम चन्द्रपूर पृ. ५७

१५ वही पृ. ५८

१६ वही पृ. ५८

१७ वही पृ. ५८

सह्यक समझते हों।^{१८} यहाँ बहुसंख्यक से तात्पर्य उस जनता से है अथवा उन राष्ट्र-वासियों से है, जो जातिगत भेदभाव लिये हुए भी एक ही मापा को प्रयोग में लाते हों। विभिन्न जाति के लोगों द्वारा एक ही मापा को व्यवहार में लाना राष्ट्रीय भावना को हृत्ता प्रदान करना है। मापा ही तो समस्त धर्मों का आधार रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साहित्य अकादमी संगीत नाटक अकादमी आदि अनेक सरकारी और अग्र सरकारी संस्थाओं की स्थापना हुई और देश के विविध अंचलों की साहित्यिक-सांस्कृतिक परम्पराएँ सामूहिक रूप में प्रकाश में आई। ऐसी संस्थाएँ राष्ट्रीय भावना को अधिक व्यापक बनाती हैं। विभिन्न संस्कृतियों की एकता भी राष्ट्रीय भावना की मढ़ता को प्रदर्शित करती है।

३ धार्मिक एकरता (Unity of Religion)

बर्गस (Burgess) ने समान धर्म की राष्ट्रीयता का पोषक तत्त्व मानते हुए कहा है कि अथ धार्मिक स्वतंत्रता ही ज्ञान पर धर्म इस युग में राष्ट्रीयता का पोषक नहीं रह गया है।^{१९} विभिन्न जाति के लोगों के समुदाय एक विभिन्न धर्मों आपस में मतभेद करते हुए राष्ट्रीय भावना को आघात पहुँचाते थे। किंतु अथ ऐसे मतभेदों की घट्टरता दूर हो गई है। प्रशांतकुमार जायसवाल ने अपने सत्य भावनारमक एकता एक मुझाव में बतलाया है कि राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है कि जातीय और धार्मिक आधारों पर निर्मित संप्रदायों को धनपने ही न दिया जाय। भारतीय कहने से न हमारा कोई भिन्न धर्म रह जाता है और न भिन्न जाति। मानवता हमारा धर्म हो जाता है और ज्ञान भारतीय।^{२०}

४ भौगोलिक एकता (Geographic Unity)

रैम्से म्योर (Ramsay Muir) ने भौगोलिक एकता का राष्ट्रीयता का कारण माना है।^{२१} डॉ० रामसुमर्गसिंह ने भारत की राष्ट्रीय एकता नामक सत्य में अपने विचारों का प्रतिपादन इस प्रकार किया है— किसी भी राष्ट्र की एकता के कुछ लक्षण होने हैं जिनके आधार पर एक राष्ट्र को

१८ पत्रिका जीवन-साहित्य सत्य भावनात्मक एकता एक मुझाव लेखक प्रशांत कुमार जायसवाल पृष्ठ १०१ १०२

१९ पु० राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त स० १० अनूपचन्द्र कपूर पृष्ठ ५६

२० पत्रिका जीवन-साहित्य सत्य भावनात्मक एकता एक मुझाव १० प्रशांत कुमार जायसवाल पृष्ठ स० १०२

२१ पु० राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त स० डॉ० अनूपचन्द्र कपूर पृष्ठ ६०

राष्ट्र माना जाता है। पहना लक्षण भूगोल इतिहास और प्राकृतिक स्वरूप। सबही है। उत्तर में पूर्व से लेकर पश्चिम तक हिमालय की गगनचुम्बी प्राचीर पूर्व-पश्चिम और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी हिन्द महासागर तथा अरब सागर। यह भौगोलिक विभाजन कितना प्राकृतिक और सहज है। २२ उत्तर और पूर्व में सदियों तक मुगलशासन का सत्तनतें रहा और पश्चिम में चोल पल्लव पांड्य राष्ट्रकूट आदि वंशों का राष्ट्र बना रहा। किन्तु देश की मौलिक एकता की भावना पर इन ठोस किन्तु पारिवर्तित तथ्यों द्वारा कमी ठेस नहीं पहुँची। २३ भारत की अखंडता युगो पुरानी है २४ क्योंकि भौगोलिक विभाजन प्राकृतिक है और राष्ट्रियता के मूल तत्वों में से यह भी एक आवश्यक तत्व है।

५ राजनीतिक प्रेरणाओं की एकता (Unity of Political Aspirations)

गिलक्रिस्ट कहते हैं राष्ट्रियता के लिए राजनीतिक एकता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और यह इनकी महत्वपूर्ण है कि विभिन्न जातियों में से प्रायः केवल इसी को ही अत्यावश्यक कहा जा सकता है। २५ राजनीतिक प्रेरणाएँ भिन्न २ रूपों में चली निकली हैं। राजनीति के क्षेत्र में सभी के अपने-अपने मत रहे हैं और उनकी प्रेरणाओं से चल भी बनते रहे हैं तथा जातियाँ हुई हैं। कभी किसी दल के समर्थक किसी एक विद्वान की प्रेरणा से प्रेरित हो अधिनियम बनाने की कोशिश करते हैं तो कभी किसी अन्य दल की शक्ति अधिक हो जाती है। अधिकांश राष्ट्रियताएँ स्वाधीनता की इच्छा से अपना निजी राज्य चाहती हैं क्योंकि विदेशी या कोई भी अन्य शासन प्रजा के कल्याण की अपेक्षा अपने ही राष्ट्र के हितों को ध्यान में रखता हुआ राज्य करता है। विदेशी सरकार का नियंत्रण तो एकता की विधि को और भी तात्कालिक बनाता है और अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए प्रजा संगठित हो जाती है तथा राष्ट्रियता की

२२ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ स. ३० डा० रामसुभग सिंह पृ. २३

२३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ ले डा० रामसुभगसिंह पृ. २३

२४ पु. राष्ट्रभाषा रजन जयती श्रवण उत्कल प्राचीन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का. ० राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार पृ. ० स. १४

२५ Gilchrist of ctd P 31

राष्ट्रीय भावना

भावना का विकास होता है। एक ही सरकार की अधीनता में रहकर भिन्न भिन्न भावनाओं व दृष्टिकोणों वाले लोगों में भी एकत्व की राष्ट्रीय भावना की प्रवृत्ति विकसित हो ही जाती है। स्वतंत्र राष्ट्र की कामना के साथ राष्ट्रियता का भी पोषण होता है। समान राजनीतिक प्रेरणाएँ भिन्न भिन्न रूपों की जनसंख्या को एकता के बंधन में बाँध देती हैं और सब भिन्न भिन्न राष्ट्रियताएँ एक ही राष्ट्रियता के सूत्र में परिवर्तित हो जाती हैं।

६ समान हित (Common Interest)

समान आर्थिक एवं रक्षात्मक स्वायत्त एकता के बंधनों की अधिक शक्तिशाली बनाते हैं। राष्ट्रीय भावना का उदय होने पर राष्ट्र के हितों को ध्यान में रखते हुए समानता का भी एक आवश्यक अंग रहता है। राष्ट्र में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सभी के हितों का ध्यान में रखा जाता है। समान हित के लिए आवश्यक है, सबको अर्थ का प्राप्ति हो, अर्थभाव न हो, रक्षा का नियम भी एकसा हो, किसी एक कार्य के स्वायत्त को ध्यान में रखते हुए रक्षा का नियम नहीं बन सकता। आर्थिक हित राष्ट्रीय एकता का सर्वाधिक पोषक तत्त्व है।

राष्ट्रीय भावना की सीमा

‘राष्ट्रियता कोई शाश्वत भावना नहीं है। यह एक परिवर्तनशील दृष्टिकोण है जो समाज के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूप ग्रहण करता है।’ यह मन राष्ट्रीय भावना की सीमा निर्धारित करते समय हमें माया के निर्माण के तत्त्वों पर विचार करेंगे—

अ देश और उसकी परिस्थितियाँ

स्वतंत्रता से पूर्व राष्ट्रीय भावना का जो स्वरूप था उसमें जो तत्त्व निहित थे वे स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नहीं रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राष्ट्रीय भावना में जो तत्त्व मुख्य थे उन पर विभिन्न मत हैं। किसी विद्वान ने किसी प्रमुख तत्त्व को आधार मानकर लोगों को प्रेरणा देने के लिए आन्दोलन चलाया और राष्ट्रीय भावना का प्रसार किया। किसी विद्वान ने अपने नवीन विचारों का संवर उन्हीं को राष्ट्रीय भावना का पोषक तत्त्व मानते हुए आन्दोलन चलाया। भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व राष्ट्रीय भावना का दूसरा ही रूप था, क्योंकि हिन्दु-मुस्लिम मतभेद था, किन्तु उसके मूल में

प्रारम्भ से अब तक यही भाव मुख्यतः विद्यमान रहा है कि, राष्ट्र स्वाधीन हो दूसरों का अधिकार न हो। देशवासी स्व शासन का अधिकार चाहते रहे हैं। इसी कारण हिंदुओं का मुसलमानों के प्रति विरोध रहा और मतभेद चलते रहे। वास्तव में मुसलमानों के प्रति विरोध के भाव में हिंदुओं की राष्ट्रीय भावना की तीव्रता ही थी। चाहे कोई भी जाति हो अपने देश को स्वाधीन देखना चाहती है। विदेशी शासक की नीति के प्रति उसका विरोध होता है, क्योंकि वह समान अधिकार नहीं देता है। जातीयता एवं असमानता आदि सब विरोधी तत्वों के प्रति जो चेतन प्रतिक्रिया होती है वह राष्ट्रीय भावना की ही द्योतक है। देश और उसकी परिस्थितियों के अनुसार ही राष्ट्रीय भावना का रूप परिवर्तित होता रहता है। यदि स्वतंत्रता से पूर्व हमारी राष्ट्रियता के घोषण से मुक्ति की प्रयासों थी तो इस समय वह स्वतंत्रता का रक्षण एवं पोषण में सलग्न है। मुसलमानों के अत्याचारों के प्रति विद्रोह या तो उनमें स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रयासों थी। जब उनसे मुक्ति मिली तो जपान के पर्जों में जकड़ी जनता उनकी गुनामी से छुटकारा पाने का प्रयास करने लगी। यांगी भरविन्द न कहा है कि भारत माता जमीन का केवल एक टुकड़ा मात्र नहीं है वह शक्ति है ईश्वरत्व है। देश प्रेम की भावना के भूल में यही भाव है। अतीत का गौरव अतमान का दुःख-दद भविष्य की कामनाएं उसका तना और डालियाँ हैं। आत्म-बलिदान और त्याग का भावना क्षमा की शक्ति और दश के लिए सहनशीलता तथा उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना मानो इस राष्ट्रीय भावना के फल हैं। २० गांधीजी ने राजनीति और धर्म को एक साथ मिला दिया। गांधीजी की राष्ट्रियता ने एक नया रूप लिया जिसके अनुसार स्वतंत्रता का लिए काम करने के साथ सामाजिक नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्निर्माण की आवश्यकता थी। २२

मुसलमानों का पश्चात अश्रेष्ठों का आगमन हिंदु-मुस्लिम भेद भाव को धुनकर अश्रेष्ठ शासन के प्रति विरोध की भावना को प्रगट करने लगा। २१

२७ सामाहिक हिंदुस्तान १८ अगस्त १९६३ ल० क० हैयालान माणिकनाल मुशी पृ ५ उस भारतीय राष्ट्रियता का स्वरूप और उसकी विशेषताएं

२८ वही पृ ५

२९ पु० नया दिल्ली काय ल० डा० शिवकुमार मिश्र पृ० २१ ४३

३० वही पृ० ४४

“आधुनिक अर्थों में राष्ट्रियता की भावना का विकास अंग्रेजों के शासन आगमन और उनके द्वारा देश का वन्द्य सत्ता के अनशन पूरुत अधिष्ठित किये जाने के पश्चात् प्रारम्भ होना है। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार तथा देश के विभिन्न भाषा के निवासियों के पारस्परिक सम्मेलन ने राष्ट्र सम्बन्धी एक व्यापक दृष्टिकोण का जन्म दिया फलतः राष्ट्रियता की भावना को भी नये आयाम मिले। विदेशी शापण से विद्वन् जनता की परतंत्रता की अनुभूति भी राष्ट्रियता की भावना के विकासशील होने ही उस अधिक प्राप्त देन लगी।” १० अतः देश की परिस्थितियों पर राष्ट्रियता की भावना का विकास निर्भर करता है।

जा जाति और धर्म

श्री बन्धुनाथन माणिकलाल मुन्शी ने अपने लेख भारतीय राष्ट्रियता की स्वरूप और उसकी गिणतता में लिखा है कि पारश्चात्य देशों की तरह दशमन्ति बन्धन राजनीतिक प्ररणाभाज न होकर भारतीय मस्तिष्क में यह भावना गहरी धार्मिक प्ररणा है। ११ एक ही देश में अनेक धर्म होने हैं। आवश्यक नहीं कि एक राष्ट्र में एक ही धर्म के समर्थक हों। विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों का जन्म यन्ति अपने ही धर्म की उत्पत्ति करत हुए अथ धर्म के मानने वालों का उपहास करते हैं और उनकी लक्ष्मि में बाधा पहुँचाते हैं ता निश्चय ही एक धार्मिक सम्प्रदाय दूसरे धर्मवाले सम्प्रदाय से द्वेष भावना रखेगा। वही द्वेष भावना राष्ट्र की उत्पत्ति में बाधक सिद्ध होती है। जसा कि हम इतिहास की आर दृष्टि टालने पर देखते हैं कि भक्ति-आन्दोलन इन्हीं धार्मिक-सम्प्रदायों की द्वेष भावना की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था। यदि धार्मिक-सम्प्रदायों में मतभेद न होता तो एकता के लिए भक्ति-आन्दोलन ही क्यों हुआ होता ?

इसी प्रकार जाति की लहर भी राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ। प्रघात कुमार जयमवाल ने अपने लेख “भावनात्मक एकता एवं मुन्नाब” में जो गुभाव प्रस्तुत किये हैं उनमें राष्ट्रीय भावना का अतःपत एक अथ नवीन तत्व का होना आवश्यक बतलाया है। यह तत्व है भावनात्मक एकता का प्रयत्न। उन्होंने बतलाया है कि जातीय और धार्मिक आधारों पर निर्मित सम्प्रदायों को फनफने ही न दिया जाय। हमारे देश में जातीय विभाजन है,

१० नया हिन्दी वाक्य, डॉ० निवकुमार मिश्र पृष्ठ ४४

११ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृष्ठ ५

जबकि धर्म विभाजन होना चाहिए । अतएव जातीयता के स्थान पर भारतीयता के प्रचार की आवश्यकता है । भारतीयता का प्रचार होना ही न कोई हिन्दू हागा, न मुसलमान और न ईसाई आदि । सब भारतीय होंगे । फिर भारतीयता ॥ मित्र स्वायत्त कस ? जबकि सभी राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता के लिए प्रयत्नशील हैं । ३२

अतः सारांश रूप में हम यह कह सकते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात् हमारी राष्ट्रियता ने एक नया रूप ग्रहण किया है । हमारी राष्ट्रीय भावना की सीमा भी उसी के अनुसार बढ़ती है । अब हमारी राष्ट्रीय भावना की सीमा मध्यकालीन राष्ट्रीय भावना की उस सीमा में भिन्न हो गई है जिस सीमा में हिन्दू और मुसलमान परस्पर दूरा राष्ट्र मान जाते थे तथा इस्लाम शासन के विरोध में शिवाजा को उत्तम जिन करने का भूषण की राष्ट्रीय कवि कहा जाता था । अब हमारी राष्ट्रीय भावना की वह सीमा भी नहीं रही जब अंग्रेजी शासन को कोसना और उसके लिए प्रलय को आमंत्रित करना ही राष्ट्रीय भावना की पहचान थी । आज तो हमारी राष्ट्रीय भावना धर्म निरपेक्ष स्वतंत्र भारत के गौरव, समृद्धि, एकता, अखण्डता और सुरक्षा के मापक भावों को लेकर चलती है । उसी नवान परिधि में स्वातन्त्र्यान्तर भीतकाल में राष्ट्रीय भावना का अनुशासन प्रस्तुत प्रबन्ध का नम्य है ।

राष्ट्रियता कोई शाश्वत भावना नहीं है। यह एक परिवर्तनशील दृष्टिकोण है जो समाज व विकास का विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न रूप ग्रहण करता है।^१ भारत में राष्ट्रियता की भावना अत्यन्त प्राचीन काल से ही विद्यमान थी और किसी न किसी रूप में वह तब सदैव तक चली आ रही है। समय जब करवटें नवा है तब सभी कुछ परिवर्तित हो जाता है, फिर विचारों एवं भावों में परिवर्तन आना तो स्वाभाविक ही है। प्राचीन काल में भारत में राष्ट्रियता का एक मिश्र दृष्टिकोण था। वह दृष्टिकोण चक्रवर्ती राजा के साथ जुड़ा था। जवाहरलाल नेहरू ने 'विश्व इतिहास की भूलक' नामक पुस्तक में लिखा है कि भारत में भी बहुत पुराने जमाने से ही सारे समार के 'चक्रवर्ती' राजाओं का जिक्र मिलता है। ++ भारत पर दृष्टिकोण करने वाला सारी दुनिया का सरसाज है। बाहर के दूसरे लोगों को वे मलेच्छ कहते थे। ++ पौराणिक राजा भरत जिसके नाम पर हमारा देश भारतवर्ष कहना है ऐसा ही एक चक्रवर्ती राजा माना गया है। अश्वमेध यज्ञ ससार के प्रभुत्व के लिए ललकार थी और उसका एक चिह्न था। अथर्व वेद भी शायद शुरू में चक्रवर्ती राजा बनना चाहता था। भारत में गुप्तवंश के राजाओं की तरह कई ऐसे साम्राज्यवादी राजा मिलेंगे, जिनकी इच्छा चक्रवर्ती बनने की थी।^२ जो मिश्र दृष्टिकोण को ध्यान में रखा जाय तो पता चलेगा कि भारत में राष्ट्रीय भावना का उद्भव ऐतिहासिक युग से ही हो जाता है जब कि देश की पृथ्वी को धर्म के रूप में माना जाता था और उसके देवत्व रूप की उपासना की जाती थी। अथर्ववेद की ४४ वा ऋचा में पृथ्वी को देवी शक्ति से सम्बोधित किया गया है —

देवी वधातु सुमनस्यमाना”

१ पु. छायावाद युग में धर्म नाथमिह पृ. ४७

२ विश्व इतिहास की भूलक से जवाहरलाल नेहरू अनुवाद चन्द्रगुप्त वाष्णव पृ. सं. ८५

श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुन्शी ने अपने लेख 'भारतीय राष्ट्रियता का स्वरूप और उसकी विशेषताएँ' नामक लेख में लिखा है कि 'यह प्रत्येक हिंदू का आवश्यक धर्म हो गया था कि वह जीवन में अधिक से अधिक ताम्र स्थानों का यात्रा कर और ऐसा कर आत्मिक तथा धार्मिक प्रेरणा प्राप्त कर।

मागधत के ५ वें स्वर्ग के इक्कीसवें अध्याय के २०वें श्लोक में भी इसी बात को पुष्ट किया गया है। इस प्रकार देश भर में एकता की भावना बनी थी। करल के मन्त्रीपाल ब्राह्मण बनेनाथ के सर्वोच्च पुजारी हुआ करते थे और यही परम्परा आज भी विद्यमान है। ... दक्षिण के रामस्वरम् मंदिर में भगवान शिव की पूजा के लिए प्रयत्नशील होना माना इस राष्ट्रीय भावना का ही प्रमाण था। पूर्व में पुरी और पश्चिम में परशुराम कुण्ड उत्तर में धर्मनाथ दक्षिण में रामस्वरम् उस पवित्र भूमि का सीमाएं थी।' ३ 'ऐसे प्रकार धार्मिक स्थानों का एकता से राष्ट्रीय भावना का स्वरूप स्पष्ट होता है। देशवासियों के हृदय में भारत के अखण्ड और पवित्र होने की भावना बनी हुई थी। पुण्य भूमि भारत को भारतमाता में परिवर्तित करने का एक अज्ञात तत्त्व के लोग का अंतिम अंश का भाव ॥ कि—

हे दयालु माँ हमें आशीर्वाद दे कि हम हर जन्म में तारा सेवा अपने तन मन धन और सत्तन द्वारा कर सकें। प्रस्तुत पत्तियों में जो राष्ट्रीय भावना की तीव्रता है वह यदि कान से चली जाती हुई परम्परा है और उत्तरोत्तर नवीन रूप में विकसित हो जाती गई है नष्ट नहीं हुई। बकिमचन्द्र चर्जी ने साहित्य में 'भारतमातरम्' गीत लिखकर उसी भावना को प्रकट किया। उनके लिए भारतमाता एक पवित्र भूमिमात्र नहीं रह गई थी बरन् वह दस मुजाबा वाला रणाकारिणी माता बन गई थी। उनके प्रयास से ही भारत माता केवल हिंदुओं की एक देवी मात्र न रहकर समस्त भारत वासियों की माँ बन गई। विचारों में यह परिवर्तन भारतीय मस्तिष्क पर पारंपरिक राष्ट्रीय विचारधारा के प्रभाव से हुआ। परंतु पारंपरिक दलों की तरह भारतीय हृदय में राष्ट्रीय भावना राजनैतिक प्रेरणामात्र न रहकर गहरी आत्मिक प्रेरणा बन गई। समस्त भारतीय साहित्य में वह इसी रूप में झलकता है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि हमारा मुख्य स्वर केवल यही होना चाहिए कि यह हमारा महान भारतमाता है। यही देवता है जो जाग्रत

है, हर जगह इसने हाथ पैर और कान हैं और इसी में सब कुछ निहित है ।'

योगी अरविन्द भारतीय राष्ट्रियता की भावना के अग्रदूत थे । उन्होंने भारतीय विचारों को नया रूप दिया । उन्होंने कहा— भारतमाता जमीन का केवल एक टुकड़ा मात्र नहीं है वह शक्ति है ईश्वरत्व है । देश प्रेम की भावना के मूल में ये ही भाव हैं । अतीत का गौरव वर्तमान का सुख-दुःख, भविष्य की कामनाएँ उसका तना और डालियाँ हैं । आत्म बलिदान और त्याग की भावना समा की शक्ति और देश के लिए सहनशीलता तथा उसकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील होना मानो इस राष्ट्रीय भावना के फल हैं ।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा—“मैं ही समस्त भारत हूँ, उसकी पूँव और पश्चिम निशाएँ मेरी बाह्र हैं जिन्हें मैं मानवता के आलिंगन के लिए फलाय हुए हूँ । मैं अपने प्रेम में विश्व व्यापी हूँ मैं शिव हूँ । यही देशभक्ति की सर्वोच्च साधना है यही सच्ची बंधन है ।’ इस प्रकार उन्होंने राजनीति व धर्म को मिलाकर अगाध राष्ट्र प्रेम व्यक्त किया ।

गांधीजी की राष्ट्रियता जिस अभिन्न रूप में जनता के सम्मुख आई उसमें स्वाधीनता के लिए बाध करन के साथ साथ सामाजिक नैतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का भी आवश्यकता थी ।

रवीन्द्रनाथ टागोर की राष्ट्रियता और भी व्यापक रूप में मांग प्रशस्त करती हुई आई । वे आध्यात्मिक और नैतिक प्रेरणादायक समाज का निर्माण चाहते थे । उनके अनुसार भारतीय राष्ट्रियता का भावना अहंकारी और विस्तारवादी नहीं थी । वह नगमन धार्मिक पूजा के तुल्य थी । वह आध्यात्मिक बाध का जो सेवा भावना के साथ चरता था

शक्तिचन्द्र के बदमाशरूप गान ने बड़े अधिकार के साथ सर्वत्र प्रभाव डालते हुए नव-जावन का सपना दिया । अतः यन्मातरम् भारत का पुनर्निर्माण जन-जागरण और विद्रोह का गान बन गया । इस गान को पुनः वृद्धों के लिए स्वतंत्रता-संग्राम इन्धर की समा भक्ति बन गई एवं नवयुवक ये नवयुवतियों के मन में भी राष्ट्रियता की भावना तीव्र हो उठी । वे देश की बलिबेदा पर चढ़ने के लिए तैयार हो उठे ।

दक्षिण भारत के लोकप्रिय वाँव मुत्रज्ञाप्यम भारती ने बहुत ही उत्तम और परिष्कृत त्म से भारत माता की स्तुति की। उसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय राष्ट्रीयता की भावना बड़ी व्यापक बन गई। इसने हम सबको एक दूसरे से जोड़कर देश प्रेम के बंधनों को पक्का कर दिया। हमारा यह प्रथम कर्तव्य हो गया कि हम इस आवाज को जन-वल्याण के लिए हर जगह पहुँचाए।

जन जन के मस्तिष्क में राष्ट्रीय भावना उग्र रूप से उत्पन्न-पुष्पल मचा रही थी। स्वाधीनता संग्राम में आहुति देने के लिए नौजवान म्यग्र हो रहे थे। अपनी भाषा अपनी सस्कृति और अपने प्रकार का जीवन हो अपने शिष्टाचार एवं आदश हों यह दृष्टिकोण लेकर भातरवासी प्राणदान करने को तयार हुए। स्वराज्य की भावना उनके दिल में घर कर गई।

डा. बासुदेवशरण अग्रवाल ने अपने लेख अपनी जनता अपनी पृथ्वी में स्वराज्य की अनुभूति के विषय में लिखा है कि स्वराज्य एक आध्यात्मिक अनुभव है। उसका आनन्द विनम्र है। वह एक ऐसा स्वाद है जिसकी उपमा अमृत से ही दी जा सकती है। यह मनुष्य के मन और शरीर दोनों को ही पुष्ट करता है। स्वराज्य की महिमा में क्या नहीं कहा जा सकता? बह्मिक ऋषियों ने सोचा था यत्सेमहि स्वराज्ये। हम सब मिनकर स्वराज्य की स्थापना में प्रयत्नशील हो। यह एक व्यक्ति का आकांक्षा नहीं है। यह तो सम्पूर्ण राष्ट्र का दायित्व है। जब राष्ट्र जागता है तभी स्वराज्य की स्थिति दृढ़ होगी है। राष्ट्राय जाग्रयाम वयम्। ४

राष्ट्र का सम्मिलित अर्थ है पृथ्वी उस पर रहने वाला जनता और उस जनता की सस्कृति। जब ये तीनों स्वर एक सूत्र में मिनते हैं तभी राष्ट्र का जन्म होता है। नवन स्थूल पृथ्वी मिट्टी और पत्थर का ढेर है। उसकी सत्ता तभी साधक होती है जब उस पर जनता का निवास हो और जन-समूह या जनता का चरितान्वता तभी है जब उसमें सस्कृति का विकास हो। इस विनाश के लिए भारत की नई राष्ट्रियता प्रयत्न शाल हुई। हमने अपना पृथ्वा का पूजन किया। उस पग पग पर दंवत्व प्रदान किया। उसका प्रत्येक पद नया सरोवर का पवित्र तीर्थ का रूप में प्रणाम किया और जनता जन्मभूमिच स्वर्गात्पि गरीयसी के उन्नत घोष से चारों दिशाओं को भर

राष्ट्रीय भावना

दिया। मातृभूमि के सम्मान की ध्वनि चारों ओर भर गई। जनता न भूमि के साथ अपना सम्बन्ध नाना प्रकार से स्थापित किया।— पृथ्वी का दोहन केवल आर्थिक सम्पत्ति के रूप में ही नहीं प्राप्त हुआ, किन्तु सांस्कृतिक जीवन के जितने रूप हैं व सब ही पृथ्वी रूपी गो वं दुग्ध बने। इन सबकी ही सम्मिश्रित रूप में हमने ससृष्टि कहा। अब हमारी ससृष्टि हवा में नहीं तरती, यह हमारे श्वास प्रश्वास में भर गई है। हम मानते हैं कि ससृष्टि ही मानव जीवन की प्राण वायु है। हम मानते हैं कि अतीत के भौतिक सुन्दर एवं रचनात्मक तत्त्वा का सकर ही हमें नए रूपों का विकास करना चाहिए, तभी निजी ससृष्टि का माधुम्य और सौन्दर्य जावन में निवास करता है। यह दृष्टिकोण हमारी राष्ट्रीय भावना का नया विकास है।

डा० राममुनिसिंह न भारत का राष्ट्रीय एक्ता नामक लेख में लिखा है कि— किसी भी राष्ट्र की एक्ता व कुछ लक्षण होते हैं, जिनके आधार पर एक राष्ट्र को राष्ट्र माना जाता है। परन्तु लक्षण भूगोल इतिहास और प्राकृतिक रूपरेखा सम्बन्धी है। उत्तर में पूरव से लेकर पश्चिम तक हिमालय की गगन चुम्बी, प्राचार पूरव-दक्षिण और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर तथा अरब सागर यह भौगोलिक विभाजन कितना प्राकृतिक और सहज है। कानिनास मयभूति आदि ससृष्टि कविया और यूनानी तथा अरब यात्रियों ने नेकर आधुनिक काल में पाश्चात्य विद्वानों तक सभी ने भारत का एक प्राकृतिक इकाई माना है। सनातन विचारधारा व अनुसार जिस धाज भी दशव्यापा मायता प्राप्त है मन्त्रों और घमनिष्ठ भारतीय वही माना जाता है जिनमें दक्षिण, पूरव, उत्तर और पश्चिम में स्थित चारों घामों का यात्रा की हो। वास्तव में इस परम्परा व पीछ एक सूत्र विचार और विषय निहित था।^१

यह सच है कि सभी से हमारे देश में विभिन्न भाषाओं नेत्रीय परंपराओं और रीति रिवाजों का चयन रहा है। किन्तु इन विभिन्नताओं का धरातल और राष्ट्रीय एक्ता का धरातल सदा अनग्न अनग्न रहा है। उत्तर और पूरव में सदिया तक मुगलमानों की सत्तनतें रहीं और दक्षिण में

१ सासाहिब हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ ५ था माधुम्यकारण अप्रवान
६ सासाहिब हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६३ पृ ६

चोन पल्लव पाण्ड्य राष्ट्रकूट आदि वर्गों का राज्य बना रहा किन्तु देश की मौलिक एकता की भावना पर इन ठोस पाथिव तथ्यों द्वारा कभी ठेग नहीं पहुँची ।

गांधीजी की कामना थी कि समस्त विश्व में शांति का साम्राज्य हो । विश्व के सभी मानव एक परिवार की तरह रहें और सभी स्वतन्त्र हों, परस्पर द्वन्द्व भाव न हो । इसीलिए वे सुबह शाम इस मंत्र का जाप करते थे—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत् ॥

गांधीजी की राष्ट्रीय भावना विज्ञान दृष्टिकोण लिए और अत्यधिक उदार थी । भारत में अनेकानेक जातियाँ भाषाएँ धर्म एक सम्प्रदाय चरते रहे हैं फिर भी भारत को राष्ट्र की सभा सा जाता है । इन सब विभिन्नताओं में भी एक ऐसी समता एक एकता है जिस एक विज्ञान क शब्दों में या कह सकते हैं कि

जैसे रंगीनी धागा विभिन्न प्रकार के फूलों अथवा मणियों को घिराकर एक सुन्दर हार बना देता है जिसका प्रत्येक फूल या मणि न तो अलग होता सुरुता है और न कवन अपनी ही सुन्दरता में लागा को माहता है बल्कि दूसरों की सुन्दरता से वह स्वयं सुशोभित होता है और उसी प्रकार अपनी सुन्दरता में दूसरों का भी सुशोभित करता है । यह कवन कल्पना प्रसून वाक्य भावना है । यही बरन् एतिहासिक यथार्थ का प्रत्यक्ष संश्लेष है । यह हमारे जनवत्सल्य में एकत्व की स्थापना कर समग्र भारत का हृदय का अपनत्व और अमि नत्व का सून में धावे हुए हैं ।

कहने का आशय यह है कि भारत की अखंडता युगा पुरानी है । स्नान करन समय एक भारतीय जिस शरीर का पाठ करता है उसमें सम्पूर्ण भारत की नदियाँ गंगा जमुना गोदावरी तमदा सिन्धु, कावरी आदि के जन का स्मरण किया गया है—

गङ्गा च यमुना च गोदावरी सरस्वती ।^६

तमदे सिन्धु कावरी जन्तस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

गन साठ वर्षों का भारतीय इतिहास राष्ट्रीय भावना के नवीन स्वप्न का उदर आगे आया जिसमें बलिदान एवं त्याग का वृत्ति में नौजवानों का रक्त

से इतिहास के पृष्ठ रंग भय हैं। स्वतंत्रता यन्त्र में आह्वान देने वाले एवं असाध्य यातनाओं को मज्जाने वाले वीरों ने राष्ट्रीय भावना को अनेक रूपा में अभिव्यक्ति दी है। राष्ट्र की रक्षा के माथ माथ राष्ट्रोन्नति में सहायक रचनात्मक कार्यों पर भी शक्ति संच की गई एवं राष्ट्र का सुम शिराज्जा में नवीन रक्त तथा नव चेतना का संचार हुआ।

“आधुनिक अर्थों में राष्ट्रियता की भावना का विकास अंग्रेजों के भारत आगमन और उनके द्वारा देश की केन्द्रिय सत्ता के शून्य शून्य पूरित अधिभूत नियमों के पदचान् प्रारम्भ होने से है। अंग्रेजों शिक्षा के प्रचार प्रसार तथा देश के विभिन्न भागों में विद्याभ्यास के पाठ्यपरिचालन ने ‘राष्ट्र’ मन्त्र की एवं ‘पापन’ दृष्टिकोण को जन्म दिया फलतः राष्ट्रियता की भावना का भी नव आयाम मिला।”

विदेशी जोषण में विभुषित जनता की परतन्त्रता की अनुभूति राष्ट्रियता की भावना के विनाशनीय होने से उस अधिव्यक्ति का जन्म नहीं। स्वाधीनता संग्राम हुआ तो परिणाम था।^७ अस्तुतः राष्ट्रियता का युग भी एक ऐसी प्रवृत्ति स्वीकार की जा सकती है जिसका चयन करने पर अपमान को छोड़ इस युग के अंगभंग सार जीवन में ‘यूनायिड’ भावना में उपस्थित रही है।^८

स्वाधीन भारत में राष्ट्रीय भावना को सर्वाधिक विस्तार एवं स्थापित्व मिला है। इस सम्प्रदाय जातियाँ बर्गों और वर्गों आदि के समस्त भेद-भाव समाप्त होने का रह है तथा सुदूर दक्षिण में उत्तर तर ओर पूर्व में पश्चिम तर भारत के किमी भी कोने में रहने वाला हर व्यक्ति समस्त दशवासियों को अपना भाई मानता है। इस सभी लोग यह अनुभव करते हैं कि देश की हर सम्पत्ति उनकी है देश का हर मान और अपमान उनका अपना मान और अपमान है। कुछ समय के लिए भाषा राज्य-युगलन आदि के नाम पर परस्पर भेद मान के जो राष्ट्रिय विचार कुछ लोगों में पैदा हुए थे वे शीघ्र ही पणित मान गए तथा वे विचारों को आश्रय देने वाले लोगों को राष्ट्र विरोधी समझा गया। आज हमारे जन हृदय की यह सच्चाई सभी आचान है

७ नया हिंदी पाठ्य भाग विद्युत्कार मिश्र पृ ४८

८ वही पृ ४८

९ वही पृ ६५

कि हम सब एक राष्ट्र हैं। चीन के आक्रमण के समय हमारी राष्ट्रीय भावना ने समस्त देश की उसी मण्डित आवाज को व्यक्त किया। अपने अपने प्रदेश की अपनी अपनी भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित कर राष्ट्र के विश्व-मानित रूप को ही प्रगट करना है। राष्ट्रभाषा के पद पर एक ही भाषा आसीन हो अन्य भाषाओं को भी समुचित आदर दिया जाय और अलग-अलग प्रदेशों की भावना को हृदय-ममस्त भारत को एक ही राष्ट्र माना जाय। सभी राष्ट्रों की भावना का सही रूप अभिव्यक्त होना। यद्यपि पंजाब काश्मीर एवं राजस्थान की सामाजिक पर पाकिस्तान का हमला इन विवादों को मुलाकर पुनः राष्ट्रीय भावना का उत्तम रूप व्यक्त करने में समय हुआ है। ममस्त भारत की जनता एक हो गई। जातिवाद सम्प्रदाय वर्गभेद एवं वर्ण भेद विलुप्त न रहा। सभी की एक ही आवाज थी भारत की रक्षा। राष्ट्रीय भावना का उग्र रूप बाह्य या विदेशी सत्ता के आक्रमण के समय देखने को मिलता है। राष्ट्रीय भावना एक ही राष्ट्र तक सीमित न रहकर अनन्तता में फैल गई है जहाँ मानवता का मूल्यवान होता है। यही राष्ट्रीय भावना के विकास का चरम उत्कृष्ट है।



हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने १०५० विक्रम में माना है। उन्होंने उस निम्नांकित चार कालों में विभाजित किया है।

(१) धीरगाथा काल १०२०-११७५

(२) भक्तिवाक्य १३७५-१७००

(३) रीतिवाक्य १७००-१९००

(४) आपुनिक काल १९०० से अब तक

१ धीरगाथा कालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना —

धीर गाथा काल में भारतवर्ष अनेक छोटे-से राज्य में विभक्त था, इसलिए प्रत्येक राज्य के कवियों को अपने राज्य के प्रति निष्ठा होती थी। वे अपने आश्रय दाता की प्रशंसा करते थे। राजनतिक वातावरण का उनकी काव्य प्रतिभा पर भी प्रभाव पड़ता था। जब दो राजा परस्पर युद्ध में थे तो उनके आश्रय में रहने वाले कवियों को भी अपने आश्रय-जगता का धीर पराक्रमी और योगप्रिय सिद्ध करना पड़ता था तथा विरोधी राजा की उद्दमिता बरननी पड़ती थी। धीरगाथा कालीन काव्य की एक प्रवृत्ति में भारत की एक राष्ट्र के रूप में स्वीकृति को चिन्तित कर दिया था। प्रत्येक कवि का धीर भावना आश्रय-जगता के राज्य की सीमाओं के विस्तार और उन सीमाओं में रहने वाली प्रजा की एवना तक ही सीमित थी। भारतवर्ष के अतिसूक्ष्म जो अल्प राज्य थे उनके प्रति कवियों में कोई निष्ठा शेष नहीं रह गई थी। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि जन-जीवन में सांस्कृतिक दृष्टि से जहाँ एक ओर राष्ट्रीय भावना की धारा अगह रूप में बह रही थी वहीं दूसरी ओर हिन्दी काव्य में इस काल में राजनतिक वातावरण के कारण राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के लिए कोई अवकाश नहीं रह गया था। जتنا इस काल में भी देश की चारों सीमाओं पर बने हुए यन्त्रियों को अपना तीव्र माननी थी। समस्त देश की नदियों को पवित्र समझती थी और आसुत हिमाचल विस्तृत भारतभूमि के

प्रति आत्मीयता रखती थी। किन्तु जयचन्द और वृध्वीराज जैसे राजाओं की पारस्परिक द्वेषाग्नि से प्रभावित ब्रिटिश जनता की उस राष्ट्रीय भावना को अपने साथ में स्थान नहीं दे सके। अतः निष्कप रूप में यदि यह कहा जाय कि वीरगाथावादी ने अपनी भावना का भावना प्रधान होने हुए भी राष्ट्रीय भावना में गहित है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

२ भक्तिकालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना —

भक्तिकाल का काव्य आज उन कवियों की प्रतिभा का प्रसाद है जिन्होंने नीच जीवन को सुख-शांतिपूर्ण बनाने के लिए ईश्वर की आस्था का सशक्त समाज को दिया। इस काल में कवि काव्य उस सांस्कृतिक भावना से अनुप्राणित हुआ जिसमें देश की सभ्यता अखण्डता और एकता का भाव छिपा हुआ था। सूर के कृष्ण किसी एक राज्य के ही छोड़े राजा या जन-नेता नहीं है बल्कि वह समस्त भारतवर्ष को अत्याचारियों से मुक्त करके जावन का मधुरता का मरक्षित करता है। तुलसी के राम भगवान के राज्य तक सामित नहीं रहते। सेतुबन्ध रामचन्द्र तक की समस्त भारतीय जनता की आत्मीयता के अत्याचारों से मुक्त करने हैं। कबीर ने किसी एक क्षेत्र या वर्ग के समाज की दुर्दशाओं का ही खण्डन और विरोध नहीं किया है बल्कि उन्होंने समस्त भारतवर्ष में फैले हुए जनसमाज की रुढ़ियों अथर्व विश्वासों और कृष्ण प्रवृत्तियों पर प्रहार किया है। उनके काव्य में आध्यात्मिक आधार पर देश की अखण्डता का भाव अभिव्यक्त हुआ है। मुल्ता और पड़ित का वे समान रूप से फटकारते हैं। जायसी का रत्नसन भी केवल चित्तौड़ तक सीमित नहीं रहता। समस्त भारत उसकी आत्मीयता में अनुप्राणित होता है। इस काल के अन्य भक्त कवियों ने भी आपस में और उत्तर दक्षिण से देश की महिमा और गौरव को पुनः स्थापित किया है तथा सांस्कृतिक चेतना का अखण्ड प्रवाह अपने काव्य में जन जीवन को लेकर उसी भावना का पोषण किया है, जिसे आधुनिक अर्थ में राष्ट्रीय भावना का प्रारम्भिक रूप कह सकते हैं।

३ रीतिकालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना — इस काल का जन जावन इतिहास के पन्नों पर विश्रुतचित्त दिखाई देता है। मुगल शासन के अत्याचारों से पीड़ित जनता की एकता का भाव खटित हो गया है किन्तु हिंदी काव्य में उस एकता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया गया है। घोर शृंगारी कवियों ने भी देश की एकता का चेतना को कही कही बाणी दी है तथा बिहारी महाराज जयसिंह का शृंगार रस-मूल दोहो से

मनोरंजन करते हुए भी अयोक्ति के माध्यम से उन्हें यह समझाना नहीं भूलते कि हे राजा ! तू अपनी ही जाति व अन्य राजाओं को मुगल शासन की प्रसन्नता के लिए क्यों मारता है ? व कहते हैं —

स्वारथ सुहृत्तन श्रम वृथा दंष्ट्रु विह्वल विचार ।
बाज पराय पानि पर तू पच्छी तू न मार ॥

निःसंदेह इन पंक्तियों में शृंगारी कवि विभाग की राष्ट्रीय चेतना मुखरित हो उठा है। इस काल के प्रसिद्ध कवि भूपण राष्ट्रीय चेतना के सबसे बड़े सदेशवाहक हैं। उन्होंने अपने आश्रय दाता शिवाजी का बार-बार इसीलिए उल्लिखित किया है ताकि वह समस्त भारत का मुगलों के शासन से मुक्त करके राष्ट्र की शक्ति को संगठित कर सकें। इस काल के कुछ अन्य कवियों ने भी राष्ट्रीय भावना का अपने काव्य में स्थान दिया है। बाँकीदास की निम्नांकित पंक्तियाँ इस बात की साक्षी हैं। व कहते हैं —

आया इमरज मुलक र ऊपर
राजनी र विह्वल रजपूति महा हिन्द की मुसलमान ॥

चूँकि इस काल में मुसलमानी शासन का ज़ोर अंग्रेजों के शासन का प्रारम्भ भी हुआ, इसलिए हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावना में यह परिवर्तन भी मिलता है, जिसका उत्पन्न में राष्ट्रीय भावना की सीमा के अंतर्गत कर चुकी है।

४ आधुनिक कालीन काव्य में राष्ट्रीय भावना—इस काल में हिन्दु और मुसलमान दोनों जातियाँ घासित बन आती हैं और अंग्रेज शासक हो जाते हैं। इसलिए हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावना में यह परिवर्तन अवश्य तत्पर हो उठा है जिसका आभास रीतिकान के अन्त में मिलन लगता था। आधुनिक काल के प्रारम्भिक हिन्दी कवियों ने मुसलमानों का विशेष खोदकर अंग्रेजों के विरोध में आवाज उठाई है और उन राष्ट्रियता के माधो का पोषण किया है जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए समान स्थान है। भारत-राज हरिश्चन्द्र ने सबसे पहले राष्ट्रीय भावना की इस नई दिशा का उद्घाटन किया। उन्होंने एक सामाजिक आधिन और राजनैतिक पुनर्रचना के लिए आवाज उठाई। उन्होंने कहा—

‘अंगरेज राज मुगलसज राज अनि भारत
यै धन विदेश बसि जात यहै स्वारी’

वे भारत का दुदशा को देखकर मथित होते हैं —

सबके ऊपर टिक्वास की आपत आई
हा ! हा ! भारत-दुदशा न देखि आई

इनकी प्रेरणा से हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त होने लगी। कवियों ने समस्त देश की प्रगति का वृत्त विभिन्न कविताओं में अत्यन्त मनोहारी ढंग से चित्रित किया और देश के सांस्कृतिक गौरव के गीत गाये। मधुनीशरण गुप्त उस दिशा में आगे बढ़ते हुए भारत भारती लेकर प्रस्तुत हुए। समस्त देश उनकी भारती के स्वरा से गूँज उठा। उन्होंने जनता का जगाते हुए अपनी वाणी से यह उद्घोष किया —

हम वीर थे क्या होगए और क्या होंगे अभी ?^१

आओ विचारें आज भिन्न कर यह समस्याएँ सभा

उन्होंने हिन्दी कविता को राष्ट्रीय भावना का जातीय स्वर दिया वह देश के कठ कठ में गूँज उठा। उन्होंने देश में ऐसी धारमायता जाग्रत की जिससे लोग बार बार भारत में जन्म लेने की आकांक्षा करें। उन्होंने लिखा है—

जसी दश में जन्म दो
ता प्रणाम है तारज नाम^२

गुप्त जी ने भारत के प्राचीन राष्ट्रीय गौरव और गरिमा की प्रतिष्ठा करते हुए कहा—

सत्तार को पढ़न हमारा नान भिक्षा दान की
आचार की यापार की व्यवहार की विधान की^३

• • • • •

है आज पश्चिम में प्रमाणों पूव से ही है गर्व
हरते अधेरा यदि न हम होनी न गोज न^४ न^४

१ भारत भारती, मधुनीशरण गुप्त पृ ४

२ यागाधरा मधुनीशरण गुप्त, पृ २

३ भारत भारती कहा पृ १६

४ वही पृ २५

गुप्त श्री वं माय उनने अनुज सिमाराम शरण गुप्त तथा कई अम
 बबिया की जा विस्मृत नया बिया जा सकता जिहने राष्ट्रीय भावना का
 प्रपन काय अ विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया । भास्करलाल चतुर्वेदी
 मुमदा कुमारी चौहान बालकृष्ण गमा नवान प्रमाद, सोहनलाल द्विवेदा
 श्यामनारायण पांडे, गणपतशरण मिह रामधारी सिद्ध दिनकर, सूपकान्त
 त्रिपाठी निराला सुमित्रा नान पत, नरेन्द्र गमा आदि क नाम इस संग्रह में
 स्मरणीय हैं । बालकृष्ण गमा नवीन, मुमदा कुमारा चौहान और भास्करलाल
 चतुर्वेदी तो राष्ट्रीय बबिया की उम प्रथा में सम्मिलित हैं, जिन्होंने हाथ में भडा
 तन्दर अपनी राष्ट्रीय बाणी का जीवन में 'यवहारिक' रूप में उतारा और एक
 स्वतंत्र भारत-राष्ट्र की स्थापना के लिए बारागुह व भीकचा में भी जिनकी
 बाणी का स्वर मंद नहीं पडा । जयशंकर प्रमाद भाग्य व अतीत-भौग्य का
 अत्यन्त ओजपूर्ण स्वर में गान करते हुए जहाँ एक ओर यह गान था—

अरण्य यह मधुमय देश हमारा
 जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज की
 मिलना एक सहारा

बड़ी नवीन जा स्वाधीनता का अखण्ड अखण्ड बने व लिए प्रलय का
 आह्वान करते थे—

बकि कुछ ऐसा तान मुनाजा
 जिसमें उबल पुषल मच जाय

भाग्यवान जा की राष्ट्रीय भावना जिनकी निमल और सात्विक थी,
 यह इन वाक्या में गेगिए—

बाह नहा मैं सुरवाला व गहनों में मूढा जाऊ
 बाह नही, प्रेमीमाना में बिष प्यारी का लतवाऊ ।
 बाह नही, सखाटा व लज पर ह हरि ढाला जाऊँ ।
 बाह नहा देवों के सिर पर चढ़ू भाग्य पर इठलाऊ ॥

मुझे तोड मेना बन माता ,
 उस पथ में दना तुम फेंक ।
 मातृ धूमि पर शीघ्र चगने
 जिस पथ जावे बीर अनेक

सुमद्रा कुमारी चौहान ने भाँसी की रानी का गुणगान करके जन-जन के कंठ को वह बाणी दी जिसमें स्वाधीनता की आकांक्षा अत्यन्त तीव्र रूप में मुखर हो उठी। इसी प्रकार हिन्दी के पूर्वोक्त अग्र कवियों ने भा-राष्ट्रीय भावना की विभिन्न रूपों में अपने काव्य में अभिव्यक्त किया। जिन लोगों ने देश के लिए बलिदान किया उनका गौरवमान हिन्दी के राष्ट्रीय काव्य का मुख्य विषय बन गया। स्वाधीनता संग्राम के अपराजय सनानी महारत्ना गाँधी के जीवन पर उनके कवियों ने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविताएँ लिखी तथा देश की विभूतियाँ और नेताओं का आ-गुणगान किया। इस प्रकार आधुनिक कालीन हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना का सबसे अधिक व्यापक और विस्तृत अभिव्यक्ति हुई।

निष्कर्ष —

पूर्वोक्त सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष है कि भारतीय जीवन का अस्तित्व और एकता का स्वर बीरगाथाकालीन काव्य में एक राष्ट्र का स्वर बनकर चित्रित नही हो सका था। भक्तिकाल में उस भक्ति के माध्यम से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का धातावरण मिला और रीतिकान्तक युगन शासन के अत्याचारों के कारण उस सांस्कृतिक स्वर को हिन्दु राष्ट्रीयता का रूप धारण करना पड़ा। आधुनिक काल में जब हिन्दू और मुसलमान अग्रजों की प्रजा बन गये तब हिन्दी कवियों की बाणी उस व्यापक राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त करने में सफल हुई जिसके फलस्वरूप हिन्दी काव्य साम्प्रदायिक सकीलता से बाहर आया किन्तु इस काल में भी राष्ट्रीय भावना की सकीलता का अग्रज विराधी स्वर गप रह गया था। स्वातन्त्रता के पश्चात् लिखे गये हिन्दी काव्य में उसका भी अन्त हो चुका है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावना एक बहुत बड़े परिवेग में अभिव्यक्त हुई है। प्रस्तुत प्रबंध में मैं उसकी केवल गीत-काव्य में होने वाली अभिव्यक्ति का अनुशीलन और मूल्यांकन प्रस्तुत करूँगी।

१ स्वतन्त्रता का हिन्दी-काव्य पर प्रभाव

राष्ट्रीय कविता के मम में अनीत के प्रति श्रद्धा, निजत्व से प्रेम, वतमान प्रभाव के प्रति जागरण तथा एक मम-परिवर्तन होता आया है। राष्ट्रीय गीतों के मूल में यही भावना जागृत रहती है। उनमें वतमान के प्रति असन्तुष्टि प्रभाव के प्रति जागरण का चित्रण देश-जाति और सत्त्वृति का सीमाएँ तोड़ सम्पूर्ण मानव जाति के विषय और प्रभाव की जो चेतना जल जानी है वह अन्तराष्ट्रीय है। सावजनिक है मानवता है। राष्ट्र-भावना में मानवीय दृष्टिकोण का विकास सम्पूर्ण मानव समाज की धार में मुख्य न होकर अन्तर्गत जाति या समाज तक सीमित रह गया है। राष्ट्रायता के उत्कर्ष में अपने देश के प्रति प्रेम अपने अनीत की उजाड़ता के प्रति मोह, प्रेम के अनुशासन पर आगे अपना अवमन्यता पर भ्रम और विषाद एवं भविष्य निर्माण के प्रति आकांक्षा और उत्साह है। इस प्रकार प्रेम प्रेमिमान आकांक्षा उत्साह और आनन्द के भावों से पूर्ण देश-भक्ति के गान हैं। वतमान में देश के सामने देश के निर्माण की समस्या है। यह समस्या राष्ट्रीयता के विकास की समस्या है, क्योंकि यदि यह मानना विकसित होना है तो किसान, मजदूर पूँजीपति, निधन भूमि विनश्यत आदि की सारा समस्याएँ हल हो जायेंगी। गांधीजी का हृदय-परिवर्तन या तो स्वयं पूर्ण है। नायगा। विन्तु देश की चेतना अब सब का परिपूर्णता के लिए गाति-काव्य पर आश्रित है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय-जीवन का मनविधि अभिव्यक्ति हुई। हमारे मम युग के साहित्य का मुख्य प्रेरणा राष्ट्रीय और सामाजिक है। राष्ट्र-निर्माण की भावना आज की कविता में भी निर्गम्य होती है। आज के हिन्दी-नविकर्ता का दुःख एक वत-व्यपन्न जीवन परिस्थितियों का चित्रण करते हुए देश के उत्थान की कामना करने

गये हैं। उनकी राष्ट्रीयता सम्पूर्ण विश्व के मगन की कामना की आत्मसन्नि-
 करता हुई अधिक व्यापक एवं उत्तम रूप धारण करने लगी है। वनमान
 हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है जस जस भूमि
 के प्रति ममता देश का मस्तक ऊँचा करने का महापुरुषों के प्रति श्रद्धाजिनि
 देश प्रेम और आत्मात्मक स्वर्णिम प्रतीत का स्मरण राष्ट्र-स्वयं का धन
 वतमान अवस्था पर क्षोभ वगान का अकाल, देश के लुप्त किसानों और
 मजदूरों का चित्रण साम्राज्यवाद का विरोध और समाजवाद का जयजयकार
 जातीयता के प्रति उद्गार और राष्ट्रीय बाधाओं का दूख करने की प्रेरणा
 आदि।

घण्टों की काल रात्रि के बाद देश में स्वातन्त्र्य प्रभात का नव जागरण
 हुआ, किन्तु उसके बाद भी उन्मुक्त भावना का जो अनियमित ताड़व नृत्य
 देखा, उसके कारण मानवता चीत्कार कर उठी। वह अपने उस वसुंधरा
 के तल का ला बठी जो मानवता का उपासक था जो केवल भारत का ही
 हितधी नहीं बरन् अहिंसा और सत्य के द्वारा विश्व हित की निरन्तर कामना
 किया करता था। ऐसी विषम परिस्थिति में राष्ट्रीय कवियों का नायित्व बहुत
 अधिक बढ़ जाता है।

पराधीनता की शृंखला में जकड़े हुए भारतवासी निराशा के गहन
 तिमिर में आलोक किरणें उठने का प्रयास कर रहे थे। अनेक नवयुवकों की
 स्वतन्त्रता की भावुति बन गाना पड़ा। कितने परिवार विघ्नित होकर
 समाप्त हो गये सम्पत्ति जप्त कर उठी संस्कृति अपभ्रंश रूप लक्ष्म नव
 जागृति का सदेश देने के लिए नानामित हो उठी। स्वतन्त्रता मिल गई
 और मिल गया भारतवासियों को नया साहस नया विश्वास और नवीन
 किरणें युक्त नया सवरा। कवियों की लेखनी उठी और निमेष की स्याही
 लेकर संस्कृति के घने घर बिखेर दी गई। हृदय के ऐसे उद्गार जिनमें एक
 और देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति का हुष था दूसरे में देश के लिए बलिदान देने
 वालों के प्रति विषाद। गीतों में नये विचार थे नई भावना थी नई जागृति
 और नई चेतना थी। राष्ट्रीय भावना अनेक स्त्रीतों प्रस्थानों अनेक स्वरूपों
 में वही गीतों में प्रत्यक्ष नहीं अप्रत्यक्ष रूपों में सामने आई। परिणाम यह
 गया कि वही हिन्दी गीत काव्य में सामाजिक प्रथाओं एवं अनतिक्रमता के
 मर्दन के लिए राष्ट्रीय भावना का मिशन हुआ तो वही मर्मप्रणायक विरोधी-भाषक
 तत्वा द्वारा राष्ट्रीय भावना का पोषण हुआ। हिन्दी गीतों में राष्ट्र उद्धारका

के गुणगान को गाकर राष्ट्रीय भावना को यथा योग्यता दिया गया। धार्मिक विषमता सरिता का समता का आवरण पहनाकर भी राष्ट्रीय भावना उदधि का गम्भीर भीर गहन किया गया।

वर्तमान हिन्दी गीता में राष्ट्र अहितकारियों के प्रति रोष दर्शाकर राष्ट्रीय भावना के संचार में अप्रत्यक्ष योग दिया गया है। यह तो हम स्वाकार करते ही हैं कि स्वतन्त्रता हर्षोल्लास की अनुभूतिशील अभिव्यक्ति का माध्यम से राष्ट्रीय भावना का भावातिरिक्त मित्रा है। वही-जहाँ तो हिन्दी गीता द्वारा जन समुदाय का सहानुभूति अनुशीलित कर राष्ट्रीय भावना का क्षेत्र विस्तृत व गम्भीर हुआ है।

आज गीता की स्तनी वगवती धारा बह निकली है कि उसका परिणाम से राष्ट्रीय भावना परमाधि में अनकानक लहरें उठ रही हैं। प्रत्यक्ष गीत की चञ्चल लहर का साथ राष्ट्रीय भावना प्रतिध्वनित हो रही है। राष्ट्रीय भावना मुक्त भवेक गात तारक धनकर आज काय के स्वच्छ नील आकाश में जगमगा रहें हैं।

इमान्दोल्योत्तर हिन्दी गीत काय में नीतिक उपादानों को आधार बनाकर राष्ट्रीय आग्रह का संदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ राष्ट्र मस्तिष्क के प्रति आत्मीयता और राष्ट्रीय भावना की प्रपणुमता दिखाकर राष्ट्रीय सम्पत्ति का प्रति स्नेहोद्गारों द्वारा राष्ट्रीय भावना से गठ व धन करक तथा आर्थिक आधार द्वारा भा बली-कहीं मुमनाजलि दी गई है। स्तना ही नहीं बल्कि दस प्रभुति प्रेम अनुसूचित कर राष्ट्रीय भावना की प्रभा का प्रकाश पुजित किया है ता वही भाषा विभेद का सामञ्जस्य और भूराजना की अग्रता का आवरण दूर राष्ट्रिय भावना को उद्घात किया है। गीतों द्वारा बविया में जन जन में राष्ट्रीय निमाल की प्ररणा का फूँकने तथा राष्ट्रीय भावना को सृजनात्मक स्वरूप देने का अग्र्य साहस युक्त नया कदम उठाया है। राष्ट्र में जा धन विभेद है जिससे दुष्परिणाम से राष्ट्रीय भावना में एक स्तर से पड़ गई थी उसको समाप्त करने के लिए सामन्तवाद के प्रति साम्यवाद का अपवाद देकर राष्ट्रीय भावना को एक बाण दिया है। राष्ट्रीय भावना का नई निशा का मनेन मिता और नई पीढ़ी को मिता है तथा आग्रह। गीतों के द्वारा तथा गीतों को सन्ध और जन-जन तक पहुंचाकर एक राष्ट्र-गुरुता का मन्त्र बताने राष्ट्रिय भावना का प्रतिरहित किया है। वही आत्तका का भारत का रहन

नगे हैं। उनकी राष्ट्रीयता सम्पूर्ण विश्व के भगन की कामना को आत्मसात् करती हुई अधिक व्यापक एवं उन्नत रूप धारण करने लगी है। वनमान हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना अनेक स्था में अभिव्यक्त हुई है जिस जन्म भूमि के प्रति ममता देश का मस्तक ऊँचा करने मान मनापुण्या के प्रति श्रद्धाजनि देश प्रेम और आत्मोत्सर्ग स्वर्णिम अतीत का स्मरण राष्ट्र स्वज की वन्दना वनमान अवस्था पर शोचन बगाल का अकाल, देश के दुग्नी किसानों और मजदूरों का चिन्तन साम्राज्यवाद का विरोध और समाजवाद का जयजयकार जातीयता के प्रति उद्गार और राष्ट्रीय बाधाओं का चूर्ण करने की प्रेरणा आदि।

वर्षों की काल रात्रि के बाद रात्रि में स्वातन्त्र्य प्रभात का नव जागरण आ किन्तु उसके बाद भी उन्मुक्त भावना का जो अनियन्त्रित ताडव नृत्य देखा उसके कारण मानवता चीत्कार कर उठी। वह अपने उम्र वसुंधरा के नाल को छा बठी जो मानवता का उपासक था जो केवल भारत का ही हितपी नहीं वरन् अहिंसा और मर्याद के द्वारा विश्व हित की निरन्तर कामना किया करता था। ऐसी विषम परिस्थिति में राष्ट्रीय कवियों का दायित्व बहुत अधिक बन जाता है।

पराधीनता की शृङ्खला में जकड़े हुए भारतवासी निराशा के गहन तिमिर में आलोक किरण टूटन का प्रयास कर रहे थे। अनेक नवयुवकों की स्वतन्त्रता की भावना बन जाना पड़ा। कितने परिवार विघटित होकर समाप्त हो गये सम्पत्ति जलन कर उठी सस्कृति अपभ्रंश रूप लेकर नव जागृति का सदेश देने के लिए सानाधित हुआ उठी। स्वतन्त्रता मिल गई और मिल गया भारतवासियों को नया साहस नया विश्वास और नवीन किरण युक्त नया सवेरा। कवियों की देखनी उठी और निमाण की स्था हो लेकर सस्कृति के बने पर बिखेर दी गई। हृदय के ऐसे उद्गार जिनमें एक और देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति का हृष या दूसरे में देश के लिए बलिदान देने वाला के प्रति विषाद। गीतों में नय विचार के नई भावना थी नई जागृति और नई चेतना थी। राष्ट्रीय भावना अनेक स्त्रोतों प्रस्त्रोतों अनन्य स्वरूपा में वहीं गीतों में प्रत्यक्ष वहीं अप्रत्यक्ष रूपों में सामने आई। परिणाम यह आया कि वही हिन्दी गीत काव्य में सामाजिक प्रथाओं एवं अनतिक्रान्त के मर्यादों द्वारा राष्ट्रीय भावना का मिश्रण हुआ तो वही मध्यमार्थवादी विरोधाभासक तत्वा द्वारा राष्ट्रीय भावना का पापण हुआ। हिन्दी गीतों में राष्ट्र उद्धारका

के गुणगान को गाकर राष्ट्रीय भावना को यथा योग्यता दिया गया। धार्मिक विषमता सन्निता वा समता का आवरण पहनाकर भी राष्ट्रीय भावना उत्थि को गम्भीर और गहन किया गया।

वर्तमान हिन्दी गीतों में राष्ट्र-अहितकारियों के प्रति रोष दर्शाकर राष्ट्रीय भावना के मन्त्र में अत्यन्त यश दिया गया है। यह तो हम स्वाकार करते हैं कि स्वतन्त्रता हर्षोल्लास की अनुभूतिशील अभिव्यक्ति के माध्यम में राष्ट्रीय भावना का भावातिरक मिला है। कहीं-कहीं तो हिन्दी गीतों द्वारा जन समुदाय का सहानुभूति अनुशीलित कर राष्ट्रीय भावना का क्षेत्र विस्तृत व गम्भीर हुआ है।

आज गीतों की इतनी धगवती धारा बह निकली है कि उससे परिणाम से राष्ट्रीय भावना पर्याप्त में अनेकानेक सहर्षें उठ रही हैं। प्रत्येक गीत की ध्वनि नहर के माध्यम से राष्ट्रीय भावना प्रतिध्वनित हो रहा है। राष्ट्रीय भावना युक्त अनेक गीत तारक बनकर आज काय के स्वच्छ नील आकाश में जगमगा रहे हैं।

स्वातन्त्र्यान्तर हिन्दी गीतकाय में भौतिक उपादानों को आधार बनाकर राष्ट्रीय जागरण का संदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ राष्ट्र-मस्तिष्क के प्रति आत्मीयता और राष्ट्रीय-भावना की प्रेरणीयता दिखाने के प्रति सम्पत्ति के प्रति स्नेहाद्वारा द्वारा राष्ट्रीय भावना में गठ बंधन करके तथा आर्थिक आधार द्वारा भी कहा-कही मुमनाजलि दी गई है। इतना ही नहीं, पृथ्वी देश प्रकृति प्रेम अनुरजित कर राष्ट्रीय भावना की प्रभा की प्रकाश पुजित किया है तो कहा भाषा विभेद का सामंजस्य और भूवृत्ता को अगडता का आवरण देकर राष्ट्रीय भावना का उद्घाटन किया है। गीतों द्वारा कवियों ने जन-जन में राष्ट्रीय निमाण की प्रेरणा का फूँकने तथा राष्ट्रीय भावना को सृजनारम्भ स्वरूप देने का अत्यन्त साहस युक्त नया कर्म उठाया है। राष्ट्र में जा बंध विभेद हैं जिसके दुष्परिणाम से राष्ट्रीय भावना में एक-दूसरे से पट गई थी उसको समाप्त करने के लिए सामन्तवाद के प्रति साम्यवाद का अपवाह देकर राष्ट्रीय भावना को एक बाध दिया है। राष्ट्रीय भावना का नई निशा का संकेत मिना और नई पादा का मिना है नया जागरण। गीतों के द्वारा तथा गीतों की गहज और जन-जन तक पहुँचाकर एक राष्ट्र-सुरक्षा का मन्त्र बनाकर राष्ट्रीय भावना को प्रतिरक्षित किया है। कहीं-कहीं का भारत के रत्न

बनाने का उपदेश मिलना है, तो वही नवयुवकों को कमठ उस्ताहा और सवगुण सम्पन्न होने का निवेदन किया है। ता कहा नारी को पुरुष के समान अधिकारों की रक्षक कर्तव्य परायणता की मूर्ति ध्याना श्रुतिणी और चेतना की लक्ष्मी सरोजिनी आदि बनाकर सम्मानित किया है और राष्ट्रीय मानना राष्ट्रीय उत्थान राष्ट्र निर्माण का स्वर गुंजरित किया है।

स्वातन्त्र्यात्तर हिन्दी गीता में चेतना जागति के भविष्य की शुभ कामना अभिलाषा और सुख-फल प्राप्ति का भाव मिश्रित है। कहा देशाभिमान युक्त अनुभूति का राष्ट्रीय भावना के साथ आत्मसाक्षात् किया है। राष्ट्रीय भावना का स्फूर्ति करने वाले राजनीतिक विघटन के तत्त्व को भी सामरस्य की भावना से रहन भक्ति करके मिश्रित किया गया है। राष्ट्रीय ध्वजा रोहण बदना गाकर अपने देश का महान् विभूतियों सत्ता और त्यागी महापुरुषों का परिस्थान आदश आदि बतलाकर भी राष्ट्रीय भावना को जन-जन में भावावित करने का प्रयत्न किया है।

२ छायावाद के अवशेष राष्ट्रीय भावना —

मानवतावाद तथा राष्ट्रीयता से छायावाद का सम्बन्ध उसके जन्म काल से ही रहा है। निराला तथा पंन के काव्य की छाया भी दो जा मानवता तथा राष्ट्रीयता की दृष्टि में अब भी उतना ही प्रौढ़ और परिपक्व है तो शेष कविों के काव्य में भी उस 'मूलाधार' माना में लक्षित किया जा सकता है। यदि एक ओर इन कविों ने मानवमात्र अथवा सम्पूर्ण मानवता के प्रति अपने असीम प्रेम तथा दृढ़ निष्ठा का सूचित करते हुए उसकी विजय कामना की उसकी पीड़ा तथा 'यथा' का मार्मिकता से उभारते हुए उससे अपने अलग-एकत्व का परिचय दिया तो दूसरी ओर राष्ट्रीयता के स्वरों को भी उतनी आकुलता से बाणी दी है। मानवतावाद तथा राष्ट्रीयता दोनों में ऊपर से देखने पर एक महज विरोध सा देख पड़ता है वस्तुतः इसी कारण नवे काव्य में यह तन्मयता भी मुखर नहीं होने पाया है कि इनका राष्ट्रीयता तथा मानवता दोनों की ही आधारशिलाएँ पर्याप्त एवं सहज सामञ्जस्यमयी रही हैं।

३ प्रगतिवाद राष्ट्रीय भावना —

सन् १९३६ के आस पास फलन वाला समाजवादी प्रभाव और द्वितीय महायुद्ध उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न आधिक राजनीतिक सफट महगार्ड

बेकारी सन् १९४२ की क्रांति उमना दमन मजदूरों की ऐतिहासिक हड़तायें, किसानों की जागृति का अमियान और सबसे चढ़कर बंगाल का अकाल आदि के सम्मिलित कारण ^३ जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का नयी गति दी। उसने जाति का आर्थिक स्वाधीनता के लिए भी मन्त्रिष रूप से प्रयत्नगात्र होने का वाध्य किया तथा इन परिस्थितियाँ न हमारे साहित्य कारों को भी एक ऐसे पथ की धार अग्रसर हान को प्रेरित किया जिस पर चढ़कर वे अपने साहित्य की इन जन मानस की आशाओं आकाशानों को मूल रूप दे सकें तथा समाज की प्रगति में साहित्य को एक अनिवार्य साधन तथा माध्यम के रूप में प्रस्तुत कर सकें। इस भावना को लेकर ही प्रगतिवाद का जन्म हुआ।

राष्ट्रीयता एक देश प्रेम यह प्रमुख प्रवृत्ति है जिसकी अभिव्यक्ति प्रगतिवादी काव्य में विविध रूपों में हुई है। राष्ट्र की आशाओं आकाशानों विपत्तियाँ एक जनमना तथा अपने देश प्रेम को यो तो समा काला व कवि किमी व किसान प्रकार अभिव्यक्त करते आए थे परन्तु प्रगतिवादी काव्य में गात्र अपनी जिस समग्रता में उभरा है देश प्रेम की जो नयी व्यापक और ठोस अभिव्यक्ति उसमें हुई है वहाँ जा सकता है कि वसी किमी भी पूर्व युग में भयका समकालीन काव्य धाराओं में नहीं हो सकी।

राष्ट्रीय भावना हम प्रगतिवादी गाथा में निम्ननिमित्त माध्यमों से मिली है—विद्वान्तासता के विरोध के रूप में पूजोवाद, सामन्तवाद के विरोध के रूप में साम्र अधिकता के विरोध के रूप में सामाजिक मुषारा के आग्रह के रूप में और युद्ध विरोध एक क्रांति आन्दोलनों के प्रथम रूप में। प्रगतिवादी गीतों के कवियों ने उन शहीदों के प्रति भी अपनी श्रद्धाजलियाँ अर्पित की हैं जो देश का गौरव बन चुके हैं, साथ ही स्वतन्त्रता की बनी पर बनिगान हा जान की भावना को पयास महत्व प्रदान किया है एवं उसका निरूपण जनता का आग्रह किया है। साम्राज्यवादों व्यावारा के भासिक चित्र देने के साथ-साथ साम्राज्यवादी रक्त-पिषामुषों के विरुद्ध भारतीय जनता की रोपमयी फूलार उनसे गीतों की ध्वनि विरोधता है। उन्होंने अपने गीतों में सामन्तवाद व पूजोवाद को घातक समझा है और उसका विरोध किया है। उन्होंने केवल पूजोवाद तथा उसके कारण उत्पन्न वम विषमता के भासिक चित्र हा नहा पाये हैं वरन् एक नये समाज की स्थापना के लिए अपना अन्त्य स्वर भी मुसरित किया है। इसी प्रकार साम्प्रदायिकता का विरोध एवं हिन्दु मुस्लिम एक

का प्रतिपादन करके भी उन्होंने राष्ट्र की वास्तविक आकांक्षा को स्वर प्रदान किया है। इस सम्बन्ध में जहाँ उनके गीतों में साम्राज्यवादियों की कूटनीतिक चालों का भण्डा फोड़ दिया है वहाँ साम्प्रदायिकता के विषय का समाधान के लिए अंत कर देने की अपेक्षा भी की है। कवियों ने यह विश्वास भी प्रकट किया है कि एक दिन इस साम्प्रदायिकता का अंत अवश्य होगा।

समाज सुधार के जा प्रयत्न प्रारम्भ हुए हैं उन्हें प्रगतिवादी गीतों में गंभीरता पूर्वक अभि यक्ति दी गई है। नारी जाति की स्वायत्तता का समर्थन अस्पृश्यता की भावना का विरोध समाज में व्याप्त शोषण अमान्यता आदि के प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित कर कवियों ने राष्ट्र के प्रति जागरूक दृष्टि का प्रमाण दिया है। मानवता के सहार-युद्धों का विरोध करते हुए देश की शांति प्रिय जनता की आकांक्षाओं को भी प्रगतिवादी कवि ने पूरे उत्साह से प्रदर्शित किया है। व्यापक रूप से चलाये गये शांति-आन्दोलन में भी उसका सहयोग उल्लेखनीय है।

प्रगतिवादी कवियों का देश प्रेम वस्तुतः उनकी राष्ट्रीय भावना तथा राष्ट्रीयता का एक अंग है। देश की धरती हो अथवा उसके निवासी उसका अतीत हो अथवा उसका वर्तमान सबको प्रगतिवादी गीतों में समान रूप में स्थान मिला है। धरती कवि के लिए माता के समान है जो उसे धारण करती है। वह उसकी स्तुति मात्र को ही पर्याप्त नहीं समझता उसके लिए कठोर जम की भी मांग करता है। उसे गव है कि धरती उन सब वस्तुओं की दात्री है जो देश की सुख ममृद्धि के मूल उपादान हैं और उनके सम्मिलित रूप को ही कवि भारतमाता की पदवी देता है। उसका भारतमाता की कल्पना पूरे युगों की भाँति मान भावना पर आधारित नहीं प्रत्युत ठोस है। कवि की अनुभूति उस समय अधिक मार्मिक हो उठती है जब वह सम्पन्नता के अनेकानेक साधनों को होते हुए भी अपने देशवासियों को अभावों और दरिद्रता में तन्पने देखता है और तभी उसे भारतमाता भी भूल में सनी उत्पन्न और आत्म दीप्ति पत्नी है। माता की यही दुःख उस सधय के लिए प्रेरित करता है। कहा जा सकता है कि देश की धरती के प्रति गीतों में यह दृष्टिकोण अधिक वास्तविक व ग्राह्य है।

जहाँ तक देश के अतीत का सम्बन्ध है प्रगतिवादी गीतों में कवियों का निराला करतार भी अनेक पौराणिक एवं ऐतिहासिक जाह्यानों को नय

रूपों में प्रस्तुत किया है। येन की सांस्कृतिक निधि को नाना प्रकार से उद्घाटित किया है। उसके गत समय पर गौरव प्रकट किया है। वर्तमान के सम्बन्ध में प्रगतिवादी कविता का मायता है कि अपने श्रम संगठन और सघन से जनता शोध ही वर्तमान विषयनाओं का अंत कर मुक्त और समता से पूरा एक नये भारत का निर्माण करेगी।

यस्तुत प्रगतिवादी गानों में राष्ट्रीय भावना के पोषक तत्वों तथा राष्ट्रीय भावना का शक्तिशाली बनाने वाला आधार शिलाज्जा की स्थापना हुई है। राष्ट्रीय भावना का पुष्ट करने में प्रगतिवादी गानों का इनका अधिक हाथ है कि यदि हम यह कहें कि राष्ट्रीय भावना के मूल में प्रगतिवादी गानों का रस है तो अतिशयोक्ति न होगी।

मन-मनता के पश्चात् का हिन्दी गान-काव्य प्रगतिवादी प्रवृत्तियों की नींव पर ही राष्ट्रीय भावना का विनाश भवन खड़ा करता है। उसमें राष्ट्र के प्रति आत्मायत्ता का चित्रण जितने रूपों में हुआ है उन सबमें देश की जनता के लिए 'आपण मुक्ति और नव निर्माण का सपना निहित है। हिन्दी काव्य का नई कविता' नामक घास नए प्रयास के पक्षों में पड़कर अपने विनाश का नई दिशा यात्रा हुई जन-जीवन की विराट् भाव भूमि से दूर जा रही है। किन्तु गान-काव्य ने राष्ट्रीय भावना का प्रतिनिधित्व करके उस पुनर्जन जीवन में सम्मिलित करने का महत्वपूर्ण योगदान निभाया है। भारतीय स्वायत्तता-संग्राम के लिए अनुकूल चेतना प्रसारित करने तथा सघन के लिए प्रतिदाना मिला उत्पन्न करने में यह भावना का स्वतन्त्रता से पूरा जा या या स्वातन्त्र्यांतर हिन्दी गान-काव्य ने भी उसमें स्वतः उस योग्यता का निराह किया है। विना प्रचार के प्रचार या आन्धकार का उन्मत्त लिए आरम्भकता नए पक्ष। यही कारण है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी में जितने काव्य या साहित्य का रचना हुई है उसमें राष्ट्रीय भावना का काव्य सबसे अधिक स्थान घेरता है। हिन्दी के जितने काव्य-ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उनमें १ अधिकांश काव्या में राष्ट्रीय भावना का प्राधान्य है। पत्र-पत्रिकाओं में भी गीतों का प्रचार अधिक हुआ है। उनमें सबसे अधिक शीत राष्ट्रीय भावना पर है। हम उन गीतों में राष्ट्रीय भावना का निम्नांकित रूपों में अभिव्यक्ति देखते हैं —

- | | |
|--------------------------------------|------------------------------|
| १. स्वातन्त्र्योन्मत्त की अभिव्यक्ति | २. श्रेष्ठनिर्माण की अनुभूति |
| ३. राष्ट्रीयता का चेतना। | ४. राष्ट्रीयोद्धारकों पर गव। |

- ५ राष्ट्र ध्वज की बान्ना । ६ राष्ट्र की सस्कृति पर गौरव ।
- ७ राष्ट्र भाषा प्रेम । ८ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता ।
- ९ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा । १० राष्ट्र-सुरक्षा के लिए उद्बोधन ।
- ११ राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना ।
- १२ सामान्य जनता के प्रति सहानुभूति ।
- १३ देश की प्रकृति से प्रेम । १४ जन-श्रम की महत्ता ।
- १५ राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा । १६ सम्प्रदायवाद का विरोध ।
- १७ राष्ट्र-द्वेषियों की निन्दा ।

पूर्वोक्त रूपों में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना के निम्नांकित मुख्य पक्ष माने जा सकते हैं —

(अ) राष्ट्र-स्वातन्त्र्य — इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के निम्न स्वरूप लिए हैं —

- १ स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति
- २ राष्ट्र ध्वज की बान्ना
- ३ राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान

(आ) राष्ट्र निर्माण — इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

- १ राष्ट्रोत्थान की चेतना
- २ जन-श्रम की महत्ता
- ३ नव निर्माण की प्रेरणा

(इ) राष्ट्रीय-एकता — इस वर्ग में निम्न सात विभाग सम्मिलित किए हैं —

- १ राष्ट्र की सस्कृति पर गौरव
- २ राष्ट्र भाषा प्रेम
- ३ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता
- ४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा
- ५ देशाभिमान की अनुभूति
- ६ देश की प्रकृति से प्रेम
- ७ सम्प्रदायवाद का विरोध

(ई) राष्ट्र-सुरक्षा — इस वर्ग में निम्न तीन स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

- १ बलिदान की भावना
- २ राष्ट्र-द्वेषियों की निन्दा
- ३ सुरक्षा के लिए उद्बोधन

राष्ट्रीय भावना से पूर्ण भीतों का विवेचन निम्न वर्गीकरण व आधार पर अगत प्रकरणों व अतगत प्रस्तुत करूँगी। अध्ययन की सुविधा का दृष्टि से तथा अनेक भीतों को एक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत कर विश्लेषण की दृष्टि से मैंने निम्न वर्गीकरण किया है। प्रयास तो यही रहा है कि यथा-सम्भव उन सभी भावनाओं का स्थान दूँ, जिन्हें राष्ट्रीय भावनाएँ कह सकते हैं। तत्पश्चात् भी कोई भावना स्थान नहीं पा सकी है तो क्षमा-याचना के अभाव चारा ही क्या है? अस्तु गीतकारों के विभिन्न स्वर सुनने के लिए नया पकरण दक्षिणा।



- ५ राष्ट्र ध्वज की वन्दना । ६ राष्ट्र की संस्कृति पर गौरव ।
 ७ राष्ट्र भाषा प्रेम । ८ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता ।
 ९ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा । १० राष्ट्र-सुरक्षा के लिए उद्बोधन ।
 ११ राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना ।
 १२ सामान्य जनता के प्रति सहानुभूति ।
 १३ देश की प्रकृति से प्रेम । १४ जन-श्रम की महत्ता ।
 १५ राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा । १६ सम्प्रदायवाद का विरोध ।
 १७ राष्ट्र-द्रवियों की निंदा ।

पूर्वोक्त रूपों में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना के निम्नांकित मुख्य पक्ष माने जा सकते हैं —

(अ) राष्ट्र-स्वातंत्र्य — इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के निम्न स्वरूप लिए हैं —

- १ स्वातंत्र्योत्साह की अभिव्यक्ति
- २ राष्ट्र ध्वज की वन्दना
- ३ राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान

(आ) राष्ट्र निर्माण — इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

- १ राष्ट्रोत्थान की चेतना
- २ जन-श्रम की महत्ता
- ३ नव निर्माण की प्रेरणा

(इ) राष्ट्रीय-एकता — इस वर्ग में निम्न सात विभाग सम्मिलित किए हैं —

- १ राष्ट्र की संस्कृति पर गौरव
- २ राष्ट्र भाषा प्रेम
- ३ राष्ट्रीय सम्पत्तिक प्रति आत्मीयता
- ४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा
- ५ दशमिमान की अनुभूति
- ६ देश की प्रकृति से प्रेम
- ७ सम्प्रदायवाद का विरोध

(ई) राष्ट्र-सुरक्षा — इस वर्ग में निम्न तीन स्वरूप सम्मिलित किए हैं —

- १ बलिदान की भावना
- २ राष्ट्र-द्रवियों की निंदा
- ३ सुरक्षा के लिए उद्बोधन

राष्ट्रीय भावना छ पूण गीतों का विवेचन निम्न वर्गीकरण के आधार पर अगल प्रकारणों क अतगत प्रस्तुत करू गी । अध्ययन की सुविधा का दृष्टि ॥ तथा अनेक गीतों का एक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत कर विश्लेषण की दृष्टि से मैंने निम्न वर्गीकरण किया है । प्रयास ता यही रहा है कि यथा-सम्भव उन सभी भावनाओं को स्थान दू जिन्हें राष्ट्रीय भावनाए कह सके हैं । तत्पश्चात् भी कोई भावना स्थान नहीं पा सकी है तो क्षमा-याचना क अभाव का हारा हा क्या है ? अस्तु गीतकारों क विभिन्न स्वर भुनन क लिए नया पकरण दल्लिएगा ।

१९४७ में भारतवर्ष अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुआ था ।
 भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए जितने दुःख उठाये जितने संघर्ष किए जितने
 बलिदान हुए तब कहीं तिरंगा राष्ट्र ध्वज फहराया और स्वतन्त्रता के
 उल्लास का अनुभव हुआ । स्वाधीनता संग्राम के नतीजों में संघर्ष किया
 प्रयत्न किए जनता ने आरंभ प्राप्त पाग दिया । परन्तु अब स्वतन्त्रता प्राप्त
 तो देश में हृष की नहर दौल गई । हिन्दी कवियों ने अपना उल्लास गाता में
 व्यक्त किया । उन्होंने राष्ट्र ध्वज की कला तथा राष्ट्रद्वारकों के
 गुण गाये । प्रस्तुत प्रकरण में पिछले अध्याय में दिये गए वर्गीकरण के
 अनुसार प्रथम पाँच राष्ट्र-स्वातन्त्र्य संबंधी भावा का अनुशीलन प्रस्तुत है ।

१ स्वातन्त्र्योल्लास की अभिव्यक्ति — वर्षों से पराधीनता की शृंखला में
 जकड़ी हुई जनता निराशा के गहन विमिर में जातों विरह में डूबने का
 प्रयास कर रही थी । नौजवानों का रक्त स्वतन्त्रता पाने का बलिदान देने
 को मंचल रहा था । न जान कितने वीरों ने अपने रक्त में देश की रंग
 दिया कितने वीरों की माँ पुत्र विहाल हुई कितनी बहना न अपना माइया
 को छो दिया कितनी संघर्षों के सुहाग की नाला पुछ गई और सब कहीं
 इतने बलिदानों के पश्चात् जब देश की पराधीनता की शृंखलाएँ टूटकर
 बिखर गई तो जनता हृष विमोह हो उठी । स्वतन्त्रता पाने के उल्लास में
 कवियों ने अनेक रचनाएँ की । गीतकारों ने मुक्ति पाकर नवीन स्वरों को
 सुनार कर लिया और जन जन की जिह्वा पर गीत धिरक्न लगे । स्वाधीनता
 पान पर हृष का जा पारावार उमड़ा तो गीतकार के अन्त स्रोत ने उस
 आनन्दानुभूति को गीता के रूप में समनी-बद्ध किया । हृष की उस अभि-
 व्यक्ति का स्वरूप नव-नव रूपों में कामल स्वरों में गीता के रूप में जनता के
 सम्मुख आया । गीतकार को एकाएक अपना आज़ादी का विश्वास
 नहीं हुआ था—

बरसा बिजल म बानी रह मैं मुक्त हुआ हूँ अमो-अमो ।^१

दुःस्वप्न दख बरवादी का
विश्वास नही आजादा का,

स्वाधीनता का आगमन जन जन म नय जीवन का आगमन सिद्ध हुआ । कवि नरिन न दुसा सदभ म नय जाश नये प्राण तय जीवन और नयी ज्ञान नया विश्वास तथा स्वाधीन प्रकृति का चचा इस प्रकार की —

जीवन जीवन म एव नया विश्वास जगा ^२
विस्मृत बन्धी आँखें मने इतिहास जगा ।
स्वाधीन हुआ गौरव सन्ति भारत महान
उठ चला तिरंगा ताल बिज पर साभिमान ।

तुम कहत हा स्वाधीन वतन
स्वाधीन आज तन मन जीवन
स्वाधीन नदा भीलें पहाड
स्वाधीन पवन स्वाधीन गगन ।

सभी कुछ परिचित है गया । नय परिवर्तन म नय का ही चर्चा हुई । कारण स्वतंत्रता के पश्चात् सभी नवीन अनुभूतियाँ हा रही थी । नये परिधान म दृष्टिगत होने वाली प्रत्येक वस्तु नव उत्सास भर रही थी । गरुतत्रि इस नयी वस्त्रा म चीन सा ज्ञान गाया जाय कवि के लिए भमस्था बन गया । अथार हथ का व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द विधान चाहिए था । हर्षोत्तम कवि ह्वायन की अभिव्यक्ति करत हुए—

एम्बाग जनररी ! क्या हा वस्त्र तेरा^३
सरी पूजा म चीन गीत मैं गाऊँ
हर प्राण तुम्हार गौरव म हुआ है
यह गाथा मैं किन छंदों म दुहराऊँ ?
यह जा हरीतिपा ओढे धरती पसी
यह जो सारंगी अम्बर भूम रहा है
यह जो बाग का तोड़ निपल आया है

१ पु० मधु की रान और जिन्या रघ० विरजान पृ० स० ६२

२ पु० धरती के बान जयनाथ नरिन पृ० म० ३७

३ पु० हिमालय के पाण्डु, रघ० आनन्द मिश्र पृ० स० ६०

भाखाद पवन खेतों में धूम रहा है—
यह सब तेरे स्वागत का साज सजा है
छब्बीस जनवरी ! कौन गीत में गाऊ ?

गणतन्त्र दिवस को पवित्र त्यौहार के रूप में मानकर प्रकृति की नसर्गिक साज सज्जा को इसी के स्वागत का विधान माना । अतः हा नहीं छब्बीस जनवरी को अमरता के विषय में तिवारी जी के उद्गार—

जन परायेण राजसत्त तू जमर है ^१
जनवरी छब्बीस शुभ तब तक अमर है
जब तक जनता अमर है भारत अमर है
राजसत्त ! रूपसि ! तू ही अमर है ।
रूप अमर यौवने ! तू ही अमर है ।

स्वाधीनता दिवस का स्वागत करने में भी गीतकार पीछे न रहा और उस श्रेष्ठ दिवस के उपनयन में गाया—

स्वागत भारत के वर बिहान ^२
पन्द्रह अगस्त के मधुमय महान ।
आओ फलाओ हिमगिरि पर
हम रश्मिया का मुञ्चान ।
विस्मित हा विश्व देव जिसको
ऐसा चमका दो देश भाल ।
गूँजे अम्बर में कीर्ति गान ।
ओ वर अगस्त मधुमय महान ।

स्वातन्त्र्योत्साह की अभिव्यक्ति का नव-स्वरूप श्री गोपालसिंह नेपाला के गीत में—

निज राष्ट्र के शरीर के सियार के लिए ^३
तुम कल्पना करो मवीन कल्पना करो तुम कल्पना करो ।
अब देश है स्वतन्त्र मदिना स्वतन्त्र है

१ पत्रिका योजना ख० रमेश नारायण तिवारी पृ ४ १५ जनवरी १९६३

२ जयधोय डा रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ ४ २५

३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १८ अगस्त १९६२ पृ ४ १३

मधुमाम है स्वतन्त्र चाँदनी स्वतन्त्र है
हर दीप है स्वतन्त्र रोशनी स्वतन्त्र है
अब शक्ति की ज्वलन्त दामिनी स्वतन्त्र है
लेकर अनन्त शक्तियो सदा समृद्धि की—

तुम कामना करो किशोर कामना करो तुम कामना करो ।

राष्ट्र जो अब स्वतन्त्र होकर अपना हुआ है उसी के शृंगार-हेतु
गीतकार कुछ उपकरण एवत्रित करना चाहता है । अब देश पृथ्वी मधुमास
चाँदनी दीप रोशनी आदि की स्वतन्त्रता प्राप्त कर कवि सत्त्व समृद्धि की
कामना करता है । स्वतन्त्रता के पश्चात् ही नवीन कल्पना करके राष्ट्र की
प्रगति का स्वरूप निश्चित किया जा सकता है । १५ अगस्त १९४७ को
स्वतन्त्रता दिवस मनाने से पूर्व कितने वीरो ने अपना बलिदान दिया कितने
तरुण देश के लिए आत्मत्याग कर अनुपम बलिदान की कहानी कहने के लिए
गीतकार की नेलनी को स्वतन्त्र कर गये—

कितने महान बलिदानों की अनुपम साकार कहानी है ।^१
भारत की तरुण सपस्या की तुम एक ज्वलन्त निशानी हो
तुममें भावी की गति प्रशस्त अभिवादन है पन्द्रह अगस्त ।

पन्द्रह अगस्त का अभिवादन किया गया स्वतन्त्रता के उन्नाम में गीत
कार को प्रतीत हुआ कि स्वाधीनता-दिवस भूमि पर स्वयं नजर आया है—

सा स्वयं उतर आया भू पर^२
मिट गया दासता तिमिर-अंध
मृत गय राष्ट्र के कठिन बंध
बग-बग में नव जीवन भरता
पृथिवी का ज्योति रूप मुघर

स्वाधीनता दिवस पर घर घर में दीपरात्रि ने प्रकाश भर दिया जा
गवधा मंत्राण था—

दीप जल उठे । दीप जल उठे ।^३
श्रमिक किसानों का बुनियाद

१ हिमानन्द व घोष रच आनन्द मिश्र पृ ५

२ नवीन रच गंगाप्रसाद पाण्डेय म० प्र १८५४

३ गोरख-गान, रच रामगोपास शर्मा दिवस पृ० ॥ २७

ग्राम-ग्राम में, नगर-नगर में
अधकार में पने युगो से
उन पुरुषों के डगर डगर में ।
ले अभूत आलोक चिरन्तन
जगमग जगमग दीप जन उठे
दीप जन उठे ! दीप जल उठे !

वधन में वधे मुनामी की जजीरा में जकड़ ब कृपक जो सबसे अधिक
श्रम करते थे और सबसे अधिक गरीब थे वे भी स्वतन्त्रता का महत्व समझने
लगे । इस उपलक्ष्य में उस गरीबी में भी चिर-अधकार का दूर कर ग्राम ग्राम
में दीप प्रज्वलित किये गए जिनका प्रकाश चिरन्तन है । मुक्ति का नव
गीत गाती हुई विहंग-पक्षि भी हृष विमोर होगई—

आज कोकिल ने प्रथम आलाप पथम में मुनाया ।^१

नवन पल्लव तार पर
माहत नई बीणा बजाता
मुक्त विहंग का चपन दल
मुक्ति के नव गीत गाता

हृष का नव रंग का नव गंध का नव ज्वार घाया ? देश का सभी
कुद्ध नय परिधान में दृष्टिगत हुआ । सभी कुद्ध नया हुआ गया जस नव का
ज्वार आया । सारे बलिदान सफल हो गए मगन गान आरती से भारती का
स्वर गूँज उठा—

सफल हुए बलिदान घरा पर स्वर्ण विहान हुआ ।^२

हर हर पेड़ों से धरती पर माती भरते ।
नय दश में नये रंगीले नये रूप धरते ।
अरणादय होगया आरती का स्वर गूँज उठा ।
बीणा बजाने लगा भारती का स्वर गूँज उठा
आज शहीदों की समाधि पर मगन गान हुआ ।
सफल हुए बलिदान घरा पर स्वर्ण विहान हुआ ।

पराधीनता के अन्त के साथ उन सभी आधिया का अंत हुआ गया
जिनसे देश की हानि पहुँचने की सम्भावना थी । नये आलाप में नव माग

१ गणिका एवं मकराना माहेश्वरी पृ. २

२ तल्लव-तार रच रघुवीर गगन मिश्र मयू २०१०

प्रशस्त किया जो पूरा रूपेण मंगल भय था । विष घट फूट चुका था और
इसान जागृत हो गई राह बनाने में सलग्न होना चाहता था । कवि ने उस
सब की मंगल कामना की—

नये आलोक के जन देवता का पथ मंगल हो ।^१

अरुणमय पथ मंगल हो ॥

गई भव हूब शोषण आंधियों की विष भरी छाह
पिरी आकाश में व प्रलय-सी इसान की बाह
पुरातन सप फन का कुचलकर उगती गई राह
मनुज की जीत के इस देवता का पथ मंगल हो ।
किरणमय पथ मंगल हो ॥

नव-स्वतंत्रता के साथ नव-जीवन का सौ बार स्वागत करते हुए
"गाग्रसाद पाण्डेय का गीत दृष्टव्य है—

शांत स्वागत नव-जीवन हे !^२

नव-स्वतंत्रता की सुष-सुषमा
अखिल मनुज की गौरव-गरिमा
नव विकास नव-पुलक प्राणप्रद
नव नव भावन ह ॥

समस्त मनुष्य मात्र की गरिमा बढ़ गई और गई पुनः प्राणवान थी ।
शकुन्तला सिराठिया का भावाभिव्यक्ति उस प्रकार की है—

सुहागिन ! करन नव शृंगार^३

हृष-पुनव से धरता का कण कण करद छविमान ।

पायन का हनेभुन गुज स्वतंत्रता का गान ।

सुहागिन ! करन नव शृंगार

कविवर बच्चन ने स्वतंत्र हिन्दुस्तान का आह्वान किया । शायद महाद
कांति-वीर तिरंगा ध्वजा, ब्रह्मातरम् गान सभा का अपनी समझना में समद्वन
का प्रयत्न किया—

१ गानि सोच रच नरेश मेहता पृष्ठ ६२

२ नवीना रच गगाप्रसाद पाण्डेय स १९३४

३ पाण्डेय दत्ता हेला रच शकुन्तला मिर्गाठिया

कर रहा हू आज मैं आजाद हिन्दुस्तान का आह्वान ।^१

० ० ० ० ० ० ० ० ०

है मरा एक दिल में आज बापू के लिए सम्मान
हैं छिड़े हर एक दर पर तानि बीरों के अमर आख्यान
हैं उठ हर एक घर पर देश गौरव के तिरंग निशान
गूजता हर एक कण में आज वंदेमातरम् का गान
हो गया है आज मेरे राष्ट्र का सीमाग्य स्वर्ण विहान
कर रहा हूँ आज मैं आजाद हिन्दुस्तान का आह्वान ।

गीतकार को अर्थ हुआ स्वतन्त्रता मिल जाने के कारण कही बलिदान का भावना समाप्त न हो जाए । वही इतना आनन्द न हो जाए कि पुन देश पर सकल के बान्धन फिर भाव और राष्ट्रवासी उसकी रक्षा करने में असमर्थ हों । स्वतन्त्रता को अमर बनाने की कामना करते हुए—

इस स्वतन्त्रता की अमर ज्योति की ज्वाला मन्द न हो ^२

प्राणों का स्नह चटाने की यह धारा बंद न हो
है अमी अमी कन से उजियाली छाई आगम न
है अमी अमी कन से हरियाला छाई उपवन में
है अमी अमी कन से खुशियाली आई तन मन में
आनन्द प्रमद मत बनो कि ऐसे फिर आनन्द न हो ।
प्राणों का स्नह चटाने का यह धारा बंद न हो ।

इसा प्रचार और अन्य गीतकारों ने भी हृष की अभिव्यक्ति की । हिन्दी गीत का यह स्वतन्त्रता की हार्मोनिक्स की अभिव्यक्ति अत्यन्त विशद रूप में हुई है । उनमें देश की जनता का हृदय बानता है ।

२ राष्ट्रध्वज की वन्दना — प्रत्येक राष्ट्रवासी अपने राष्ट्र को स्वतन्त्र रूप में हाँदलना चाहते हैं । किसी अन्य राष्ट्र का अकुश उन्हें असह्य है । प्रत्येक राष्ट्र का अपना राष्ट्रीय गान होता है एवं अपनी राष्ट्रध्वज जानती है । स्वतन्त्रता दिवस पर सहस्राती ध्वजा कवि का जिस प्रकार आनन्दित करती है वह उस भावना को गान में बाध कर साकार रूप में देता है । यद्यपि अनुभूति समी करत है किन्तु गीतकार या कवि के अगाध अर्था के लिए

१ धार व इधर उधर रच हरिविष्णुराय वचन पृ० सं० ३६

२ सामाहिक हिन्दुस्तान साहलाल त्रिदी अथ २ प्रवृत्त १६६६

वह अनुभूति करने की ही वस्तु रह जाती है, बणन की नहा । तबानि नेपनी द्वारा त्रिम रूप म कवि अपने शब्दों म उस अनुभूति को प्रगट करता है वह कवि की व्यक्तित्व अनुभूति न रहकर सभी की अनुभूति बन जाती है । वह अपनी स्वतंत्रता क व शांति के प्रतीक, ध्वज को ऊचा फहराते देष अपने हृप को प्रदर्शित करता है राष्ट्रीय-गान सुनकर भाव विभोर हो जाता है । राष्ट्र ध्वज की नम्र-स्वर म बदना करता है और तिरंगी पताका के नीचे एकत्र राष्ट्र बासी एकता के सूत्र में बंधे विजय घोष करते ह । प्रत्येक राष्ट्र की ध्वजा उस राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है । हमारी राष्ट्र ध्वजा म तीन रंग हैं । तीन रंगों को हमारी राष्ट्रीय ध्वजा को 'तिरंगा' का सम्वाधान मिला है । तीन रंग प्रमग केसरिया श्वन और गहरा हरा है । इन ताना रंगों का अपना निजी विशेषता है । तिरंग मन्डे के साथ तीन माननाए सत्व तरंगित होती रहती हैं । केसरिया रंग का अर्थ है कि राष्ट्र वीर और गतिशाली है । श्वेत रंग का भाव राष्ट्र में शांति और अहिंसा की स्थापना है । हरा रंग इस बात का प्रतीक है कि देश धन धान्य स परिपूर्ण हो और भूमि शस्यश्रमामला रह । तिरंगी ध्वजा के मध्य एक चक्र का चिह्न भी प्रकृत है । अन्वया प्रमिप्राय यह है कि तीनों रंग प्रतीका म सम्बन्धित प्रत्येक भाव सत्व गतिशील रह ।

कविवर पत ने राष्ट्रीय ध्वजा के गौरव के सम्मुख सहस्रशः भारत मागिया का नतमस्तक कर एकता का भाव चिचित्त किया है—

गगन चुधि विजया तिरंग ध्वज^१

इन्द्र चापमत ह ।

कोटि-कोटि ह्य श्रमजीवी मुन

सभ्रम समुत ह ।

सब एक मत एक ध्यय रत

सबश्रम व्रत ह ।

जन भारत ३ ।

जागृत भारत ह ।

राष्ट्रीय ध्वजा की कीर्ति को उमि गिरफर गाषान प्रनाश को निरणा की भांति विस्तृत कर देना चाहते हैं । तिरंग मन्डे का रंग का प्रन्ना ओर

सारथी मानत हैं क्योंकि देश रक्षा जीव देन पर चरितान होने की भावना अपने राष्ट्र के प्रतीक को देखकर अधिक तीव्र होता है। उन्होंने तिरंगे ध्वज को नेत्र सास जीवनी और भारती के रूप में स्वीकार किया है। कवि ने इस भावना का अवन करना चाहा है कि इसके बिना हमारा अस्तित्व ही नष्ट। यदि हम उनकी रक्षा नहीं कर सकते तो राष्ट्र की रक्षा नहीं कर सकते। यदि राष्ट्रीय ध्वजा के प्रति सम्मान सूचक दृष्टि नहीं रख सकते तो हम अपने राष्ट्र के लिए भी कुछ नहीं कर सकते। कवि कहता है—

तिरंग और ऊँचे जोर तहराशा १

हमारी शक्ति माहम कामना तुम हो
तुम्हीं पाथेय हो प्रण प्ररणा तुम हो
तुम्हीं प्रहरी सहोदर सारथी तुम हो
नयन हो नाम हो गति भारता तुम हो ।

नमन हो यह वरद कर और फटाफट
प्रगति के पृष्ठ नित नव जोड़ते जाओ ।

राष्ट्र ध्वज की अन्तता की बात कब्रत हुए कविवर वचनजी के प्रकार बताना करते हैं —

नगाधिराज शृंग पर खड़ी हुई २
समुद्र की तरंग पर खड़ी हुई
स्वदेश में सभी जगह गनी हुई
झटन ध्वजा
हरी सफेद
केसरी ।

श्री रघुवीर शरण मिश्र ने तिरंग ध्वज की प्रशस्ति अन्कारिक भाषा में इस प्रकार की है —

एक दीप में तीन बस्तियाँ हरी श्वेत पीली उजियानी ।^१
एक बूद के तीन तीन गुण आत्मा एक तिरंगी प्यानी ॥

१ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ मई १९६३ कवि गिरधर गोपाल प १६

२ पार के धर-उधर रथ हरिवंश राय वचन प० स० ५६

३ जमते तारे, रथ रघुवीर शरण मिश्र प्र स २०२० सप्त

जिस रंग का गिलास होता है बन जाता उस रंग का पानी ।

तीन युगा में लिखी हड है जीवन की अनमोल कहानी ॥

त्रिनेशजी ने राष्ट्र ध्वजा के सम्मान सूचक गीतो में अपार जयघोष

मर दिया है -

जय चक्र-पताका जय हो !^१

जय पुष्प-पताका जय हो !

गंगा, यमुना का सहारा में

जय जय स्वर लहरी पुलक उठा

हिमगिरि की अंतर ज्वाला भी

मधुमय स्वर में कुछ किलक उठी

जय धोल उठ भारतवासी

जय चक्र पताका जय हो !

जय राष्ट्र पताका जय हा ॥

श्री भरतनाम निरण का महत्व राष्ट्र के साथ बताने हुए लिखते हैं

राष्ट्र का रंग चल रहा है।^२

० ० ० ० ० ०

रक्त रजित ध्वज तिरंगा

यद्यपि रवि चक्र धाम

शुभ्र धागा में गहीदो की निशानी

शुद्ध गहर में जवानों की जवानी

राष्ट्र रंग के शीश पर

फहरा रहा है

मरग की जय का सबल मन्त्र देता

नील नम की गोले में नहरा रहा है ।

कवि सुब्रह्मयम भारती ने तिरंगे भङ्ग की मत्ता की ही अभिव्यक्ति नहीं की बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को उसे नमन करने के लिए भी संबोधित किया है । उनकी भावना है कि समस्त भारतवासी चाहें वे किसी भी क्षेत्र के नाम । सम्भाषित किए जाने हों और कोई भी भाषा बोलते हों, एक भँडे के

१ जयघोष डॉ० रामगोपाल वर्मा त्रिनेश पृ सं ६४

२ बसो सिपाही बसो पृ सं २६-

सारथी मानते हैं क्योंकि देश रक्षा और देश पर बलिदान होने की भावना
अपन राष्ट्र के प्रतीक को देखकर अधिक तीव्र होना है। उन्होंने तिरंगे ध्वज
को नेत्र साँस जीवना और भारती के रूप में स्वीकार किया है। कवि ने
ऐसी भावना का अंकन करना चाहा है कि हमारे बिना हमारा अस्तित्व ही
नहीं। यदि हम उनकी रक्षा नहीं कर सकें तो राष्ट्र की रक्षा नहीं कर
सकते। यदि राष्ट्रीय ध्वजा के प्रति सम्मान सूचक दृष्टि नहीं रख सकें तो
हम अपन राष्ट्र के लिए भी कुछ नहीं कर सकते। कवि कहता है—

तिरंग और ऊँचे और गहराया ।^१
हमारी शक्ति माहम कामना तुम हो
तुम्हीं पाथेय हो प्रण प्ररणा तुम हो
तुम्हीं प्रहरी सहोदर मारथी तुम हो
नयन हो मास हो गति भारत तुम हो ।
नमन तो यह वरद कर और फराखी
प्रगति के पृष्ठ नित नव जोड़न जाओ ।

राष्ट्र-दल की अटलता की बात कहते हुए कविवर बच्चनजी का
प्रकार बंदना करते हैं —

नमोऽधिराज शृंग पर खड़ी हुई^२
समुद्र की तरंग पर खड़ी हुई
स्वदेश में सभी जगह गयी हुई
अटल ध्वजा
हरी सफेद
केसरी ।

श्री रघुवीर शरण मिश्र ने तिरंग ध्वज की प्रशस्ति अनकारिक भाषा
में इस प्रकार की है—

एक दीप में तीन बत्तियाँ हरी श्वेत पीली उजियानी ।^३
एक बूद के तीन-तीन गुण आत्मा एक तिरंगी प्यानी ॥

१ पत्रिका साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ मई १९६३ कवि गिरधर गोपाल
पृ १६

२ पार के द्यार-उधर रच० हरिवंश राय बच्चन पृ० स० ५६

३ अमरें तारे रच रघुवीर शरण मिश्र प्र स २०२० सप्त

जिस रंग का गिलास होता है वन जाता उस रंग का पानी ।

तीन युगों में लिखी हुई है जीवन की अनमोल कहानी ॥

निजरा न राष्ट्र ध्वजा के सम्मान सूचक गोती में अगर उपभोग

कर लिया है -

जय चक्र-पताका जय हो ।^१

जय पुण्य-पताका जय हो ।

गंगा, यमुना का सहरो में

जय जय स्वर लहरी पुनः उठा

हिमगिरि की अंतर ज्वाला भी

मधुमय स्वर में कुछ बिलक उठी

जय धोन उठ भारतवासी

जय चक्र-पताका जय हो ।

जय राष्ट्र-पताका जय हा ॥

यही भगत भी तिरंग का महत्व राष्ट्र के माथे धत्ताते हुए लिखते हैं

राष्ट्र का रथ चल रहा है ।^२

■ ○ ○ ○ ○ ○

रक्त रजित ध्वज तिरंगा

यक्ष गन्ध रवि चन्द्र धाम

शुभ्र धामा में गद्गदों की निशानी

शुद्ध गहर में जवानों की जवानी

राष्ट्र रथ के शीश पर

फहरा रहा है

सत्य की जय का सबल मन्त्र देता

नील नम का गोद में गहरा रहा है ।

कवि मुद्रप्रदम्भ भारतीय न तिरंग झंडे की महत्ता की ही अभिव्यक्ति नहीं की बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को उस नमन करने के लिए भी गवोधित किया है । उसकी भावना है कि समस्त भारतवासियों चाहें वे किसी भी क्षेत्र के नाम से सम्बोधित किए जान हों और कोई भी भाषा जानते हों एक मन्त्र के

१ जयधोप डॉ० रामगोपाल शर्मा 'विनेश' पृष्ठ ६४

२ जलो सिपाही जलो पृष्ठ १६

सम्मुख नमन करें। जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र एकता की भावना में गुंथ जाय और संगठित हो जाय। इन भावनाओं से संबंधित गीत दलिय धर्मयुग २६ जनवरी १९६५ का अंक—

३ राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान —

स्वाधीनता के पश्चात् लिखे गये हिन्दी गीत काय में राष्ट्रोद्धारकों का भी विभिन्न रूपों में गुणगान हुआ है। वही गौरव का अनुभव किया है तो वही राष्ट्र के लिए बलिदान हुए वीरों व महान पुरुषों का स्मृति में कहना भी यत्न की है। राष्ट्रोद्धारकों में महात्मा गांधी का स्थान प्रथम माना जाता है। उनके हृदय को सम्प्रदायवाद ने तो विदीप्त कर ही रखा था ऊपर से एक हत्यार ने गोली चलाकर उनके हृदय का शत बिन्दु नष्ट कर दिया। कवि रो सठा जन हृदय आत्मग्लानि से भर गया। पर राष्ट्र की महत्ता का वह प्रतीक नीटाया न जा सका। हिन्दी के प्रमुख गीतकार अचन उनके गान्ध-दिवस पर उनका स्मरण करते हुए कहते हैं —

आज राष्ट्र के महापुरुष का सिंहासन है खाली ।
यह कसा लोहार कि खगता इतना सूना-सूना
कसा यह मृत्त जिसमें दुःख नद हो सूना ।
झुका जा रहा क्षुब्ध तिरंगा झन्ना आज हमारा
रुद्ध हो रहा कोटि कोटि कठो में जय का नारा ।
धूम रह लोभे लोभे से तरुण और बलिदानी
शिथिल करो से डोर ध्वजा का खींच रहे सेनानी
देख न पड़ती कही विजय की गौरव की जो वित सली
आज राष्ट्र के महापुरुष का सिंहासन है खाली ।

कवि मेघराज मुकुल न श्री राष्ट्र पिता की मृत्यु पर शाक प्रकट किया। समन्वय का जो वितान सम्पूर्ण भारत पर तानने का प्रयत्न किया था वह टूट गया और उसका विभाजन हुआ हिन्दुस्तान पाकिस्तान के रूप में। बापू ! तुम्हारे बिना इस भारत माँ का शृंगार स्वप्नमात्र रह गया है। युग के भूतघार ! राष्ट्र का मरणा टूट गया राष्ट्रीय भावना की जलती हुई दीप शिखा जिससे देश में सकड़ों दीप शिखाएँ ज्योति प्राप्त कर रही थीं प्रकाश विहीन होकर मद हो गई—

भूगोल यमा आकाश झुका, जब तुम न रहे युग सूत्रधार ।
 आँसू पीकर रह गई व्यथा, आशाओं पर छाया तुपार ॥
 कर गए किनारा जब अपने तब टूटा सतलज का कगार ।
 हिमगिरि की टूटी आन प्रबल दब गया मनुजता का उमार ॥

जब बन्सा भारत-मानचित्र, गिर गया समन्वय का वितान
 तब मेरु-वदन मार घहन कर सके तुम्हीं बापू महान ॥
 अब जीवन पद्धति मुजन-स्वप्न से, माँ कसे करलें सिंगार ।
 भूगोल यमा आकाश झुका जब तुम न रहे युग सूत्रधार ॥

गाँधीजी के अनावाक्य राष्ट्रोद्धारकों के प्रति भी कवियों ने यदा
 गीत अर्पित किए हैं। उनका गौरव गान बिया है अनिदान की भूरि भूरि
 प्रशंसा की है जिसका परिणाम यह राष्ट्र है। त्रांति-अग्नि पहले स्वतन्त्रता
 के लिए सुनगी थी अब जल रही है राष्ट्र के निर्माण के लिए राष्ट्र की
 समृद्धि के लिए राष्ट्र की एकता के लिए। कहीं गीतों में बल्लम भाई पटल
 पर अभिमान प्रगट किया गया है, तो कहीं अमर शहीदों को अथु ग्रथ्य दकर
 पत्रकों पर बिठाया गया है। लोह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटल के प्रति—

यही प्रतिद्वन्द्वी नौह का पुरुष प्रबल,^१
 यही प्रतिद्वन्द्वी शक्ति की शिला छटल,
 हिना हमे सवा यमी न शत्रु-दल
 पत्र पर
 स्वदेश का—
 गुमान है ।

स्वर्गीय श्री गोपाबन्धु नेपाली समस्त शहीदों के प्रति अपनी भाव
 भद्रात्रि अर्पित करते हुए—

बढ़ती बस बतार देश की पुकार पर^२
 धुल छे-दो गई सपना के सिंगार पर,
 पीछे किया करो सिंगार द्वार-द्वार पर,

१ उमग रच मयरात्र मुकुल पृ ११

२ पार के दपर-उपर रच बचन पृ सं ५७

३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ अगस्त १९६२ पृ १३

पहले जले दिया शहीद व मजार पर
 वे देग पर चला गए गरीर फूट-सा
 तुम बदना करो कृतज्ञ बनना करो तुम बनना करा ।

गाँधीजी के युग के पश्चात् नेहरू युग प्रारम्भ हुआ । राष्ट्र-सेवक
 जवाहरलाल नेहरू का डा० दिनेश ने इन शब्दों में गुणगान किया—

नेहरू तुम नर का वाणी दे^१
 बन रहे इतिहास ॥

तुम भय-वम्पित हृदयों का बल
 हथमग धरणा का सम्बल हो
 लुट अधर की मुस्कानें तुम
 माँ की लज्जा व अचल हा
 पहरदार शांति के । तुमस—
 रक्षित हर भावास
 नेहरू तुम नर को वाणी दे
 बदल रहे इतिहास ॥

अमर सेनानी मगतसिंह को कवि मित्र स्मरण करते हैं —

हमन तुमको पच बनाया^२
 तुम हम पर आयाय न करना
 ऐसे करना 'याय कि जस—
 कभी विनमादित्य कर मय ।
 ऐसे 'याय न करना जिसस
 भूना पर निर्णेप चर गय ।

धरती कभी नहा भूना—
 मगतसिंह जसा का मरना
 हमन तुमका पच बनाया
 तुम हम पर आयाय न करना ॥

मानृभूमि की रक्षा हेतु शहादत द्वाद विभूतियों का स्मरण करके कवि
 जागृति का सदेश देता है —

१ गौरव गान डा० प्रियेश पृ० म० ६६

२ भूमि क मगवान रच रघुवीर शरण मित्र पृ० स० १८८

भगतसिंह आजाद, ताँत्या के—^१
बलिदानों की धरती को ।
झोसी की रानी लक्ष्मी क,
भर मिटने की उस मस्ती को ॥

निज तन मन, शरण करके भी
धौब नहीं जाने देंगे हम
मातृभूमि की रक्षा करने,
सबस आज सुटा देंगे हम ॥

निवगत विभूनिया व गीत का वणन करके कवि उमा माध्यम से जन-मन्त्रेण पहुँचाता है । अचल बच्चन तथा गिरिजा कुमार माधुर न देशों द्वारा गहीरा के प्रति हादिक सम्मान और गौरव व भाव प्रकट करत हुए भारतवासियों से निवदन किया है कि उन गहीरा व बलिदानों को हम भूल नहीं जाना चाहिए—अचल जा की भावामिच्छा—

दश प्रेम व मतवालों उनको भूल न जाना ।^२
महाप्रलय का अग्नि-माघ सगर जो जग में आय ।
विश्व बाल शासन के भ्रम जिनके आगे मुरझाये
चल गए जो शाश्वतका अर्थ लिए प्राणा का,
चलो मजारा पर हम उनके आज प्रणोप जलायें

टूट गई बंधन का कड़ियाँ स्वतंत्रता की बरा
मगता है मन आज हमें किना अवसर अपना
पथ फिर तन बलिदानों का विप्लव न पहिचाना ।
दश प्रेम व धो मतवाना उनको भूल न जाना ।

जिन्होंने अपना रक्त देकर राष्ट्र को उन्नति की ओर बढ़ाया उन्हें जनता कहा विस्मृत न कर दे महा शरा कवि को था । बच्चनजी न उनको स्मरण करना अत्यावश्यक समझा जिनके कारण हम फिर उठाकर चलने का अवसर मिला—

१ राणुमेरी रत्न हिन्दी-साहित्य-परिषद् रच० श्री मेनपान मिश्र कोविद
'पंचज' पृ० सं० २०

२ विराम सिंह रच० अचल पृ० सं० ६६

है आज उचिन करना उन वीरों का सुमिरन ^१
 जिनके आसू जिनके लहू जिनके धम-वण—
 से हम मिला है दुनिया में ऐसा अवसर
 हम तान सके सीना ऊंची रख गदन
 आजाद कंठ से आजादी का करें गान
 आजादी का दिन मना रहा हिन्दुस्तान ।

गिरिजाकुमार माधुर भी उह नहीं भूने जो —

दुख दद अभाव भोगकर भी भक नहा ^२
 जा धयायो से रह लूझने बन्ध तान ।
 जो मजा भोगते रहे सदा सच कहने की
 जो प्रभुता पद वाला स नत हुए नहीं
 जा विकन रहे पर कृपा न मांगी धिधियाकर
 जो किमी मूल्य पर भी शरणागत हुए नहा ॥

राष्ट्र पिता का अभिवादन किया पतजा ने—

जय हे ^३

जय राष्ट्र पिता जयजय हे !

• • •

नव प्रभात साए तुम जन प्राण मे
 जावन के अरणोत्थ से हस मन मे
 अपराजित तुम रहे अहिंसक रण मे
 सत्य शिखर के पथ अभय जय जय ह !

नरद्वैपा न गावीजा का स्मृति में गाया —

पद्मनयन याद्यावर ^४

काटि-काटि माय प्रसूत !

अगणित उर मुक्त द्वार,

स्वागत जन धन स्वागत !

• • •

१ धार के पथर उधर डा० बन्धन प्र स १६५७ पृ स ७६

२ गिनापथ चमकान रच गिरिजाकुमार माधुर पृ १४

३ चिदवरा रच सुमित्रानन्दन पत पृ स १८७

४ रक्तचन्दन रच नरद्वैपा पृ स २

भभाये मन्त्रमुग्ध
ज्वालाए हूँ नान ।
हिमा व डूँ ग्व
ठहर तूफान आ
प्रानिपान पान का
गगन प भरगागन ।

आनन्द मिथ न मगन राष्ट्रादारव गांधीजी या अदाजनि अपित
परत हुए बन्ना का—

विश्व के सत्रम बड़े बरतान मरी बदा ला ।^१
क्या निमिर या थय पर बनना तब दुमर हुआ या
जगमगाना क्या गिमक जनना तब दुमर हुआ या
घोर तब नुमना अमय आशिष दुनियाँ का मिना या
आपना या बनना भा जिम नवा हिना या
नम्य व मुनम न सधान मेरी बन्ना नो ।
विश्व व सत्रम बड़े बरतान मरी बन्ना ला ।

बच्चाजा न स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी स्वतंत्रता ज्ञान वान
राष्ट्रादारवा का गुणगान किया । राष्ट्रादारवा पर गौरवानुभूति ना भी क्या
नहा ? उनक मह्याग का भुवाना द भक्त या राष्ट्र कवि का वक्त न नना ।
यदि हम उनका विस्मृत करन हैं तो वक्त व्यच्युत हान हैं । बापू का स्मरण
परत हुए—

आज स आजा अपना देस फिर स ।^२
ध्यान बापू का प्रथम मैने किया है,
क्याकि मुझे स उहनि भर दिया है
नम्य जावन का नया समेष फिर से ।
आज स आजा अपना देस फिर स !

देशोदारकों पर गर करत हुए डॉ० निज न अपन भाव प्रभु ।
गगनपर पर भा बदाय—

जा-वत्तन भाई मागत बा^३
बीरो का मरगा ।

- १ रत्न चन्दन रत्न नरत्न गमा पृ ३२
- २ हिमानय व आनू रत्न आनन्द मिथ पृ ४६
धार व इपर-उपर रत्न बच्चन पृ ७
- ४ जयपार रत्न गमगागन जर्मा निमेष पृ ६७

लौह-गुरुप प्रहरी पटेस वह
महारुद्र अवतार !

जिसके अन्तर ने सागर सी थी विनाशिता पाई ।^१

जा साकार हुई था जिसमें हिमगिरि का ऊचाई ।

गांधीजी की मृत्यु के उपरांत उनके स्वप्ना का साकार करने वाले थे जवाहरलाल नेहरू । जब वह भी महाप्रयाण कर गये तो कवि को विश्वास नहीं हुआ कि वह भी रुठ गये है । भारत के ही नहीं अपितु समस्त ससार के प्रिय थे गांधीजी नेहरू —

कैसे हो विश्वास कि नेता रुठ गया है ?

कभी नहीं वह लौट यहाँ वापिस आयेगा

नेहरू सा मानव नेहरू सा जन हितकारी

भारत क्या ? ससार क्या से भव पायेगा ?

मई १९६४ में नेहरूजी भारत को बिखलता छोड़ गये । तत्पश्चात् नान बहादुर शास्त्री ने भारतवासियों को घबराया । परन्तु भारत के निर्माता और रक्षक शास्त्रीजी भी नीम ही नेहरू से मिलने चले गए । जाते जाते भी चीन के पाक-युद्ध विजय का स्वर सुनते गए । उसी रक्षक नान बहादुर के गीत क्या न गाए जाए ?

साधना अनय है^१

देव तुल्य धन्य है

पाक बल प्रवाह से

चीन की निगाह से

देश को पथा दिया

राष्ट्र को बचा दिया

ऐसे उस प्रबुद्ध के

मेँ गीत क्या न गाऊंगा ।

नान बहादुर शास्त्री का आज का श्वशुर कुमार कहा है । वही श्वशुर कुमार जो मातृ एवं पितृ भक्ति के लिए प्रसिद्ध है । कवि ने भारत माँ का श्वशुर कुमार कहा है—

१ जयपाप रच रामगोपाल शर्मा दिनेश पृ म ६२

२ साप्ताहिक टिबुस्तान २६ मई १९६६ पृ ६ रच श्री रमेश मधुराज

३ वही २७ मार्च १९६६ पृ ३१ रच 'गातिस्वरूप कुसुम'

राष्ट्रीय भावना

शान्ति-सीध के तीर नीर मे प्रतिबिम्बित प्रिय चित्र^१
 भाग्य विधाना भारत-माता का वह श्रवण कुमार ।
 बबल अठारह माह प्रधान मंत्री पद पर काय करके भी वे ऐसे काय
 कर गये कि जनता तान बहादुर क लिए रो उठी और प्रत्येक आँख करछा
 से भर सजन हो गई । जीवन भर राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये सपना किया,
 स्वाधीनता के पश्चात् राष्ट्र निर्माण के लिये परिश्रम किया सदैव मृत्यु से
 ही ड्रमते रहे और जब मृत्यु हा गई तो अमर हो गए सृष्टि की सारी
 मानवता बिलस उठी—

आज कौन सी जो कल्ला से अबरन सजल नहा होता है ?
 आज गृष्टि की सब मानवता तान बहादुर को रोती है ।
 तुम प्रसन्न रहते थे दुःख मे तुम अशांति मे शांति-मूर्ति थे
 जीवन भर तुम रहे मृत्यु मे, और मृत्यु मे अमर होगए

उसे कर दिया तुमने समझ जो कि असंभव सा दिखता था,
 जा जीवन से नहीं कर सके जीवन देकर उसे कर लिया ।
 तुमको सोचर जग जीवन की दति की पूर्ति नहीं होती है ।
 आज गृष्टि की सब मानवता तान बहादुर को रोता है ॥

हृदय की धड़कन रुक जान स उनकी मृत्यु साशवद मे ही हा गई
 जबकि व साशवद घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कर चुके थे । पाकिस्तान क
 साथ युद्ध चल रहा था वह समाप्त हो गया । लेकिन भारत क एक अनमोल
 रत्न को भी समाप्त कर लिया । उम विजय का हथ भी मनाने न पाये कि
 भारत की तरछाई न अपना नेता सा दिया और पीछा मे हुआ कवि का
 हृदय रुदन करते हुए भी अट्टा-मुमन योद्धावर करना न भूना—

आज देश की तरछाई ने मोया अपना नेता^२
 विजय रो रही बिलस बिनसकर खो निज अमय विजता,
 कोटि-कोटि हृदयों के प्यार साल बहादुर तुम पर
 पीछा मे हुआ कवि करता अट्टा-मुमन निछावर
 अमर रहे तेरे सक्लों का भू पर उजियारा
 एक बहादुर साल देश का हुआ राम को प्यारा,

१ यही पृ १७ नरद्वर्ग

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १० अप्रेल १९६६ पृ १४ रश्मि बगपर
 विद्यालवार

३ यही ६ फरवरी १९६६ पृ १४ श्री रवि दिवाकर

भारत के इतिहास में शास्त्रीजी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जायगा जिसका नारा था जय जवान जय किसान—

तुमने नाता जो लिया है जान जाने १

भारत का इतिहास बना मान तुम्हारा ।

तुम भारत सगीत दो देशों में गाया
जो तुमने खर लिया उमी से साज मिलाया
जो भारत में अग्रदूत जो भाग्य विधाता,
आर निमन चन्द्र जगत के शांति प्रगता ।

जय जवान भौ-जय किसान के गाने वाले ।

काटि-काटि जनना करती जयमान तुम्हारा ।

हमारे देश की अनेक महान् विभूतियाँ जिन्होंने आयु पयन्त देश की मुक्ति के लिए प्रयास किये परिश्रम किया स्वाधीनता के पश्चात् एक एक करके वह सभी विभूतियाँ विदा होनी रही और देश में गोक की नहर याप्त होती रही । अभी हम चैन की सास भी नहीं ले पाये कि पुनः नया सफ़ट सामने आगया । इस प्रकार चीन व पाकिस्तान द्वारा हमारे भौगोलिक मानचित्र का विरूप करने का प्रयत्न चलता ही रहा है । हमारी सनातन जवानों की श्रुति सीमा पर आये सफ़टा का दूर करने में सज्जन है । २ सीमा प्रहरी अपनी शक्ति से सामना करने में तत्पर हैं । भविष्य में राष्ट्र पुनः गुलामी की बड़ियों में न जकड़ जाय तब बड़ियाँ को अपनी कठिनाईयों के पश्चात् तोना है अभी कारण तब तक भी युद्धभास होने पर ही समस्त जनता सचेत हो जाती है । गीतकार गीता के माध्यम से जन-जागरण का संदेश देत हैं ।

निष्कर्ष

गीतकारों ने जिन भावनाओं को साकार किया व केषन सामयिक आवश्यकता की अभिव्यक्ति नहीं था । राष्ट्र के प्रति एक निश्चित नश्य को सामने रखकर उनका मुख्य काय था जन-जन को राष्ट्र की सुरक्षा हेतु संदेश देना । परन्तु इस संदेश का विगत — माध्यम से पहुँचाना सरल था । स्वतन्त्रता प्राप्ति पर जो हृय दृष्टा उसका भावपूर्ण चित्रण गीतकारों ने किया

और मदन नवीनता के दर्शन किये । मुक्ति की भाँस लेकर सब कुछ उन्मुक्त हृदय से व्यक्त किया । कागजहो मे जाने की आशका उन्हें भयभीत न कर सकती थी । यद्यपि देश की प्रकृति भी वही थी दोष भी वही थे, धरता भी वही थी, फिर भी कवि को सब कुछ नये परिवेश में देखने को मिला जिम उसने न जान कब में उपेक्षित किया था । प्रकृति की ओर देखने की फुरसत तो कवि का स्वतन्त्रता के पश्चात् हुई थी । इससे पूर्व स्वातन्त्र्य संग्राम में सलग्न उसकी ओजस्वी वाली ही प्रधान रही । वर्षों से पराधीन हुआ गीतकार स्वाधीन होकर इतना उन्मुक्त हुआ कि सहज उत्साहमयी वाली न गीतों का अजस्र धारा बहा दी । सभी कुछ नये परिधान के साथ दृष्टिगत हुआ, लेकिन उसकी वस्तु-परायणता सजग रही । वह उन शहीदों के राष्ट्रोद्धारका का भी नहीं मुँहा मका जा स्वतन्त्रता का निवास देखने को जीवित ही न था । गातकार सभी के प्रति नम्रतापूर्वक भावाजिनियों अर्पित करता रहा जो अमर हो चुक था । राष्ट्र-ध्वज की वन्दना और राष्ट्रोद्धारकों का गुणगान किया । इस प्रकार भाव पूर्ण हृदय गीतकार अपने गीतों द्वारा सब में कार्य कर रहा है ।

स्वतन्त्रता से पूर्व राष्ट्र जिस जीएण शीएण स्थिति में था राष्ट्र-वासियों का जिस प्रकार शोषण किया जाता था अधिकारों से वंचित रखा जाता था उसमें सुधार की आवश्यकता अनुभव हुई। राष्ट्र-वासियों के हृदय में नव चेतना की आवश्यकता थी। समाज का उत्थान ही राष्ट्र का उत्थान था। मानवता का आन्दर करना राष्ट्र से प्रेम करना राष्ट्र-वासियों को एक सूत्र में बांधकर सभी को समादर देना पूँजीपतियों का विरोध एवं शोषितों को सहारा देना मजदूर कृषक हरिजन आदि निम्न वर्ग के समझे जाने वाले लोगों का गल लगाना सभी को समान महत्त्व देना एवं समादर देना आदि समाज की अभिनव चेतना पर ही राष्ट्र का उत्थान निर्भर करता था। अन आवश्यकता हुई नव चेतना की एवं राष्ट्र-वासियों के वे सहयोग की। स्वतन्त्रता के नव आलोक में राष्ट्र की दुरावस्था देखकर, उसको दूर करके राष्ट्रोत्थान की चेतना की आवश्यकता प्रतीत हुई। कवि गीतकार एवं लेखक सभी ने राष्ट्र की दुरावस्था के चित्र खींचकर राष्ट्र की प्रगति की कामना करते हुए राष्ट्रोत्थान की चेतना के स्वर मुखरित किए। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में इसकी अभिव्यक्ति का स्वरूप स्पष्ट है।

राष्ट्रोत्थान की चेतना —

प्रकृति प्रेम के अमर कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत ने नव-चेतन कण के वषण की कामना की। जन-मन का दुःख इस घरा को अपित कर उस विषाद के गजन से जा वषण हो उससे नव चेतना के कण का हो वषण हो—

वरसें नव-चेतन-कण ?

तुम्हें कहूँ जन मन दुःख अपण

आत्मदान द भूल धराग्रण,
भू विषाण गजन से सप्तमें,
वरहें नव-चेतन-वण ।

राष्ट्र के उत्थान के लिए स्रष्टाश्रित भेद भाव मिगना अति आवश्यक था । बच्चन ने इस भेद के अन्त की प्रेरणा देकर राष्ट्रात्मान का भाग प्राप्त किया ।

स्रष्टृत-श्रुत भेद जाति ने सहा, २
विया मनुष्य औ' मनुष्य में फरक
स्वदेश की
कटो नहीं
कुहेरिका

नयन बने नवीन ज्योति के निमय ३
नवल प्रकाश-मुज से जये हृदय
नवीन सज बुद्धि को कर अमय
सदीप देश
की निशा
समाप्त हो ।

श्री गांधीजी ने न्यायी की मय है नि कही बगरी ई गुलामी का गूँगायाँ पुन न बुद जायें, अत स्वतन्त्रता की भावना बाधक रह समा राष्ट्रीयत्व की कामना की जा सकती है —

हम थे अमा अमी गुलाम यह न भूलना, ४
बदना पडा हम सनाम यह न भूलना
रान फिरे समर तमाम यह न भूलना
या फूट का धिना इनाम यह न भूलना
बीनी गुलामियाँ न सौट छाए फिर बमा
तुम भावना भरा, स्वतन्त्र भावना भरा तुम भावना भरा

राष्ट्र की गुलामी का एक कारण एकता का कमी एवं पूँ की भावना था । अगला परिणाम कौं मुगलन के पन्वान् भा फिर न भुगवना पडे—अत

२ धारा के अन्धर उपर रखे बच्चन, पृ० म० ६७

३ वही पृ० म० ७०

४ गांधीजी हिंदुस्तान १६ अगस्त १९६२, पृ० म० १३

आवश्यक था कि सर्वप्रथम स्वतंत्रता की भावना को स्थापित किया जाय
अतः एक सप्तेह ना कम हो कम से कम गुलाम ता फिर न बन सकें। तभी
स्वतंत्र भारत की कल्पना उसके उत्थान की कल्पना की जा सकती थी।
पतंजी ने सामाजिक चिन्तन की भूमिका को राष्ट्रोत्थान के लिए
आवश्यक माना—

एक महान आशा निहारती^१

जग जीवन से

जड़ चेतन से।

आज चाहिए सामाजिक चिन्तन

जग की सामूहिक जीवन

भू-स्तर पर उत्थान

मनुज एक हो कम, बचन, मन।

देवा का धन

धरती का पल्लु।

रघुवीर शरण मित्र ने जन-जन को मगवान बुद्ध के जीवन से प्रेरणा
ग्रहण करके राष्ट्र निर्माण का मार्ग बताया—

तुम समाज के कणधार हो ।^२

धरती का उत्थान करो ॥

तुम्हें बुद्ध की तरह शुद्ध

धरती का हृदय बनाना है

तुमको खोई हुई धरा का

साठा माय्य जगाना है ॥

ऐसी भक्ति भरो मक्तो म

मत्तों को मगवान करा

तुम समाज के कणधार हो ।

धरती का उत्थान करो ॥

डा० दिनश न राष्ट्रोत्थान का स्वप्न मानवता के चरम विकास के
रूप में दत्ता है और उसकी मशाल निरंतर जलती रहे ऐसी कामना की है—
हमारा जलती रहे मशाल ।^३

१ वाणी रच० पतंजी पृ स २२

२ भूमि के मगवान रघुवीर शरण मित्र पृ स ६६

३ जलती रहे मशाल डा० रामगोपाल शर्मा निदेश पृ स ८०

राष्ट्रीय भावना

जब तक धरती पर जीवन है
मानव के तन में जीवन है,
हँसता भावा का उपवन है
तब तक रहे फूलती फनती
मानवता की डान।

हमारी जन्मता रहे भगाल ॥

भारतीय गणतन्त्र अमर है इस गीत को गात हुए नए शोध एवं बल
स नये हृदय को दहनाकर स्वतन्त्र भारत का मान बढ़ाना है। जा भी भारत
का गति बनकर विजयी भा प्रकार हानि पहुँचाने की चपल करेगा उन मानव
वीर्य हिसक पापा दस्यु आततायी हृदयों धुसपेटिए एवं छाताधारियों
को नष्ट करना है। राष्ट्र का उत्थान समा सम्भव है जब इन सबका भग
बलाकर राष्ट्र की सुरक्षा की जाये धीरे-धीरे जन-जन का यही स्वर है—

भारतीय गणतन्त्र अमर है, यही गात अब गाना है,^१
नए शोध स बल विभक्त से, नये हृदय दहाना है।
युग युग स धीरे-धीरे गाया उस आज दोहराना है।
जाग उठा भारत स्वतन्त्र है उसका मान बढ़ाना है
दस्यु आततायी हृदयों धुसपेटिए छाताधारियों
मानव-वीर्य हिसक पापी इनको भग बलाना है।

जन-जन का यह बठ हार स्वर इनको नहीं भुलाना है।

स्वतन्त्रता की अमर-ज्योति की ज्वाला कभी मर न हो। अतः
तत्प्राप्त की जय का जहानाई मानकर गीतकार माहून अम्बर कहते हैं कि
युद्ध हमारा लिए नया नहीं है। जिस प्रकार मरण बना अमरता पाता है,
जीवन की बलि देकर भी इतिहास में नाम लिखा जाना है और राष्ट्र के लिए
यतिदान देकर देश का तत्प्राप्त जय हा उठता है, उसी की कामना स
राष्ट्रहित साधार हो सकती है—

तू जय की जहानाई।^२
आ तपती तत्प्राप्त ॥

१ साप्ताहिक निम्नान १३ फरवरी १९६६ पृ १७ ख० शक्ति

प्रकाशक सम्मना

२ बहा ८ मई १९६६ पृ- १४ श्री मोहन अम्बर

युद्ध हमारे लिए नया हो ऐसी कोई बात नहीं
सुख से हमने सो काटी हो है क्या ऐसी रात कही !

हमने उठना सिखसाया है दुनिया के इतिहासो को
धम हमारा अपना पानी देता आया प्यासो को
ऐस जीवन भरता है पाता भरण अमरता है।
वसे तू भी धुलभिन मरे देश की तरुणाई।
तू जय की शहनाई !

स्वतन्त्रता के पश्चात् भी सुशहाली न आई तो गीतकार का
स्वप्न टूट गया—

प्यारी स्वतन्त्रता स्वागत है कृतकृत्य हुआ यह भारत है !
वह शुभ दिन जब आई था सब सुशिया खूब मनाई थी
आशा उत्साह भरे मन थे तप-त्याग युक्त जन-जीवन थे
समझ सुख-स्रोत बहा देंगे फिर से सतपुत्र छवि छा देंगे
हो गए न जाने कस हम अब वह सद्भाव न माता है—
क्या यही स्वराज्य कहाता है ?

स्वराज्य हुआ किन्तु सद्भाव न रहा। अतः स्वतन्त्रता की लुशी भा
कायम न रही। आशा उत्साह भी समाप्त होने लग क्योकि सभी तप-त्याग
को छोड़कर स्वार्थी बनने लग। यत्किमत स्वाय ऊँचा उठ गया, राष्ट्र का
जनता का हित भौण हो गया। तब राष्ट्र व उत्थान की कल्पना टुटकर ही
थी। अतः गीतकार न सजग किया। राष्ट्र उन्नयन के लिए सद्भाव
आवश्यक है। गीतकार का देश भूखे रहकर जम दिन मनाना चाहे तो
गीतकार की आत्मा सजग किये बिना कस सतोष पा सकती है ? देशी भंगा
उठाने वालों को पेट की राटी के लिए स्वार्थी व्यक्तियों को नलकार
कर गीतकार कहता है कि उस अघफटे नग बदल का ध्यान भी तो
रखा जाय—

शीघ्र पर मयल-कलश रख २
भून कर जन के सभी दुख
चाहते हो तो मना लो जमनि भूखे बतन का।
जा उदासा है हृदय पर

१ सामाजिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६५ पृ० १४ १।० हार्मिकर शमा

२ वही थी मयूर शास्त्री पृ० १४

वह उमर आती समय पर
 गालियो के गध-पथ पर-
 ध्यान किसका आज तय पर
 पेट की रोटी जुड़ाओ
 रंगमी भडा उड़ाओ

ध्यान तो रखो मगर उस धधकते नये बदन का । राष्ट्र का उत्थान
 प्राये 'यक्तिया' को भूल रखकर सम्व नही । सभी का भरपेट भोजन तन डकन
 का वस्त्र उपलब्ध हो सभी स्वस्थ राष्ट्र की प्रगति सम्व है ।

गहरी रात में प्रहरी सोया हुआ है किंतु देश की दृढ़ता देखकर
 गीतकार की आंखों में नींद कहा ? वह बघर के 'यक्तिया' को दख तड़प उठता
 है और उन्हें जागृत करने का प्रयास करता है—

रात गहरी । जाग प्रहरी । १

सो रहा तू देव तारे तुट रहे भाँसू बरसते
 सो रहा तू देव बघर एक छप्पर की तरसते
 सो रहा तू देव वन में फूल-सी सीता पड़ी है
 सो रहा तू जाग जल्मी, देश पर आफन बड़ी है ।

जल रहा है बाग प्रहरी ।

गीतकार का प्रयत्न यही है किसी भा प्रकार राष्ट्र का उत्थान हो ।
 जो उपक्षिप्त हैं नान हैं भूते हैं बेघर हैं उन सभी की आवश्यक वस्तुएं प्रदान
 की जाए । यदि मानवता का भुलाकर राष्ट्र के कल्याण के लिए कुछ व्यक्ति
 रासन्न हो तो प्रगति असम्व है । सभी मिलकर स्वतंत्रता बनाये रखने में सहयोग
 दें । अत आवश्यक है सभी का सब सुविधाएं दी जायें जिससे व भ्रष्टाचारी
 शासन की प्रशंसा न करके स्वतंत्र भारत की प्रशंसा करें । गुलामी की भावना
 समाप्त हो जाय । राष्ट्रोत्थान की चेतना में शासकार का पूरा सहयोग
 रहा है ।

२ जन श्रम की महत्ता —परिश्रम के अभाव में देश की प्रगति असम्व है ।
 श्रम के लिए आवश्यकता है जन की । अत जन-श्रम दोनों की महत्ता है ।
 राष्ट्र के उद्धार के लिए, नव निर्माण के लिए राष्ट्र की प्रगति
 के लिए भुगमरी एक गरीबी दूर करने के लिए आवश्यकता है

जन-श्रम की सभी के सहयोग की तभी धरा फनगी फूनेगी। पसीना बहाकर श्रम करके ही राष्ट्र धन धाय पूरित हो सकता है। अतः आवश्यकता है जन-श्रम की।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जन-श्रम को अधिक महत्त्व प्रदान किया गया। श्रम शारीरिक हो या मानसिक जन-श्रम को महत्ता देता राष्ट्र के निर्माण की नाव रखना है। श्रम की महत्ता श्रमिक के शरीर में गीतकार ने स्पष्ट का है—

मैं श्रमिक श्रम से धरा को घाय कर दूंगा ?^१

पर्वतों को काट मैं गंगा बहा देता

काटकर नदिया नहरें बना देता

मैं जयक उद्योग से निर्माण करता हूँ।

अमान हूँ इंसान का कल्याण करता हूँ ॥

मैं भुजाओं से धरा का पीर भर दूंगा।

मैं श्रमिक श्रम से धरा को घाय कर दूंगा ॥

मैं नया निर्माण करता हाथ के बल से

राह में पथकर कूँ क्या ? मैं न न गगना।

उगलियो से मैं बुना करता नया कपड़ा ॥

मोतियों से मैं धरा की गोद भर दूंगा।

मैं श्रमिक श्रम से धरा का घाय कर दूंगा ॥

श्रमिक श्रम करने मुस्ताता है और स्वयं बाराएँ उसके हृदय का प्रफुल्लित करती है कि उसका श्रम साधक होगा। पसीना पथ नहा जायेगा। पर्वतों का कुचनकर बन बीन्हा पर विजय पाकर रंगिस्तान को समात कर सबत्र अपने श्रम से धरा को हरा-भरा करके श्रमिक असीम सुख पाता है।

अंतर से या कि दिांतर से आई पुकार

मैंने अपने पावों से पर्वत कुचल दिये

कदमों से रौं कुं काटा के बन-बीन्हा

दो ताठ ठगों से रंगिस्तानों की पसनी

१ भूमि के भगवान रच रघुवीरशरण मित्र पृ स २७

२ त्रिभंगिमा रच बच्चन पृ स ७४

दी छोड़ पगों की छाप धरा की धरती पर, सुस्ताता है
 तन पर फूग श्रम धारा का सुख पाता है
 जन-श्रम जय पसीने का गुणगान करते हुए ।
 गीतकार का निम्न गीत दृष्ट्य है —

पसीना है पसीना है^१

धरा के माल पर जगमग जड़ा हो वह नगीना है ।

पसीना है पसीना है ॥

सृजन की पुस्तिका के पृष्ठ बिखरे जाड़ लाया है
 मनुजता की वही विपरीत धारा मोड़ लाया है ।
 भरा युग-युग घड़ा जा पाप का मैं फोड़ भ्रामा है
 हमेशा के लिए मैं हाथ यम के तोड़ भ्रामा है
 पसीना है मुझे मन्दिर में नया मधुवन खिलाना है ।
 मागीरय है मुझे भू पर नई गंगा बुलाना है ॥
 हमेंगे खेत हरियानी नहीं इनमें समाएगी
 धरा नगशाश सजा दुल्हन बनगी मुस्करायेगी ।
 गगन के भाग्य के तार घटाया मैं न हूँबेगे
 किसी के पाँव तष्टको मैं धव न उबेंगे ।
 मत्पते हो नहा क्या रास्ता तुमको मिला अर नव ?
 पहँचना चाहते हो स्वर्ग ? बस मैं एक जीना है ।
 धरा का माल पर जगमग जगा हो वह नगीना है
 पसीना है पसीना है ॥

नये सृजन की सापावनी का श्रुम जवसर पर नई उमंग में भरकर
 धर्म के मगन-दीप जलाने चाहिए । आपस में सहयोग देने नए पुराना अनवरन
 को दूर करके सकलता की उजियाली में पथ प्रशस्त करना चाहिए । मागी
 रय का धमक श्रम स ही गंगा गिर का जटाभा स हानी हुई पृथ्वी पर आई
 थी जगका उद्गम विष्णु के चरण का अंगूठे में माना जाना है । यदि ऐसा
 हा मागीरय प्रयत्न समा कर सकें तो धरा धन्य हो जाय—

भारत माँ का राज दुनारा ! युग में नई उमंग जगाया ।^२

नए सृजन की गीतानी में, श्रम का मगल दीप जगाओ ।

१. हिमानय का आँसू धान— मिथ पु० स० ६८

२. पत्रिका योजना, फरवरी १९६२ रच० जगदीशचन्द्र शर्मा पृ० ग० २४

स्वाभिमान की हुँकारो मे नई रागनी म रम भर दो
 सहायागीपन से आपस की अनबन का उभूतन कर दा,
 सबक चहरा पर पुलकाए ऊपा की मदमाती लाठी
 सब अपने जीवन मे पाये नई सफलता की उजियाना ।
 ओ भागीरथ ! लाक हृदय का धरती पर नव गंगा लाआ १
 नए सजन का दावाला म थम के मयल-भीष जलाआ ॥

भारत के तरुण किसानो को खेतो म धान रोपन क लिए निमन्त्रित
 करते हुए प्रकृति की अनुकूलता चित्रित की है जहा थम का जीवन गान
 निराला है—

चलो खेतो म रोपें धान हम भारत क तरुण किसान १२

बरस रहा है पानी झमझम
 गरज रही मेघो की माता
 साय साय कर पवन सुनाता,
 थम का जीवन-गीत निराला

कांप रहा तन हसते प्रान चलो खेतो म रोपें धान ।

भारत का स्थिति परिवर्तित कर नव निमाण के द्वारा युगा से दवा
 दृढ़ अभिलाषा की पूर्ति करते हुए सबकी जावन फुलधार का महकान के
 लिए चाहे लाख बाधाएं आयें निंतु इस नम क लिए कोई रोक न सकेगा—

ऐसा नव निमाण करेंगे धरती धमक उठेगी,^३
 युगा युगा स दबी हुई अभिलाषा दमक उठेगी ।
 हम पु जायेंगे तन मन स सारी शक्ति लगाकर
 सबके जीवन की फुलवारी फिर स महक उठेगी ।
 हम न रुकेंगे चाहे बाधाएं आए गम्भीर
 हम बढ़ावेंगे अपन प्यार भारत का तस्वार ॥

मधुसुदनलाल न नम के पश्चात् उसक निमाण को देखकर गौरव
 का अनुभव करन वान नमिका का श्वस प्रसार चित्रण किया है—

फूल रही है नयी शान स भजदूरो की छाती १४
 लिए कुदाना गता निकाना मनु का कमठ बटा

१ पत्रिका यात्रना फरवरी १९६२ रच जगन्नाथचन्द्र शर्मा पृ ॥ २४

२ बही माच १९६१ रच हीरान्वी चतुर्वेदी पृ स ३१

३ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १४ जुलाई १९६३ जगन्नाथचन्द्र शर्मा पृ ४०

४ पत्रिका-योजना १२ जनवरी १९६४, मधुसुदन लाहा पृ १०

कधे पर गमछा कटि में अनि मैला फटा सगोरा
मिर पर बोहन का बोरा, आग बैलों की जोड़ा
मुन स दे टिटकारी, चमकाता चमड़े का सोटा ।
प्रतिक्षण धूप गाँव घर बन पवत पर चढ़ती जाती ।
फूट रही है नई शान से मजदूरों की छाती ॥

गीतकार न विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति के लिए आदि मनु जो प्रलय के पश्चात् मृष्टि के प्रथम पुरुष माने गये हैं तथा कुत्सी गता गमछा बैला की जोड़ी आदि विभिन्न उपकरणों का जुटाया है । इसके माध्यम से श्रम का सही स्वरूप चित्रित किया जा सकता है ।

श्रम करने में नाज नहीं करनी चाहिये । पुरुषाथ तो पुरुष का अलंकार है । श्रम से ही देश का निर्माण होता है । बाँध नहरें तालाब नई-नई औद्योगिक शानाएँ आदि की नाव श्रम के आधार पर ही पड़ी है । मानसिक श्रम हो या शारीरिक श्रम ही सुखदायक एवं फलदायक है । राष्ट्र प्रगति करके समृद्धि का भोर अग्रसर होता है । राष्ट्र जितना ही आराम निभर होगा उतना ही सशक्त होगा—

श्रम से समाज का बदलेगा १
परती पर स्वयं बसायेंगे ।
हम भूख नये मानव का
श्रम से भगवान बनाएँगे ॥

रघुवीर शरण मित्र के श्रमिकता धर्म-वर्ग के पूज्यपतियों की निजीरियाँ ■ धन निवृत्तवाने की व्याकृत है जा कहाँ क गाढ़ पसान की बमाई है । मूलधन से मा अधिष व्याज लेकर जा खजाना भरा गया है उस पीड़ितों की सहामताथ रित्त कराना चाहता है—

नये निमान य जग का नया श्रुगार बनता है ।^२
यका है पर गत युग का हमारा पर अमला है ॥
धपकता धूप में जलता हुआ इन्सान गाता है
पनीने की पराहर माँगने मजदूर आता है
सगी है भीट भूगों का खजान मान तो अपने
हमारे ब्याज व बन्ध खजाने तान दो अपने

१ सर्वोप्य के गान द्यो० रामगोपाल शर्मा पृ ३

२ भूमि के भगवान रघुवीर शरण मित्र

खुली है आँख पीड़ित की नया ससार बन्ता है ।

नये दिनमान ने जग का नया शृंगार बन्ता है ॥

योजनाओं के निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि भी चरण ॥ चरण मिलाकर चलने लगी है । योजनाओं को कार्यान्वित करने में हम का पसीना खच होता है । भारत के तरुणों को गीतकार सजगता का संदेश देता है क्योंकि वही शक्ति से भरपूर उत्साह में मरे भारत के प्रति अपना कर्तव्य निभा सकते हैं । समस्त भवदूर कृषक एवं तरुण-वर्ग का सहयोग तो अपेक्षित है ही नव-कारखानों के निर्माण के लिये पूँजी की भी आवश्यकता है । कारखानों के निर्माण के लिए बुद्धिमान यत्तियों की भी आवश्यकता है । इस सार संगठन की एकता से ही जन हम सफल हो राष्ट्र का उत्थान कर सकता है ।

३ नव निर्माण की प्रेरणा —

कवि-हृदय पूजापतियों का विरोध नहीं करता अपितु उनकी गायण की भावना एवं व्यक्तिगत स्वाध का भावना का विरोध करता है । यदि पूँजी पति अपनी पूँजी नवीन उद्योगों के निर्माण में लगाना है और दकाली को राजकर नये कारखानों का निर्माण करके उत्थान बनाने में सहयोग देता है तो राष्ट्र निर्माण में सहयोगी पूजापति के प्रति कवि हृदय रुष्ट नहीं है । कवि तो नव जिन बनाने का नव निर्माण की प्रेरणा देता है । राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा में नव-गात गाकर व्यक्तिगत स्वाध को छान देने के लिए नव निर्माण का प्रेरणा देते हुए गीतकार रामकुमार चतुर्वेदी ने कहा कि अभी तक चारों तारा के तारे बन्त गीत गाय गये हैं परन्तु अब हम राष्ट्र निर्माण का समृद्धि का गीत गान हैं—

बहुन गाय गये हैं गीत अब तक चारों तारों के । १

मुबह के गीत गान के निय तयार हो जाओ ॥

सबरा है हिमानय के शिखर अब जगमगाते हैं

कि गंगा गुनगुनाती है कि यमुना मुस्कराता है

नए पट्टी नए आकाश में पर फन्फुशन हैं ।

नई ही चहचहाहट घाटियों को अब गुजाती है ॥

कदम आग बनान के लिए तैयार हो जाओ ।

बहुत गाय गय है गीत अब तक चाल तारो के ।

सबह क गीत माने क लिए तयार हो जाओ ॥

राष्ट्र के नव निर्माण के लिए राष्ट्र की स्वतंत्रता तो आवश्यक है ही साथ ही तन, मन एवं घर की स्वतंत्रता भी आवश्यक है । यही देश की अमर पुकार है और इसके लिए आवश्यकता है अनंत साधना की । नव समाज के निर्माण हेतु नई प्रभाती गा कर घर घर में अरुणोदय लाने का कामना करते हुए—

आओ नई प्रभाती गाकर ।^१

घर घर में अरुणोदय लायें ॥

नव समाज निर्माण करें हम

नूतन युग का मान सुनाए

आओ नई प्रभाती गाकर ।

घर घर में अरुणोदय लायें ॥

निर्माण की शहनाई का अभिव्यक्ति गीतकार मयक के शब्दों में—

बज रही निर्माण की शहनाइयाँ^२

खेत में खम कर रहा किसान है,

पूँय उसका आज हर अभियान है ।

• • • • •

नाचती हैं खेत में परछाईयाँ

सम्पदा को झलकर गसबाहियाँ

यह निशानी है उमी के स्वप्न की

बज रही निर्माण की शहनाइयाँ ।

पूजापतिष्ठा को उत्तकारते हुए गीतकार माग प्रशस्त करजा है पूजा के सदुपयोग के लिए । यदि पूजा का सम वितरण नहीं कर सकते तो उद्योग धंधा में तो इसका उपयोग किया ही जा सकता है । जहाँ हजारों प्रकार निर्माण में लग जायें तब ही राष्ट्र का प्रगति मग्नम हा मरगी ।

पूजापति ही तुम भूतल पर ।^३

नय नय निर्माण करो ॥

१ गवोदय के गीत डॉ० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

२ पत्रिका योजना जून १९६२ चन्द्रगुप्त 'मयक' पृ २७

३ भूमि व भगवान् रघुवीर धरण मित्र पृ ५१

तुम कुटीर उद्योग बनाओ
बकारी का शमन करो
जितना भा धन है सब गाकर ।
तुम न जवन हजम करो ॥

पूजीपति हो तुम भूतन पर ।
नय नये निर्माण करो ॥

राष्ट्र निर्माण के प्रगति-पथ में सज्जो आधी तूफानों के आन पर भा
चरण गतिशील भी रहने चाहिए । परन्तु जवन ने राष्ट्र निर्माण के प्रयाण-भीत
में यही मदश देने का प्रयास किया है —

बन चलो बड़ चलो यही जनम यही मरण १
चलें हजार आँधिया
न पाव डगमगा सकें ।
शमनी प्रहार से
न आँख डबका सकें ।

शक्ति का पहाड़ हो नहीं सके बना चरण ।
बने चलो बने चलो यही जनम यही मरण ॥

वर्षों की दामता से भारत माँ का तन तन जजर ही गया । अतः राष्ट्र
का निर्माण के लिए माँ के अन्दर नव-जीवन का संचार करना आवश्यक
हो गया । अमावा की जनीरो से जकड़े देश को सुख समर्थ से भरना है इसके
लिए कदम मिलाकर चलन की आवश्यकता है —

चलो मिलाकर कदम तुम्हें निर्माण राष्ट्र का करना है । २
भारत माँ के जजर तन में अब नव-जीवन भरना है ॥
• • • • •
जकड़ा है जो दश अमावों की भीषण जगीरा में
उस मुक्त कर सबन बनाकर सुख समर्थ से भरना है ।
चलो मिलाकर कदम तुम्हें निर्माण राष्ट्र का करना है ॥

निर्माणामुखा भारत की प्रगति का एक चित्र इस प्रकार अंकित
किया है —

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान फरवरी १९६५ नरेंद्र अचन

२ गणभेरी प्रका रत्न हिन्दी परिषद् रच श्री मरमच गुप्ता सुमन पृ २३

बदल रहा है धीरे-धीरे सारा हिन्दुस्तान ।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

• • • • •

कहीं बाँध तो कहीं नहर है कहो सड़क निर्माण ।
विजनीयर निर्माण केन्द्र भी खुलत जन-कल्याण ॥
उन्नति में अब देर न होगी हो सहयोग महान् ।
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान ॥

निर्माण के लिए आवश्यकता है उत्पन्न बनाने का नय कारखाना की कुटीर उद्योगा को बढाने की । स्वतन्त्रता के मद में सभी नेतागिरी न करने लग जायें । स्वतन्त्रता का सही सदुपयोग करें । बात-बात पर जुलूम निकास जात हैं, नारे नगाय जाते हैं समाए की जाती हैं और इस प्रकार व कुछ अनावश्यक प्रदर्शना से समय बरबाद किया जाता है । योजनाओं का व्यावहारिक रूप देने के लिए आवश्यकता है ठाम कर्म उठाने की । पथ के प्रदर्शना से कोई नाम नहीं होने वाला । सभी धपन काय में सलग्न रह सभी देश की रक्षा की जा सकता है, प्रगति की जा सकता है—

जुलूमों और नारों से,
प्रदर्शन या प्रचारा से
न कोई देश जीता है
समाएँ बन्द कर चल खेत में या कारखाने में ।

• • • • •

गरजता है अगर अम्बर सरजनी है अगर धरती
मगर गाला नहीं बने इसी में देश की जय है
हजारों विजलियाँ हूँ हजारों आँधियाँ आयें
बुदासी का रहा कामे, तुम्हारा ही हिमाय है
निरी बातें बनाने में
महज बठक जमान में
न कोई देश जीता है
समाएँ बन्द कर चल खेत में या कारखाने में ।

१ योजना भाग १९६२ एवं हृदयराम साहू पृष्ठ १५

२ पृष्ठ गणो महज उठें रामायणार व्यापारी पृष्ठ १२७ प्र. १९६५

मृजन चिरजीवी रहे क्योंकि ध्वस की आयु लघु होती है। इसी आशा के साथ श्रम गगा घर घर बहानी है तथा क्रांति के इस नय मोड़ पर सारा यकन भी समाप्त कर देनी है—

ध्वस आयु का लघु होता है मृजन रहे चिरजीवी^१
इसी भराभ श्रम की गगा घर घर आज बहा दो ।

और क्रांति क नय मोड़ पर
सारी यकन मिटा दो ॥

नये निर्माण हेतु कोटि-कांति भुजाए उठें तो निर्माण अनुपम होगा क्षिप्र गति से होगा और सफल होगा। नव निर्माण में धरा को सजाकर नया आह्वान करें—

कोटि-कांति भुज उठो नया निर्माण रचाए आज हम ।^२
श्रम से अर्जित पुण्य उठा यह धरा सजाए आज हम ॥
खिले फूल शून्य की शम्या तोड़ चुक मधुमाम में
उजियान ३ स प्रकार को छिपा दिया इतिहास में
आज ध्वस न सदा-सदा के नियम किया विपणन है ।
अभिगापो से भरी जबानी ने पाया वरदान है ॥
आजादी के प्रगति चरण को मिला नया आह्वान है ।
पीनाओ क आँसू धोकर भवना जीवन-गात है ॥
घोर अतड में सोया नव विश्वास जगाए आज हम ।
सीमाओं को तोड़ नया इमान बनायें आज हम ॥

राष्ट्र-सुरक्षा के नियम सामा पर तनात जवान जब अपना बलिदान देने हैं तो किसान भी पीछे क्यों रहें ? जिस प्रकार जवान शत्रु की चुनौती स्वीकार करते हैं किसानों को भी उस चुनौती का स्वाकार करना है। औरों के अन्न पर न पलकर अपने दान की उर्वर भूमि में ही इतनी पैदावार करनी है कि हम अन्न के लिए दूसरों के ऋणी न हो जायें और पुन दासता स्वीकार न करना पड़े। जब कि जबानों ने अपने गम उबलते रक्त की स्वाद दी है तब किसानों का भी वही सतों में नई फसलें तैयार करनी हैं। कृषक के कदम पीछे क्यों रहें ? राष्ट्र निर्माण में उनका भी सहयोग उतना ही आवश्यक

१ पु० मनुगूज । मेधराज 'मुकुल' पृ ८१ प्र स १९६७

२ वही पृ म ११

है जितना कि मुल्का ग्रहणियों का। भूखे पेट न तो निर्माण हो सकता है न ही राष्ट्र की मुल्का—

जवानों ने चुनौती जग की स्वीकार की जैसे ।
 किसानों । यह चुनौती या तुम्हें स्वीकार करना है ।।
 न लेकर अन्न औरों का द्रव्य ३ दासता नती
 युगों की दासता का धन तुम्हें सत्कार करना है ।
 किसानों । ही तुम्हारे या वस्त्र पीछे नहा रण म
 जवाना व बदम पर ही वस्त्र तुमका मिलाना है ।

• • • • •

जवाना म उबनत रक्त की नी माद है जिसमें
 विमाना । अब क्या तुमका नए फमर्ने उगाना है ।।

राष्ट्र का प्रगति पथ पर अग्रसर होन देनकर कवि हृत्प्रेम प्रसन्नता से पुनः उठता है। अपने भाग्य व भाग्य की चमक से कवि व उर का प्रसन्नता गीतों में बह निकलती है। गीतकार व गान नव निमाण की प्रेरणा दत्त हैं।

निष्पत्ति —

हिन्दी गीत-काव्य में स्वतन्त्रता व पश्चात् दश के जीवन में आम वाली निर्माण-सम्बन्धी प्रवृत्तियों की विराट् अभिव्यक्ति हुई है। कवियों ने राष्ट्र व एक स्वस्थ स्वस्थ का कल्पना करके जन-धर्म का महत्त्व प्रदान किया है। उगक गारा नव निमाण व स्वप्न दत्त है। राष्ट्रीय भावना का यह पथ अथवा गान तथा नई परिधि का श्रीगणेश करने वाला है। दमा परिधि म नात्रा का नए पथ पर अग्रसर होन का अवसर मिलना घट हिन्दी कवियों की राष्ट्र निमाण व लिए व्याप्त आकाशा राष्ट्रीय भावना का एक महत्त्वपूर्ण निधि है।

राष्ट्र की एकता के बंधन में बाधने के लिए जाति विरोधा का दूर करके जातिगत एकता का होना आवश्यक है। अतः कवि जातीय एकता की प्रेरणा के गीत गा उठे। एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र से वमनस्थ नहीं होना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के प्रति आत्मीयता एवं सहानुभूति के भाव रखने चाहिए। अन्य राष्ट्रों के प्रति भी उदार भाव रखने चाहिए अथवा एक राष्ट्र अपनी प्रगति के लिए अन्य राष्ट्रों को हानि पहुँचाने की चष्टा करता है। अतः आवश्यकता है भावात्मक एकता की। गीतों के सृजन ने इसे अभिनव मोड़ दिया और राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा के गीत गाय गये। प्रस्तुत प्रकरणा के अन्तर्गत उन गीतों को लन का प्रयत्न किया है जिनके द्वारा राष्ट्रिय एकता की अभिव्यक्ति होती है। कुल मिलाकर सात वग निश्चित किए हैं—

- १ राष्ट्रीय सस्कृति पर गौरव
- २ राष्ट्र भाषा प्रेम
राष्ट्रीय सम्पत्ति व प्रति आत्मीयता
- ४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा
- ५ देशाभिमान की अनुभूति
- ६ देश की प्रकृति से प्रेम
- ७ सम्प्रदायवाद का विरोध

१ राष्ट्रीय सस्कृति पर गौरव —

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में राष्ट्र की सस्कृति को अनेक रूपों में स्मरण किया है। उसके प्रति गौरव के भाव व्यक्त हुए हैं। अपने राष्ट्र की साम्प्रतिक निधि पर किसको गव न होगा ? राष्ट्र प्रेमी गायकारों ने स्वतन्त्रता पाने के पश्चात् उन निधियों का भी गान गाये जो अत्यन्त प्राचीन थे। प्राचीन व नाकृतियों का निगराने हुए व आदि अमूल्य पुस्तकों पर भी गौरवपूर्ण दृष्टि गई और उन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति गीतों में हुई।

गीतकार सजग है—सजग है उसकी कल्पना । वह अपने एक-एक गीत की इस राष्ट्र के निर्माण नवन में सजा रहा है । गीतकार की लेखनी प्रथम परिधम से एक परिपुष्ट राष्ट्र का रक्षाओं का अवन कर रही है । श्री आरसीप्रसाद सिंह अपनी अतीत की सस्त्रुति के स्रोतों को दत्तमान की वाली बनाकर कहते हैं—

तुम जागो तो जग अजन्ता और एलोरा की वाली ^१
बसाला, नालन्दा जाग बना भारती कल्याणी,
ऋषि मुनियों की त्याग-सपस्या, पुण्य त्रिवेणी तीर जागे ।
जलिया वाला बाग जग और साबरमती हितार जगे ।

देग-श्रीम की दीप शिला के
परबाने तुम जागो तो,
मातृभूमि के पहरदारो ।
हिमवानो तुम जागो तो ॥

कृष्ण एवं राम का अवतार पृथ्वी के कल्याण हेतु हुआ था । प्रत दुष्टों के नाशक इन दोनों को भगवान के रूप में पूजने का परम्परा विद्यमान है । राम एवं कृष्ण के मंदिर पूरे भारतवर्ष में न जान कितने होंगे । गिबजी न स्वतामा की रक्षा हेतु विषपान किया था । उनको भी बहुत ही पूज्य दृष्टि से देगा जाता है । मराठे और गिवाजी एवं राणाप्रताप का प्रताप अभी हिन्दुस्तानी भूत नहीं हैं । इन सभी की स्मृति ॥ सावर गीतकार ने अभिप्राय है—

कोटि-काटि बग का यह जयकार ना ।^२
सर हम में बाण राम का घूमता
कण-तुहर में गग कृष्ण का गूजता
घारमा में शिव के साहब की छाप है
गहव गिवा, राणा का मन में मूनता ।
नवयुग का यह प्रमयकर हुआर सो ॥
कोटि-काटि बटों का यह जयकार सो ॥

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ जुलाई १९६२ आरसाप्रसादसिंह पृ १४

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १ मार्च १९६३, बदरीनारायणदास

राष्ट्रीय एकता के लिए भावनात्मक एकता की आवश्यकता है। धार्मिक एकता भी आवश्यक है इस रूप में कि सभी धर्मावलम्बी एक दूसरे के धर्म को आदर की दृष्टि से देखें। राम कृष्ण एवं शिव समस्त भारत में भगवान् के रूप में पूजे जाते हैं। इनके गुणगान से इनकी स्मृति से पुनः चेतना जाग्रत होती है। जिन्होंने भारत की रक्षा के लिए अपने प्राण त्याग दिये किन्तु गुलामी स्वीकार नहीं की। उन्हीं की गीत गायाएँ गाकर गीतकार भारत को पुनः सचेत करना चाहता है। भारतीय संस्कृति का एक और स्मृति चित्र दृष्ट्य है—

जय जनता जय अमर भावना जय गौरव गाथा ।^१

जनपूरा भुवन विजय-श्री, जय भारत माता ॥

इतिहासों की सृष्टि सृष्टि की पुण्य पंक्तिपि भी
शतरूपा मानव महतारी, जग पूजित प्रतिमा
प्रतियोगिता सम्यक्ता सबका सत समष्टि सदया ।
धीर प्रसन्निनी सध-वग अम्बिके विष-विजया ॥

जय जनता जय अमर भावना जय गौरव गाथा ।

जनपूरा भुवन विजय-श्री, जय भारत माता ॥

बच्चन भी अपने काँच के बाहुन पर विगत संस्कृति को रखे हुए नवीन संस्कृति के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं —

मेरा कवि गज-गरिमा समझ मेरी कविता हाँ गजगामी ।^२

एलारा एरावत जैसे

मार पवताकार उठाए

भारत की प्राचीन बनावा

संस्कृति का वे पीठ झुकाए

उसी तरह स नए हिन्द का

नई जिंदगी नई जवानी

ताकत मस्ती हस्ती बनने की मेरी वाणी हो कामी ।

मेरा कवि गज-गरिमा समझ मेरी कविता हाँ गजगामी ॥

गज शक्तिशाली होता है। अतः कवि की कामना है कि उसका अन्तर (कवि) गज गरिमा समझ और कविता गजगामी हो। भारतीय संस्कृति के

१ उमग मधराज मुकुल पृष्ठ ५८

२ आरती और मगारे, डा० बच्चन पृष्ठ २५

श्रष्ट प्रतीक अजन्ता एव एतरो है जो पवनावार मार को उठाए हुए है ।
उसी प्रकार नये भारत को नई जिन्दगी और नई जवाना शक्तिशाली हो ।
बाणो यदि कामी बने तो बबल ताकत, मस्ती एव हस्ती की जिससे कि
कविता गजगामी हो । कवि का स्वयं का शीघ्र सखनी प्रमूत होना है जिससे
अनक हृदयों को प्रेरणा मिलती है मनुष्य हृदय शक्ति, अपार बल अनुभव
करता है ।

परशुराम का काण्ड एव गीत जगत् प्रसिद्ध है । कवि ने उन्हा के
माध्यम से क्या न सस्कृति की मील नकर दग का शीघ्र जगाकर शत्रु को
कुत्स दन न दिए राष्ट्र का मस्कृति का गौरव गान किया है —

जनता जगो हुई है ।^१

मुन्ने वेद, पीठ पर सरकस, कर में बठिन कुठार ।

सावधान ! ल रहा परशुधर फिर नवीन अवतार

जनता जगो हुई है ।

यनों का मस्कृति का आदि काव्य मानन हुए गानवार का अमिष्यक्ति—

तुम न पुरातन नही-नहीं,^२

तुम तो मस्कृति के आदि काव्य

मानव प्रमाण की प्रचुर राशि ।

अन्याज बचित सब मून भाव्य ॥

गंगा मुमना ऋषि आश्रम में आदि धार्मिक भावना की अमिष्यक्ति
न साथ एकता की प्रेरणा मान है । ऋषियों का तो समस्त जगत् मात्र
का समभाव न देना पन्ना था । उनक हटिकोण की विमानना का परि-
णय अनेक कथाओं एव पुस्तकों का माध्यम से मिलता है । जीवमान की
गुरदा का ध्यान करने बान बचन सत ही होत थे । पब न अवसर पर गंगा
स्नान बुद्ध व्यक्ति ही नहीं करत थे समस्त भारत के नर नारी स्नान का
पुण्य पूजन न किए गंगा न किनार एकत्रित होकर दान आदि न करत
थे । अब भी उनका महत्त्व कम नही आ है । आज भी एकत्रित होकर
गंगा-स्नान करत हैं । मना नमता है । स्नान न अवसर पर जातिगत भेद भाव
नही रह जाता समा धार्मिक भावना न साथ स्नान करत है । इस भावना से
भी राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा मुक्त होता है—

१ समाज कल्याण जनवरी १९६२, पृ २ रच रामधारासिंह दिनकर

२ भारतीय गणभूषण मन्त्रालय, पृ सं ४७ नि ॥ १९२१

उबरा आप सस्कृति भू पर^१

गंगा-यमुना के स्रोत सजल ।

ऋषियों के आश्रम यत्र माग,

तत्त्वालोचन चिन्तन विराम

वह आत्मशोध का क्षय भाग

पीड़ित मानवता को विराम

दुस्तर जीवन का पथ सरल

उबरा आप सस्कृति भू पर ।

गंगा यमुना के स्रोत सजल ॥

भारत के ग्राम जलवायु की दृष्टि से बहुत स्वस्थ हैं जबकि उनकी दुदशा के अनेक दृश्यनीय चित्र कवियों ने चित्रित किये हैं। कृपको की दुदशा पू जीपतियों द्वारा शोषण किये जाने के कारण हुई। यद्यपि अब उनकी स्तर ऊँचा करने का प्रयास चल रहा है। भूमि बितरण से भी यह समस्या बहुत कुछ सुलभ हुई है। सरकार ने अनेकों सुविधाएँ प्रदान की हैं। वास्तव में जीवन शिल्पी का धाम ग्राम ही है—

यह ग्राम वही यह ठाम वही^२

जीवन शिल्पी का धाम वही,

अवित हरियानी जन यहाँ

गंगा यमुना की रेत यहाँ

कौटा की बानी बाढ़ यहाँ

सावन घन घटा प्रगाढ़ यहाँ

अघड़ धाये धाये लूफान

झका गाय, भूकम्प-भान

सस्कृति अणु-अणु हो रूपवान ॥

श्री विश्वम्भर शर्मा ने भारतीय सस्कृति के गौरव-गूण प्रतिपादित का स्मरण करते हुए कहा है—

भागी मरे देश का चन्दन है।^३

कानि कानि आज उगो का वन है ।

१ मन्वन्तर शम्भूमान सक्मेना पृ० ४१

२ वनी पृ २८ ७८

३ यादना रच दिवन्व शमा धमस्त १६६२

माटी मेर देश की चन्दन है ॥

इसक इतिहासों के आधार स्वर्ण के
 राम कृष्ण के भीम युधिष्ठिर वरुण के,
 वाल्मीकि म गोतम की गरिमा आसता
 शीघ्र-नयाएँ सबकी आँखें खोलती,
 बर जिसी से नहीं प्रेम ही धर्म है,
 समझा कृष्ण ही दशन वर मम है
 हम जनेक म एक बने हैं जो रहे—
 कोटि नदी का जल सागर बन भी रहे
 कितने तन हा एकमात्र स्पन्दन है ॥

माटी मेर देश की चन्दन है ।

कोटि वाणिज्य आज जसी का चन्दन है ॥

चन्दन की भावन माना गया है । देश की माटी उस चन्दन के समान
 हा भावन है । अतः उसकी बगल म कवि ने गीत गाया । क्योंकि इस
 देश का इतिहास स्वर्ण आधारों म लिखा गया है जिनमें राम कृष्ण
 भीम, युधिष्ठिर वरुण गोतम आदि सभी की गरिमा व्यक्त हुई है । इन व्यक्तियों
 की शीघ्र-नयाएँ सबकी आँखें खोलती हैं । प्रेम हा धर्म है । भारतीय दशन
 शास्त्र की महिमा अपूर्व है क्योंकि यहीं के तत्त्वज्ञानी चिन्तका न दशन का मम
 समझा है । कवि एकता की प्रेरणा देने के लिए व्यक्ति को समष्टि म निहित
 वर दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है । धनक हावर भी एक होना बसा
 ही है जिस प्रकार कई नदियों का जल एक समुद्र म ही विनय हो जाता है ।
 तन चाहे कितने ही हा वस्तु स्पन्दमान ही मूलत्वपूर्ण है ।

इस प्रकार ध्वस सत्त्वति के प्रतीक, अतीत की सत्त्वति के माध्यम
 म गातकारों ने नये सृजन की शब्द दिए हैं । चतना बा है और एकता की
 भावना उद्बुद्ध की है । उनका मन्तव्य एक ही है । उनका सिद्धांत का उद्देश्य
 है कि विगत की भाँति आज भी समस्त भारत की सत्त्वति एक हा तममें
 विभक्त न हो । तथा राष्ट्रीय भावना शक्तिशाली एवं समुद्ध हो सकती है ।

राष्ट्र भाषा प्रश्न—

स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे राष्ट्र का संविधान लागू बना सभी
 कृषि परिवर्धित हा गया किन्तु राष्ट्र भाषा का प्रश्न बनकर सरदा हा गया ।
 विदेशियों के शासनाधिकार के कारण धार्मिक भाषा सक्षम प्रतिपाद की ।
 स्वतंत्रता के पश्चात् भा भारतवासियों पर बहु भार स्वल्प लदी हुई थी और
 उसका बोझ कम नहीं हुआ था । इस भाषी हुई भाषा के इतिहास के लिए

~

१ राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इसके नार लगाय गये इसकी
का प्रचार किया गया तब कभी हिन्दी का राष्ट्र भाषा
या गया। राष्ट्र भाषा वही भाषा हो सकती है जिसका
जिसे बहुसंख्यक सुगमता से समझ सकें। जिसका साहित्य
सम
त्य हो। देवनागरी को ही इसके योग्य समझा गया। छठा
बोनी या हिन्दी का शुद्ध स्वरूप आज प्रत्येक राज्य में स्वीकार किया गया है।
यद्यपि अन्य भाषा भाषियों ने उपद्रव भी किये और नासमझी में राष्ट्र की
सम्पत्ति को हानि भी पहुँचाई परन्तु राष्ट्र भाषा का पट्टा हिन्दी का छलावा
अन्य भाषा नहीं ले सकती थी। सर्वाधिक प्रचलित यही भाषा है। इसकी
श्रद्धा व प्रतीक हैं वे भाषा भाषी जो अपने प्रांत की भाषा के छलावा भी
यदि कोई भाषा जानते हैं तो यह है—हिन्दी। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में
राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्र भाषा प्रेम को जो अभिव्यक्ति हुई है उसमें
हिन्दी की गुण गाथा गाकर अन्य भाषाओं के साथ उसके निकट सम्बंध को
प्रदर्शित किया है—

प्रोह हुई हिन्दी के सग सग सभी राष्ट्र भाषाएँ^१
गुरु नानक गोविन्दसिंह ने हिन्दी का गुण गाया
बगभूमि के केशव कवि ने इसको अपनाया
खुसरो से इनाम अस्ताखाना तब ने इसे सवारा
दयानन्द गाँधी गुजर के हिन्दी उनका नारा
महाराष्ट्र का लोकमान्य आश्व न उसे भुलाए—
प्रोह हुई हिन्दी के सग-सग सभी राष्ट्र भाषाएँ ॥

हमारे राष्ट्र का उद्धारक जिनके सत्ययोग से भारत गुलामी से मुक्ति
की सौँस लेने वाली स्थिति तक आ सका व भिन्न प्रांतीय हाने पर भी हिन्दी
को ही मान्यता प्रदान करता था। सिक्खों के गुरु नानकसिंह एवं गोविन्दसिंह
न भी गुरुमुखी को ही महत्त्व नहीं दिया अपितु हिन्दी का गुण गाया। धर्म
प्रचार के लिए अधिक जनमर्यादा चाहिए। जन-जन की भाषा में जब तक
धर्मोपदेश न दिए जायें तो धर्म-ग्रहण करने वाली जनता बहुसंख्यक न होकर
केवल बड़ा भाषा विशेष को जानने वाली ही होगी जो धर्म की उस भाषा
को समझकर उपदेश या नीति की बातें ग्रहण कर सकें। तभी तुलसी ने उस
युग में भी ऐसी भाषा अपनाई थी जो बहुसंख्यक जनता की भाषा था। केवल
विद्वज्जनों की पाठ्य-गुण भाषा न थी। हिन्दी धीरे धीरे प्रौढ़ होती गई

और उनके साथ साथ सभी भाषाएँ समृद्ध हानी गईं। बंगाल के कश्मीर एवं बकिमचन्द्र ने भी हिन्दी का गुणगान किया। बकिमचन्द्र का 'बंग' मातरम्' कितनी प्रसिद्धी पा चुका है जो सब विन्ति है। इशाबल्लाखान ने भी गद्य रचना हिन्दी में की जबकि उहूँ में कर सकते थे। कृपि दयानन्द एवं महारमा राणी जो कि गुजरात के थे व भी हिन्दी का हा नारा लगाते थे। महाराष्ट्र के लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने भी हिन्दी का आग्रह ऊँचा रखा। विभिन्न प्रांत के इन महत्त्वपूर्ण यत्तियों ने हिन्दी की ही प्रतिष्ठा की, उसी का गुणगान किया। हिन्दी की ही मकारा और प्रौढ़ता प्राप्त हिन्दी का राष्ट्र भाषा के रूप पर आसीन किया।

राष्ट्र भाषा हिन्दी हो इसका नारा लगाने वालों का उन साहित्यकारों का भी योगदान नहीं भुलाना चाहिए जिन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी को इस योग्य बनाया कि वह व्यापक रूप में विंगल क्षेत्र के लिए उपयोगी प्रमाणित हो। जिन साहित्यकारों के सहयोग से हिन्दी आज इस परिपक्व एवं परिमार्जित रूप तक पहुँचा है, हिन्दी का साहित्य समृद्ध हुआ है व धन्यवाद एवं प्रशंसा के पात्र है। भारत के विशाल ६०० रुपवीर ने हिन्दी का काव्य प्रदान कर यह सिद्ध कर दिया है कि एक भी राज्य ऐसा नहीं है जो हिन्दी में न हो। कठिन से कठिन जागृत शक्तों का भी हिन्दी में पर्याप्त प्रस्तुत कर सराजनाम काय किया है।

गोकार भरत व्यास की बलना देनिए उनक मी म—

अबकी बार राष्ट्र के घर घर हिन्दी की दीवानी हा —

इसके शब्द शब्द दीपक बन १

जन-जन मन में भाग्य करें

संस्कृति के सुनलित शताब्दी स

भारत माँ की गाँव करें

आ जाँगे में गुमन सिनाये वह गुलाब का हाती हा।

अबकी बार राष्ट्र के घर घर, हिन्दी की दीवानी हा ॥

नवीन भावों से हृदय प्रपुल्लित हो जाता है। हिन्दी की दीवानी मनान के लिए शब्दों के लिए जान जायें। राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति ऐसा अनोखी महान बलना एवं थड़ा का मिला जुला भाव असीम प्रेम का परिचायक है।

कविवर मथिलीशरण गुप्त अनचाही असहाय बालिका के समान पड़ी हिन्दी भाषा को उठाकर ऊपर लाये थे । उनके ही कारण हमारी मातृभाषा हिन्दी का प्रारम्भिक और वास्तविक विकास संभव हुआ । अतः बच्चनजी ने उनके प्रति आभार प्रदर्शन किया—

मथिलीशरण हिन्दी के हित आए ।^१

पड़ी हुई थी एक बालिका,

अनचाही असहाय

अल्पवयस की देख विवश-सी

बवि-छाती भर आई

मिथिलापति मथिली कण्व मुनि

शकुन्तला को जसे

बसे ही उसरी गोद उठाकर घर लाए ।

मथिलीशरण थे हिन्दी के हित आए ॥

शकुन्तला एवं दुष्यंत की प्रणय-कथा प्रसिद्ध है । उसी शकुन्तला को कण्व मुनि उठाकर लाये थे जबकि वह 'राचारी' में बालिका (बच्ची) रूप में असहाय होकर भूमि पर पड़ी थी । इस कथा के माध्यम से हिन्दी का स्वरूप स्पष्ट करने का कवि का प्रयास है । मथिलीशरण हिन्दी के हित ही लाये थे क्योंकि उनकी समस्त रचनाएँ हिन्दी में ही हैं ।

हमारे गीतकार भाषा के एक सशक्त एवं स्वस्थ स्वरूप को देने के लिए प्रयत्नशील एवं सजग हैं । क्योंकि जब तक भाषा की एकता या राष्ट्र की भाषा एक न हो तब तक सम्पूर्ण राष्ट्र का भू-खटता अखण्डता के तारतम्य में एकरूप हो गुंथ नहीं सकती । राष्ट्रीय भावना के अर्थ पोषक तत्वों के साथ गीतकार हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए सजग एवं कमनिष्ठ थे । अतः उनका आन्दोलन सफल गया ।

जब तक हिन्दी अंग्रेजी दोनों भाषाएँ अनिवाय रहीं गीतकार बेचैन रहे । उन्हें अंग्रेजी भाषा का यह आधिपत्य स्वीकार्य न था । हिन्दी पर अंग्रेजी की छाप उन्हें कफन समान लगी । अंग्रेजी का प्रतिरोध पर हिन्दी को बलिदान करना उन्हें न भाया । जो अंग्रेजी को सहभाषा बनाय रखना चाहत था उन्हें कवि की ममता ने लजकारा कि यदि हिन्दी राज माता बनने के योग्य नहीं तो रहन दे प्रतिन स्मृति अपमान न कर । कवि का विद्रोह

बहुन ही तीव्रता से व्यक्त हुआ है । व्यर्थ बहुत चुमना हुआ एक करारा है कि माना कि हिन्दी बड़े घर की बटी नहीं है । यह बेतों की खलिहानों की मजदूरनी है । यह अमागिन दो बार अमाग ऋषिया का माँ है । कुछ अन-चोन्ह कवियों की जननी है । तो भी इस प्रजातन्त्र युग में दो मापामों का प्रयोग करने वालों हिन्दी को सतरंगी चुनरी के बन्ने कफन प्रदान न करो ।

सो प्रजातन्त्र में दो मापामों का प्रयोग करने वाला
हिन्दी को सतरंगी चुनरी के बदले कफन प्रदान न कर ।
अपेजी की खलिहानों पर माँ हिन्दी का खलिदान न कर,
अपेजी का सहभाषा का अधिकार खिलाने वाले सुन ।
माना कि राजमाता जनन के योग्य नहीं तो रहने दे
रहने दे इसे नौकराना नबिन इसका अपमान न कर ।

मह मा माना यह बचारा, बनी है न बड़े घर की,
मजदूरनी है बेतों की खलिहानों की आगिन भर की
यह अमागिन माँ है उन दो बार अमाग ऋषिया की
यह अमागिनी जननी है बाड़े अनचीह कवियों का ।

भारत की भाषा कौन सा है । इस पर वाद विवाद हुए उपद्रव हुए ।
परन्तु पाठकार के लिए यह समस्या कोई समस्या नहीं । इस समस्या का
समाधान कवि के शब्दों में व्यक्त हुआ है —

यहाँ भारत की भाषा है ॥ १
जिगम जननी जमभूमि है स्वर्गादपि महान ।
मार्ते जिसमें इंसानों से करता है भगवान ।
वही भारत की भाषा है ,
अजुनि मेरे पमीने से धरती का धर्म्य बढ़ाता,
फूँक लगाकर माये से बहना आ भारत माता,
मक्का मरता पत्त मगर जो खुद भूसा रह जाता
फिर भी बचनी मानी तिमनी दूने हुई पकान,
ननिया के लला म महरी, इक मोनी मुस्मान

१ माताहिंदू हिंदुस्तान १२ नवम्बर १९६५ या ब्रजमोहनसिंह ठाकुर पृ० १४

२ माताहिंदू हिंदुस्तान २४ जनवरी १९६५ रामप्रकाश पांडेय 'प्रकाश' पृ० ६

उस किसान की भाषा ही भारत की भाषा है ।

वही भारत की भाषा है !

हिन्दी विरोधियों के सम्मुख समस्या का समाधान उचित तरीके से प्रस्तुत कर भाषा के लिए न हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया है न अन्य भाषा का । मान इतना ही कहा है जिसमें भारत का किसान बातें करता है स्वयं भूखे रहकर सबका पेट भरता है उसी किसान की भाषा भारत की भाषा है । इस प्रकार अनेक रूपों में राष्ट्र भाषा प्रेम की अभिव्यक्ति का स्वरूप स्पष्ट हुआ है ।

३ राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति आत्मीयता —

गीतकारों ने राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति अपना अंगाय प्रेम प्रगट किया । मुग्ध दृष्टि ने नहलहाते खेतों का हरे भरे वृक्षों का निरीक्षण किया मधुप गुजन हृदयगम किया । पुष्पा का पुष्पित हाना भी देखा एवं पिक कूएन भी सुना । मक्खन हरियाणों एवं खुंगहानी देखकर कवि घरसी की माटी का प्रणाम किए बिना कस रहता ?

ज्योति भूमि ^१

जय भारत देश

ज्योति धरणी धर यहा सम्पत्ता उतरी तेजो-मेघ

समाधिस्थ सौन्दर्य हिमालय

श्वेत शांति आत्मानुभूति सय

गंगा यमुना-जन ज्योतिमय

हसता जहाँ भाष ^१

ज्योति भूमि

जय भारत-देश ॥

भारत की भूमि जिसकी प्रकृति हरी भरी मन भावनी है जहाँ विशाल पर्वत स्थित ^२ और हैं गंगा यमुना सी पवित्र नदियाँ । उसी भारत देश की पुष्प भूमि और धरता माता का गीतकार जय बालता है । देश की माटी प्रणाम-योग्य है उसी के अभिवादन हेतु —

माटी तुझ प्रणाम !^२

मेरे पुष्प दल की माटी ! तू जिनकी अभिराम !

१ चिदंबर। मुमित्रानन्दन पत्र म प्र० १९५६

२ रमन्ता पत्रिका डा० प्रेमप्रकाश गीतम सन् १९६३

तू कितनी अभिराम !!

तुझे लगा माथे से सार कण्ड हो गए दूर,
 धरु मर यही भून गया मैं शत्रुयन्त्रणा क्रूर
 सुगन्ध-भूति का इस काया में हुआ पुन संचार
 लगता जैसे आज युगा के बाद मिला विश्राम ।

माटी तुझे प्रणाम ।

मनुष्यो के श्रम काय बनाओ को गीत-शरणा ने अभि-यक्ति
 प्रदान की और सब यत्न किया । तब के लिए तब मन, धन सभी कुछ
 स्वीछाकर करने के लिए तयार, गाँव की सरस यजना देविया —

स्वर्णदान क्या दान देश पर तब मन प्राण निछावर है ।
 यही भूमि है जहाँ धर्म के लिए सारथी कृष्ण बन
 यही भूमि है जहाँ ह्येनी पर रगते सब मिर अपने
 मुकुट हिमालय भारत माँ का उम पर पग धरन बाल ।
 तुमसे क्या हम नती काल के भी आग डरने बाल
 भारत के गौरव तिमिर पर सारे गान निछावर है ॥
 स्वर्ण-दान क्या दान देश पर तब मन प्राण निछावर है ॥

हिमालय के लिए जिनका आश्रय ने योगदान किया है । यह भारत
 का गौरव है और इसी कारण मधुसूदन गीत वस पर 'योद्धावर है' । हम भूमि पर
 धर्म का दान-दान जगत् न रत्न । अथर्व धर्म व्यक्तिगत आरा नष्ट कर न्य
 गये । भारत की भूमि धर्म-य मार नहीं बहन कर सकती । उसने लिए नीति
 धर्म 'याय माय है अनैति अथम अयाय का स्थान नहीं । पाण्डवों का
 भूमि न देकर अत्याचार करने अमानजाम का आदेश देन वात श्रुयोधन तब
 गौरव-वश के भी पुत्रों को ही युद्ध में पराजित किया उही कृष्ण ने जिनका
 आज भगवान मानकर पूजा जाता है । 'याय एव धर्म के युद्ध में कृष्ण सारथी
 बनने पर भी न हिरस्त्रिआ और नानि का उपदेश देकर अजु न रा ना
 पमोषण दिया । यही भारत की भूमि जहाँ देवताओं के राक्षसों का जम
 हुआ गमता का संहार आ हुआ । राम एव कृष्ण ने दुष्ट एवं राक्षस-वृत्ति
 वालों का दमन करके ज्ञान्ति का मार्गाय स्थापित किया था । शीव की सभी
 रक्षा भी नहीं रही । भारत को माँ का सम्मान दिया जाता रहा है और

मविध्य में भी यही सम्मान बना रहे उसके लिए साहित्यकार पूरा योगदान देते रहेगे। भारत के वारो की शोयकथाए आज भी उनी जाती हैं—

यह गाँधी का देश यहाँ तो गौतम की घरती है^१

यही शिवा राणा प्रताप की यश घारा बहती है ॥

यहाँ बहादुर बच्चो ने शरा के दात गिने थे

यो कितना हा अमर कथाए युग बाणी कहता है

उनी वीरता के अभाव से तोहेंगे जज़ा ॥

हम बदलन छपन प्यार भारत की तस्वीर ॥

व गाथाए जो युग में कही जाती रही है उनकी भौतिक या द्रवित परम्परा आज भी विद्यमान जोर सन्धिय है। जब-जब देश पर विपत्ति के वातन मण्डराय है उनी शोय गाथाया के माध्यम से उत्साहपूर्ण प्रेरणा देने का प्रयत्न किया गया है। उस युग की बागा कितना कथाए कन्ती है उस मुनकर हा वारा के हृदय उत्साहपूर्ण हा र ता हनु तत्पर हा जाने हैं। गाँधी गौतम शिवाजी राणा प्रताप हमारे गण के अग्रणी है। उनमें पूर्ण आत्मायता रतन है गातकार और समयानुक्रम उनके शोय-गाथाया का गीता में राधन है।

माहन जोन्हा हटप्पा का प्राचीन सभ्यता के अवशेष आज भी उग युग की उत्पत्ति का कथा कन्त है। उसा सस्कृति के विषय में—

जा इधर माहन जाइडा पना

पाम ही हटप्पा स्वण जडा

चिर गौरव विनय महान सडा

सबसे अपना बसव बिगारा युग युग में जिसका गान किया।

अपने मन्वन्तर में हमने अपनी सस्कृति का प्राण दिया ॥

गंगा यमुना अजन्ता एनोम ताव-स्थान सारनाथ माची का स्तूप तथा स्थापत्य कला का अय वस्तुजा के सम्बन्ध में गौतम न गौरव प्रगट कर उनकी रक्षा के नियम मान लिया है उनका सुरक्षा की चन्ता भरा है। यह गीतकार की गष्टाय सम्पत्ति के प्रग का परिचायन भावना है। मूर भीरा कवीर जा गान गाकर चल गये उसा का स्मृति में गौतम की लगनी—

पवतो के शिखर से बुलाता तुम्ह आरती ॥^१

मन्त्रियों के शिखर से बुलाता तुम्ह आरती ॥

१ साहित्यिक लिटिस्तान ८ जुला १९६ जगन्नीगचन्त बसा पृ ४०

२ गौरव गान गाँधी ना पृ १

३ गौतम चारद मिश्र पृ ५६१

मूर, मीरा, कबीरा, जिस गा गए शान से,
वे जिम लीचकर ल गए थे दियावान से
जा मिलो कण्ठको म बने प्यार की धूप म
जिन्गी की घरोहर वही गीत म म ॥

राष्ट्र की सम्पत्ति व निरु हमारे गीतकारा न जिस स्नेह का आत्मीय
पूर्ण प्रदर्शन किया है वह नाना प्रकार के भावा की लेकर गीतो म स्पष्ट हुआ
है । उनका गीत गीता म समस्त भारतीयता का अपनी सृष्टि व प्रति प्रेम
करने की प्रेरणा निहित है । उनकी सजगता भावनात्मक एकता व परिपायका
के निमित्त है । अन्तिम वाक्य यही है—किसी भी प्रकार से राष्ट्रीय भावना का
परिष्कृत रूप स्पष्ट करना ।

४ राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा —

राष्ट्र की एकता के बचन म बाँधने के लिए जाति विराधियों का दूर
करना जातिगत एकता का हाना आवश्यक है । अतः जातीय-एकता की
प्रेरणा व भा गीत माय गया । सामाजिक समूह म भेदा भेद के दुष्परिणाम
स्वरूप भावात्मक एकता म जा समागता प्राप्ति है उस विषय तत्त्व का गीत
कार सहन करने म असमर्थ नही । गीतकार की अभिप्राय है कि ब्राह्मण क्षत्रिय
वश्य एवं शूद्र म भेद भाव न हो । क्योंकि सभी मानव हैं । एक ही सृष्टिकर्ता
का सन्तान हैं । चाहे भेदभाव की विचार का मिथ्या बताने उनके विपक्ष
प्रभाव को दूर करने का प्रयास किया है—

वृथा मत लो भारत का नाम^१

• • • • •

भारत एक भाव जिसको पाकर मनुष्य जगता है ।

भारत एक जगत् जिस पर जग का न दग लगता है ॥

भारत एक स है । एक भू की कल्पना आनी है और एक भाव समूह
राष्ट्र के प्रति उभरता है । भारत स एक राष्ट्र का बिम्ब बनता है । समाज
का एकता ही राष्ट्र की एकता है । इसीलिए आपसी पूर को समाप्त कर
समूह एक राष्ट्र की स्थापना व प्रयत्न म मग्न है गीतकार—

आभा भाई हम सब मिलकर ज्योति जलाए नान की ।^२

ब्राह्मण क्षत्रिय वश्य, शूद्र है सब सतति भगवान की ॥

आज हमारा मानव मन स भेद भाव के नारों को ।

१. गान्धिका रामधाराणि निरकर पृ २४

२. यादना र्क, १९६२, भवनाशकर पचारिया

आज करो तुम श्रम की इज्जत छोड़ के मिथ्या चारों को ॥
आओ अर्थी आज जलाए फूट फाट अज्ञान की ।
आओ भाई हम सब मिलकर ज्योति जलाए ज्ञान की ।

जातीय एकता का प्रयत्न करते हुए कविवर बच्चन ने अपने एक गीत की कुछ पक्तियों में समस्त देशवासियों से कहा है कि अज्ञानवश हम जाति विभेद का अपनाकर विवेकहीन बन गये हैं । इसके परिणाम स्वरूप समाज की गति विभाजित हो गई परन्तु अब तो सब को मिलाकर एक सूत्र में बंध जाना चाहिए—

समस्त देश की बस एक टेक हो १
समस्त छिन्न भिन्न जाति एक हो
विभूषता जहाँ वहाँ विवेक हा
यही प्रभाव
शब्द शब्द ?
मे भरो ॥

भारत भूमि पर बसने वाले असह्य यस्त्रियों का एक साथ मिलने की प्रेरणा देत हुए गीतकार प्रजातन्त्र की जय का नारा उगाते मे प्रयत्नशील है —

ओ असह्य जन भारत भू के १२
मिलकर एक साथ हो नो ।
प्रजातन्त्र की जय बोलो ॥

जातीय एकता की प्रेरणा के गीत लिखने में पतंजी भी पीछे नहीं हैं —

एह भाव दो १३
राष्ट्र बग से निखरे मानव
जाति-वण के क्षय हा दानव
नव प्रकाश भव का हा अनुभव
रह न मन भौतिक तमसाधृत
इह भाव दा ॥

१ धार के इधर उधर डा० बच्चन, पृ म ६६

२ निरवारदेव भवक साप्ताहिक हिन्दुस्तान २ फरवरी १९६४ पृ ३५

३ बाणी पत्रिका प्र म १९५८

देश-देश के अतिथियों को भारत के जन-गण का स्वागत करने के लिए निमन्त्रण देता गीतकार सभी को एक होने की प्रेरणा भी देता है। भारत की एक हा आवाज हो—मानवता ॥ जहाँ हिन्दु मुसलमान, सिक्ख, पारसी जन बौद्ध इसाई आदि सभी मतभेद भुलाकर एक साथ रह। भारत पुरातन की वेदी है। यही सब एक साथ मिलकर आत्मीयता प्रगट करें यही गीतकार का अभिलाषा है —

देश-देश के पाहुन १ भारत के जन गण का स्वागत लो १

पूरब की इस परम पुरातन वदी पर सब साथ मिलो ॥

इस पर बसते हिन्दु-मुस्लिम

बौद्ध जन सिख इसाई

और पारसी यह सभी हैं

आपस में भाई भाई ।

भारत कहता मानवता के सन्धि में सब लोग लो ।

देश-देश के पाहुन भारत के जनगण का स्वागत लो ।

पूरब की इस परम पुरातन वदी पर सब साथ मिलो ॥

इस प्रकार मानवता का स्वर सबसे ऊँचा है। तभी एकता सम्भव है।

राष्ट्रीय चेतना की अनुभूति को तादृ करने का प्रयास गीतकारों का है। देश हीरे की बनी है —

घर नगर हर झुड़ुटि प्रत्य-या तनी २

देश सारा बन गया है छावनी !

जो अमिब हैं रान में व भी सिपाही हैं

सेत या सलिहान में वे भी सिपाही हैं

दफ्तरो का मज पर जो निम रह दिन भर ।

भ्यस्त जो दूकान में व भी सिपाही हैं ॥

थोक जितना भी है न दूटोयी भगर ।

एकता की ता गई है अरगनी ॥

• • • • •

देश मेरा एक हीरे की बनी ।

१ त्रिमगिमा, डॉ० बच्चन प्र स १९६१

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ नवम्बर १९६१ थी निमश मधमना निमेशायन पृ ३१

३ यहा ३० जनवरी १९६६, डॉ० बच्चन, पृ स २६

जातिवाद बग बिभे उस समय तो अवश्य ही दूर हट जाता है जब हमारे राष्ट्र पर अत्य दुश्मनी मानने वाल राष्ट्र का हमना होता है। उस आक्रमण में सक् के समय एकता की अरगनी तन जाती है। प्रत्येक कृषक श्रमिक दफ्तरी दूकानदार सभी सिपाही है। उन्हें भी सहयोग दना चाहिए तभी एकता का सही स्वरूप प्रगट हो सकता है। ह् नागरिक दश की सुरक्षा के समय सिपाही है तभी राष्ट्र की नींव द्द समझी जा सकती है। सभी भारत के बेटे है भारत ही उनकी सच्ची माँ है —

भारत-माता के गेटे हम चनत सीना तान के ।^१

औरो की धरती के ऊपर आँख नही हम रखते है

पर अपनी परऔरो का अधिकार नही सह सकत हैं।

आज बता देंग हम कितन पक्के अपनी जान के।

भारत माँ के बेट हम चलते सीना तान के॥

भारत देश माय प्रिय है। वह अत्य देशों की धरती पर आँख भी नहीं उठाता परन्तु जब अत्य देश उस पर बुरी दृष्टि डालता है तब वह सहन नहीं कर पाता इसलिये एकता ही राष्ट्र की सुरक्षा के समय काम में आती है फूट नहा। काश्मीर का भारत में अलग करने के लिए पाक घुसपडिऐ साधारण पोशाक में घुसकर नागरिकों का मन्वान गग और उत्पात प्रारम्भ कर न्य ता गीतकार भी एकता का विगुल बजाय बिना न रह सका—

एकता दश की आती है

आवाज विजय का आती है

अब पीछे कभी न मुड़ना है

हर एक शत्रु से नडना है

सरहद्द का प्रश्न मुनगना है

घायन जवान तब जगता है।

अपना आगन भगडे में है

यह जोक्तव सनरे में है॥

काश्मीर-समस्या में सरहद्द का प्रश्न लाना हागया। देश की एकता ही हम समय आवश्यक थी। नाकतन सनरे में है हमकी आशका गीत में यत्त दृढ़ और विजय का आवाज व लिए एकता का स्वर भी आवश्यक हो गया।

१ मासिक चिन्मन २ जनवरी १९५५ आन्ध्रप्रकाश गुप्त ॥ १८

२ वग १६ जनवरी १९६६, रामप्रकाश धयवान पृ १४

डोलता झूलता नक्का हिल रहा है आज,
हौसला अयाय का आगे नहीं बढ़ता।
सत्य का ही सूर्य अम्बर पर चढ़ेगा नित्य
बादलों की चान्चों से वह नहीं डरता,

मय चुके हम सागरों को सप स खेल ।

विष पचाकर जानते हम अग्नि भी पीना ॥

सो नहीं सबता कि प्रहरी जागता हनुमान
रोज साएगा सजावन द्राण पवत से,
प्रात स पहल जगेगे मूर्च्छित लक्ष्मण ?
घोर तो सोत नहा विश्राम ही करते,

ज्याति हम आकाश की भी खींच लायेंगे ।

जानत सौ बार मरवर भी पुन जीना ॥

गीतकार की सवसा नवीन अनुभूति हृदय में नवीन भासा की उत्पत्ति में सहायक है । हमारे मानचित्र को गलत सिद्ध करने में सलग्न है पाकिस्तान एवं चीन । भूगोल डोल रहा है नक्सा हिल रहा है लेकिन अयाय का हौसला आगे नहीं बढ़ता क्योंकि सत्य का ही विजय होनी है । गीतकार का विश्राम स्थिति कि हर प्रहरी जागता हुआ हनुमान है जो घायल मूर्च्छित बीरा के लिए प्राण पवन से सजावनी बूना या दगा और प्रात काल होने से पूर्व ही बवान अँगड़ाईयाँ लगा हुआ उठ जायेगा । उमन तो रात्रि का मात्र विश्राम ही किया है । एवं अन्य व्यंग्य दृष्टव्य है—

अभ्यूबी आवाज बीन का,^१

शापद यह मा चान चीन की ।

• • • • •

जब-जब भारत माँ न टेरा

होकर एक नौन हेरा ॥

एक ध्वजा के नीचे आकर जन-गण-मगन मान जगा है

भाज एकता की दवा व अशरों पर वरदान जगा है,

आत्मा ऊदल का मधमग्ने त्रिन्नीपति चौहान जगा है

सादिक क मस्तिष्क हुमायू कर्णवता का जान जगा है

मजहब से भी बड़ा बतन है, यह सच्चा ईमान जगा है !

चुने गए जो दीवारो म

जाग उठे हैं गुरुद्वारो म

सिक्खो की तलवार जगी है शास्त्री का सम्मान जगा है । प्रस्तुत गीत मे अय्यूब के द्वारा भारत पर आक्रमण किये जाने पर सदेह व्यक्त किया है कि शायद यह चाल भी चान की है । लेकिन जब भी विदेशी घाक्रमण हुआ है भारत की एकता भट्ट रहो है । जब भी भारत माँ ने सुरक्षा के लिए घावाज लगाई है माँ कं धीर साल एक पुकार पर वमनस्य मतभेद सब भुलाकर अस्त्र शस्त्र से मुसज्जित हो दौड़े चल गये हैं । एक तिरगी ध्वजा के नीचे सभी एकत्रित हुए हैं । एकता की दबी के अचरो पर दरदान जागा है । घम से भी बड़ा देश है यह भी स्पष्ट है । शास्त्री जी के सम्मान का प्रश्न उठ खड़ा हुआ है । अत आवश्यकता है एकता की । देश की जय बोलता ॥ । प्रस्तुत गीत म भी हमलावरो का एहसान मानते हुए गीतकार उन भारत के सपूतो को सभत करता है जो सुरक्षा से उदासीन निद्रादेवी का मोम म विधाम कर रहे थे —

बड़ा एहसान है उन हमलावरो का १

हमे जो आज सोते से जगाया है

हमार देश न अपने सपूतो के

पसीने को लहू को आजमाया है

पहन कपडे विचारक के महज उपदेश देने की

मुक्त फुरसन नहा है मैं गनी को जगमगाकर

देश की जय बोलता हू ।

हमारे देश ने कितनी बार अपने सपूतो के पसीने एवं लहू का आज माया है । केवल विचारक बनकर उपदेश देने का समय नहीं है । समय है काय का व्यवहार म परिशिष्ट काम का विचारो का समय नहीं । देश की जय बोलकर भारत क सपूता का एकता बढ़ किया है ।

वीर नौजवान देश के तुम्ह भारत पुकारती २

शम्भान क निना क लिए जारती पुकारती ३

गीतकार रामकुमार चनुवेंदी की भावना की तीव्रता भी स्मरणीय है —

१ सभने मन्त्र उठे रामावतार त्यागी पृ० १२६

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान विचारता पचरत्न १२ सितम्बर १९६५ पृ० १४

रोना मत मर लिए देशवासी मेरे,^१
स्वमारोहण करता हू मैं क्षण म निभय
मजबूती से तुम घामे रहो तिरगे को,
हर घोर सुनाई दे केवल भारत की जय
जिसकी रक्षा को जिया, चला अगारो पर
मरते मरते भी गीत उसी के गाता हू,

कस बतलाऊं तुम्हें किरण की घड़िया म
तोपो टप। नभयानो के कानाहल म,
यह शक्ति बौन थी जो मुझको थी चला रही ?
किसन था जादू फूँक दिया मेरे बस म ?

केवल तिरग को मजबूती से घामकर एक्ता के सूत्र म भ्रान्द रह
और दिदिगन्त म भारत की जय सुनाई दे। इतनी ही गीतकार की आशा
है आकाशा है। मृत्यु म भय नहीं है अप्रब शक्ति-संचार के कारण भय को
स्थान यहाँ ? निर्भीकता का एक उदरण दलित जिसमें गीतकार ने अभिलाषा
पक्त की है—तूफानो म हाथ मिलान की, ज्वालाओं का कवच पहनने की।
विजय-गात गान वाले धीरे की भुजाएँ अपार शौर्य से भरपूर हैं उन्हीं पर
जगत्त है नि अन्न इनका परीक्षा-दान समीप है।

तूफाना स हाथ मिलाकर^२
ज्वालाओं का कवच पहनकर,
अब मैं विजय-गात गाऊँगा !

जब-जब धीरे भुजाएँ अपनी,
अरि के गोष्ठिन म धोता है
वह तो प्रबल परीक्षा-मुग है,
सकट-काल नहीं होता है,
मेरे साथ चलो गाँवा तब
हैदर की हँसती कुटिया तब
अपने धीरो के करनव को

और उम कश्मीरी जनग को चित्र सिगाकर मुनवाऊँगा
अब मैं विजय-गीत गाऊँगा !!

१ आत्महिंसा हिन्दुस्तान ३१ अक्टू० १९६५ श्रीराम कुमार चतुर्वेदी पृ० १४

२ आत्महिंसा हिन्दुस्तान २४ अक्टू० १९६५ श्री मधुर शास्त्री पृ० १९

विजय-गीत सुनाने के लिए उद्यत गीतकार की उमंग एकता का सदेव देती है। सभी एकता व विश्वास पर विजय की आशा निश्चित है। एक जब त्याग के लिए तयार होता है तो प्रेरणा पारुर अन्य व्यक्ति भा त्याग के लिए उत्सुक ओजपूर्ण चेतना का गीत सुनकर आगे कदम बढ़ाते हैं। राष्ट्र का सुरक्षा के लिए सबसे अधिक आवश्यकता है एकता की संगठन की।

५ देशाभिमान की अनुभूति —

दश की हर चीज से प्रेम उसकी प्रकृति से स्नेह देना प्र घटित होने वाले सुख-या पर अभिमान प्रत्येक वस्तु पर गौरव सभी कुछ अपने दृष्टि-पथ पर रखकर उनका मूल्यांकन विवेचन अभिव्यक्ति हत्याहत्यास सभी को गीतकार अपने गानों में बाध बना चाहता है।

गीता को साधे में डालकर देश को वस्तुओं के गौरव को लोक-यापी बनाने का श्रम है गीतकार को। यही है गीतकार का कर्तव्य एवं सच्चा राष्ट्र प्रेम। जब तक हृगार हृदय में राष्ट्र के प्रति सम्मान जादर और गौरव की भावना का अभाव रहेगा राष्ट्रीय एकता के तत्त्वों का पोषण होना तो दूर, अपितु हानि की संभावना अधिक है। राष्ट्र के अभिमान की भावना देशवासी के हृदय में राष्ट्रीयता के तत्त्वों का पोषण करती है। इस प्रकार राष्ट्रीय भावना अधिक क्षिप्र गति से अज्ञातियों को सजग एवं जागरूक बनाने में सहयोग देता है। भारत-वर्षना भारत के अभिमान को निगुणित करती है—

हे जन्मभूमि भारत ! हे जन्मभूमि भारत ॥^१

हे बदनीम भारत ! अभिनन्नीय भारत ॥

जीवन-सुख चढ़ाकर हम अचना करेंगे।

तेरी जनम जनम हम बदना करेंगे।

हम अचना करेंगे ॥

भारत भूमि के प्रति श्रद्धा का अभाव इस प्रकार गौर वपूर्ण बदना नहीं कर सकता। गीतकार को जन्मभूमि जन्मभूमि भाग्य पर गौरव है। सभी जीवन पुण्य तक चढ़ाने के लिए तत्पर हैं। जन्म-जन्म तक अचना करना के लिए तयार गीतकार देशाभिमान की अभिव्यक्ति करता है।

मानृभूमि के प्रति स्वाभिमान की अभिव्यक्ति सतिषा की दीक्षावर्ष का स्मरण तथा मन्त्रा मन्त्रिया और ऋषियों का गुणगान करते हुए—

मरी मातृभूमि मन्दिर है ।^१
 स्वामिमान का बलिबंदी पर
 सतियाँ लाख हुई योद्धावर,
 सतो, ऋषिया मुनिया वाली
 भारत भूमि शिवर है,
 मरा मातृभूमि मन्दिर है ।

देश के प्रत्येक प्राणी का दबता तल्य मानते हुए राम और कृष्ण
 के चरित्र का भी यशोगान किया है—

मरी मातृभूमि मन्दिर है ।
 राम कृष्ण जैसे चरित्र क
 चालास कानि दबता जिसक
 सज्जा मत्र न सज्जा त्रत
 जन्म द्वय नतगिर है ।
 मरी मातृभूमि मन्दिर है ॥

मातृभूमि का मन्दिर क समान पूज्य एवं पवित्र मानकर चतन क
 गाथ ही भारत को जनमातीय का मना दी है जहाँ अधकार का स्थान
 नहीं । यदि भारत की युगहाली पर किसी न खून का जाँग उठाई तो—

तो सब गाता है २
 कोई अधकार की चान्द मरी ओर बढ़ाए ना
 जनता दीप है ये
 सस प्यार मुमको
 कोई मरी युगहाली पर खूनी आँस उठाए ना
 मरा देश है य
 इसने प्यार मुमको ॥

हरीश मादानी न अपने गीत में संकेत दिया है कि यदि मैं हँसू गा
 ता चामीस करोड़ प्राणी मुस्करा देंगे यदि मैं अपने श्रम-परिश्रम एवं लगन
 से मातृभूमि का शत्रु ब्रह्मना हरि मरी कर दूँ तो मरा मन मुन्ति
 होगा । यही सच्चा प्रत्यक्ष कर्त्तव्य है । दन एव—

-
- १ साप्ताहिक चिन्तन ५ जनवरी १९६० पुष्पा अक्टूरी ५० १४
 २ भागिला वीर मिश्र पृ ६६

मैं हूँ अगर तो चालीस कोटि देवा का दश हूँसेगा ।^१

मेरा देश कि जिसकी धरती सोना उगल

डाल फूल से आमा छिटके मणियाँ उधरे

मत्त समीरण के डोल में हसती फसनें देव

कोकिल गाये और मोर मुदित हो मचले

यह नीली पीली हरी चूनरी आन घरा दुल्हन सी लगता ।

मैं भी पचरगी पागड़ी पहन सजू तो मेरा देश सजगा ॥

मैं हूँ अगर तो चानास कोटि देवा का देग हूँसेगा ॥

गीतकार बहुत ही भावुक अवस्थाम में तना सुन्दर चित्रण करने में समर्थ हुआ है । श्रोत्रपूर्ण नहीं होने पर भी गायक के भाव दशाभिमान की अनुभूति में भरपूर है । धरती प्रकृति पक्षी आदि समा का मनोमुग्धकारी चित्रण किया है तात्कालिकता का स्वर भा दूर नहीं । गीतकार के हसने का यत्तिगन महत्त्व नहीं क्योंकि चालीस कोटि देवा का देग भी हूँसेगा इसीलिए पचरगी पाग से सजने पर देग भी शोभायमान होगा । क्योंकि राष्ट्र का सम्मिलित स्वरूप गीतकार के सम्मुख है । भूमि भूमिवासी जन और जन संस्कृति जिनके सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है वह ध्वनि के कल्पना जोव में विद्यमान है । उसी का प्रतिबिम्ब सजीव करने का प्रयास किया है । गीतकार मित्रिदगी तो स्वयं ही भारत बनन का गीत गा रहे हैं —

मैं भारत हूँ, मैं भारत हूँ ।

शस्य श्यामला, रत्न गम भू^२

अगणित गानें विस्तृत सागर

मेरे बन भरी सरिताएँ

मेरा हिमगिरि मेरा अम्बर

लघुघा रोग दारिद्र्य-अग्नि में

फिर भी मैं जनता अविरत हूँ ।

मैं भारत हूँ । मैं भारत हूँ ॥

भारत का शस्य श्यामला पृथ्वा रत्न की गानें विस्तृत सागर विज्ञान बन घनत सरिताएँ हिमगिरि और अम्बर सभी कुछ गीतकार का धनता है क्योंकि उनका राष्ट्र अपना है वही भारत है । उन्नत भावना का चित्रण किया है । मानुषभूमि के प्रति तीव्र अनुभूति प्रगति की है—

१ अक्षर गान हरीग मानना पृ ५

२ बनिपय के शीत जयत्राय प्रसाद मित्रि पृ० १०६

जननी स्वर्गात्पी गरीयसी जमभूमि कल्याणी है ।^१

जय ह । जय हे । जय जय-जय हे ।

• • •

शक्ति विजय का शाय बजाए साँभ उठाए ध्वज फहराए
प्रिय दक्षिणी मंगलवर्षिणी ह जमभूमि जयदानी जय हे ।

एक हाथ में सङ्ग प्रगल्भ
एक बीन पर जगा रहा स्वर,
सींच रहे रथ सप्त सिंधु के
नील अश्व अरुणाम डगर पर

सरय स्वयं सारथी बना है गुण गा ध्वज हुई रसना है ।
अभयगङ्गिणी मुक्तिवाहिनी, जमभूमि फनदानी जय ह ।

जिसे भी उपकरण का लेकर अनेक माध्यम से एक ही प्रयास
रहा है—देग की वस्तुओं पर गौरव की अनुभूति । हिमगिरी की विशालता,
ऊर्ध्व दशभिमान का वस्तु है । पटञ्जल प्रकृति का सौन्दर्य, परिवर्तित
रूप स्वस्थ जलवायु सभी पर गौरव किया जा सकता है ।

शक्ति-दून जवाहरलाल नेहरू ने जो वसीयत की थी उस उनकी
मृत्यु के उपरान्त पूरा किया गया और उन आदर्श का विवरण गीतकार
ने शब्दों में बाँध लिया ।

मरी महमा का भारत क नता पर विपरीत नेना
जित मिट्टा की मरी बाया उसम मुके गिना नेना ।
औ सौंप देना मगम की भर तुम मुट्टी भर पून
नहीं धार्मिक श्रान्त वहीं कुछ मेरी इस इच्छा के मूर
जुड़ी हुई गंगा यमुना में बचपन की बह भीठी याद,
मैंने रंग बदलते देग उनक हर भीमम क बाग
निज परम्पराए पौराणिक गाथाए बितने इतिहास—
पुने मिने उनक पानी में भीत बहाना औ विस्वास

• • •

गिरा पसीना जहाँ रिगानों का, तुम उस मिना नेना ॥

१ धर्मपुर १८ अगस्त १९६३ गिरिधर गोतान

२ गणनाहिष हिन्दुस्तान १४ नवम्बर १९६१ श्रीगारदे पृ १८

देश प्रेम की तीव्र अनुभूति की अभिव्यक्ति हुई है। ऐसी अनोखी वसीयत यी नेहरू की जिसके मूल में धार्मिक भाव नहीं हैं किन्तु देश के लिए असीम प्यार था। कृपक उनके अति निकट थे उन्हीं के छतों में उनकी मस्ती का वितराव हा ऐसी आकाश करके नेहरू का देश प्रेम जमर हा गया। देश की धरती के लिए जो कुछ त्याग न किया जाय छोडा है। देश की धरती को सभी कुछ समर्पित करने को तत्पर—

मन समर्पित तन, समर्पित^१

और यह जीवन समर्पित

चाहता है देश की धरती तुझे कुछ और भी दू ।

मन एवं तन धरती को समर्पित करने के पश्चात् वक्षता ही क्या है ? इससे अधिक मूल्यवान कुछ नहीं है फिर भी प्राणा का समर्पित करने के पश्चात् भी कवि का हृदय सतुष्ट नहा हाता वह और भी कुछ देना चाहता है। परन्तु दे क्या ? विष को हसकर पीने का प्रयत्न करत हा एव अथ गीतकार का गीत—

भव सक्ठ ८२, विष हस पा दू ।^२

देश प्रेम हित भर लू जी लू ॥

अमर रहे यह ताज

मैं सजित हू मरा तन-मन ।

बलि के पावन काज ॥

पके धान से जीवनवापी भारत माता का जीवन उबर है। इसी कारण वह भारत का सपूता की जनना है और कवन उबरा ही नहीं बल्कि शक्तिशालिनी भी है—

समतल उमर जीवन जिसका^३

वह मरा है भारतमाता

पके धान सा जीवन जिसका ।

वह मरा है भारतमाता ॥

मर्षों का जीवन में निमका वज्र गति है बंधी रात निम ।

हल के फाल जहाँ पृथ्वा का सुगमय कणक करें रात दिन ॥

१ मन महल उड रागावतार त्यागी पृ १२२ ।

२ सामाहिक हिन्दुस्तान २ जनवरा १९६६ 'त्रिविजयसिंह उपाध्याय रत्नम' पृ० ३७

३ अनुगूज मधराज मुकुन पृ १५

यस्तु विविध प्रकार से देशप्रियता की अभिव्यक्ति हिंदी के गीतों में हुई है। गीतकार का दृष्टिकोण विशाल होता है। यद्यपि गीत का आकार सीमित होता है किंतु गीतकार यथा समग्र राष्ट्र के गौरव की वस्तुओं का अपनी लेपनी में सजाता है सवारता है और सजेत करता है। तीव्र भावानुभूति उत्पत्तिकरण का उच्च भावभूमि पर होती है और राष्ट्र के प्रति गव की भावना का स्पष्ट सजेत करती है।

१. देश की प्रकृति से प्रेम —

प्रकृति प्राणों में विसृजित हरियाला एवं रंगविरंग पुष्प किस मुग्ध नहीं कर लेता ? फिर गीतकार का हृदय तो स्वभावतः माधुर्य एवं कोमल होता है। सोदय से अभिभूत हृदय का उन्माद शब्दों द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्ति पा सकता है ? उज्ज्वल वहाँ चाँद सितार सहस्रता सागर, भरते हुए उन्माद भरने मत समीर उन्नत शिखर मुस्काते कमल व कुमुद्विनी विहसता मधुमास नीलाकाण तथा पटङ्गनुए इनका परिवर्तन एवं नव-नव रूप धारण करने वाली प्रकृति किस आकर्षित न करती होगी ?

राष्ट्रीय भावना की परिपुष्टता के लिए गीतकारों ने अपना शस्त्र श्यामला मातृभूमि उच्च पर्वत, उषा की लालिमा प्रभात की छटा साध्य सुपमा एवं वसन्त-वस करती नन्दिनी का मनाहारी बखन दिया है। डॉ० निदेश ज्योत्सना की शान्ति बनाकर बिगड़ देना चाहते हैं। और की किरणों की पश्य व प्राणों में अमरता देकर प्रसारित करना चाहते हैं। हिमानय पर्वत की मारत का मस्तक मान कर जन जन का सम्पन्न देत हुए—

ओ नव विहान व अक्षय-वार !
जय भारत ! हे जग हृदय-हार !
हिम शुभ्र हिमाचल धर-किरीट
अमने बनकर गौरव सुपेग,
ज्योत्सना शान्ति बनकर बिगड़े
हो विमल विश्व दाल में दिनेश
फिर कर अमरता का प्रसार ।
जय भारत ! हे जग-हृदय हार ॥

डॉ० बच्चन ने वागड़ा का घाने का वर्णन करत हुए गीत में शान्ति प्रेम का परिचय हम प्रसार दिया है —

आज कागडा की घाटी का, राग बहे छाती मे ।^१

औ बहता है यास जहाँ ले-
शत शत निभरना ले
करते बात उसासि भरते
गाते गीत निराले,
गजन करत पापाणा पर
जो उनका पय रोके

लबत तट मिलते पनघट से निज गति मदमाती म ।

आज कागडा की घाटी का राग बसे छाती मे ॥

वचन जी ने प्रकृति सौंदर्य को भरपूर दृष्टि से निहारा और उसका वरुण भाव विभोर होकर किया जहाँ भरने उसासि भरते प्रतीत हुए । उही के निराले गीत गाकर प्रकृति के प्रस्फुटित सौंदर्य की अभिव्यजना की है । पतंगी की सिंधु के लिए अभिव्यक्ति देखिए —

नीलांजन नयना ।^२

उमद सिंधु सुधा-वर्षा यह
चातक प्रिय वयना ।

नम म श्यामल कुतल छहरा,
मिति म बल हरिताबल वहरा
लेटी गितिज-तले, अधोत्थित
शलमाल अपना ॥

बकुल मुनकु से कबरी गुम्फित,
स्वास केतकी रज स सुरमित
भू-नम को बाहा म बांधे
इन्द्रयनुप वसना ।

प्रकृति के चिनेरे, अमर प्रेम के गायक कोमल भावा की अभिव्यक्ति म सिद्धहस्त पतंगी का निम्न प्रकृति चित्र बहुत सुन्दर अमिराम एवं उत्पुक्त चित्रित हुआ है । एक अय गीत दृष्टव्य है —

१ आरता और मगार डा० बच्चन पृ० ८६ पृ० स० १९५८

२ चिन्मय मुमित्रानन्दन पत्र प्र० स० १९५६

जय जय मारन जन मन अभिमित, ^१
 जन गणतंत्र विधाता ।
 गौरव माल हिमालय उज्ज्वल ।
 हृदय द्वार गगाजन ।
 कटि विध्याचल सिंधु चरण-तल
 महिमा गाखन गाता ।

हिमानम विध्याचल गगाजल सिंधु समी की मटिमा का गान
 प्रकृति प्रेम का परिचायक है । इनका रूप शादवत है, इसकी महिमा म
 नितो गीत गाये हैं—

आज बहुत गाने का मन है । ^२
 दूर-दूर तब हरिमाली के
 चबल सागर लहराते हैं
 बहुरिया ऊपर उठती है
 तटवर नाचे भुव जाते हैं
 मन भर भर आता है मरा,
 गल नहीं कह पान जिसको
 मुक्त पवन पर पग लीनकर,
 यही चाह पड़ी गात हैं ॥

जो उमग भरिता की धुन है
 जो उमग सागर का धन है,
 आज बहुत गान का मन है ॥

प्रकृति सौन्दर्य का तादण प्रभाव स्पष्ट परिलगित है । प्रकृति के
 अपार सौन्दर्य के बिलसाव की देगकर गीतकार भूम उठता है । उमने हृदय से
 स्वत रागिनी निकलने लगता है । गीत जिह्वा पर नृत्य करने लगते हैं । वाणी
 का जादू मसम से बागडों पर रगा बिज बनाने म ससगन हो जाता है और कवि
 को सगता है— आज बहुत गाने का मन है । बिसृत हरे मरे सेत्र सद्गता
 पचल सागर चङ्गली वस्त्रियों के मार से मत्र मस्तक तटवर एक साथ

१ आत्र व साकप्रिय हिंदी कवि मुमिनानन्दन पत स० वचन पृ०
 ग० ११६०

२ हिमालय व आंगू आनन्दमिथ पृ० १४ प्र० स० ११६१

इतना सौंदर्य उमंगित गीतकार इस सौन्दर्य की अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं से साधें ? इस विशाल सौंदर्य भंडार की शक्तों द्वारा अभिव्यक्ति नहीं हो सकती । पक्षी-वृजन उमंगित सरिता का मनहर गान सब कुल मिलाकर सृष्टि के प्रकृति-सौंदर्य की नसगिव आभा से मुस्कराते रहते हैं । समस्त हिमाचल प्रदेश इस सौंदर्य राशि से भरपूर है—

अश्व की बत्था लो अब याम दिख रहा मानसरोवर-वृज ॥ १

गौर बन्धो पर ग्रथि टांग,
पूछते हसा के ये बाल
स्वर्ग से दिखती है ये भीम
हिमालय नगता होगा पान

तुम्हें वे यों पत्निया देखा करेंगी गीत सुना अनुकूल ॥

राष्ट्र की प्रकृति पर गव अनुभव करते हुए मनोभावों की शब्दा के साथे में जाता है । विहसते मधुमास का नव सन्देश देते हुए श्री शवाल सरयार्थी कहते हैं—

मधुमास विहसता आया लो नया सदेश साया । २

है पूर्व दिशा में उदित अनाबी नाली
खेतों में हमती हरी मन्मरी बाली

फूल सरसों पर छाई सुपमा पीनी
दे दी बीयन ने तानें मधुर रसीनी
आमों पर सुंदर स्वर्ण मजरी फूनी
जिसकी शोभा की देख प्रकृति पथ भूली

अम्बर ने सतरंगी से
नव बदनवार बनाया
मधुमास विहसता आया ॥

मधुमास आने पर प्रकृति का रूप परिवर्तित हो जाता है । उसी नव परिवर्तन की धीरे इंगित करता कवि स्वस्थ जीवन में भरपूर प्रकृति का स्वरूप चित्र चित्रित करता है । सरसों की पीनी सुपमा स्वर्ण आम्र-मजरी मन्मरणा अम्बर का बदनवार समा मोहक दृश्यावली प्रस्तुत करते हैं । नव

१ दूसरा त्रिमल्लक नरग कुमार महता पृ १२६

२ मावना माच १६२ शत्रुघ्न मत्तार्थी पृ १६

वत्पना व सहारे अभिनव रूप चित्रित किया है। प्रकृति को विविध रंग म रंगकर गीतकारों ने प्रकृति प्रेम के उमुग्ध सजीव बिम्ब प्रस्तुत किए हैं।

७ सम्प्रदायवाद का विरोध —

राष्ट्रीय भावना की तीव्रता का परिणाम है सम्प्रदायवाद का विरोध। राष्ट्रगत एकता वग भेद एवं जातिगत भेद के मानते हुए समय नहीं। जातिभेद एवं वग भेद राष्ट्र की शक्ति का बटवारा कर देता है। समस्त शक्ति का रक्षयिता एवं नियन्ता एक ही है। सभी मानव रक्त की सात्त्विका म पूर्य हैं। जन्म रक्त एक जैसे रंग का है सृष्टिकर्ता एक है तब तो मानव मानव म भेद क्या? यहाँ भेद भाव तो राष्ट्र की पराधीनता का मूल कारण है। राष्ट्र का एकता व लिए सम्प्रदाय का विरोधी गीत आवश्यक है। राष्ट्रीय भावना के विकास की परिपुष्ट शृंगरा है सम्प्रदायवाद का विरोध। मानवता ही सब धर्मों म श्रेष्ठ मजस उच्च उन्नत भाव भूमि पर प्रतिष्ठित होने योग्य ही है।

राष्ट्रीय भावना के विकास की स्थिति का बोध करने के लिए सम्प्रदाय का उन्मूलन आवश्यक है। भारतीयों की प्राध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जागृति न देना की राष्ट्रीयता व प्रति जागरण किया है और स्वदेश एवं स्वदेश के प्रति अनुराग बढ़ाया। ब्रह्म ज्ञान का-ज्ञान शक्ति राष्ट्रियता का प्रचार किया। हमारे गीतकारों का ब्रह्म समाज स समाज व उच्च स्तर म बौद्धिक और धार्मिक चेतना की श्रेष्ठता मिनी और आय-समाज म जागरण का गन्ध। विप्लोवाधीन सीमायटी रामकृष्ण मिशन ने भी हमारे, गीतकारों का सम्प्रदायवाद एवं धार्मिक विद्वेष के विरोध में नवीन शिक्षा एवं नूतन चिंतन दिया। महा धरदानी स अनुप्राणित वचन ने अपने गीतों म धर्म-भेद और सम्प्रदायवाद का अहिंसात्मक मानकर अहिंसात्मक की —

भगर बना प्रसाद शय गाय का ।^१

पसाद सम्प्रदाय-सम्प्रदाय का ॥

उपट न लगे धर्मो नया बरक,

बड़ा अभी

स्वदेश पर

विभाषिता !

सम्प्रदायवाद का विरोध करते हुए डॉ० दिनेश का निष्ठ एवं मुक्तिमार्ग प्रदान —

मैं मस्जिद के द्वार गया ?
 तो मंदिर क्यों नाराज है ?
 राहें नई बनाने वाली !
 मजिल से भटकाने वाली ॥
 खुश तुम्हें लखवार पूछता—
 एक नहीं क्या जग का मालिक ?
 जिसके सिर पर ऊँची-नीची—
 सब दुनिया का ताज है
 मैं मस्जिद के द्वार गया—
 तो मंदिर क्यों नाराज है ?

वह जीवन जो जग में क पचड़ो में पड़ गया है तब उस विभक्त जीवन को गीतकार किस प्रकार नमन करे ?

किसको नमन करूँ मैं भारत किसको नमन करूँ मैं ?
 वहाँ नहीं तू जहाँ जनों से ही नुजों को भय है
 सबको सबसे आस सदा सब पर सशका सशय है
 जहाँ स्नेह के सहज स्त्रोत से हटे हुए जन गए हैं
 झड़ा या नारों के नीचे बंटे हुए जन गए हैं
 कैसे इस कुत्सित विभक्त जीवन को नमन करूँ मैं ?
 किसको नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करूँ मैं ?

भारत की स्वतंत्रता के जो स्वप्न देखे थे उन पर आधारित भारत का जो चित्र मस्तिष्क में विद्यमान था वह रखाए स्वतंत्रता के पश्चात् भलिन हो गई। उन अस्पष्ट रत्नाभा का धूमिल चित्र वह न था जो कवि ने देखा था। पुष्प हृदय की व्यथा गीतों में इस प्रकार अभिव्यक्त हुई—भारत वहाँ नहीं है जहाँ मनुष्य को मनुष्य से ही भय है। सभी एक दूसरे को शक्ति दृष्टि से निहार एक दूसरे का आसपास सभलते हैं। सहज-स्नेह के स्त्रोत से हटकर जाड़न-नया भाग बँ रही है। हम विभाजन को मुक्ति मानकर इस विभक्त जीवन को नमन करने का गीतकार तयार नहीं।

हम विभाजन के कारण हमें अपने राष्ट्र पिता बापू को तो निया और मविष्य में भा न जान विनन जीवन नष्ट हो जायेंगे। जब तक हिट्ट मुसलमान

१ जयश्याम डा 'निर्देश' पृ० २१ प्र० म० १९६१

२ नीलकुमुम खानखारीमिह 'निर्देश' पृ ८३ प्र म १९५४

भेद भाव दूर न हाथा राष्ट्र पर सवट की व नी घिरती रहेगी । भारत की स्वतन्त्रता व साम ही जिद्दा ने पाकिस्तान अलग बनान का प्रस्ताव रखा तमा राष्ट्र की असहता नष्ट हो गई । हिन्दू मुस्लिम आपस म हा लाने मरने लग । स्वातन्त्र्य-मशराम जाति सग्राम युद्ध-स्थल बन गया । मुक्ति की साँस शांति स ले भी न सके कि पाकिस्तान अलग बना और हिन्दु मुसलमान इन दगों में फिर मार गये । जब-जब भी युद्ध होता है, उपद्रव होत हैं ध्यय मे हा न जान कितनी त्रिन्दिया का बनिदान हो जाता है । इस पाक-विभाजन के बारण ही काश्मीर समस्या उत्पन्न हुई । चीन के हौसले बड गये और भारत पर आक्रमण कर लिया । राष्ट्रीय एकता की भावना को डेस पहुँची और गीतकारों ने प्रयास किया इस भेद भाव को समाप्त करने का—

बिखरी बापू की नहीं धा रही आज या ? १

बिखरे मन म है आज नहा जागा विषाद ?

जिसके सबसे ज्यादा धर्म-यत्ना स आइ—

भाजादी, इसका ही सा बठा है प्रसाद,

जिसके शिखार हैं दाना हिन्दू मुसलमान ।

भाजादी का नित मना रहा हिन्दोस्तान ॥

स्वातन्त्र्याल्लाम पर तुषारपात हुआ और बापू का असामयिक निधन सबकी प्राँग पीली कर गया । शोक की सहर सबत्र दीड गई । वही बापू जिन्होंने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए सबसे अधिक प्रयत्न किए स्वतन्त्र देश म गुण स रहते ना न पाम । कबि का विशुद्ध हृदय आकाशपूरित हो उठा ।

परन्तु सम्प्रदायवाद का विरोध करत हुए अनेक गीता का रचना इस विषय पर हुई । परन्तु धब नी भारत म अनेक सम्प्रदाय धनप रहे हैं । प्रत्येक प्रान्त अपनी भाषा अपनी जाति और अपने राज्य की स्वतन्त्र रचने की कल्पना करता है । मिशनरी असा अपनी सत्ता कायम करना चाहत हैं । उन्हें अपना अनग दस चाहिए जिस प्रकार पाकिस्तान बना और इसी के आधार पर काश्मीर को अलग करना चाहते हैं । भीतर ही भीतर इस विषय का जड़ें धनपती रही हैं । परन्तु जब बाह्य-सत्ता का आक्रमण होता है तो समस्त विषय कानिमा धुम पुछ जाता है । पाकिस्तान व आक्रमण व समय भी भारत निवासो मुसलमाना ने जिस छलरता स सहयोग दिया उनका नाम इतिहास म सन्ध क लिए स्वराजपरी म लिता जायगा । उनकी

निंदा की और विरोधी शक्ति कुचलने के लिए ओजस्वी काव्य की रचना की।

१ बलिदान की भावना

राष्ट्र पर घिर आई सकट की बदली को चीरने के लिए दुश्मनों के छक्के छुटाने के लिए नौजवानों का रक्त उबलने लगा। कोमल स्वर लहरी में गीतों का सृजन करने वाले गीतकारों के स्वर पौरुष बनाए और ओज पूर्ण हो गये। राष्ट्र सुरक्षा के लिए उद्बोधन-गीतों की हँकार नलकार कोमल न रही। ओजपूर्ण गीतों के सृजन ने उत्साह, नव-स्फूर्ति एवं सक्रियता के भाव भरे। इतनी कठिनाईयों एवं संघर्षों के पश्चात् मिली स्वतंत्रता को गवाने के लिए राष्ट्र-वासी तयार न थे। सम्भीर गजना अधिकार को चीरती हुई, दुश्मना के हृदयों को हिसाने वाली एवं नौजवानों को उत्साहित करने वाली सिद्ध हुई। बलिदान की भावना राष्ट्रीय भावना के पोषण का सबसे महत्वपूर्ण एवं त्यागपूर्ण तत्त्व है। बलिदान की भावना बलि प्रथा के रूप में विकसित एवं पोषित होती रहे। अभिप्राय यह है कि परतंत्रता का जो कलक लगता है वह जल, अशु, श्म, बल आदि के धुनाने से भी नहा धुलता है। उस जालिमा के विषाद को धोकर उज्ज्वल करने के लिए शहीदों के अविरल रक्त प्रवाह की आवश्यकता है। इसी कारण बलिदान की बलि की प्रथा का रूप देने की आकांक्षा है —

देश में बलि की प्रथा रहे^१
जो बलि धुल सके न जल से
आँसू से श्म-सीकर बल से
उस मुडाने को शहीद का अविरल रक्त बहे
देश में बलि की प्रथा रहे ॥

गीतकार बलिदान करने के लिए ही सचेत नहीं करते अपितु स्वयं भी बलिबदी पर चढ़ने को आतुर हैं।

मेरे देशवासी १२
बलिबेदी पर मैं भी हू
बलिबेदी पर तुम भी हो
तुम मेरे इस हेम मान पर
मुक्ति-रूप कुत्रुम भी हो

१ त्रिमणिमा डा० बच्चन पृ स ११५ प्र म १९६२

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १७ नवम्बर १९६२ बारन् मिथ

मुनगी मिट्टी का ढेरी
अब न जरा भी कर दरी
कस तक रक्षा करता था मैं
अब तू रक्षा कर भरी
भर देशवासा ।

वसिष्ठान का बेना पत्र चढ़न के लिए प्रस्तुत गातवार देरी नहीं चाहता । वसिष्ठान की भावना और प्रेरणा के लिए गीतकार माध्यम चाहता है ऐसा सगक्त जितना वसिष्ठान देने के लिए हितचिन्ता नहीं है । सुभाषचन्द्र बाम भाभी की रातों चन्द्रमकर आज्ञा आदि घने वीरों का स्मरण करके भावों को उग्रता बनान में गातवार मगन है —

सावधान मानवता के दुश्मन । मैं सजग जवान हूँ ।
मैं सुभाष का लून चन्द्रमकर की जवती बना हूँ
मानुष्यमि के लिए युद्ध में मैं अनमोल उग्रता हूँ
भाभी की जवकार नहीं साने वाली

द्वार मुक्ता पर पहर का तलवार नहीं सोने वाली ॥
वसिष्ठानी पर चढ़ने वाला मैं शोणित का दान हूँ ।
सावधान मानवता के दुश्मन मैं सजग जवान हूँ ॥

प्रकृति द्वारा वायु की बषा का बलि का संदेश देने वाली नायिका वसिष्ठानी जवानों के प्रति सजग है —

आ बषा के श्यामल वायु । २
तुमसे यह अनुगीष हमारा,
अनगिन बूँदों की रिमक्ति में
अग्निबाण अरि पर बरसाना
वसिष्ठानी जा गये वहाँ पर
उनका तुम भी हाथ बटाना
पौरव्य का हरिषाणा सोचि,
घात तुम्हारी रस की चारा

१ भूमि के मगवान, रक्षवीर शरण मित्र पृ १०

२ गायत्री हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६३ सुमिता कुमारी मिह्रा
पृ० १४

ओ वषा वं श्यामन वाहन

तुमसे यह अनुग्राह हमारा

मानवता के दुश्मना का सहार करने के लिए प्राणोत्सग को तत्पर
वीर होनी का त्योहार प्राणा की आहुति देकर मनाना चाहता है —

सलो आज प्राण की होली १

हिमगिरि से उन्नत ललाट पर वर लो वधु

विजय की रोनी ।

जाने दो वसत की ज्वाना

बसरिया तन मन मतवाला

छव सबस्व त्याग की हाला

मरनो अमर कीर्ति से झोली

सेनो आज प्राण की होली ।

प्राण की हाला खनने वालो के लिए मात भूमि का अधिकार सबसे
अधिक है । आजादी की रक्षा के लिए शीश चटाने वाले का मात भूमि पर
पहला अधिकार है । व जो प्राणोत्सग कर शहीद हो गये उसी अमर-सेनापति
म नाम निखाने को तत्पर वीर बलिवेदी पर चले जाने के लिए आकुन हैं
जिम्मे को पहना शीश उसी का चढे ताकि मात भूमि की रक्षा हो सके—

मात भूमि की सेवा का २

पहला अधिकार हमारा है

आजादी की रक्षा में हम

अपना शीश चढा देंगे

अमर शहीद की सना में

अपना नाम निखाने

बलिवेदी पर चढ़ जाने को—

पहना शीश हमारा है ।

गीतकार मात भूमि पर बलि हो जान की कथा सुनान का तत्पर हैं—

मुण्ड मुण्ड पर नाच रहे वे शिवशंकर ह्रीं वरामी । १

मातभूमि पर बलि जान की कथा सुनो भारतवामी ॥

१ सामाजिक जिज्ञान १ मार्च १९६३ चन्द्रप्रकाशसिंह पृ० १८

२ सामाजिक जिज्ञान १८ अगस्त १९६६ बही विनायक निवारी पृ० ६

रंग की लका ग्लव हिन्ना पगिपद् यशोमानन्त शमा विमन पृ १५

मानाव विजय का अन्तिम अभियान तो बाकी हा है । तन और धन नश क लिए योद्धावर कर दा जीवन का सबस्व लुटा न। तमा ता बलिदान, पूरा कर्नायगा ।

आसोक विजय का अन्तिम ।^१

अभियान अभी बाकी है ॥

काइ तन न्ता कोइ

धन अपण कर देता है

माना की मानी का

कचन स भर दता है

जावन सबस्व जुग दे

बलिदान अमा बाकी है

आसोक विजय का अन्तिम ।

अभियान अभी बाकी है ॥

बलिदानों का परम्परा न अनृप गीतवाग बलिदाना क पश्चात् मा जीर बलिदान चाहता है । पूजा को भगवान अन्त में परन्तु धरती को ता इतान का आवश्यकता है । बलिदाना क पुण विन हैं परन्तु अभी और बलिदान चाहिए—

बलिदाना क पून विन पर—२

अभी और बलिदान चाहिए ॥

पथक रहा है घरा भूल स मया का तलपार कहीं है ?

यह कसा मृगम की बना दुनहन का गृ गार कनी है ?

मन्त्रि में आरती हा रही, पर समाधि न कान न गान ।

गाते गात गीत बने हम, पर हमस भगवान न धान ॥

पूजा को भगवान बहुत पर

धरती का इमान चाहिए

बलिदानों क पून छिने पर

अभी और बलिदान चाहिए ॥

स्वातन भारत की जय जोनने के लिए प्राणों की बाजी लगानी पडनी है । परमी की ग्हा हनु कीर पषानों का सीमा पर मजग प्रहरी का

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ५ अगस्त १९६४ आरमी प्रसाद सिंह पृ० १

२ जनते तार रघुवार नरग मित्र पृ० ५१ स० प्र० मक्त् २०१०

काय करना पड़ता है तब वही शांति के दुश्मन का मुकाबला किया जाता है। गीतकार प्रसन्न है कि घमंड में चूर दुश्मन खुद ही मरने को आगया है। भारतमाता प्राणों का बलिदान मांगती है—

तरा जय भारत की जय है रख नना माता की आन ।^१
अपनी धरती की रक्षा हित बढ़ जा रे तू वीर जवान
आज शांति व दुश्मन तेरी धरती पर मढराये हैं
हो घमंड में चूर सभी व मरने को भाये हैं

भारतमाता माँग रही है तेरे प्राणों का बलिदान ।

अपनी धरती की रक्षा हित बढ़ जा रे तू वीर जवान ॥

भारत की धरती ने कितने ही वीरों का शोषित-दान लिया है और बलिदानों से भरपूर यह धरती वीरों से रिक्त कभी नहीं हुई। बलिदानों से ही सीमा रक्षा होती है। व पुष्प जो इस धरती पर पुष्पित हात है माना इसी बहाने से मौन घरा वीरा स मुस्काती है। यह धरती बलिदानों से हा है—

यह धरती बलिदानों से ।^२

वीरों के अरमानों से ॥

बलिदानों से सामा रक्षा बलिदानों से होती जय
तप से मिद्धि मिला करती है तप से सुरभित जाती वय
स्वतंत्रता बलिदानों का निधि अरमानों का धानी है
फूलों व मिस मौन घरा यह वीरों से मुस्काती है

दीपक हैं परवानों से ।

यह धरती बलिदानों से ॥

मरण को त्यौहार मानकर बलिदान की वना का स्वागत करते हुए, गीतकार निःसंकोच प्राण निछावर की शोष-कथा कहता है। भारत में मातृभूमि की रक्षा हेतु प्राण तक देने में कोई भी भारतवासी भयभीत न हुआ। अस्थियों ने वज्र रूप की छातियों का भेदन करें कण्ठ-स्वर घण्टाकार की भेदन गम रक्त पुन सपूना की फगल साजे माँ का रूप अत्यन्त रहे और पुन तनवारें म्यान में बाहर आ जायें। अथवा युद्ध के लिए सब तयार

१ अनुमूल मेघराज मुकुन्द पृ १६ प्र स १६६७

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २४ अक्टूबर १९६१ रघुवागशरण मिश्र पृ ३५ ।

राष्ट्रीय भावना

हो जायें। पुन भारत के साठले सपूतों के शीश का मना लगा है उसका व्यापार हो—

चनो फिर आगई बलिदान की वेला^१
हमारा मरण भी त्योहार बन जाए

हमारी अस्थिया के वज्र, रिपु की छातियां छेनें
हमार बण्ड-स्वर तम के सपूचे काफिन भेदें
हमारा गम सोहू फिर सपूता की फसल सीचे
अगदित रूप मौ का नाव फिर तनवार की गोच

लगा फिर साइलो व शीश का मना।
हमारे शीश भी व्यापार बन जाएँ ॥

गीतकार की अभिव्यक्ति नितनी उच्च भाव भूमि पर हुई है। सपूतों के बलिदान की कहानी चित्रित हुई है। 'गीत' देना प्राणों का उत्सग बहुत ही सहज काय है, भारत के जवानों के लिए। उनकी वीरता का प्रमाण निर्मोचना का दमन प्रस्तुत गीत में उपनय है।

जब हवाए प्रति बूज चलने लगती हैं तो सघष आवश्यक हो जाता है। भारत के प्रतिबूज जितनी बार भी हवाए चली हैं भारतीय सैनिक भी घमराए नहीं हैं। निरन्तर चलते रहने से हिंद का दीपक नहीं बुझेगा। बेसरिया काशमीर को हस्तगत करने के लिए जब पाक ने शीश ऊंचा किया तो इस प्रतिबूज काशीर के सघष करने को भारतीय जवान सजग हो गये। गीतकार ने गृजन किया—

इन प्रतिबूज हवाओं में भी, चलन जाना भी हमराही।^२
तुम यदि चल रहे निरन्तर दिया हिन्द का नहीं बुझेगा ॥

बेसरिया काशमीर न दोगे चाहे हा तागों बुबानी
यह गही का रक्त-तिलक है आज्ञानी पौनानी पानी
या तूपा घभी कुछ कम है सब है वहां न फल स्याहा।
रहे सगन का तो नित ऊपर दिया हिन्द का नहीं बुझेगा।

आज्ञानी के लिए पौनादी पानी का भी उपयुक्तता स्पष्ट है। हमारा सारा ही कुरबानी तेवर जा आज्ञानी आई वह कितनी पौनादी हाणी ?

१ सामाहिक हिन्दुस्थान १६ जनवरी १९६६ या प्राण पुन पृ १८

२ सामाहिक हिन्दुस्थान २४ अक्टूबर, १९६२ दबराग मुन पृ १०

बिनो के रक्त की प्यासी थी निष्ठुर थी यह आजादी ? जीवित बलिदान देते हुए अपने रक्त की रोली से भारत माँ की माँग भरेंगे तभी काश्मीर के नये भवन में प्राण की इट लगाने पर काश्मीर हमारा रहेगा ।

शांति मिथारिन नहीं बनेगी ।

हम सब जीवन भेंट करेंगे

ये जिंदा बलिदान रक्त रोसी

से माँ की माँग भरेंगे

काश्मीर के नये भवन में

हम प्राण की इट लगानी है ॥

हमारे भारत की शांति मिथारिन नहीं बन सकती क्योंकि समस्त भारतवासी जीवन की भेंट चढ़ाने को तैयार हैं । बलिदान की प्रेरणा के गोता का सृजन हो चुका है और होता रहेगा परन्तु देश बलिदान देने से पीछे नहीं हटेगा । भारत कभी बलिदानों से नहा घबरायेगा क्योंकि बलिदान की परम्परा घलट है । भारत भूमि के जवान सदैव निर्भीकता से बलिदान देने को तत्पर रहेंगे । गीतकारों की कलम कभी इन गीतों का सृजन करने से नहीं घनेगी कभी निष्प्राण नहीं होगी । सदैव बलिदानों की गुण गाथा गाकर अमर शहीदों की स्मृति में अनुज्य चला बलिदान की प्रेरणा देने में सफल होती रहेगी । यही सजग गीतकार का कर्तव्य है ।

२ राष्ट्र-पियों की जिम्मा —

स्वयं व व्यक्तिगत स्वायत्त व नियमों का राष्ट्र का अधिकार करते हैं व सभी राष्ट्र इसी हैं । ऐसे लोग राष्ट्र के हित की अपना अधिकृत हित की कल्पना में समझ को हानि पहुँचाते हैं । राष्ट्र की उन्नति की चिन्ता न कर शापण करते हुए उसे घबराती की आर ले जाते हैं व थोड़े में स्वायत्त व नियम राष्ट्र स्वाधीनता का भी खतरे में डाल देते हैं क्योंकि उन्हें देश में माह नहीं है । राष्ट्र उन्नति को बढ़ा बनाने में सहयोग देने वाले राष्ट्र की सम्पत्ति का हानि पहुँचाने वाले सरकारी वस्तुओं का नष्ट कर जनता के जीवन का खतरा देने वाले राष्ट्र इसी हैं । भ्रम भाव कुआड़न और स्वायत्त व द्वारा जा व्यक्ति राष्ट्र का अधिकार करते हैं उन राष्ट्र-पियों की जिम्मा करना स्वाभाविक है । यानसार उनका विचार-परिवर्तन के लिए उनका तत्त्वा का नष्ट करने व नियम उनकी जिम्मा करना है जिससे व अपने कर्तव्य व प्रति जागरूक हो ।

मनुष्यता के शृंग पर चढ़े चलो ।^१

उमंग की मशाल ले बड़े चलो ॥

भेग भाव, पक्षपात छोड़ दो

राष्ट्र-एकता को नया मोड़ दो

प्राज्ञ की विपत्तियाँ बता रहों,

देश-नेहिया का साथ छोड़ दो ।

हर परिस्थिति से तुम भिड़े चलो ।

उमंग की मशाल ले बड़े चलो ॥

भेदभाव पक्षपात करनेवाले देश-नेहिया का साथ छोड़ दें सभी राष्ट्रीय एकता सम्भव है । राष्ट्र अहितकारियों से क्रुद्ध गीतकार का आवाज़ है— स्वतन्त्रता मिल जाने से ही हमारा राष्ट्र समृद्ध एवं उन्नत नहीं हो सकता । उससे लिए राष्ट्र-अहित के व सब कारण, व सब भावनाएँ समाप्त कर देनी होंगी, जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय एकता में बाधा उपस्थित होना है । स्वायत्त घृणा कपट प्रपञ्च छन जानीयता प्रान्तीयता आदि का अन्त करने के लिए कवि का आग्रह है जिससे स्वतन्त्रता का सही एवं स्वस्थ स्वरूप सामने आये—

स्वतन्त्रता मिला बिना नवीन ज्ञान है^२

• • • • •

न पर बदन सब कि तुम महान् हो सब,

स्वतन्त्र दश के महाभिमान हो सबे

दगा करव, स्वाय म न मुक्त हो सबे

घृणा, कपट प्रपञ्च छन विमुक्त हो सबे

अमी न पूस का बाजार बन हो सका

अमी न और चारद्वार बन हो सका

अमी न धोरियाँ गई विरोरियाँ गई

अमान स्वाय म बरा विजोरियाँ गई,

अस्तिगत स्वाय का ही जलना परिणाम है कि भारत के गाँव दुःख-शरित्सय से घिर लक्ष्य रहे हैं । सच्चाई ईमानदारी मानवता आदि गुणों का ह्रास हो रहा है—

१ यमिना १२ जनवरी १९६८ मग्न गिरत पृ १३

२ यथाध और बन्ना उन्मयकर मट्ट पृ० ३२

सौ-सौ प्रतीक्षित पल गये,^१
 सारे भरोसे छल गये
 किरणें हमारे गांव में खुशियां नहीं लाई
 अपना समय भी खूब है
 मोला सृजन जाय कहां ?
 छन हृदय तो स्वाधीन है
 ईमान पर पहरा यहाँ ॥

स्वतंत्रता के उल्लास में भारत का जो नया रूप नया स्वप्न देता था वह सारा विश्वास छना गया स्वप्न टूट गया कल्पना छिन्न भिन्न हो गई । कारण कि मानव ईमानदार न रह गया । कवि ने भी करारा व्यंग्य किया है कि ईमानदारी पर यहाँ पहरा है । हृदय के आधीन तो छल कपट हा रह गये हैं । स्वतंत्रता की किरणें हमारे गांव में खुशियां न ला सकीं । शापण तब भी होता था अब भी हो रहा है । कम और ज्यादा का प्रश्न है तो कम ता हुआ है परन्तु कुछ घूसखोरों ने व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर जन साधारण की खुशियां छीन ली हैं । उन राष्ट्रद्रोहियों की निंदा करते कवि उन्हें सचेत करना चाहता है जिससे वे राष्ट्र के प्रति अपने भूले हुए कर्तव्य के लिए सजग हो जायें—

यह भारत की आय महत्ता जाग रही है^२
 सुन लो बान खालकर मानव स्वार्थी दुबनताओं
 अमुरा की दुद्ध प शक्तियों जोर गुप्त छननाआ
 बच न सकेगी प्रभु का अग्नि घनी यह जाग रही है ।

मानव की स्वाधपूण दुबनताओं को धिक्कारत हुए कवियत्री न सचेत किया है कि मातृ की आय महत्ता जाग रही है । जब जब भी आमुरी प्रवृत्ति के व्यक्ति छल कपट से राष्ट्र का हानि पहुँचाने की चप्टा करते हैं तब तब दबी प्रवृत्ति का महान पुम्प अवतरित होता है ऐसी घारणा परम्परागत है । उसी की आशा पर नया विश्वास रखकर अमुरों का दुद्ध प शक्तियों एवं गुप्त छननाआ का धिक्कारा है—

बुझनी हुई राख में भव भी ।^३
 दब गए अंगार सजग हैं ॥

१ कान्तिनी गरजग गग पृ० ७८ स० नम्वर १६६३

२ मासाहिक हिन्दुस्तान २८ अप्रैल १६६३ विद्यावती काविल

३ ५५ की अष्ट कविताएँ, बनारसिंह रय प्र० म० ६७ ६८

ध्वस्त दारात्वं देश का—
 नय अभी शोषण का बधन
 प्रभुता व हाथों में अब भी
 जीवन क श्रम का मूल्यांकन
 यद्यपि भगल-भलन घचतन ।
 फिर भी बन्धनवार सजग हैं ॥

देश की दागता ध्वस्त हो गई वित्तु शापण का बधन फिर भी बाकी रह गया । तबिन हम शापण को समाप्त करने के लिए अब भी शक्ति है । यद्यपि स्वातन्त्र्य सपना समाप्त हो चुका मुठ के चिह्न मित्र लगे बिनाआ की अग्नि राग के त्रम परिमित हागर्द परन्तु प्रचलित अग्नि के शोष अब भी उग राग के डर में अमारा के रूप में छिपे हैं । व अब भी गहन है । भारत के संपूर्ण निष्प्रिय नहीं हा गय यदि अब भी धनता के अंग बाकी हैं । जीवन के श्रम का मूल्यांकन अब भी सही रूप में न जागा तो क्या हागा ? अब तो हमारा राष्ट्र स्वतंत्र ही है ।

५. गुरुता के लिए उद्बोधन —

जब राष्ट्र समृद्ध होता है तो राष्ट्रीय भावना समृद्धि और एकाता के विभिन्न पथा से गुजरती है । जब राष्ट्र स्वतंत्र ही न होगा तो राष्ट्रीय भावना बेधन आजागी के भाव पर विरामित होती है । आजागी के स्वप्न का मयाध में परिमित करने के लिए हम प्रमुख भावना बाध करनी है—राष्ट्र स्वतंत्र हा । अथ पहचानों पर विचार करना उस समय मौल्य हाता है । अती सत्यरता से यदि हुई स्वतंत्रता कहा फिर परतंत्रता एवं दासता के अगुन में न पम जाय इसीलिए गानगार अगन गीतों से राष्ट्र रक्षा के लिए जागरण का काम पूरने हैं । प्रत्येक दगावामी का बन्धन-बन्धन पर सजग करने है कि क्या देश पर पुनः सन्धुभा का आधिपत्य न हो जाए ।

स्वतंत्रता के पश्चात् जब जन जीवन में धराजकता बढ़ गई और देश की एकाता उगेता की दृष्टि से देशा जान सगी । राष्ट्रीय भावना तथा जन जागरण का भावना भावुकता में सुप्त होता हुई व्यक्तिगत ह्माय में अन्ध गई थी उसी समय एक गवेन हुआ उत्तर की पन्नाडिया में जागतामी पानी धागना रिज में धुम आए । तुरन्त ही राजनीतिज्ञों ने धागता गतभेन दूर कर दिए । भाषा की समस्या ठण गढ गई । विपार्थी मठदूर करत एवं अथ बय के समी व्यक्ति मय बरे भाव भूतकर, हृदयों के करना

छोड़कर राष्ट्र की सुरक्षा के लिए तैयार हो गये । प्रेम के मुख को एक आपात पहुँचा और सत्कार भर को सशक्ति कर देने वाली स्थिति उत्पन्न हो गई । इस सकट वालीन एकता के समय में भारत अपने जन जागरण के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा जिससे भारतीय राष्ट्रीयता के अभिनव रूप को बल मिला । वह भावना जो स्वातंत्र्य संग्राम के पश्चात् प्रायः लुप्त हो गई थी जा पुनः नए आयामों के साथ उभरी । भारत के प्रहरी मुप्त थे और वे इस नये आक्रमण से स्वप्नित निद्रा को त्याग कर चेतना की जगड़ाई से उठ खड़े हुए । कवि नमाला का स्वर लहरी सचन चेतना के प्राण फूँकती भारत में ध्याप्त हो गई—

भारत के जवानों !

भारत के जवानों ! !

भारत से तुम्हें प्यार तो बढ़क उठालो ।

इन चीनी चुपेरा को हिमालय से निकालो ॥

भारत के जवानों !

भारत के जवानों ! !

मुट्ट बाघ के साथ जागृति के सुरक्षा के उद्बोधन के गीतों का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ । हिंद के जवानों को आग बढ़ने का आदेश देते हुए—

बड़े बल्लो बड़े बल्लो बड़े बल्लो ऐ हिन्दू जवान !

सन्धी की सतान हो तुम

वीर शिवा की आन हो तुम,

राणा का अभियान हो तुम

नेताजी की जान हो तुम

सजग हो जाओ वीर जवान,

बड़े बल्लो बड़े बल्लो बड़े बल्लो ऐ हिन्दू जवान ! !

आग बढ़ने का संदेश शिवाजी की आन को स्मरण कराते हुए निया नेताजी के शौर्य को स्मृति में लाकर निया इस प्रकार वीर जवानों को सजग कर आग बढ़ने का सन्धी प्रसारित किया । समस्त साथी तैयार हो जायें—

१ धर्मयुग ६ जनवरी १९६३ गणतन्त्रमिह नेपाल।

२ रणभरी आननपान मित्र कोविंद पत्रिका प्रका० रेन्ड सिन्धी परिषद्
पृ० १७

अब हो जाओ तयार साधियों देर न हो १
दुश्मन न फिर बारूदी बिगुल बजाया है,
उ मोसम फिर इसी नये चमन क फूला पर
सर कफन बाँधने वाला मोसम आया है ।

प्रस्तुत पत्तियाँ जवाना को रण अभियान के लिए तत्पर करती हैं ।
उ मन का बारूदी बिगुल पुन बजने लगा है और व मोसम ही युद्ध का मोसम
आ गया है । अतः सर पर कफन बाँध दो । सर पर कफन बाँधने से गीतकार
का अभिप्राय है कि मरण के लिए तयार हो जाओ । यदि युद्ध प्राणण में मर
भी गया तो जिंदा न होगी क्योंकि मरने की सम्पूर्ण समारी के साथ सिर
पर कफन भी बाँधा है । मानव का जागृति का संदेश दते हुए दुश्मना के
सीना चीरने का संदेश भी दिया गया है—

भीर की किरणें जगातीं आज मानव जाति २

• • • • •

पस कमर ल गठग कर म अब निकलकर गान सीना
भीर का अपनी कटारी दुश्मना का खाल सीना
हो विजय फहर ध्वजा और हो मिनन फिर गोल सीना
गूँज उठ गगन नारा जग सराह खोल सीना
भूर की सत्ता है, अब क्रूरता मत पास ना रे ।

दुश्मना का हार हो और विजय ध्वजा पुन उहराय जगत् में भारत
की वीरता की धूम मच जाय । इस प्रकार जब जब भी गीतकार पंथम उठाता
है तब गुरुता-उद्बोधन स्वर लिपिबद्ध होता जाता है । वीर जवानों से गीत
कार आशा करता है कि व देश प्रेम का त्रिशुल बजायेंगे । शत्रुओं के दल पत्ते के
समान परधराने लगे ऐसे रण का मात्र सजाने का आवाज़ा है —

आओ वीर जवाना । आओ ३

देना प्रेम का बिगुल बजाओ ।

काँप उठ पत्ते-सम धरि-स

एक रण के साथ सजाओ ॥

राष्ट्र पर धार्मिक विपत्ति का नेतृत्व निरकारदेव गणक ने समस्त
भारतवासियों से आग्रह किया कि भक्त भाव को भूतकर राष्ट्र रक्षा के लिए

१ कविताएँ १९३४ नीरज पृ ३१

२ रणभरी दीपमाला नामा विद्योर्मा पृ १६

३ रणभरी ३७ ओमप्रकाश नामा 'प्रकाश' पृ १८

तयार हो जाओ। राष्ट्र सकट में है और सबट बान में शृंगार शोभा नहीं देता। सकट के समय शृंगार नहीं रंग अभियान किया जाता है -

उठो ! साधियाँ ! समय नहीं है यह शोभा शृंगार का^१
जाज चुकाना है ऋण तुमका अपनी माँ के प्यार का
प्राण हथेली पर रख रखकर चलना है मदान में
फँक नहीं आने देना है देश जाति की शान में
गर्व के आगे एक प्रश्न है सीमा के अधिकार का
उठा साधियाँ ! समय नहीं है यह शोभा शृंगार का ॥

जिस माँ ने जन्म दिया उसका वह ऋण यदि प्राणों का लेकर भी
शुक्राना पड़े तो भारतवासी सदैव तयार हैं। हमके ये आदर्श हैं। माँ के प्यार
का ऋण चुकाना ही जानत हैं। देश और जाति की शान में अंतर नहीं आना
चाहिये चाहे प्राण चल जायें। सामा के अधिकार का प्रश्न युद्ध का संकेत लेकर
उपस्थित हुआ है। इसका उत्तर शक्ति के जाह्नान द्वारा ही दिया जा सकता है—

हर शक्ति हिमायत बन जाए^२

बस कमर बंध अभियान लें

हम सबका तन मन प्राण देश

मर दश रह जीवन जाए।

हर शक्ति हिमायत बन जाए ॥

देश ही हमारा तन मन एवं प्राण है। उसकी रक्षा के लिए शक्ति
हिमायत-भी विज्ञान सुख जन त्राय जिसमें टकराकर शत्रु धूर धूर हो
जाये। जीवन भर हो चला जाय किन्तु देश पर जीव न आये। भारत का वह
समय आ गया है जब युद्ध मर्त्य की प्यासी होगे में तयार अंतर तक पहुँच
कर प्रभाव डाल चुकी है। घरनी का सुगहाना सती के समान भस्म हो
गई है। अतः समय की हत्या ज्यादा न हो शिव धरना तीसरा नेत्र खोल दें।
शोध में जब शिव ने तपस्या भग्न करन ध्यान कामन्द को देखा था तो तीसरा
नेत्र की अधोगति में वह भस्म हो गया था। इसी कथा के माध्यम से कवि
ने संदेश दिया है—

समय जानया आज कि भारत^३

लिए युद्ध मर्त्य की प्यासी

१ योजना जनवरी १९६३ निरकारण सेवक

२ समाज कल्याण जनवरी १९६३ नरद शमा प ५

३ मासिक हिन्दुस्तान १६ मार्च १९६४ हरिद्वार प्रभा पृ १

शकर स भी कहा तीसरा नत्र आज द वह भी सोल
हत्या आज सत्य की हाता, पाडित है भूगोल, खगोल,
फिर भी है समाधि म शकर, क्या न उठा है आसन डाल ?
क्या न ध्यात है प्रत्यक्षर अब ताडव व तीक्ष्ण बोल ?
सदा समान भस्म हो गई है, धरती का खुग हाता ।

शकर का मृष्टि का सहारकता मानने का परिपान्ति प्राचीन है । परन्तु
उसी परिपान्ति को स्मरण कर गीतकार शकर स आज भी अनुरोध करता
है कि वह तीसरा नत्र मान द, अब तक भी शकर की समाधि नहीं टूटी है ।
जब तब गीतकार को आश्चर्य हा रहा है । युद्ध क समय तब का तात्त्व
नृत्य तात्त्व बाला व माय प्रारम्भ क्यों नहा हा जाता ?

हमारे देश की सीमा का उल्लेखन करके चीनी जब भारत की सीमा
म प्रवेश करने लगें तो इस आपद्-कालीन समय म भी जा व्यक्ति निष्क्रिय
थ उन पर गीतकार न व्यंग्य किया । जा तब मकट व समय भी कदम म कदम
मिलाकर राष्ट्र की सुरक्षा व तब तयार न हुए स्वर स स्वर मिलाकर मग-
ठित नहीं हुए आक्रामक हथियार उहें पिकार उगा—

जा फूल धमन पर खड देग रहा साना ।^१

मिट्टी उसको जीवन भर धमा नहा करता ॥

जा दुष्ट बख्तर का तबवार नहीं सकता

उठना भीना धार व पार नहा तरती

दुनिया म पाई अधिक दश स बढ़ा नहा

धरती पुरगों की पुष्प घराहर हाता है

रहता हा चाह बही नया अंतर आता

हर व्यक्ति उसा आत्मा का मरचा मानी है

जा काम देश के आया नया मृगावन म ।

फट भी पुत्र उस घरमाना है धरना ॥

जा देश व काम नहा आता उा देश की धरती का पुत्र नहा कहा जा
सकता । परन्तु उस पुत्र कहने म सज्जा का अनुभव करती है जा मा को
सान नहीं बचा मरता सुरक्षा का नायित्व नगे स मरता तब बाप्य व्यक्ति
को धरती पुत्र कहार नही पुकार सकती ।

आक्रमण के सक्क-काल में गीतकारों की भावना एवं कल्पना में एक भीषण शीघ्र-ज्वार सा आ गया। कलम ने उद्बोधन के गीतों की मृष्टि की और शब्द नश्य करने लगें। वीरों के हृदय में मस्तिष्क में एक ही रागिनी बज रही थी युद्ध में जीत की। किसी भी प्रकार चीनी तुटेरों को हिमानय से खदेड़ना था—

आजाँ अमर हिँ का है ताज हिमानय^१
 देखो सा कौन छीनता है आज हिमानय
 जो ताज पहनना है सा भारत के जवानों
 तुम धान की तनधार से तनधार बजा ना
 इन चीनी तुटेरों को हिमानय से निकालो ।।

भारत के जवानों !
 भारत के जवानों ।।

वीरों को तनवार कर शीघ्र प्रदान करने के लिए गीतकार उन स्वरो का सधान करता है जो वीरों के वीरत्व का जगा दे राष्ट्र सुरक्षा के लिए सजग कर दे—

कौन है वह स्वर कि जिससे वीर रस का राग जागे ।^२
 कौन डमरु निनाद है जिससे कि शिव का नाग जागे ?
 कौन सा वह होम है जिससे अमर की आग जागे ?
 कौन है वह पव जिससे वीरवर का भाग जागे ?
 बँ चल आ वीर ! तुमको विजय गी की शपथ है ।
 बँ चल आ वार ! तुमका हिम शिगर का तप है ।।

वह शपथ-पथ की आरता है ।

समा में गीतकार ने एक ही स्वर बजा देने का प्रयत्न किया है—जिससे वीर रस का राग जाग ऐसा स्वर जिससे शिव का नाग जागे ऐसा डमरु निनाद जिससे युद्ध का अग्नि प्रज्वलित हो ऐसा नाम जिससे वीरवर का भाग जाग ऐसा पव एक ही भावना है एक ही सन्ध है—राष्ट्र-सुरक्षा के लिए तत्परता। उन हमनामियों का बन्ध एहसान है जिन्होंने आज मोये हुए भारत का जगाया है ।

१ धर्मपुग ६ जनवरी १९६३ गायानमिह नगानी पृ १५

२ धर्मपुग २६ जनवरी, १९ ६, पृ स० ८ रामकुमार यमा

मनीनें धड़धड़ाकर देश की जय बोलता हूँ ।^१

बड़ा एहसान उन हमनाबरो का है,

हम जो आज सोते से जगाया है

हमारे देश न अपने सपूतो के

पसीन को, लहू को आजमाया है,

भारतीय सैनिकों के लिए प्रयाण गीत लिखा है डॉ० बच्चन ने —

भारत माता के घट हम चरते सीना तान के ।^२

धम अलग हूँ जाति अलग हों, वण अलग हो भापाएँ,

पर्वत, सागर-तट, वन, मरुपथ मदानो से हम आए,

फौजी बर्दा में हम सबसे पहले हिंदुस्तान के,

भारत माता के घट हम, चरते सीना तान के ।

जा वीरत्व विवेक समर में हम सैनिक दिलसायेंगे,

उसकी गाथाएँ भारत के गाँव नगर घर गाँवों,

पीढ़ी-दर-पीढ़ी गूँजेंगे बाल हमारे गान के,

भारत माता के घटे हम चरते सीना तान के ।

समर में वीरत्व के साथ विवेक की भी आवश्यकता है । भारत माँ के लाहने चाहे मित्र-धर्मों, मित्रवर्णों, मित्र भाषी क्या न हों परन्तु फौजी बर्न में सब हिंदुस्तान के हैं । भारत माँ के घटे सीना तानकर ही चलते रहे हैं और चलते रहेंगे । चीन के पश्चान् पाकिस्तानी युद्ध भरखी बजाने लग । कवि हृदय उनकी इस तुच्छ हरकत पर मुस्करा उठा—पर्वत में सागर बिनना भी टकराय बकिन पवन बजो नहीं दिगता । उसी प्रकार भारत भी हिमालय पर्वत के समान घटन है । पाकिस्तानिया का आक्रमण यहाँ के जवानों को विचलित नहो कर सतना । हिमालय से भी ऊँचा है देगामिमान । पात्रु का मिशक का उपमा देकर कवि ने दान में युद्ध-दान का प्रेरणा दी है । गीतकार का हृदय कच्छ-मणि की याद से विगुंन हूँ उठता है क्योंकि पाकिस्तान सत्र ही था । भारत ने उससे मणि ब्यय ही की ।

गागर चाहे टकराय, बिन्दु पर्वत हाना न चनायमान^३

बन सारा पाकिस्तान उठे, क्या तुम विचलित हांग जवान ?

हिमालय मन ऊँचा हो उससे ऊँचा है देगामिमान

जब गज बन गया है मिशक, दे दो तुम उसका युद्ध-दान,

१ साप्ताहिक हिंदुस्तान २० जनवरी १९६३ रामावतार स्वामी

२ वही २८ नवम्बर १९६३ डॉ० बच्चन पृ० १३

३ साप्ताहिक हिंदुस्तान ३१ अक्टू० १९६३, डा० रामकुमार वमा पृ० ६

यह शोध न बमने वाला है ऐसा है प्राणों का उफान ।

तूफानों की है क्या बिसात इतना ऊँचा है आसमान ॥

काश्मीर भारत न अलग नहीं हो सकता । चाहे पूरा शरीर मोनिया से छिद जाये साँसें रुक जायें तन कट जायें परंतु काश्मीर को भारत से पृथक् नहीं कर सकते—

छिन्न जाय मोनिया से यह तन रुक जाय साँस का यह समीर ।

चाहे यह तन कट जाय, कटेगा नहीं हमारा काश्मीर ॥

गांधीजी का समाधि राजघाट की पावन माटी की सौ-सौ बार शपथ खा कर वीर जवान प्रतिज्ञा करते हैं कि अब वे पुष्पाञ्जलि न देकर शीश चढ़ायेंगे । पुन राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की सत्तानों ने सिर पर कफन धारण किया है । निर्माण ने महानाश के आमंत्रण को सहज ही स्वीकार कर लिया है । रण बाला का बरणकर परिणाम की चिन्ता न करते हुए आशा और विश्वास के साथ राष्ट्र की सुरक्षा में समी सलग्न हैं । हमारी विजय-पताका सदा लहराती रहेगी । चाहे कोई भी देश आक्रमण करे, भारत सदैव विजय गीत गाता रहेगा ।

राजघाट की पावन माटी सौ सौ बार शपथ लेरी १

पूना के बन्दे अब तुम पर और के मुण्ड चढ़ायेंगे
सिर पर कफन लपेट लिए हैं फिर तेरी सत्तानों ने
महानाश के आमंत्रण का स्वीकारा निर्माण ने
श्रमबाना के साथ आज हम रणबाला भी बरते हैं
परिणामों की चिन्ता तेरे पूत भसा कब करते हैं ?

युग के प्राता ! राह देखना उद्मट जब भी सौटेंगे ।

विजय-पताका हाँसी कर में खासी हाथ न आयेंगे ॥

गतिविज पर पुन विनाश का बन्नी घिर आई भारत की विजनी
बानी तलवार फिर से चमकगी । साधारण बन्नी से जल-वपण होता है
किन्तु यह मकड़ की बन्नी से काश्मीर की घाटी पर रक्त का वर्षा होगी ।
मानवार्थ हिन्दुस्तान के बग का आवाज लगाता है और पुनारकर कहता है
कि समराण के पगाम आ रहे ॥ । स्वप्नार्थी नत्रा में पुन अगार प्रजग्वनित
हा जायें । हिन्दुस्तान का बग राष्ट्र का सुरक्षा में पूण सहयोग देने को तयार
हा जाय—

दि कारे विना का वापन मात्र मित्रिद पर बि-बाग । १

बद फिर स बनकी भात का बिदनी बागी ततदा ॥

पानी नहीं न बनना कानार का घनी पर
 रिक्त पून इमे दून गा रिने दून क
 गतवार । बात्र म्हा हिन्दुस्तान क बगों का-
 रनका बना कि फिर पैगम बारह हैं मनाउ क
 उठ बज ना छनी गकर बोर शिनालय ना म्हा
 उठ म्हा म्हा अलों में उठ मि स भरक शार
 म्हा मि स बनकी भात की बिदनी बनो मनार ॥

पवित्रानियों डाग दम-बपा स मारा पजाब नूनन का । सतत
 का पाता स्वमन लो का-का का मनारम स्वातु भूमि बन वृष्टि स
 विगत हा । नाराय जबान जाभा में भरक नूनन पर दूट प । म्हा
 प्रविश सन का जमा बवक दूटो । का-गिन न हिमाय का ना-मिराद
 बहुर उसका गौरव-मान किया था । बात्र दूना हिमाय जार-जार स मुग्ग क
 लिए पुकार रहा है । भारत का उत्तम-मा का म्हा प्रहरा रगक म्हाति का
 पम्हा बन गौरव पर प्रार नात्र म्हा पुकार का हृदि ना नागा में ज
 बन दामि का ध्यान म्हा है जीर म्हा म्हा पार कम्हा हृदि ना भी
 बना जद ता म्हा नहीं हुना बागिये ।

का-गिन न नागाधिरा कह दिनका गौरव-मान किया २
 यह हिमादि अब जार बाग स हमे पुकार रहा द ।
 समृति का पाक म्हा नारा का उत्तम-मा का
 मान म्हा पृष्ठा का बनकर म्हा में स है म्हा नात्र
 एक म्हा दिनका पुत्रा में दुजी म्हा बरा म्हा
 उनक गौरव पर प्रार है, ज्मा रा अन्तिमु नारा ॥

• • • • •

हम पर है दामि कि हम सोनामों में निगम मरे ।
 मित्र स कल बंध में मित्र नूनना ना नपार करे ॥

ना अब रक्त मीनी है उसका बात्र बक बादा है । जद-एव
 प-दगा क कागु नारा का जा विना दूना का दमा म्हा का पुन रि-
 हाग में न विगत म्हा है । सतत कर नूनन का न्हा कल का म्हा

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान - दिम्बर १९५१ शान नमिन्व पृ १४

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ नवंबर १९६१, म्हा म्हा नूनन पृ ३

यह शीघ्र न बमने वाला है ऐसा है प्राणों का तफान ।

तूफानों की है क्या बिसात इतना ऊँचा है घासमान ॥

काश्मीर भारत में अलग नहीं हो सकता । चाहे पूरा शरीर गोलियों से छिद जाये साँसें रुक जायें तब कट जायें परंतु काश्मीर को भारत से पृथक नहीं कर सकते—

छिन्न जाय गोलियाँ से यह तब रुक जाय साँस का यह समीर ।

चाहे यह तब कट जाय, कटेगा नहीं हमारा काश्मीर ॥

गांधीजी की समाधि राजघाट की पावन माटी की सौ सौ बार शपथ खा कर वीर जवान प्रतिज्ञा करते हैं कि अब वे पुष्पाजलि न देकर शीश चलायेंगे । पुन राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की सत्तानों ने सिर पर कफन धारण किया है । निर्माण ने महानाश के आमंत्रण को सहज ही स्वीकार कर लिया है । रण बाना का बरखुर परिणाम की चिन्ता न करते हुए आशा और विश्वास के साथ राष्ट्र की सुरक्षा में सभी सन्नत हैं । हमारी विजय-पताका सदा सहराता रहेगी । चाहे कोई भी देश आक्रमण करे भारत सदा विजय गीत गाता रहेगा ।

राजघाट की पावन माटी सौ सौ बार शपथ तेरी १

फूटा वे बंस अब तुम पर और वे मुण्ड चलायेंगे,
सिर पर कफन नपन लिए हैं फिर तेरी सत्तानों ने
महानाश के आमंत्रण को स्वीकार निर्माण ने
धमबाना के साथ आज हम रखबाना भी करते हैं
परिणामों की चिन्ता तरे पूत भला कब करते हैं ?

युग के प्राता ! राह देखना उद्भट जब भी सोंगें ।

विजय पताका हागी कर में खाली हाथ न जायेंगे ॥

क्षितिज पर पुन विनाश की बन्नी फिर आई भारत की विजनी
धानी तबबार फिर स बमबगी । साधारण बन्नी स जल-वषण होता है
किन्तु उस मक्क की बन्नी स कान्मार का पागी पर रक्त की वर्षा होगी ।
गाउशर हिन्दुस्तान के बग का आवाज नगना है और पुनारवर कहना है
कि समराण के पगाम आरह हैं । स्वप्नर्शी नत्रा में पुन अगार प्रज-वनिन
हा जायें । हिन्दुस्तान का बग राष्ट्र का सुरक्षा में पूरा सहपाय देने को तयार
हा जाय—

फिर वार्ड विनाश का बादल छाज गिति पर बिर आया ।^१

अब फिर से चमकेगी भारत की विजयी वाली तलवार ॥

पाना नहा लहू बरमेगा, काश्मीर की घाटी पर,
जितने फूल जलेंगे उतने गाश मिरने दुश्मन के,
गीतकार ! आवाज लगा हिन्दुस्तान का चेता का-
उनकी बना कि फिर पगाम आरहे हैं समरागण के,
उठे वध सी छानी लेकर और हिमात्मक सा भस्त्रक
उठ स्वप्नदर्शी आँखों में अब फिर से भरकर अगर
अब फिर से चमकेगी भारत की विजयी वाली तलवार ॥

पाकिस्तानियों द्वारा बम बपा से सारा पंजाब मुनस उठा । सतलज का पानी डबलने लगा काश्मीर की मनारम स्वयंतुल्य भूमि बम वृष्टि से क्षत विक्षत हो गई । भारतीय जवान आक्रोश में भरकर दुश्मन पर दूट पड़े । उनसे प्रतिशोध लेने की ज्वाला घबक उठी । कालिदास ने हिमालय की नागाधिराज कहकर उसका गौरव गान किया था । आज वही हिमालय जार जोर से सुरक्षा का गण पुकार रहा है । भारत की उत्तर सीमा का सजग प्रहरी, रक्षक सशक्ति का पापक अपने गौरव पर प्रहार होन दण पुकार रहा है कि ह मागतावा जब मुम्ह अपन दायित्व का ध्यान रखना है, और इतना माठा ध्यार करना ह कि शांति भी चला जाये तो दु रा नही होना चाहिये ।

कालिदास ने नागाधिराज कह जिसका गौरव गान किया^२
यह हिमाद्रि अब जार जोर से हम पुकार रहा देखो !
सशक्ति या पोषक, सरक्षक भारत की उत्तर सीमा का
मानदण्ड पृथ्वी का बनकर सदियों से है सकट भाना
एक साथ जिसकी पूजा में गुजा मत्राएँ बनी आरती
उसके गौरव पर प्रहार है जागो री अतिथि भारती !

० ० ० ० ० ०

हम पर है दायित्व कि हम सीमाप्राप्त में विश्वास करें ।
सिर से बमन बांध लें, सिर में इतना भी न ध्यार करें ॥

माँ जब रक्त माँगती है उसका आज वक्त आगया है । जयचन् एव
भगेजर्ता के कारण भारत का जा विनाश हुआ था उसी गनती को पुन इति-
हास में न तिरान देना है । तलवार पर दुश्मन को नष्ट करने का समय

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २६ सितम्बर, १९६५, पान भारित्तन पृ १४

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ७ नवम्बर १९६५, मागननात बतुर्वेनी पृ ७

आगया है। जनतंत्र के दीवाने एक दो नहीं है पूरे चालीस करोड़ हैं। शत्रु के आगमन पर चढ़नी जवानिया टू गार में सतगन है क्याकि खून का खानी का त्योहार मनाना है —

वह वक्त आगया है

जब रक्त मांगती मा वह वक्त आगया है । १

व जाति घम दल की गार्ते बिसर चुकी हैं

इतिहास से हुई जो गलती सवर चुकी है

जयघट एक भी हम घर में न रहने देंगे

अगेज एक भी हम घर में न घुसने देंगे

बलकार चनेंगे ।

वह वक्त आगया है ।।

शृ गार हो रहा है चढ़ती जवानियों का

त्योहार हो रहा है खून की खानियों का

हम एक दो नहीं हैं जनतंत्र के दिवाने

चालीस कोटि दीड़े हैं शत्रु को मिटाने

११) खानी का घोषापन देगिए—

यह मेरा देश की बाँकी खानी है ।२

सभी हमलावरों को बात

स्तनी सा बतानी है

कि बनकर जान जायी

देश की मेरे खानी है

कि इसका धार कोई

तनिक भी रीठा न जाएगा

परगा पाँव सीमा पर जो

बढ़ जाता न जाएगा

बहरा आवाज की बनकर,

सभी मरी खानी है

मैं अपना सड़ू में राष्ट्र की प्रतिमा खानी है

मैं मेरा देश की बाँकी खानी है ।

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान २७ फरवरी १९६६ शिवबहादुर मिश्र मनीरिया पृ १६

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ८ जनवरी १९६६ खनिष्ठाकर पृ० १४

क्षितिजा की रखाए अखंड रह इसी प्रयत्न में चाहे सीमा की आग
लेता तब आजाए तुलसी का विरवा बाहरी आग में भले ही जल जाए परन्तु
मानुभूमि का लक्षण बनेश पुकारकर कहता है कि वीर जवाना ! राष्ट्र की
रक्षा के लिए तयार हो जाओ ।

जाग तुझ दश न पुकारा ।^१

वीर बप ने पुकारा ॥

सीमा की आग भले जलो तक आ जाए
तुलसी का विरवा बाहरी भले खा जाए
पर अखंड रखनी है क्षितिजा की रेखाएँ
आँखों का दूध भन हटा में बिक जाए

गुदड़ी के लाने को

हीरे प्रवालो को

मानुभूमि के दाढ़ बनेश न पुकारा !

जाग तुझ दश ने पुकारा ॥

किसी भी प्रकार अपने रक्त को बहाकर भी राष्ट्र की अखंडता बनाये
रखनी है राष्ट्र की प्रतिमा सजाती है । चाहे कोई भी हो जो दुश्मन भारत
पर खूनी आँख उठायेगा भारत के सपूत उसे नष्ट करके ही दम लेंगे ।

निष्कर्ष—

इस प्रकार अनेक गीतकारों ने सुरक्षा के लिए गीत लिखे हैं । जब भी
भारत पर बाह्य आक्रमणकारियाँ ने हमला किया है उस समय देश का प्रत्येक
व्यक्ति सजग सचेत एवं सश्रिय रहा है । गीतकारों ने गीतों द्वारा विभिन्न
माध्यमों से राष्ट्र सुरक्षा की प्रेरणा का भाव प्रसारित किए हैं । परन्तु सुरक्षा
का उद्बोधन उसी समय उपयुक्त स्थान पा सका है जबकि राष्ट्र पर बाह्य
आक्रमण हुए हैं । शांतिकाल में गीतकारों ने इस भावना की आवेगपूर्ण अभि-
व्यञ्जना नहीं की । सुरक्षा गीत भारतवासियों को प्रेरणा देने हैं उत्साहित
करते हैं और राष्ट्र की सुरक्षा के प्रहरी और भी तत्परता दुश्मनों का
सामना करते हैं । चीन के आक्रमण के समय राष्ट्र-द्वेषियों की निन्दा की गइ
बलिदान की शुद्ध भावना को सश्रिय करने में सहयोग दिया एवं सुरक्षा
के लिए प्रेरित किया । वच्छ अभियान काश्मीर समस्या के कारण होने वाले
उत्पात, पाक-मुद्दे इन सभी प्रमुख अवसरों पर गीतकारों ने शृंगार, रस पूर
गीतों की रचना समाप्त कर उही स्वरों का आह्वान किया जिनमें सुरक्षा

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १६ जनवरी १९६६ श्री, भारतभूषण पृ० १४

के लिए उद्योधन किया गया था। चलिदान के लिए प्रेरित किया था। बाबू
 त्रिगुन का धोष गूज रहा था। रणचण्डी का आह्वान किया जा रहा था।
 राणा प्रताप शिवाजी मासी की रानी लक्ष्मी बाई आदि वीरतापूर्ण कृत्य
 करने वालों के नाम पर वीर भाव को जाग्रत करने का प्रयास हो रहा था।
 यद्यपि राष्ट्र सुरक्षा के सम्बन्धी गीतों में सामायिक आवश्यकता की अभिव्यक्ति
 होती है तथापि बाह्य सत्ता के आक्रमण के समय प्रमुख स्वर में यही
 होता है। उस समय अत्यंत गौण हो जाना है जबकि राष्ट्रीय भावना सम्ब
 धित किसी भी तत्त्व को तब तो ज्ञात होगा कि समय समय पर सभी आवश्यक
 हैं। राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के विभिन्न स्वर समयानुकूल कम या
 ज्यादा मात्रा में अभिव्यक्ति पाते हैं। राष्ट्र की एकता का स्वर सदैव गूजना
 रहे यही अत्यंत आवश्यक भावनाओं के मूल में है।



आज का बालक ही भावी युग का निर्माता है, अतएव बालकों में राष्ट्रीय भावना के अद्वय विकसित एवं पोषित करने में माता-पिता का सहयोग होना चाहिए। बालक सबसे अधिक माँ एवं पिता द्वारा अनुशासित होने के कारण उनके सम्पर्क में रहता है। जिनका सम्पर्क सबसे अधिक होगा उनसे बालक सबसे अधिक प्रभावित होगा। बालक में स्वयं काम करने की अपेक्षा अनुकरण करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। इसी मूल प्रवृत्ति के कारण वह अच्छा बुरा सभी कुछ अनुकरण के आधार पर प्रभावित करता है। यदि बालकों की कबल अनुशासित किया जाये तो उनके व्यक्तित्व का विकास सही ढंग से नहीं हो सकता। प्रारम्भ से ही कुठाला के जन्म से लेने पर बालक का व्यक्तित्व अनुशासित के द्वारा प्रभावित होने के कारण दुबल होगा। स्वतन्त्र रूप से काम करने की क्षमता का अभाव रहेगा। जबकि हमारा स्वतन्त्र राष्ट्र के निर्माण के लिए हमें चाहिए सुदृढ़ व्यक्तित्व।

शोभा की रक्षा के लिए चाहिए निर्भीक व्यक्तित्व। मर का स्थान ही नहीं होता चाहिए। स्वयं काम करने की क्षमता बालक प्रत्युत्पन्नमति युक्त चाहिए। ऐसा पुष्कल-वश जिसके द्वारा राष्ट्र में नव निर्माण होगा, स्वतन्त्रता कायम रहेगी सीमा की रक्षा होगी यह सब जब हो ही सकता है जब बालक के समुचित विकास पर ध्यान दिया जाये। क्योंकि आज का बालक ही कल का नवपुष्कल होगा जिसकी भुजाओं के शीर्ष पर राष्ट्र की एकता निभर रहेगी। जिस प्रकार विनाश भवन की सुदृढ़ भाव के लिए मजबूत ईंट, परस्पर गारा आदि के साथ ही साथ भवन निर्मित करने वाला बुद्धिमान इंजीनियर चाहिए जिसकी देग रेख में भवन निर्माण होगा। इंजीनियर की बुद्धि का प्रभाव तो भवन पर निश्चिन्त पड़ेगा। उसकी नींव का सुन्दरता इंजीनियर की काय क्षमता एवं निरीक्षण-शक्ति पर निर्भर करता है। ठीक इसी प्रकार बालक की भावनाओं का विकास तथा व्यक्तित्व का निर्माण माता-पिता के सहयोग पर निर्भर करता है। उचित निरीक्षण एवं सहयोग द्वारा बालक का व्यक्तित्व सही दिशा पाकर,

आत्मबल से पूरा बन सकता है ।

प्रायः कहा जाता है कि माँ का दूध न लजाना । उसके भीतर यही भावना निहित है कि बालक ने यदि दूध माँ का दूध पिया है तो वह माँ का दूध न लजायेगा । यदि कायर माँ का दूध पिया है तो हीन काय करके माँ के दूध की नाज न रख सकेगा । इससे स्पष्ट है कि माँ का प्रभाव बालक पर पड़ता है । बालक के विकास में माँ का पूरा हाथ रहता है । दूध न लजाने की बात बालक से विकसित होने वाले युवक को याद रहती है । इस प्रकार स्पष्ट है कि माँ और पिता एवं बालक तीनों का परस्पर सहयोग सम्पन्न आवश्यक है । यदि बालक पर समुचित ध्यान दिया जाये तो माँ बाप के संरक्षण में वह अपना सही मार्ग ढूँढ़ने में समर्थ होगा तथा सबन यत्किन्हीं का निर्माण होगा । राष्ट्रीय भावना के अंकुर भी उसके व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ पनपत जायेंगे हरे भरे रहेंगे और राष्ट्र का भाव कण्ठधार सुयोग्य माता पिता के संरक्षण में तैयार होंगे ।

मानव के व्यक्तित्व का विकास सामाजिक परिवेश में होता है । व्यक्तित्व के विकास में मुख्य दो घटक होने हैं ।

(१) जन्म जात स्वभाव (२) वातावरण

जन्म जात स्वभाव में मानव की शारीरिक बनावट बुद्धि एवं स्वाभाविक स्वभाव तथा मूल प्रवृत्त्यात्मक विरासतए रहती हैं । वातावरण में जलवायु, भोजन, परिवार स्कूल समाज की रूढ़ियाँ परम्परा प्रचलित साहित्य तथा संगीत धर्म आदि का समावेश होता है । वास्तविकता में माता पिता का व्यवहार का अनुसार बालक का व्यक्तित्व का विकास भिन्न भिन्न रीति में होता है । यदि बालक का माता पिता बालक का बचपन परिस्थितियों में डूबने उसमें युद्ध करने की रीति पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न देते हैं तो ऐसा बालक आत्मप्रयत्न करने वाला स्वतंत्र व्यक्तित्व लिए हुए स्वावलम्बी निर्भीक एवं स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला बनता है । यदि बालक का व्यक्तित्व का विकास हमसे विपरीत माना पिता का संरक्षण में इस प्रकार होता है कि उसका रंग का आर एवं कायभार माता पिता ही उठाते हैं तो वह बालक भी परावलम्बी एवं आत्म विषयमहोन बनता है । वातावरण का बालक का चरित्र का विकास में बहुत बड़ा हाथ होता है । भय का आनंद का वातावरण बालक की हीन दरिद्रता एवं मूल बुद्धि वाला बनाना है जबकि प्रेम प्रामाण्य एवं आनन्दमय वातावरण का प्रभाव हमसे विपरीत होता है । इस प्रकार वास्तविकता में माता पिता तथा सब परिवर्तियों का व्यवहार का मूला प्रभाव व्यक्तित्व का निर्माण पर पड़ता है ।

इसी प्रकार गिराह आदि बनाकर नेता बनने की प्रवृत्ति का भी बालक के व्यक्तित्व के विकास में यागदान होना है। हाँ बालक का सामाजिक परिवेश क्षेत्र सीमित है और वह बाद में विस्तृत होता है। सब प्रथम शिशु अपने परिवार के अर्थ सदस्या की चेष्टाओं की विधियों से मूक बनकर सीखता है। तब यही चप्पाएँ और प्रथम परिवार के समस्या के सहयोग से धीरे धीरे बालक अथवा माया का रूप ले लेती है। बालक अपने आस-पास होने वाले परिवर्तना परिवेश में पठित क्रियाओं के अनुकरण पर सीखता है। यह अनुकरण प्रथम परिवार द्वितीय पड़ोस तृतीय पाठशाला से परिष्कृत होता रहता है। इन समीतियाँ, समस्याएँ एवं समाज के विस्तृत पर्यावरण से प्रभावित बालक समाज हित में क्रियाशील होता जाता है। इस प्रकार का भावनाओं को बालक को ज्ञान अपनाता रहता है। एतत्थ बालक के हृदय और मस्तिष्क में राष्ट्रीय भावना को अनुप्रेषित करने में सामाजिक परिवेश का विशेष एवं महत्वपूर्ण योग रहता है। बालक शिक्षार्थी है और समाज उनका शिक्षक है। यदि समयानुकूल बालक को राष्ट्रीय भावना से आन प्रीत परिवेश मिलता रहे तो यह कहा जा सकता है कि बालक अपने राष्ट्र के हित के लिए सर्व विचारशील रहेगा और कमजोर बनने का प्रयत्न करेगा।

बालकों में राष्ट्रीय भावना की प्रतिक्रिया कब उस समय होती है जबकि दश में कोई राष्ट्र विरोधी क्रिया स्थान न रहे हाँ या कुछ समय पूर्व ल चुकी हो। अथवा कुछ समय पश्चात् स्थान लेने का समाधान हो। यही परिस्थितियाँ के आचम में राष्ट्रीय भावना के स्वप्न और कम जनत फूलत हैं। सर्व कालीन स्थिति में अथवा दश के विरोधी प्रतिक्रिया के घान प्रति धाता से बालक को राष्ट्रीय भावना समाज के परिवेश का देवकद प्रबन्ध रूप में मुखर हो उठती है। ऐसे समय में बालक अपनी अनुकरण प्रवृत्ति के कारण उन गतिविधियों से प्रभावित होकर समाज के अर्थ समस्या का अपना पय-प्रशक मानकर उनका अनुगमन बन जाता है। यद्यपि बालक की उन चप्पाएँ क्रियाओं एवं भावनाओं से समाज अथवा राष्ट्र को कोई प्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त नहीं होता और न लाभ हो होता है, तथापि आजकल का बालक बन का वीर मनीष कहलाता है। बालक की भावावस्था से युवावस्था तक मस्तिष्क की शक्तियों में राष्ट्र की भावना का अप्रत्यक्ष, अग्रिमिक्रम परि पक्व भाव संवाधन मिलता रहता है। तत्पश्चात् बालक अपने कम में राष्ट्र हित का भावना को अपना एक जग समझकर चलता है। कम में राष्ट्रीय भावना के अन्तर्गत यदि पूर्ण रूप से हरा भरा एवं दृढ़ बनाना है तथा पुष्पित फलित

होते देखना है तो बालक में राष्ट्रीय भावना के अकुर की पनपने एवं शक्ति शाली बनाने में उचित मरक्षण एवं सहयोग की आवश्यकता है ।

बालको में राष्ट्रीय भावना का पक्ष सूत्रम तो होता ही है साथ ही अप्रबल भी होता है । फिर भी राष्ट्र के प्रति बालका ॥ लेकर धृद्धो तक में सदैव राष्ट्रीय भावना का जागरण राष्ट्र के प्रति चेतनता और शायशीलता आवश्यक है । इसी कारण विशेष की लेकर गीतकारों में राष्ट्रीय भावना को बालको के भस्तिष्क एवं हृदय में जागृत बनाय रखने का प्रयास किया है । परिणामतः बालको ने भी राष्ट्रीय भावनायुक्त गीतों की रचना की है जिसमें राष्ट्र के प्रति श्रद्धा आत्मा निर्माण त्याग, बलिदान एकता संगठनता एवं विश्व-अधुत्व तथा मानवता की भावना का परिचय दिया है । यद्यपि बालको का भौतिक रचनाएं कम ही हैं परन्तु प्रयास सराहनीय है और भविष्य में प्रगति की संभावना है । हमारे कुछ गीतकारों ने अपने राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों में बालको की राष्ट्र के प्रति मनोवृत्ति और भावनाओं को उभारकर स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । परिणामस्वरूप बालक-वग उन रचनाओं को पढ़कर राष्ट्र के प्रति सजग कमशील और जागृत हो उठता है —

श्री रामरिता मनोहर बच्चों के उत्साह की बढ़ाने में सहयोग देते हैं उनका शक्ति का निष्पन्न कराने है । देश में घटित प्राचीन घटनाओं की पुनरावृत्ति कर उनका स्मरण कराकर उनके उत्साह को निष्पुणित करते हैं —

जमान को भुना दोगे हमारे देश के बच्चे ।^१
 वन का ऋण चुका दोगे हमारे देश के बच्चे ॥
 न यह समझा मरहटो की गुरिस्लामार सोई है
 न यह समझा कि वीरा का विकट हुंवार साई है ।
 नगा है मिह सगानें लिए है सिक्ख विरपाणें
 न यह समझा कि भर देश का तलवार सोई है ।
 तुम बाबा जिना दोगे हमारे देश के बच्चे ।
 तुम्ह पात्रा वगा दोगे हमारे देश के बच्चे ॥

और मनुष्य गुप्त भी जानों का एक बान बनाने द्वारा वहन है कि प्रत्येक बालक मिपाहा बन गया है और देश का रक्षा में तत्पर उन नने वीर

बानवों के हाथों में बंदूकें भी हैं —

हिमगिरी से आवाज उठी है ^१
हर बालक बन गया सिपाही
पर स्वयं बन्द चले राह में ।
हाथा में बंदूकें उठाइ ॥

भारत की परम्परागत परिपाठी रही है—रहानी सुनाने की । रात्रि के समय परिवार के कुछ व्यक्ति अथवा माताएँ अपने बालक की अनेक प्रकार की कहानियाँ द्वारा परिचित कराते हैं । उनसे जो देश की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग पर सदैव के लिए अमर हो गए एवं जिनका नाम इतिहास के पृष्ठा पर स्वर्ण रंग में अंकित है । किन्तु वही सुनी हुई कहानियाँ बालक की विस्मृति को पुनः स्मृति में परिवर्तित कर स्फूर्ति का संचार कर देती हैं । देखिए —

वह अब तब केवल बीरो की ^२
माँ से सुनता रहा कहानी
वह प्रसन्न है क्योंकि मिलेगी ।
उम्र मौन जानी पहिचानी ॥

बालक की चाह है अपनी भारत माता के दुश्मन से लड़ने की । वह कामना रखता है विश्व-अधुत्व की—

भारत माता के दुश्मन में ^३
जम्मा सत्ता रहूँ मैं लड़ता ।
विश्व शांति हित आगे आगे,
निभय सत्ता रहूँ मैं बड़ता ॥

गणतन्त्र दिवस पर राष्ट्रीय गीत में जन गण मन के बोल बालक का मन अभिभूत कर लेते हैं । इस पावन एवं मंगल त्योहार को मनाने में सन्तान बालक २६ जनवरी का अभिनन्दन करता हुआ अपने गान से निगमिगन्त गुंजरित कर देता है । देखिए—

१ पत्रिका पराग अंक जुलाई १९६३ पृ ४४

२ रच भनुव गुप्त, पत्रिका पराग अंक जुलाई १९६३ पृ ८४

३ स विजय मणिमाला, धर्मयुग ६ फरवरी १९६४ पृ १०

आज नया विधान है ।^१

दिशि दिशि गुंजा गान है ।

जन, गण मन का

अभिनन्दन का

यह पावन त्यौहार है ।

यह मगन त्यौहार है ॥

राष्ट्रपिता महर्मा गांधी ने स्वतंत्रता प्राप्ति पर राम राय को कल्पना की थी । उसी स्वप्न का पूरा करने के लिए बालर भी तत्पर हैं । उनका सहयोग भी आवश्यक समझा गया है —

राष्ट्र पिता बापू के सपने २

ये सपने हम सबके अपने

क्यों कर रहे अधूर १

उन्हें करेंगे पूरे

यह मगन स्वीकार ।

यह मगन त्यौहार ॥

बालरों का क्या कर्तव्य है ? यह भी बालर जानते हैं और स्वतंत्रता के पक्षपात की नज़ान उठाना का बहुत सब याचा बनाना चाहते हैं ।

भारत उत्तम निभायेंगे ।^१

आज बन्दगी जायेंगे

मया बनना धरती के

हम जानें तब पट्टेबायेंगे ॥

भारत के बालर निराश हैं । वीर-बहादुर बालर हैं जो हिम्मत हारना नहीं जानते । भारतवर्षा में न ममभन नगें हैं बालर तो हिम्मत के बल हैं बलिक उन्हीं में गम्भीरतामयी भूमि के खनिजों की खोज पान है ।

हम भारत के बल हैं ४

वीर बहादुर मन्त्र हैं

बालर हैं तो यन्त्र नममभना ।

हम निम्न के बल हैं ॥

१ न ममभन मित्र धमपुत्र २ जनवरी १९६४ पृ ५५

२ व । धमपुत्र जनवरी १९६४ पृ ५५

मुवाधुमार निवृत्ती धमपुत्र १२ जनवरी १९६४ पृ ६

४ न ममभन मित्र २ जनवरी १९६४ पृ ३८

हमने जन्म लिया भारत की शस्य श्यामना धरती पर
बलिदानों की कथा लिखा है इसकी धरती धरती पर,

० ० ० ०

अगाध पर चरत चलते हम फूलों से हसत हैं
हम भारत के बच्चे हैं वीर बहादुर सच्चे हैं ।

यानकों का अपने न हूँ बिना तु दृढ़ बंदमो पर अटूट विश्वास है—

बन्म बनाएंगे हम अपने
मजिल आग भुस्काएंगी ।
इस धरती की धून—
आल तारा की पावर आएंगी ।

हम हैं नह भुने लकिन
बड़े बड़े अरमान हमारे
दिशा निगा का दुहरात हो ।
होंग एक निन गान हमारे ॥

बालकों में राष्ट्रीय भावना का अकुर उनके विकास के साथ विकसित
होना जाना गनपता जाएगा जोर कि एक निन विनाल सम्बर का रूप
धारण कर गया सब —

अकुर हैं हम अभी धरा की—
गोदी में भुस से लेते हैं ।
परगद बनकर छाया देंगे—
आखिर बापू के बेटे हैं ।

जन्म भूमि के प्रति जो अगाध प्रेम, सब श्रद्धा है यह गीतों में मुखर हो
गई है । राष्ट्र की जय का नारा गगात हुए—

एक बार फिर से जय बोनों २
प्यारे हिंदुस्तान की ।
जिसकी मिट्टी सोना देती,

१ 'देवप्रत देव' सा हि १२ नवम्बर १९६१ पृ ३२

२ रमाकांत दीक्षित सा, हि० १६ फरवरी १९६४ पृ ३६

धरती है वह भगवान की ।
 दया धर्म की शिखा मिलती ।
 जन्म भूमि इसान की ॥
 एक बार फिर से जय बोलो
 प्यारे हिन्दुस्तान की ।

आज के न हूँ मुने अपने को किसी बड़े वीर नेता एवं राष्ट्र निर्माण
 में कम नहीं समझते हैं क्योंकि वे भारत माँ की आँखा के तारे जो हैं —

हम नहें मुने भारत माँ की आँखा के तारे हैं ।
 अधियारी भ नई रोशनी बाने दीप दुसार हैं

• • • • •

शांति और समता के सपने पूजने बाने तारे हैं ।
 हम नहें मुने भारत माँ की आँखा के तारे हैं ।

तिरगे भंडे का लहराने देवदर वृक्षों का मन राष्ट्र एवं भंडे के प्रति
 श्रद्धा से भर जाना है । एवं बालिका की जिज्ञासा देखिए—राष्ट्रीय भंडे को
 तिरगा भन्ना क्यों कहते हैं ? जबकि "सम धार रंग " । कसरिया हरा
 सफ़ेद और साय-साय नीला भी है । अगर कसरिया रंग हिन्दुमाँ का
 हरा रंग मुसलमानों का सफ़ेद रंग इसाई और पारसी आदि सम्प्रदायों का है
 तो नीला रंग सिद्ध धर्म का प्रतीक नहीं है ? वह माँ अपने सिर पर नीले रंग
 की पगड़ी बाधते हैं । अन्न तन्मय के भंडे का रंग भी नीला है । कसरिया
 रंग साहम और बलिदान का हरा रंग वारता और विश्वास का और सफ़ेद
 रंग शांति और सत्य का प्रतीक है । यह भावना राष्ट्रीय एकता की ओर
 सचेत करती है । तिरगे भंडे के प्रति श्रद्धा माँ का एक दृश्य दृश्य—

एक तिरगा टापी अम्मा १
 भी फीजा वस्ती पहनाना ।
 देकर अब बटूक हाथ में
 अम्मा मनिक् मुझ बना ला ॥

तिरगे भंडे का आजादी का रंगक मानकर उसका प्रति गौरव प्रकट
 करते हुए —

१ दशम स्कंध भा० हि ॥ परवरा १८६४ पृ ३६

२ विजयनगरनाम चमचुप १ परवरी, १८६४ पृ २०

सदा निरवा आजादा का रक्षक बनकर लहर ।^१

जब तक तन म साँसें बाकी—

ललकारें दुश्मन को,

चप्या—चप्या धरती लेने

करें निछावर तन को,

हम कायर कमजोर नहीं हैं और न भूग बहर ।

मरणोत्तर दिवस एक नवीन स्फूर्ति नवान घटना, एवं राष्ट्रीयता का उद्वेग प्राप्त लिए जाता है । इस पावन पव पर प्रत्येक प्राणी म नवचनना जागत हाना स्वाभाविक हो है मानो पृथ्वी पर स्वयं ही उतर आया हो ।

हर गाव-गाव हर गली-गली ^२

जस हो स्वयं उतर आया ।

हर सान अनोखा छटा लिए

यह राष्ट्र पव जब जब आया ।

पुण्य दिवस फिर वहा आज दलो आया है ।

मन म नई उमग नया सा छाया है ॥

बालक व मन म अपने देश के प्रति अभिमान है और इस पृथ्वी पर उगन वाली वस्तु पर तथा देश की प्राकृतिक छटा पर भी । श्री प्रसाद का गीत जो स्वयं बालक की अनुभूति का अपन गाता म स्पष्ट करते हैं —

मूरज की सोने की किरणें बिखराता है मेरा देश ^३

हरी मरी सुंदर कमल म, मुस्काता है मेरा देश ।

मेरा देश बड़ा सुन्दर है

सागर पवत माला-का

सम्बा नदियाँ चौड़ी नदियाँ

इनसे बना निराला सा ।

तरह तरह व रूप रंग है तरह तरह के इसके वेश

मूरज का सोने की किरणें बिखराता है मेरा देश ।

१ गुरुदास कुमार सुमन सा० हि० १२ मई, १९६० पृ ३८

२ सुधाकर दीक्षित पराग जनवरा १९६८, पृ ४७

३ श्री प्रसाद सा हि २४ नवम्बर, १९६३ पृ ३७

हाथ में बंदूक लेकर लड़ने की उद्यत बालक अपने देश के गुणगान गाता है। इसी तरह के भावा की सुंदर लड़ी को देखिए कविमयी सराजिना कुलश्रष्ट के निम्न गीत में—

माँ मुझको बंदूक थमा दें ।^१
 मैं भी लड़ने जाऊंगा ॥
 मेरा देश बड़ा सुंदर है
 हरी मरी यह धरती है ।
 बहती नदियाँ उछन उछनकर ।
 इसको धन से भरती हैं ॥
 इसका धमक को मैं अपने
 श्रम से और बनाऊंगा ।
 माँ मुझको बंदूक थमा दे
 मैं भी लड़ने जाऊंगा ॥

बालक का बंदूक थामने का आग्रह कवन आग्रह ही नहीं है बल्कि वह देश के प्रति अपने कर्तव्य को भी मनी भाँति समझता है। उसका न हा निन ग्रह भी समझता है कि जो नेता अपने देश के प्रति कर्तव्य को पूरा करने के लिए अपने जीवन की बाजी तक लगा गया वे भी किसी दिन बानर ही तो थे ? तब मला क क्यों नहीं। अपने का भारत भाग्य विधाता समझ—

इन दिन बानर ही तो थे य २
 नानर गीतम गाँधी ।
 ऐस ही साधक बन राकें
 बर भाव की आँधी ।
 जीवन पथ की बाधाभा म
 हम भूमना आता ।
 हम बालक मुग-निर्माता हैं
 भारत भाग्य विधाता ।

य नहें बानर मकर का स्वरूप या घोरान नहीं हैं। बानर भारतीय का मानवता पर गव बरन ३ —

१ सराजिनी कुलश्रष्ट धमकन २६ नवम्बर १९६० पृ ५

२ अशोक कुमार शर्मा धमकन, १ नवम्बर १९६० पृ ५०

दश हमारा हमको प्यारा भारतवर्ष महान् १
हर बच्चा अगारा है जय जननी हिन्दुस्तान ।
भारतवर्ष महान् ।
हर विपदा का हसकर सहते जायेंगे
घरती के कण कण में दीप जलायेंगे
भारत का बच्चा बच्चा ध्रुव तारा है
सत्य अहिंसा अमर रहे यह नारा है ।
गांधी की गीतम की इस घरती पर हमें गुमान
आन बान के घनी अग्नि राणा की हम सतान
भारतवर्ष महान् ।

देश में सुख शांति का साम्राज्य रहे । बालक की इस विशाल
राष्ट्र भावना को विकसित करत हुए सरला जाशी का गीत, बालका के
उत्साह को व्यक्त करत हुए—

बस लोरी में थोड़े से वे स्वर भी भरलें २
जिनमें तान्त्रिकों की गति मिल जाय ।
डम डम डम डम डम डमरु बाज उठा मरा
रिपु के सिर पर पढ़न का पग भी झकुराए ॥

बालकों की उम्र का एक गीत प्रस्तुत है—

बच्चे बच्चे क प्राण में शीश बरान का है चाव ३

• • • • •

हम सबका जुटा देंगे है दग हम प्राण स प्यारा ।
लोहा बने चक्री चीन न भारत का तप का नलदारा ।
यह बालका का देश बालकों में भी है पुरुषत्व अपार ॥

सब देशों में शांति हो ऐसी कामना करत हुए छिपकर युद्ध करने
वालों के प्रति बालकों की धृष्टि—

सब देगा में अमन चमन हो ४
मुझको सबसे—प्यार है ।

१ बन्ध्यास धर्मयुग ३ नवम्बर १९६३ पृ० ५०

२ गरना जोशी धर्मयुग १० नवम्बर पृ० ५०

३ धी हरिकृष्ण प्रेमी पु०—चला गिपाही चला पृ० ३४

४ देवराज दिनेश पु०—चला गिपाही चला पृ० ४१

पर जो छिपकर युद्ध छेड़ते हैं
उन सबको धिक्कार है ॥
सह न सकूँगा मैं चीनी घमकी
जोर—जुल्म की तानाशाही
में हूँ नहा वीर सिपाही ॥
घाचा मैं हूँ वीर सिपाही ।
आजादी के पथ का राही ।

नी सुशील दीक्षित बच्चा का उत्साह बढ़ाते हुए कहते हैं—

आजादी का मूल्य प्राण है ।^१
हस—हस हमें चुकाना है ॥
सीमा पर आक्रमण बहुत
हो चुका न देखा जायेगा
भारत की रक्षा को
बच्चा बच्चा खून बहायेगा ।
आज हड़पना चाह रहा
अरि सिक्किम और भूटान है ॥
खून शत्रु का मागता ।
फिर स हिन्दुस्तान है ।

बालका को नारा 'गाना विगप प्रिय है । श्री बान स्वरूप राही'^२
का गीत दृष्ट्य है जिसमें आजादी के लिए अपना शीश चपान को तयार
मालक धरती का कण भर भी नहा देना चाहना । उन्हें अपना जान पर घटन
विश्राम है ।

माथों की मेंट चढ़ायें २
फिर मैं न हूँ पुकारा है ।
आजाद रहो या मर जाओ
अब यहाँ हमारा नारा है ।

बच्चा बच्चा जाएगा मर गे न मगर धरती बल मर ।

आमिगी हमारी ही होगी यदि पढ़नी जीत तुम्हारा है ॥

अनायास जब कार्गिल राय अय राय पर आक्रमण करता है ता
चूँकि आक्रमण करने वाला राय तयारी के साथ हमला करता है और जीत के

१ सुमान दासिन पु०—चनो मियाहा चना पृ० ८४

२ बानस्वरूप 'राग' चना मियाही चना पृ० ४५

मेहरा उसके शीश पर बघ गाता है। किंतु वह क्षणिक अस्थायी जीत अथवा राष्ट्र के सजग होने पर हार में या परिवर्तित हो सकती है। भारत के नीनिहाल इसा विश्वास को लेकर बने रहे हैं कि यदि पहली जीत दुश्मन की हो भी गई तब भी आखिरी जीत भारत की ही होगी। पाकिस्तान ने आक्रमण करने के लिए 'प्लान टक सवर जट' आदि अनेक प्रकार के शक्तिशाली अस्त्र परराष्ट्र में अस्त्र-स्वरूप लिये किंतु वीरता किससे उधार लें ? भारत के पास सबसे शक्तिशाली अस्त्र था 'वीरता' का। अथवा अस्त्र अस्त्रों के साथ वीरता एक युद्धमत्ता का सम्मिश्रण था। यही कारण है कि उचित प्रयोग वीरता एक अस्त्र बनाने की निपुणता के कारण ही भारत विजयी रहा। जाजाद रहा या मर जाया अथवा यही नारा हो प्राणा का मोह अवशेष न रह जाय तभी सच्ची वीरता का प्रदर्शन हो सकता है। भारतवासी राष्ट्र की रक्षा के लिए तत्पर हैं किंतु बानका का उत्साह भी कम नहीं। शीश की भेंट खडाने को तत्पर बालक आजादी की रक्षा में सजग होना चाहते हैं। वे तेज-खिलौने आदि छोड़कर सिपाही बनने को प्रस्तुत हैं। भारत-माता के अघरो की मुम्तान लौटाने के लिए दुश्मन का सामना करने के लिए समस्त साधियाँ को एकत्र करत हुए बार बानक की अनुमति—

खल लिलौने छोड़ा साधो ! आज सिपाही बन जाना है ।^१

दुश्मन हमको चिन्ता रहा है

भूत गया है भाई चारा

खट्ट करदें दाँत कि उसके

किया बहुत अपमान हमारा

भारत माता के अघरो से गर्व हसी का लौटाना है ।

राष्ट्र की प्रगति की कामना शांति के समय की जाती है। युद्ध के समय राष्ट्र का सुरक्षा का चिन्तन करते हैं और मुख्यस्वर सीमा की रक्षा का होता है। परन्तु जब युद्ध की भाँधी लौट जाती है तब नव-निर्माण की गृहन की प्रगति की आवाजा से रचनात्मक काम किए जाते हैं।

देश की किस्मत नई हम हो गवने ।^२

आधियों के सिर भुजते हम बने ।

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान श्री नारायणलाल परमार, अंक १० प्रकटित
१९६५ पृ ३६

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६६ श्री देवव्रत त्रैव पृ ३६

पर जो छिपकर युद्ध छड़ते हैं
उन सबको धिक्कार है ॥
सह न सकूँगा मैं चीना घमवी
जोर—जुल्म की तानाशाही
मैं हूँ नहा बीर सिपाही ॥
चाचा मैं हूँ बीर सिपाही ।
आजादी के पथ का राही ।

श्री सुशील दीक्षित वक्ता का उत्साह बनाते हुए कहते हैं—

आजादी का मूल्य प्राण है ।^१
हस—हस हम चुकाना है ॥
सीमा पर आक्रमण बहुत
हो चुका न देना जायेगा
भारत की रक्षा को
वक्का वक्का खून बहायेगा ।
आज हड़पना चाह रहा
अरि सिक्किम और भूटान है ॥
छून शत्रु का मागता ।
फिर स हिन्दुस्तान है ।

बालको को नारा नगाना विशेष प्रिय है । श्री बान स्वरूप राही^२
का गीत दृष्ट-य है जिसमें आजादी के लिए अपना शीश चटाने को तयार
बालक धरती का कण भर भी नहीं देना चाहता । उह अपनी जात पर अटन
विश्वास है ।

माथो की भेंट चढ़ावेंगे ?
फिर मैं न हम पुकारा है ।
आजाद रहो या मर जाओ
अब यही हमारा नारा है ।

वक्का वक्का जाएगा मर लेंगे न मगर धरती कण भर ।

आखिरी हमारी ही होगी यदि पट्टी जीत लेंगे हमारा है ॥

प्रनामास जब कोई राष्ट्र अथ राष्ट्र पर आक्रमण करता है तो
चूँकि आक्रमण करने वाला राष्ट्र तयारी व साथ हमला करता है और जीत क

१ सुशील दीक्षित पु०—चलो सिपाहा चलो पृ ८४

२ बानस्वरूप राही चलो सिपाही चलो पृ० ४५

सहसा उसने शीश पर धध जाता है। किन्तु वह क्षणिक जस्याया जीत
अप्य राष्ट्र के गजब होने पर हार में मा परिवर्तित हो सकती है। भारत
के नौनिहाल इसी विश्वास को लेकर बन रहे हैं कि यदि पहली जीत
दुश्मन की हो भी गई, तब भी आखिरी जीत भारत की ही होगी। पाकि-
स्तान ने आक्रमण करने के लिए 'पञ्च टक मवर जट' आदि अनक प्रकार
के शक्तिशाली अस्त्र परराष्ट्र में अस्त्र स्वल्प लिय किन्तु बीरता किस
उधार लत ? भारत के पास सबसे शक्तिशाली अस्त्र या 'बीरता' का। अप्य
अस्त्र दुश्मन के साथ बीरता एवं बुद्धिमत्ता का सम्मिलण था। यही कारण
है कि उचित प्रयोग बीरता एवं अस्त्र चलान की निपुणता के कारण ही
भारत विजयी रहा। आजान रहा या मर जाया अत्र यही नारा है,
प्राणा का मोह अवशेष न रह जाय सभी सच्ची बीरता का प्रदर्शन हो
सकता है। भारतवर्षी राष्ट्र की रक्षा के लिए तत्पर है किन्तु आतंक का
उत्साह भी कम नहीं। शीश की भेंट चलाने को तत्पर आतंक आतंक की
रक्षा में सतर्क होना चाहते हैं। वे खेन विनीत आतंक छोड़कर सिपाही
बनने का प्रस्तुत हैं। भारत-माता के अधरो की मुस्लान गीतन के लिए
दुश्मन का सामना करने के लिए समस्त साधिया का एकत्र करत हुए वार
आतंक की अनुमति—

मल-विनीत छोड़ा साधा । आज सिपाही बन जाना है ।^१

दुश्मन हमको चिन्ता रहा है

भूत गया है भाई चारा

लट्टे करदें दान कि उसक

किया बहुत अपमान हमारा

भारत माता के अधरो से गई हसी की नीटाना है ।

राष्ट्र की प्रगति की कामना शांति के समय की जाती है। युद्ध के
समय राष्ट्र की सुरक्षा का चिन्तन करते हैं और मुख्यस्वर सीमा की रक्षा
का होता है। परन्तु जब युद्ध की आधी नीट जाती है तब नव नियाम की
मृज्ज की, प्रगति की आकांक्षा से रचनात्मक कार्य किए जाते हैं।

देश की किस्मत गई हम ही गढ़े ॥

आंधियों के सिर झुकाते हम बढ़े ॥

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान श्री नारायणलाल परमार जब १० अक्टूबर
१९६५ पृ ३६

२ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १५ अगस्त १९६६, श्री दशरथ जब पृ ३६

भोर नाएँगे गृजन भी हम गुजना
हम कहेंगे नए युग की नव-नहानी
प्यार की धारा हम जग में बहानी

प्रगति व ऊँच शिखर पर हम चढ़ेंगे ।
जीधिया व सिर मुकाते हम बढ़ेंगे ॥

भारतवर्ष के सुपुत्र इस अगु युग में मो मन में शक्ति रखकर जा रहे हैं । भारत के धीरे बालक पथ पर बढ़ते जायेंगे । चाहे चट्टानें या अथ अवरोध भाग में घायल नहिन वे हसकर उम पर चढ़न की तयार हैं । व वनपन से ही बीरता का पाठ पढ़ते हैं क्योंकि कल के भारत की जाति भी तो यही बालक हैं । इन्हीं पर भारत की उन्नति निर्भर करती है । यही भावी भारत के विश्वास हैं तूफानों से डरने वाले ये बालक नहीं—

हम भारत के धीरे सिपाही ।
अपने पथ पर बढ़ते जाते
जितनी चट्टान पड़ती है
उन पर हसकर चढ़ते जान

जहाँ मुस्कराए हम मित्रवर उसी समय का नाम सनेरा ।
बिजली घर व पन हुए हैं हमसे मोना दूर अंधरा ॥

देश हमारा प्यारा भारत
इस सब नसके बट है
इस अगु युग के भीतर भी हम
मन में शक्ति समेटे हैं

• • •

हम कल के भारत की आशा हम कल के विश्वास हैं ।

तूफानों में नहा डरेंगे हम कल के इतिहास हैं ॥

यद्यपि बालक उन के सुकुमार होते हैं और उड़ने के प्रयोग्य माने जाते हैं । किन्तु शत्रु की नलवार पर बालक स्वयं को सुकुमार तन धार नही मानन वलि पीला पी अगार सन्ध हैं । वे विश्वास के अप्रदूत हैं और सर्वोप्य के आधार हैं । नव निर्माण के लिए प्रस्तुत सजग बालकों का स्वस्थ चित्र शमाजी के गाना में एक प्रकार चित्रित हुआ है—

फूलों में हसमुख बच्चे हम कलियों से सुकुमार हैं^१
 शत्रु हम सलवारें तर हम फौलादी अगार है
 धर्म के द्वारा हम स्वदेश में भरते हैं नव तरसाई,
 नव निर्माण लिया करते हैं या तेजी से अगसाई
 स्वावलम्ब का विभुन वजा है सजग हुई है मुविषाए
 माप मवेगा कौन हमारा मलनाश की गहराई ?
 हम विकास का अग्रदूत सर्वोत्थ का आधार हैं ।
 शत्रु हम सलकारें तर हम फौलादी अगार हैं ।^१

जिस घर में बच्चा नहीं होते कहते हैं उस घर में रीतक भी नहीं रहती । सम्भवत बच्चा से ही घर की शोभा होनी है क्योंकि यही देश का सच्चा धन कहना है—

बच्चा मैं घर की शामा है २
 यही देश का सच्चा धन है
 माता और पिता का अपना
 हर बच्चा अनमोल रत्न है ।

क्योंकि आज का बच्चा ही कल के होने वाले गतिज्ञानी युवक है । यही भारतवर्ष की तकदीर है । भारत के भाग्य विधाता बच्चा ही भारत माना की भोनी भरेंगे । इन बच्चा में ही राखी है जो सारे ससार में सत्य और अहिंसा के बल पर सुकान ला सकते हैं । इन्हीं बच्चा में नेहरू हैं जो भारत की शांति का उपदेश देकर स्वयं बना सकते हैं । भगतसिंह जैसे वीर भी इन्हीं बच्चों का समूह में मौजूद हैं जो अत्याचारों की जड़ मिटा सकते हैं । आजादी की राखी में है जो शत्रु के दाँत भी खट्टे कर सकती है । दुश्मनों के दिलों की घाँट देने वाली शक्ति भी इन्हीं बच्चों में निहित है । इन बच्चों में ही सुभाष जैसे क्रांतिकारी वीर छिपे हैं जो समय पर सब वीरों को संगठित कर जयहिंद का नारा लगात हुए राष्ट्र में जागृति की लहर फैला सकते हैं ।

गीतकार को भी युग का चारण कवि बनकर बलिदानों परम्पराएँ देनी हैं । बच्चों की ज्वानाएँ और तलवारों को धार देनी हैं । केवल बाणी के पुष्प ही समर्पित नहा करने हैं देश की धरती को अपना स्वामिमानी मस्तक भी देना है । वीरों की शीघ्र गायारों के गीत दकर गीतकार बच्चा के शीघ्र

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान १४ नवम्बर १९४५ जगन्नीशचन्द्र शर्मा पृ ३१

२ बतन हमारा श्रीकृष्ण सरन स प्र १९६५ पृ स १४४

को द्विगुणित करने में सहायता होता है। जाग बढ़ने का सपना दन हुए
श्री विशारी रमण टप्पन कहते हैं—

बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो ।^१

पहाड़ हो अगर गढ़ा

समुद्र हो अगर गढ़ा

हो लीफ जितना हो बढ़ा

बढ़े चलो बढ़ चला बढ़े चला ।

निरंतर बढ़ते रहना प्रगति सजगता एवं सत्रियता का चिह्न है।
माण में जितनी ही बाधाएं आयें जाग बढ़ने के लिए जितने भी सघप
करने पड़ें परंतु बढ़ना जाग ही है पीछे नहीं हटना है। माँ नहू शिशु का
मुलाने के लिए तारी गाता है। तारा के गान-तारा निम्न संदेश देती है—

नहू ताल बना हो जाय २

गोरी बहू ग्राह कर जाय

निदिधा ! मणिया वाली ।

निदिधा ! मुटिया वाली ॥

धीर धीर पत्रकन छाना रंग रंग रंग समाना

शील सगन साहस मच्छाई का सपना दे जाना

आसू धबे पिछने तन मन पर पीडा समझाना

बडा बनाना भले न हमको पर इंसान बनाना

इस प्रकार शीत नगन सच्चाई एवं साहस का पाठ पढ़कर इंसान
बनाने की कामना करती हुई माँ नहू बालक को अपनी राह आप बनाने
की सामर्थ्य देती है। गोरी के माध्यम से वीरों की गाथाएं सुनाकर उत्साह
का भाव भरने में माँ सहायक होती है क्योंकि बालक का स्नेह माँ पर
अधिक होता है। माँ की रक्षाय एवं बलिदान के लिए तत्पर बालक बड़ा होकर
ज मभूमि भारत माँ की रक्षा करने में समय होता है। राष्ट्र के लिए
राष्ट्र के नीजवाना को शहीद होना है इसका पाठ वे बालपन में ही पढ़न
आये हैं। यही बचपन का पाठ आगे चलकर उन्हें प्रेरणा देता है राष्ट्र की

१ बालवार्पिकी पत्रिका १९६५ स० जगन्नीश माधुर रच विशारी रमण
टप्पन पृ० ३५

२ वही रच० अक्किचन शमा पृ ८६

सुरक्षा की राष्ट्र की प्रगति की और नव-निर्माण की। नहें मुने राही भी देश के सिपाही बनने की तत्पर हैं और जयहिन्द का नारा बुलंद करना चाहते हैं। बालक में ऐसे भाव भरने का श्रेय माँ को है शिक्षक को है और है वातावरण को, जिसमें बालक पलता है रहता है और बड़ा होता है। इस दश को जितनी कठिनाइयों के पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्त हुई यह एक लम्बा कहानी है। स्वतंत्रता यन्त्र द्वारा हासिल देने वाले वीरों के रक्त से इसका इतिहास लिखा है। सघर्षों के तूफान में जब राष्ट्र की भाव को बचा लिया तो उस राष्ट्र के बच्चा का कर्तव्य बढ गया। ममदार में पड़ी नया को किनारा तो मिल गया परन्तु पुनः यह नया ममदार में न चली जाये इसकी जिम्मेदारी बालकों पर ही है। राष्ट्र की नया को किनारे से ही उगी रहने देने में बालकों का सहयोग आवश्यक है क्योंकि यही कल के नेता है और यही देश के रक्षक रहेंगे।

अस्तु गीतकारों ने अपने गीतों में माध्यम से बालकों की मनोवृत्ति एवं अनुभूति की अभिव्यक्ति स्पष्ट की है। बालक अनुकरण करता है और इसी अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण उसे पथ पर अग्रसर हाता है जिस पर घर परिवार का एवं राष्ट्र का व्यक्ति चल रहे होते हैं। उपयुक्त वातावरण सत्कार एवं अनुकरण की प्रवृत्ति का आधार पर ऐसे बालकों का समूह तैयार किया जा सकता है, जहाँ राष्ट्र निर्माण राष्ट्र सुरक्षा मन्त्र की भावा का सक्रिय करने में योग्य शिक्षकों का हाथ हो। बालकों में उत्साह का कमा नहीं हाता है बल्कि आवश्यकता है सही गान-बजन की। स्कूला में बालक स्वच्छ ए सी सी आदि की शिक्षा भी राष्ट्रीय भावना का परिपुष्ट करती है। खेल खेल में हाँ व दूक उठाना सिपाही बनने की आकांक्षा प्रगट करना हवाई जहाज चलाने की नकल करना नेतागिरी करना आदि बालक की वीर मनोवृत्ति का परिचायक है। लोरी में भी ताण्डव की गति बालकों की आकांक्षा बालक का वीर भाव को मुखर करती है। आजादी की रता आदि शब्दों के भाव समझने वाले बालक राष्ट्र को स्वतंत्र बनाय रखने की कामना करते हैं। आश्रमण के समय अपनी समग्र चेतना के साथ सोचना चाहिए कि किन किन साधना से देश की रक्षा सम्भव है। नौजवान पुष्ट महिनाएँ एवं बालक समीप साथ यह सकल काल आह्वान का काल हाता है। जन्मभूमि की रक्षा करना किसी एक या कुछ व्यक्तित्व का ही कर्तव्य नहीं है। यह तो प्रत्येक का अनिवार्य कर्तव्य है। बालकों का हाँ नहीं सभी का आदेश सुभाषचन्द्र बोस का जय हिन्द का नारा होना चाहिए। भगतसिंह चन्द्रसेखर आजाद एवं सुभाषचन्द्र बोस आदि के ओजस्वी आह्वान हम युग में भी कर्तव्य के प्रति सजग एवं

समिय करते हैं। आज्ञानों प्राणों से भी प्यारी एक मूल्यवान है। भारत के प्रत्येक नागरिक का एक विश्वास होना चाहिए 'एक हृदय है भारत जननी'। प्रत्येक बालक के हृदय में यही भावना विश्वास के प्राण फैलेगी जिससे राष्ट्रीय एकता को सम्बल मिलेगा। एकता कभी खण्डित न होगी क्योंकि नई पीढ़ी उसकी अपठता को बनाये रखने में सक्षम होगी। समय होगी। देश का बच्चा बच्चा दुश्मन के प्रति विद्रोह के भाव रखता हुआ सभी साधनों को संगठित करने के लिए तैयारता है। इसके मूल में प्रत्यक्ष त्याग एवं बलिदान की भावना है। एन० सी० सी० नेशनल डिसेम्प्लिन स्कीम, ग्लस गाइड फ्रंट एंड नॉसिंग और फिजिकल ट्रेनिंग सभी विद्यालयों में आरम्भ की गई है। छात्र एवं छात्राएँ इस अनिवार्य शिक्षा के कारण समुचित रूप से तैयार हो रहे हैं। राष्ट्र की प्रगति इनके उचित विकास एवं भावनाओं पर निर्भर करती है। युद्ध एवं शांति दोनों ही समय में विसं प्रकार का काम उचित होगा एवं अनुचित होगा। इसका पर्याप्त ज्ञान बालकों को विद्यालय एवं वहाँ से मिलने वाली अभिव्यक्ति द्वारा हो जाता है। यह राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्र प्रगति का चिह्न है। देश का हर बच्चा अनुशासन की भावना से दास ही राष्ट्र के उत्तरदायित्व का समझ एवं कुशलतापूर्वक उस काय भार का समालोचन के लिए अपने यत्नित्व का उचित विकास करते हुए शक्तिशाली बने यही आकांक्षा है। लान बहादुर शास्त्री का रिया हुआ नारा जय जवान जय किसान सबन गूजता रहे।

भारतीय नारी सृष्टि के प्रारम्भ से ही गुणों की भागार रही है। नारी की जाकपण शक्ति सदब ही कवियों एवं लेखकों की लेखनी आकर्षित करती रही है। प्रारम्भ से ही कवियाँ एवं लेखिकाएँ ने नारी के विभिन्न रूपा प्रमाणाँ एवं शक्ति को साहित्य में अभिव्यक्त किया है। नारी का रूप-वर्णन नारी का मनोविश्लेषण एवं उसकी भीमासा, कवियों का प्रिय विषय रहा है। नारी में पृथ्वी के समान क्षमाशीलता का गुण पाया जाता है। साहित्यकारों ने उसे क्षमा समुद्र की जसी गम्भीरता विशालता गहराई एवं अनन्तता की भी अभिव्यक्ति दी है। सूर्य के समान तेजस्वी नारी का चन्द्रमा के समान शीतल स्वरूप भी चित्रित हुआ है। नारी-हृदय में कितने गुणों की सृष्टि साहित्यकारों ने की है वह विभिन्न साहित्यिक विधाओं के अन्तर्गत दृष्टिगत होती है।

नारी-स्वभाव कोमल और कठोर दोनों प्रकार का ही है। वह करुणा दया पवित्रता शांति प्रेम और ममता की सजीव मूर्ति है। अवसरानुकूल वह प्रचण्ड रूप भी धारण कर लेती है। वह जननी है इसीलिए धातुसत्वमयी कदलामयी त्यागमयी स्नेहमयी एवं ममत्वमयी है किन्तु आपत्ति आने पर सघनमयी रणचरणी भी है। य दोनों विरोधी प्रतिरूप नारी के चरित्र के दो गुण हैं जिसने पुरुष के जीवन को पूरा एवं सफल बनाने के लिए मातृत्व का मार बहन किया है गृहस्थी सुचारु रूप से चलाई है, राष्ट्र पर आपत्ति आने पर राष्ट्र की भी पूरा सहयोग किया है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए भा नारी तत्पर रही है। स्वयं भी युद्ध में सक्रिय सहयोग देकर सैनिकों का जोश त्रिगुणित किया है। नारी सत्त्व पुरुष की प्रेरणा बनकर आई है। बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपय तक वह परिवार की सरिता रही है। भारतीय सभ्यता की अमूल्य निधि है नारी। नारी धर्म की पात्रा रही है। जगज्जननी के रूप में मातृभूमि की पूजा माँ का प्रतिरूप मानकर की जाती है। माँ का रूप ही हृदय में उदात्त भावों की गरिमा भर देता है। माँ ही परिवार

की जन्मदात्री है एवं उसकी सरक्षिता है। नारी में ही यह शक्ति है कि वह मातृत्व का भार वहन कर और राष्ट्र का स्वस्थ और बुद्धिमान शिशु का उपहार दे जो राष्ट्र के भावा भाग्य विधाता बन सके। सत्तार के सभी महापुरुषों के जीवन निर्माण में उनकी माताओं का बिनाप हाथ रहा है। शिशु को यौव पुरुषों की गाथाएँ सारियों के रूप में सुनाकर सुनाने वाली माँ बीरता का पाठ पाने में ही पढ़ा देती है। बालक की सहज जिज्ञासु प्रवृत्ति को शांत करने के लिए बीरों की गाथाएँ सुनाती हैं और दश प्रेम के भाव जाग्रत करती हैं। आग बनकर यही बालक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय से उचित शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्र के प्रति वक्त य पूरा करते हैं और यथा सम्भव राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनते हैं। वस्तुतः नारी जननी ही नहीं शिक्षिका भी है। अतः राष्ट्रीय भावनाओं का सजग करने में नारी का बहुत सहयोग रहा है। प्रत्यक्ष जीवन के क्षेत्र में नारी का सहयोग आवश्यक है। नारी के बिना परिवार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। परिवार के बिना समाज एवं समाज के बिना राष्ट्र का कल्पना नितांत निराधार है। अतएव नारी की शक्ति की आवश्यकता सराहनीय एवं महत्वपूर्ण है। नारी के बिना राष्ट्र की सम्भावना नष्ट और राष्ट्र के बिना राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति असम्भव है। अनेकी नारी ही नहीं नारी के साथ पुरुष का सहयोग भी वाछनाय है। परन्तु नारी की भूमिका पुरुष की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण रही है।

नारी का इतिहास और एक सर्वभूषण—

साहित्य का प्रमुख विषय सम्भवतः नारी ही है। नारी पर सर्वाधिक काय मृजल हुआ और यही विषय बड़े बड़े महाकाव्यों की प्रेरणा बना रहा। सर्वाधिक रचनाएँ शृंगार रस से परिपूर्ण उपलब्ध होती हैं। समोग एवं विप्रनन्दन का आधार और प्रमुख विषय नारी ही रहा है। शृंगार को रसरज माना गया है और सूर का शृंगार-वर्णन रसरज की कोटि तक पहुँच गया था। ऐसा अनेक विद्वानों ने प्रमाणित किया है। नारी का आकर्षण शक्ति का युग-युग से साहित्य में वर्णन होना आया है। प्राचीन काल के साहित्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया था। बल्कि युग के साहित्य में भी उवशा के उमादक प्रभाव का चित्रित किया गया था और उसने प्रभावपूर्ण में वध पुरुषों ने उवशा के वियाग में आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था स्वयं को हिंस्र भेड़िया के सम्मुख डालकर। जानि कनि वाल्मीकि के रामायण में जनक-पुत्रा सीता का जो सौन्दर्य दाहिमान हुआ उससे प्रभावित मारतवध के अनेक प्राता के नरक अनुप-यन में साता-स्वयंवर में भा

उपस्थित हुए थे। महर्षि व्यास की रचना महाभारत में द्वीपदा व एक वटु हास्य ने वीरव पात्रों व मध्य युद्ध के बीज बो दिए थे। वही अनक वीर योद्धाओं के नाश का कारण हुआ। अजुन के पुत्र अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही यह प्रवेश सोच लिया था और अल्पवयस्की उस वीर ने वीरवीं द्वारा रचित सुन्दर व्यूह का भ्रम किया था। सम्पन्न साहित्य में नारी के वर्णन का वाचक प्रभाव दृष्टिगत होता है। वासव सा, शकुन्तला एवं दम्पती आदि के विभिन्न रूप विस्तृत रूप से अभिमत हुए हैं। उनके सौन्दर्य का आकर्षण एवं विभिन्न भाव अभिमात्रों का रूप चित्रित किया गया। नारा का साधना पवित्रता, श्रियता एवं अलौकिक रूप विगद् रूप से काय में मुखर हो उठे। गद्य-साहित्य में भी महावता एवं वादम्बरा जसी नारियाँ अवतरित हुई हैं।

प्राचीन भारत में, सरस्वती के पावन मन्दिर में नारी का भा अचना करने का अधिकार था। शिक्षा का चरमास्त्र उस युग में ही दलन को प्राप्त होता है। क्याकि नारा एवं पुरुष समकक्ष थे—समान अधिकार प्राप्त थे। बाद विधान में शास्त्राध्यक्ष में नारियाँ सक्रिय भाग लेकर पुरुषों के यात्रा जीत लती थी और विजय का सहारा नारा के शीर्ष पर सुगन्धित होता था। आध्यात्मिक शिक्षा के द्वारा नारा एवं पुरुष के लिए समान रूप से सुन हुए थे। नारी उच्च कोटि की दशगतास्त्री होता थी जबकि नारी का उच्चतम रूप वही नहीं मिलता है। उच्च शिक्षिता एवं सर्वप्रकारण योग्य नारा पवित्रता की शिष्यमूर्ति थी। नारी को हम दृष्टि से नहीं देना जाता था। नारी का स्वतन्त्र रूप इस युग में अधिक मुखर हुआ। बचन गृहस्थी की गाड़ी चलाना या मातृत्व का काम करना ही नारी का काम नहीं था। बहिन काल में माँ नारी का साहित्य सुजन में सहयोग रहा था। बहिन प्रकृष्टा का सृजन किया। वे तत्त्वदर्शी दार्शनिक एवं चिन्तक के रूप में भी सप्रिय रही। वाच्यमय भावुक हृदय का नारी सत्यम विष्णु एवं सुन्दरम् की सृष्टा रही। मार्गी मनेयी, मन्त्रज्ञा आदि नारियाँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। समय परिवर्तनशील होता है युग बदलता है और सब कुछ परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य का रूप बुद्धि विचार एवं भावनाएँ सभी में एक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। मानस्य ब्रह्म ज्ञात है, मूल्यांकन नय सिर से प्रारम्भ किये जाने हैं। उसी प्रकार युग-परिवर्तन का माघ नारी भी परिवर्तित हुई। उमरे भाग्य ने परिवर्तन की न्यास या पट्टा बना और प्रदण किया। वक्त्र वालीन नारी का वरदान स्वर्ण भाग्य भनीत के रूप में विधान होना गया। उसकी विस्तार स्वतन्त्रता निर्माण का और उच्च सम्मानपूर्ण स्थान मनी

की जन्मदात्री है एवं उसकी मरधिरा है। नारी में ही यह शक्ति है कि वह मातृत्व का भार वहन कर धीरे-धीरे राष्ट्र की स्वस्थ और बुद्धिमान शिशु का उपहार दे, जो राष्ट्र के भावी माग्य विधाता बन सकें। संसार के सभी महापुरुषों के जीवन निर्माण में उनकी माताआ का विशेष हाथ रहा है। शिशु को धीरे-धीरे पुरषों की गाथाएँ तोरियाँ के रूप में सुनाकर मुनान वाली माँ वीरता का पाठ पाठन में ही पढ़ा देती है। बालक की सहज जिज्ञासु प्रवृत्ति को शांत करने के लिए वीरों की गाथाएँ सुनाती हैं और देश प्रेम का भाव जाग्रत करती हैं। आगे चलकर यही बालक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय से उचित शिक्षा प्राप्तकर राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पूरा करते हैं और यथा सम्भव राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनते हैं। अतः नारी जननी ही नहि शिक्षिका भी है। अतः राष्ट्रीय भावनाओं का सजग करने में नारी का बहुत सहयोग रहा है। प्रत्येक जीवन के क्षेत्र में नारी का संयोग आवश्यक है। नारी के बिना परिवार की कल्पना ही नहीं की जा सकती। परिवार के बिना समाज एवं समाज के बिना राष्ट्र की कल्पना नितांत निराधार है। अतएव नारी की शक्ति की व्यापकता सराहनीय एवं महत्वपूर्ण है। नारी के बिना राष्ट्र की समावना नहि और राष्ट्र के बिना राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति असम्भव है। अतः नारी ही नहि नारी के साथ पुरुष का सहयोग भी वाछनीय है। परन्तु नारी की भूमिका पुरुष की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण रही है।

नारी का इतिहास और एक सर्वेक्षण—

साहित्य का प्रमुख विषय सम्भवतः नारी ही है। नारी पर सर्वाधिक का य मृजल हुआ और यही विषय वह बड़े-बड़े महाकाव्यों की प्रेरणा बना रहा। सर्वाधिक रचनाएँ शृंगार रस से परिपूर्ण उपलब्ध होती हैं। सयोग एवं विप्रसङ्ग का आधार और प्रमुख विषय नारी ही रहा है। शृंगार को रसरज माना गया है और सूर का शृंगार-वर्णन रसरज की कोटि तक पहुँच गया था ऐसा अनेक विद्वानों ने प्रमाणित किया है। नारी की आकर्षण शक्ति का युग-युग से साहित्य में बलवत् होता आया है। प्राचीन काल के साहित्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया था। बर्निक युग के साहित्य में भी उवशी के उन्माद प्रभाव का चित्रित किया गया था और उसके प्रेमाकर्षण में बध पुरखा ने उवक्षा के वियाग में आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था स्वयं को हिंस्र भेजिया के सम्मुख खलनर। आदि कवि वाल्मीकि बृहत् रामायण में जनक-पुत्री सीता का जो सीन्य दासिमान हुआ उससे प्रभावित भारतवर्ष के अनेक प्राचीन क नरग धनुष-यन में सीता-स्वयंवर में भा

उपस्थित हुए ५। महर्षि ब्रह्मर्षि की रचना महाभारत में द्रौपदी व एक बटु हास्य ने बीरव पाडवा व मध्य युद्ध के बीज का दिया था। वही अनक बीर योद्धाओं के नाश का कारण हुआ। अजुन के पुत्र अग्निभयु ने माँ के गम में ही व्यूह प्रवेश सीख लिया था और अल्पवयस्की उस बीर ने बीरवा द्वारा रचित सुहृद् व्यूह का भेदन किया था। सस्त्रुत माहित्य में नारी के बल का व्यापक प्रभाव दृष्टिगत होता है। वासवत्ता शकुन्तला एवं दमयन्ती आदि के विभिन्न रूप विस्तृत रूप में अभि यक्त हुए हैं। उनके सौन्दर्य का आकर्षण एवं विभिन्न भाव भगिमाओं का रूप चित्रित किया गया। नारी की साधना, पवित्रता श्रद्धा एवं अतीविक रूप विगद् रूप से काय में मुखर हो उठे। गद्य साहित्य में भी महादेवता एवं बादम्यरा जैसी नारियाँ अवतरित हुई हैं।

प्राचीन भारत में, सरस्वती के पावन मंदिर में नारी का भी अचना करने का अधिकार था। गिला का चरमास्त्र उस युग में ही दान का प्राप्त होता है क्योंकि नारा एवं पुरुष समरथ थे—समान अधिकार प्राप्त थे। बाद विवाह में शास्त्राध्यय में, नारिणी सत्रिय माग उबर पुरुषों से यात्रा जैत्र लेती थी और विजय का सहारा नागी व आग पर मुगानित हुआ था। आचार्यमक शिक्षा का द्वार नारी एवं पुरुष के लिए समान रूप से खुला था। नारी उच्च वाक्पि का दानशास्त्री होना थी जबकि नागी का रूप बही नहीं मिलता है। उच्च शिक्षिता एवं पवित्रता की निष्कमूर्ति थी। नारा का रूप भी न था था। नारी का स्वतंत्र रूप इस युग में अतिरिक्त मुखर था। नारी की गाड़ी चलाना या मानव का बाध उठाना व वनिक-काल में भी नारी का साहित्य मदन में मन्त्रा मन्त्र का प्रचामा का गृह विद्या। वे तरुणी शान्ति रत्न के सत्रिय रहीं। काव्यमय भावुक रूप का नाग रूप की सृष्टि रही। गर्भी भ्रमरा मन्त्रा शान्ति समय परिवर्तनशील होता है, दुःख का प्रकाश जाता है। मनुष्य का रूप वृद्धि निरंतर दृष्टिगोचर होता है। मानव का रूप विद्य जान है। उगा प्रकार उमर माग्य न पवित्रता का जानान नागी का वाग्य उमरा विद्या

गहन तिमिर में आ-झानित होने गया । पुरातनकाल में नारी को जो उच्च स्थान प्राप्त था वह युग में साथ-साथ समाप्त हुआ । जिस नारी को पुरुषों में समान अधिकार प्राप्त था जो कवन जमदाया नारी के रूप में ही चित्रित नहीं हुई थी अतितु सामाजिक राजनतिक एवं धार्मिक कार्यों में भी सक्रिय रूप से समानभागी था वही नारी आज मायबचन ॥ पराधानता की शृंखला में जकड़ी गयी लगी । मानवत्व के सहधर्मिणी भव्यो जीव कात्यायना में जाध्यात्मिक धन के समान सासारिक धन तुच्छ है सिद्ध करके समाज में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया था । मनुस्मृति में स्त्रियों के सम्यक् में स्पष्ट ही वह विचार यत् किणं गमं किं जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वही देवता नियास करते हैं जहाँ उनकी प्रतिष्ठा नहीं होती वही सब नियाए निष्कृत हो जाती है । अनेक कल्याणों की भाजन स्त्रियाँ पूजनीय हैं य गृह को ज्याति हैं प्रजापति न प्रजा की उत्पत्ति एवम् विस्तार के लिए उनकी सृष्टि की है य गृह नक्षत्री के रूप में भाव्य हैं ।

प्राचीन काल में यथा आदि जो धार्मिक अनुष्ठान किए जाते थे उनमें पत्नी का सहयोग अत्यावश्यक था । अथवा धार्मिक कृत्य पूरा नहीं सम्पन्न होते थे । रणक्षेत्र में नारी की कुशलता का भी परिचय प्राप्त हुआ है । दशमुर सग्राम में कन्या ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दक्षर दशरथ का आश्चर्य में डाल दिया था । प्राचीन काल में नारी अपने यत्तिरत्न के प्रति सजग थी । स्वतन्त्र अस्तित्व को बनाए रखने में नारी को पुरुषों का भी सहयोग प्राप्त था । नारी की स्वतन्त्रता का एक उदाहरण उस युग की स्वयंवर प्रथा है । जीवनसाथी का इच्छानुसार चयन करने की स्वतन्त्रता उस प्राप्ति थी । स्वयं का यत्तिरत्न बनाने के लिए उसे उचित वातावरण भी प्राप्त था । नारी अपने जीवन का मल-जुरा हित-अहित स्वयं समझने में समर्थ थी । अपनी योग्यता बुद्धिमत्ता एवं विवेकपूर्ण चिन्तन के बल पर ही समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाया था । अपने पति का सत्परामर्श दक्षर अच्छे परिवार की प्रतिष्ठापना में नारी का प्रत्यक्ष सहयोग रहा था । पुरुषों को प्रेरणा देने ॥ नारी ने सत्रिय सहयोग भी दिया । प्रत्येक क्षेत्र में नारी ने अपना अधिकार सहित उच्च स्थान बनाया । वे पुरुषों की सहचरी थी दासी नहीं स्वतन्त्र थी परतन्त्र नहीं । सद्गृहिणी होने के साथ ही साथ विदुषी एवं शास्त्रार्थ करने वाली विजयिनी भी थी । बिना गृहिणी के गुरु की कल्पना केवल निराधार है—

न गृहं गृहमियां गृहिणी गृहमुच्यते
गृहं हि गृहिणी होनम् शरण्यं सदृशं मतम् ।

बिना गृहिणी के गृहस्थी नहीं चल सकती। गृह हो भी तो गृहिणी के अभाव में वन के समान लगता है। नारी के मनोभावाएँ नारी प्रेम का चित्रण करने में कुशल काय शास्त्रियों का पूरा सहयोग रहा है। नारी के प्रेम का चित्रण करने में कवियों का मन खूब रमा है। सर्वप्रथम भरतमुनि ने नारी को नायिका पर पर आमीन किया। विभिन्न भेद उपभेद द्वारा गुणों का चर्चा की। ऐसा रूप प्रस्तुत किया गया जिस पर विस्तृत रूप से कभी चर्चा नहीं हुई थी। आगे चलकर अन्य कवियों ने भी नायिका भेद प्रस्तुत किए। अनेक ग्रंथों में नायिका भेद विस्तृत रूप से चर्चा का विषय बना रहा और कवियों ने उस पर बहुत कुछ लिखा भी है। हिंदी के भी अन्य कई कवियों ने नायिका के हाव भाव-कटाक्ष एवं नख शिखर का वर्णन किया। उनमें ग्रंथों में इनकी विस्तृत रूप से चर्चा की गई। अनन्त स्वतंत्र रूप की रचना केवल नारी के इन अंग प्रत्यंगों के वर्णन को लेकर हुई। नायिका भेद की सख्या इतनी बढ़ गई कि नारी के भेद दस हजार से भी ऊपर तक पहुँच गए। भारतीय आचार्यों द्वारा इन भेदों का विषय मीमांसा का विषय रहा। नारी का रूप विस्तृत चर्चा का विषय बना। काव्य में मुख्य रूप से नारी का रूप वर्णन का विषय ही प्राधान्य रहा। परन्तु नारी का जो स्थान पर सम्मान बर्दिव युग में प्राप्त था वसा बाद के युग में नहीं मिल सका।

रामायण युग में नारी छाया की भाँति पुरुष की अनुचरी रही। पुरुषोत्तम राम ने उसकी स्थिति सुधारने के लिए एक पत्नी व्रत का आदर्श स्थापित किया था। परन्तु महाभारत युग में अक्षर तः उसका पतन पराजय तक पहुँच गया। उदाहरण स्वरूप द्रौपदी का पाँच पतिव्रती चित्रित किया गया। शल्य ने अपनी बहिन को बेचा गांधार नरेश ने द्रव्य के लोभ में अपनी पुत्री को अग्ने की पत्नी बनने को विवश किया। द्रौपदी का सरी सभा में जूए के दाव पर लगाने के पश्चात् हार जाने पर विवस्त्र करने पर विवश किया दुःशासन ने धीर-हरण किया। पाँहू जिस पुस्तकहीन पुरुष ने अपनी पत्नी को दुराचार को आज्ञा दी। वह ने पत्नी नारियों बिना के हाथा की कठपुतली मात्र बनकर रह गई। उनका स्वतंत्र अस्तित्व तुल्य हो गया। व्यक्तित्व का कोई महत्व था रह गया। पुरुष नारी का शासक बन गया। ऐसा शासक जिसके हाथों नारी निर्जीव कठपुतली मात्र रह गई। नारी के अधिकारों का हनन हुआ और उसकी पवित्र श्रद्धाओं का तेजस्वी रूप पूजनीय न रहा। उसका आत्मशोका का कोई मूल्य न रहा। उसे इन सभी अधिकारों से वंचित किया गया जिनके द्वारा वह योग्यता प्राप्त कर सकती थी शास्त्राय में भाग ले सकती थी अपनी इच्छानुसार जीवन-भागी चुनने का अधिकार रखती

थी। गृहस्थ जीवन ही नहीं अपितु जय ज्ञेया में भी जीवन जिताने की वह अधिकारिणी थी। वह सज्जुम हो गया और रह गई वह बेचन पुरुष के चरणा की दासीमात्र ! भारत की परतन्त्रता के साथ भारतीय नारियों की परतन्त्रता का भी श्रीगणेश हो गया। उनके उच्चआदर्श सेवा की भावना त्याग एवं बलिदान की भावना उनके लिए कानांतर में अभिशाप बन गया। सौभाग्य दुभाग्य में परिवर्तित हो गया। नारी की इच्छा का महत्त्व नहीं रह गया। पुरुष की कठोरता ने उसकी प्रेम भावना पर भी अक्रुश लगा दिया। घृणा एवं तिरस्कार पाकर नारी उपक्षिता हो गई। निम्न पुरुष ने उसे अपने कठोर नियंत्रण में रखना उचित समझा और पुरुषों ने निरक्रुश गायन ने उसकी बढ़िया कंठ में कठोरतम कर दिया।

वही नारी जो अपने पति की प्रेरणा बनकर सबसे आगे रहती आई थी सुचारु रूप से गृहस्थी का गाड़ी भी चलाती थी और सरस्वती के पावन मंदिर में अपनी कायाञ्जलि अर्पित कर शास्त्राध्य में भी समान रूप से भाग लेती थी जिसने मण्डन मिश्र की अर्द्धांगिनी के रूप में पति का पराजय से विक्षुब्ध हाकर शतराज्याजी से वेद वेदाङ्गा के तत्वा पर शास्त्राध्य किया था। ऐसी सम्मानपूर्ण नारी का दुर्दिन आगया। नारी का स्वतन्त्रता का अपहरण किया गया। पग पग पर नारी का तिरस्कृत करने का प्रयत्न हुए। उसे घर की ऊँची दीवारों में बंद करने का प्रयास किया गया। शिक्षा से वंचित रखने की चेष्टा की गई। नाना प्रकार से असह्य बनना देकर उपेक्षित किया गया।

इनके दुष्परिणाम शीघ्र ही दृष्टिगत हुए। जनक कुप्रयाओं को जन्म देने का श्रेय पुरुषों को ही है। उनके उच्छृंखल रूप एवं अनतिक्रम आचरण के कारण नारी का मन गतिमान उदात्त स्वरूप प्रायः समाप्त होन लगा। विवाह बहुत कम उम्र में होने लगे। बान विवाह के कारण सुकुमार बालिकाएँ पूर्ण वयस्क हुए बिना ही पत्नी का पद ग्रहण करने को विवश थीं। परिणाम स्वरूप कम उम्र में ही उन्हें मातृत्व का बोझ उठाना पड़ता था। "समे उनकी मृत्यु भी प्रसव काल में ही हो जाती थी या रक्त हो जाती थी। अस्वस्थ बच्चों का जन्म होता था जिसमें नारी शीघ्र ही प्रीतिवस्था को पहुँचन नगती थी। कभी-कभी तो बधू घर से उम्र में बहुत छोटी जाती थी। ऐसे बनेल विवाह के कारण उन अल्पवयस्क नवयौवनाओं को सधवा बनने का सौभाग्य भी अल्पकाल तक के लिए ही प्राप्त होता था। पति शीघ्र ही बूढ़ हो जाता था जबकि बालिका पूर्ण वयस्क होने की स्थिति में होती थी। एतन्ने जब उसकी सुहाग लालिमा पुञ्ज जाती थी तब उस कठोर नियंत्रण में रखा जाता था। न वह अच्छा खा सकती थी न अच्छा पहन ही सकती था। उसकी परछाई में

शुभ-नायों में वर्जित थी। उस पर अनेक निषेधात्मक नियम लागू किये जाते थे। जिस उम्र में विवाह जसा शुभ काय सम्पन्न होना चाहिये था वह उम्र उसकी बध्म्य की होती थी, जो रात बसपत तरमत बीतती थी। जुगुनों की टोट फकार एवं यत्रणाएँ उसके जीवन को जरब बना डालती थी। ध्म्य वचनों से ऊबकर विधवा नारी या तो आत्महत्या कर लेती थी या उसका नतिर पतन हो जाता था। क्योंकि समाज में खुलकर उसे विवाह करने की अनुमति प्रदान नहीं की गई थी इससे चोरा दिये भ्रष्टाचार का ही बनाव मिनता था। जो विधवाएँ सच्चरित्र बनी रहना चाहती थी पुरुष-वग छल कपट से उसे पाने का यत्न करत थे। पुरुष के जास में फसी नारी को कहीं भी सुख नहीं था। पुरुषों के लिए इतने कठोर नियम नहीं थे बल्कि अनेक स्थितियों से अपने अनतिक सम्बन्ध बनाये रखने के लिए स्वतन्त्र थे। पुनर्विवाह की आना भी उन्हें थी। स्त्रियों के लिए पर्ण आवश्यक था। पर्दे की कठोर कानून नारियाँ अनेक रागों की गिबार हो जाती थी। पत्नी की सेवा मुश्रुपा पति के लिए आवश्यक न थी। वह तो उपेक्षित मात्र थी। पति की सेवा करना पत्नी का मुख्य धर्म माना गया था।

समाज द्वारा बहिष्कृत नारियों का एक असंग्रह स्थान स्थापित हुआ। वृद्धि समाज के अन्दर छिपे भ्रष्टाचार का सुता स्वरूप नारी द्वारा ही उद्घाटित हो सकता था नारियाँ ही तिरस्कृत हानी थी। पुरुषों के अनतिक आचरण का पाप भार वही दाती थी। बध्म सत्तान को भी ही अपमानित होती थी। उस बध्म सत्तान के बिना का कोई अपराध नहा माना जाता था। फलतः नारी का ही चरित्रहीन कुन्टा एवं कुन-कनकिनी कहकर घर में निष्कासित कर समाज से बहिष्कृत किया जाता था। व स्त्रियाँ जो इस अवस्था में आत्महत्या करना पण समझती थी जीवित रहना चाहती थी। परन्तु रहने के लिए उनका स्थान कहाँ था? समाज एवं परिवार के गृह पण मन्व के नियम ही उन्हें हान थे। ऐसी अवस्था में उन नारियों ने जीवित रहने एवं पट मरने के नियम अनेक पुरुषों का आमन्त्रित करना प्रारम्भ किया। उन्हें बध्म कहा गया। वेश्यावृत्ति के कारण घर का श्रीवारों में कानून नारियाँ का जीवन और भी दुष्कर हो गया। स्वच्छन्द वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों के पास सभी वर्गों के पुरुष जान भग। शादी-ब्याह के अवसर पर तो घर पर भी मजलिस जमती। नाचने नारियों को बुलाया जाता। बध्मएँ नाचने एवं गाने में प्रवाण होती थी। मुजरत करने के हजारों रण्य उनी थी। गराज के दौर चनेने थे और सम्मानपुत्र नारियाँ घर का कद में पटो सम्पत्ती रहता था। इस प्रकार पुरुषों

द्वारा निर्मित नये नियमों ने नारी-जाति को निम्न श्रेणी में गिरा दिया जिससे समस्त नारी जाति का अपमान हुआ। पुरुष स्वच्छन्द उद्दाम वासनाओं व शिवार एवं उच्छृंखल हो गये। नारी जाति को पनन व मार्ग पर चराने का समस्त श्रेय पुरुष जाति को है। पुरुषों की निरकुशता ने नारी जाति का अधःपतन किया। स्वकीया का मान घट गया परकीया का मान बढ़ गया। पुरुषों व मामान अत्याचारों को नारी ने सहन किया। अशिष्टा पर्ण प्रथा वान विवाह, बाल विधवा एवं वेश्यावृत्ति आदि सभी कुरीतियों की जड़ पुरुष थे। इन सभी कुप्रथाओं के मूल में पुरुष था। पुरुष का कहा मा कोर् भी अपराध नहीं माना जाता था। जबकि सब बुरे एवं अनतिक्रम कार्यों की जड़ पुरुष था। पुरुषों के उद्दाम आचरण की लपट में नारी भुनसहर रह जाती थी। पाप की सजा जिस काय का हो जाता है वह केवल नारा व सिर मर्ना जाना था। पुरुषों को समाज में वही सम्मान प्राप्त होता था किन्ति नारी लाञ्छित की जाती थी। प्रताड़ित नारी समाज पर चरने चरते पुरुषों के कुप्रभवेना स कुमांग पर चर पड़ती थी। पुरुषों का सब प्रकार के कार्यों की छूट थी जबकि नारी को कहीं स्थान न था। अत्याचारों की सहा करदेवाली नारी की सहनशीलता का भी कमी हो जात होना ही था।

जिस प्रकार भारत देश वर्षों पराधीनता की शृंखलाओं में जकड़ा रहा नारी भी उसी प्रकार बर्णिया में जकड़ी रही। जिस प्रकार भारतमाता ने अनेक अत्याचार सहन किये नारी भी न भी वह सब अत्याचार सहन किये। अनेक कष्ट एवं संघर्षों व पश्चान् भारत में जाति की गहर आती थी और नारी जाति का भी पुनरुद्धार होना था तो वह हुआ भी।

युग परिवर्तित होता रहा और हाता रहेगा। उन्नति एवं पनन सत्त्व होने लगे हैं एवं होने रहेंगे। परिवर्तन नस मण्डि का शाश्वत नियम है। हानो-मुख जीवन भी प्रगति की आशा व सहार प्राणवत रहना है। परिवर्तन न हा तो पति जीवन से ऊब जाय। समय वश निरंतर गतिशील रहता है। मानव जीवन भी सदैव गतिशील एवं सक्रिय रहता है। गति बिना निष्क्रिय जीवन प्राणविहीन होता। गति एवं मत्प्रियता जीवन व आवश्यक गुण हैं। समय के साथ साथ जीवन परिवर्तित हुआ और परिस्थितियाँ ने एक आवश्यकतानुसार परिवर्तन ला दिया।

पुरुष वर्ग की विनाशिता के अन्तिम दिन समीप आ गये। स्वच्छा चारी निरकुश पुरुषों के अत्याचारों का दमन करने के दिन आगए। नारी का परकीया या व्यक्तिचारी रूप मुक्ति पान का प्रयास करने लगा।

विषम स्थिति समता की पहुँचने की प्रयासी हुई। इतने दिना से विद्रोह की अग्नि में जलने वाली नारी के खुलकर विद्रोह करने का समय समीप आने लगा। प्रतिशोध की भावना ने नारी के रौद्र रूप को स्पष्ट रूप से जागृत किया। अत्याचारों की सीमा सहनशक्ति से पर हो गई थी। अब उसका अंत भी आवश्यक था। सहनशक्ति भी एक सीमा के पश्चात् जबाब देने लगती है। उस समय नारी सब प्रकार से भय विमुक्त हो निर्भीक एवं सुदृढ़ कदमों से चलकर आगे बढ़ती है। उसके कदम लड़खड़ाते नहीं हैं।

देश में राष्ट्रीय भावना के उत्थान के साथ नारी के उत्थान का और भी देश के नेताओं का ध्यान गया। फलतः उन्होंने अनुभव किया। कुरीतियों पर दृष्टिपात करने वाले अनेक समाज सुधारक थे। उन महापुरुषों ने इन कु प्रथाओं का अन्त करने का दृढ़ निश्चय किया। 'सन् ३६ के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन की तीव्रता व सामान्य जनता की उत्तम प्रदर्शित निष्ठा ने इस प्रकार के भारतीयों के मानसिक ढाँचे को बुरी तरह भकभोर दिया। पश्चात्य शिक्षा प्रणाली व संस्कृति के प्रति प्रतिश्रुति का काफी पूरा प्रारम्भ हो चुकी थी पर इस बात में वह पर्याप्त ध्यापक रूप लेकर प्रकट हुई, परिणामतः लोगों में राष्ट्रीय गौरव की भावना ने गहराई से स्थान पाया। सामयिक काल में पश्चात्य शिक्षा व संस्कृति में एक ऐसा युगक व युवतियों का सम्यक् करके अनेक ध्येय व विचारों की नीली गह। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पश्चात्य प्रणाली में यापक परिमर्तन करने के हेतु राष्ट्रीय सरकार ने अनेक प्रयत्न किए। भारत का विशेष नीति के फलस्वरूप विदेशों में भारत का गौरव बढ़ा। फलतः लोगों में राष्ट्रीय सम्मान की भावना और भी बलवती हुई। स्थिति में पर्याप्त सुधार भी हुआ।' 'पश्चात्य देश से मिलने वाली शिक्षा प्रणाली नवजागृति में सहायक हुई। अंग्रेजों की गति विधियों से परिचित भारतीय जाति करने के लिए संगठित होने लगे। गुलामी की शृंखलाएँ अब अस्तित्व में नहीं। उनका बाध निराश्रित बनता प्रतीत हुआ, क्योंकि जागृति की बिजली ने मानस मंचन कर उसमें स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी थी। सन् ३६ के पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन में नारियाँ भी महत्वपूर्ण भाग लिया। यह नारी-जागृति का ही परिणाम था कि नई शिक्षा के फलस्वरूप अंग्रेजों के साथ साथ नारी जाति भी जागी उत्तम शिक्षा की आवश्यकता भी बढ़ी। सन् ३७ में होने वाले चुनावों में भी नारियाँ ने भाग लिया और विजयी भी हुई। चुनाव के पश्चात् बनने वाले

वाप्रेसी मन्त्रि मंडला में उन्होंने महत्वपूर्ण पद भी सम्माने । उच्च और मध्य वर्ग की नारियाँ तब ही यह जागृति सीमिन न थी निचले वर्गों की स्त्रियाँ ने भी आगे बढ़कर मजदूर किसान आन्दोलन में भाग लिया । यह नारी-जागृति का ही परिणाम था कि नारी जाति की समस्या सन् ३६ के पश्चात् विशेष रूप से उभरी । इस समस्या का भी सामाजिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी देखा गया । अपने सामाजिक रूप में नारी जाति की समस्या ने नारी के सन्धियों से होने वाले गोपण एवं समाज व्यवस्था में उसकी गहिरी स्थिति के प्रति लोग का ध्यान आकर्षित किया तथा सरकार व समाज में नारी के सामाजिक अधिकारों की मांग का । १

पति के मरने पर आग्रहपूर्वक पत्नी को भी चित्तारोहण करने को कहा जाता था जिसे सती प्रथा कहते थे । इस प्रथा के अनुसार आकाश में होन पर भी स्त्री को आग्रहपूर्वक जनकर भस्म हान को कहा जाता था । ऐच्छिक रूप से सती होना और अनैच्छिक रूप से सती होना दोनों ही बातें एक हैं । दोनों में ही मानवता का ह्रास निहित है । ऐसी नृत्स वररतापूर्ण हत्याओं की रोकथाम के लिए राजा राममोहन राय धीरे धीरे । उन्होंने इस कु प्रथा को दूर करने का बीड़ा उठाया । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पर्दा प्रथा एवं बाल विवाह को रोकने के सक्रिय प्रयत्न किए । उन्होंने कन्या गुरुकुलों की स्थापना की । शिक्षा नारी जाति के लिए आवश्यक है इसका प्रबंध भी किया गया । समान अधिकार की अधिकारिणी नारी जाति को ऊँचा उठाकर उनके अधिकारों के प्रति उन्हें सचेत किया । उन्होंने अपने सद् प्रयत्नों से पर्दा प्रथा एवं बाल विवाह को रोकने में सफलता भी पाई । ऋषि दयानन्द सरस्वती की अनुपम देन थी—स्त्रियाँ में सामाजिक चेतना । तत्पश्चात् गांधीजी भी आजीवन नारी जाति के हितों का सुरक्षा में रत रहे । भारतीय संविधान में पुरुषों व समान अधिकारों की अधिकारिणी नारी जाति गांधीजी की इस अनुपम भेंट को कभी विस्मृत नहीं कर सकती । नारी पुरुषों के समान सभी अधिकारों का उपयोग कर सकती है । केवल नारीत्व ही उसे उसके अधिकारों से वंचित कराए ऐसा भारतीय संविधान और स्वतंत्र भारत का नियम नहीं । नारी का नारीत्व जो अमिच्छित हो गया था समान अधिकारों की दीप्ति से जगमगा उठा जिससे नारी को पुनः चेतना का धरदान मिला । पतन का युग समाप्त हुआ और नारी की उन्नति का अभ्यास प्रारम्भ हुआ । शृङ्खलाएं तब चुकी थी । नव जागृति ने समस्त

नारी जाति को नव प्रेरणा दी। उत्थान-पतन दोनों चले ही रहते हैं। आज पतन का युग नहीं जबकि हम उत्थान का युग में जी रहे हैं। पुरुष का समकक्ष नारी पटुच रही है और संविधान में नारी के अधिकारों को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है।

केवल कतिपय कानून जो नारी जाति के सामाजिक अधिकारों का गारंटी करें—पर्याप्त नहीं समझा गया, वरन् नारी की स्थिति का प्रति लोग के मानसिक ढाँच में परिवर्तन आवश्यक समझा गया। स्वस्थ एवं प्रगतिशील विचारों का पुरुष वर्ग नारी-समस्या को इसी आयाम से देख रहा था। महात्मा गांधी ने इस प्रश्न का भी सामाजिक, संघिक, सामूहिक महत्व दिया। जहाँ उन्होंने पाश्चात्य सभ्यता के संस्कृति का अध्यानुकरण करने के लिए नारी जाति का फ़तवा बहाल पुरुष वर्ग से भी अपील की कि वह अपने मानसिक ढाँच में ऐसे परिवर्तन करे जो नारी को मिसन वाल सामाजिक अधिकारों को बिना किसी उन्मत्त का आत्मसात् कर सके। विधवा विवाह, वंशवृत्ति, दान विवाह शिक्षा, पदाग्र्या परिवार प्रेम विवाह नारी समस्या का इन सारे आयामों को लेकर ही नव युग का नारी आन्दोलन गतिशील हुआ और इसमें सन्देह नहीं कि अपने सघर्षों का फलस्वरूप नारी जाति अपने अधिकारों की प्राप्ति करने में बड़ी सीमा तक समय भी हुई। स्वतन्त्रता के पश्चात् नारी का स्थिति में और भी सुधार हुआ। भारतीय संविधान हिन्दू को भी जिस अनन्त कानूनी आन इंदिया बीम-स काफ़ी-स नेशनल काउंसिल आफ बीमन जमी समस्याओं ने नारी जाति की सामाजिक स्थिति पर्याप्त सतोषजनक कर दी।^१

वर्तमान युग समस्त नारी जाति के सम्मान का युग है। नव सन्देश बाह्य यह युग नवसंपूर्तिनायक है। नारी के लिए पर्याप्त क्षेत्र है और उसके विकास की निशाएँ उभरती हो गई हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् नारी की शिक्षा का अपूर्व उपहार धरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। नारियों का उत्तरदायित्व समाज के प्रति बढ़ गया है। उसका क्या पर परिवार का ही बाँध नहीं है अपितु वह समाज के प्रति भी कर्तव्य की भावना से अनुप्राणित है। भारतीय स्त्री शिक्षा पर ब्रिटिश शासन का न के ही बल दिया गया था। परिणामतः पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव भी नारी पर पड़ा। नारी की प्रगति में, य पाश्चात्य

अधानुकरण बाधन बन कर आया। मानसिक मध्य म पूरा स्वस्थ होने के लिए भारत की संहति को, उसके गौरव को विस्मृत करना हानिकारक है। मानसिक दासता से पूरा मुक्ति तभी मानी जायेगी जब पाश्चात्य सभ्यता का अधानुकरण न करके भारतीयता को जीवित रखने म समर्थ हो। भारतीय महिलाओं का योगदान भारत के लिए गौरव की वस्तु है।

भारतीय महिलाओं म सर्वप्रथम सरोजिनी नायडू का स्मरण किया जाता है जो कि उत्तर प्रदेश के गवर्नर पद पर प्रतिष्ठित हुई थी। श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित विदेशी राजदूत के पद पर भासीन हुई थी। आज नारी किस क्षेत्र म पुरुषों से पीछे है? सभी क्षेत्रों म उसकी प्रतिभा दशनीय है। राजनीतिक सामाजिक तथा अन्य दोनों म भी उसका उच्च स्थान है। नारी लेखिका गायिका, सम्माननी कवियत्री अभिनेत्री नर्तकी विदुषी आदि रूपों म पर्याप्त सफल हुई है। समस्त नारी वग—नये सम्मान नये गौरव एवं नयी दृष्टि से पूजनीय है।

स्वाधीनता संग्राम म आहुति देने वाली नारियों के बलिदान एवं त्याग को विस्मृत नहीं किया जा सकता। नारी परिवार को सम्भालते हुए भी सावजनिक कार्यों म पूरा रूप से सक्रिय सहयोग दे रही हैं। प्रसाद जी की नारी भावना का उदाहरण दृष्ट है —

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल मे
पीयूष स्रोत सी बहो करो जीवन के सुंदर समतल मे।

वस्तुतः नारी को पुनः गढ़ापूर्ण दृष्टि से देखा जाने लगा है। नारी के पतन को देखकर ही राष्ट्रीय कवि मुत्तजी की लेखना से निम्न पक्तियाँ निवृत्त हुई थी —

अबला जीवन हाथ तुम्हारी यही कहानी
भाषन म है दूध और आँखों म पानी।

परंतु नारी का अबला कहने का युगभ्रम समाप्त हो गया है। सन् १९५८ में माउंट आबू म एन सी सी कम्प की समस्त छात्राओं के सम्मुख स्व जवाहरलाल नेहरू ने कहा था—‘हमें अपने शब्द कोप से प्रबना’ शब्द ही हटा देना चाहिए। वास्तव म नारी अबला क्या है? शक्ति स्वरूपिणी साक्षात् दुर्गा माँ नारी सबका है। अबला कैसे हो सकती है?

बालक एवं बालिकाओं द्वारा समान विषय का अध्ययन नारी की प्रगति का सूचक है। नारी न, शिक्षा के क्षेत्र म स्वतंत्रता के परचात, इन २० वर्षों म बहुत उन्नति की है। पुरुषों के समान नारी भी उच्चशिक्षित

हो रही है। सब प्रथम भारत की महिला इजिनियर है—उर्मिला गीयल। आज के युग में कितनी महिलाएँ डाक्टर, शिक्षिका, वकील एवं जज बनकर अपनी प्रतिभा से पुरुषवर्ग को चमत्कृत कर रही हैं। विजयलक्ष्मी पण्डित के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों से समस्त विश्व की महिलाओं का मस्तक ऊँचा है। श्रीमती इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री के पद पर कार्य करने वाला प्रथम भारतीय महिला हैं। भाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का वीरतापूर्ण इतिहास किसे याद नहीं है? श्रीमती महादेवी वर्मा 'आधुनिक भारत की भीरा' सवर्धेष्ठ कविपत्नी के पद पर आसीन हैं। नारी को बसल वासनापूर्ति का ही साधन नहीं माना गया है। आज के युग में नारी का दायित्व बहुत बढ़ गया है। वह 'मोनि' मात्र से ऊपर उठकर शुद्ध मानवी कल्प में प्रतिष्ठित हुई।"

नारी विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्नति कर रही है। राष्ट्र के प्रति नारी जागरूक है। स्वतंत्रता से पूर्व का भारतवर्ष का इतिहास त्याग, संघर्ष एवं बलिदानों से भरपूर चित्रित हुआ है। पुरुषों के साथ-साथ नारी का त्याग भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। पुरुषों ने मातृभूमि का रक्षाध्वन्य प्रणाली की आहुति दी तो नारियाँ ने जोहर की ज्वाला में अस्म होकर अमूल्य बलिदान का भी परिचय दिया। परंतु एक सत्ताह्वरण ऐसा भी है जिसने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर हसत-हसत प्राणालस्य किया। स्वतंत्रता संग्राम का श्री गणेश भाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई के द्वारा हुआ था। ब्रिटिश हुकूमत का विरोध करने का साहस थोड़े से रणवीरुओं के साथ ही बियर और उनकी वीर सवियों ने भी उम यम में अपनी आहुति दी। भारतीय नारियों को उनके आश का उनका बलिदान का ज्ञान सदब याद रहेगा। सन् १८५७ का स्वतंत्रता युद्ध विस्मृत करने की वस्तु नहीं। २५ मार्च १८५८ को भाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ समाप्त हुए युद्ध प्रारम्भ हुआ और रानी ने अंग्रेजों के दौलत लूट कर लिये। रानी की रणचातुरी देखकर बिन्नी भी आश्चर्यचकित रह गये। मुमता कुमारी चौहान के शब्दों में—

रानी थी या दुर्गा थी, स्वयम् वीरता का अवतार
दश मराठे पुलकित होते जिसकी तनमारा के चार।

देश की स्वतंत्रता का अमर मदेश देन वाली रानी स्वयं बलिवेदी पर पड़ गई थीर भारतीय पुरुष एवं महिलाओं के लिए आश मान्य प्रशस्त कर गई। रानी द्वारा जाग्रत जाति अग्नि की महार वीर धीर समस्त भारत में

याप्त हो गई और उसका परिणाम प्रत्यक्ष हुआ सन् १९४७ में १५ अगस्त को। सुमद्राबुमारा चौहान ने उनका यशोनाथा को अपन काव्य में स्थान दिया।

बढ़ जाता है मान वीर का रण में बलि होने से
मृत्युवती होती सोने की मस्म यथा साने से।

वस्तुतः नारी वग को उनसे चेतना के नय आयाम मिले जिसका अनुकरण कर राष्ट्रीय भावना का उद्भव और विकास हुआ। राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण तो हो ही गया था। उसके अकुरो को पनपने में समय नगा। अब तो राष्ट्रीय भावना का वृक्ष नारी जाति के हृदय में हरा भरा पूरा विकसित होकर नवकन प्रदान कर रहा है।

विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में छात्राओं के लिए बुनबुन गाइड ए सी सी एवं एन सी सी की शिक्षा प्रारम्भ कर दी गई है। एन डी एस-आई अनुशासन की भावना के साथ साथ राष्ट्रीय एकता का पाठ भी पढ़ाते हैं। राष्ट्रीय भावना से भ्रातृ भातृ गीतों को कठस्थ करवा कर उन्हें छात्राओं से गाने के लिए कहा जाता है। नर्स की ट्रेनिंग नजर कितने रोगियों की सेवा का कार्य नारी जाति कर रही है। हवाई जहाज चराने एवं उनसे पराशूत की सहायता से उतरने की शिक्षा देने में भी नारी पीछ नहीं रही है। मातृ भूमि की रक्षा करने के लिए नारी सदैव उद्यत रही है। जिस देश के बालक वृद्ध, नारी और पुरुष राष्ट्र की बलिबेदी पर अपने स्वार्थों को तन मन एवं धन से यौद्धावर कर देते हैं वह विश्व में महानाक्तिशाली राष्ट्र समझे जाते हैं। भारतवर्ष वीरता के लिए सदैव प्रशंसित रहा है।

हिन्दी काव्य में नारी—

भारतीय काव्य में मुख्यरूपेण नारी का शृंगारिक रूप में चित्रण किया गया है। नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं सजग व्यक्तित्व का विकास आधुनिक हिन्दी काव्य में मिलता है। इससे पूर्व व्यक्तित्व की विशिष्टता का विकास प्रायः उपन्यास नहीं होता है। नारी के अग प्रत्यक्षी का विभिन्न उपभावों द्वारा सौन्दर्य-निरूपण ही अधिक हुआ है। नायिका भेद, नख शिख बरान सयाग विघ्ननम्भ आदि नारी वस्तुन के विषय देने। नारी के चरित्र को उच्चता के दर्शन प्रायः नहीं मिलते।

रासो काव्यों की नारियाँ यौवन से भरपूर एवं सौन्दर्यमय हैं। उनका सौन्दर्य भय नरक या राजकुमारों का आमन्त्रित करता है वीरतापूर्वक हरण करने के लिए। तत्पश्चात् वे भोग की वस्तु बनकर आरुचण समाप्त होने

राष्ट्रीय भावना

पर उपेक्षित बन जाती हैं। वीर पति के हृदय में निवास करत भी दूरी नहीं और निकलत भी दूरी नहीं होती। अनेक पत्निया, दासियों के कारण एक पत्नी का कोई महत्व नहीं कोई मूल्य नहीं।

भक्ति-कालीन काय की नारी राधा के रूप में अवतरित हुई। विद्या पति तो इससे पूर्व राधा के नायिका रूप के उद्दाम यौवन का सकल अपन गीतो में करत ही है। राधा प्रणय विभोर हो प्रियतम के सबत की प्रतीक्षा करती हुई अधीर घड़ी रहती हैं। कृष्ण सबत करत हैं—

नद न नदन नदम्ब क तर तर, विरे-धिरे मुरली बजाव ।

। ममय सबेत निवेतन बइसन धनि वेरि वालि पठाव ॥

सामाजिक नियंत्रण से मुक्त, धार्मिक भावनाओं से स्वतंत्र है इस युग की नारी। गुप्त प्रणय की स्थान नहीं। इधर सूर की राधा का सर्वांगीण विकास नहा हाता। वह प्रेम का विकास की सान्ध्या पर पाव रखती हुई अंतिम सोपान तक पहुँचती है। वृंभत स्थान कौन तू गोरी? य जिनामु भाव स्पष्ट है और आनन्द राधा का वात्सल्य पूर्ण प्रत्युत्तर "काहे को हम सज तन आवति, सलत रहति आपनी वीरी"। तत्पश्चात् प्रणय का प्रथम आभास उस समय हाता है जब कृष्ण गया दुह रहे हैं तो एक धार बतन तक जाती है तो दूसरी राधिका के मुख की मिगोती है। राधिका प्रणयानुभूति करत हुए भी रुठती हुई कहती है धार कही जाती है देखते कही हो। बस पूर्वानुराग की यही भाँकी धारे धीरे धीरे पराकाष्ठा तक पहुँचती है। परंतु धार्मिक एवं सामाजिक बाधाएँ राधा को कृष्ण के विमोह में मद मद जलाती हैं।

रौतिकालीन नवियों की नायिका का मुख क्षणिक है। सौन्दर्य-ली के मद होते ही वह विलास के योग्य नहीं रह जाती। वान विवाह के प्रचलन के कारण अधिवाहिता प्रेयसी के प्रेम चित्र उपलब्ध नहीं होते।

शिवेदी युग की राधिका समाज सेविता के रूप में चित्रित हुई है। वह विश्व हित की कामना से अभिभूत अथवा सब राधाओं से उच्च कोटि की राधा बनकर अवतरित हुई है। चूँकि गाँधीजी का प्रभाव इस युग में प्रभुत्व रूप से छाया हुआ था अतः राष्ट्रीय भावना से पूर्ण नारी का चित्र सुपरित हुआ है। नारी में जिन गुणों की अपेक्षा स्वतंत्र भारत कर रहा है, वही गुण गाँधी माया में द्विवेदी मुनीन राधा में दर्शित होते हैं। विश्ववधुत्व एवं विश्वहित की कामना से भर जाते यानी समाज सुधारक के रूप में राधा समष्टि की उन्नति भावभूमि पर प्रतिष्ठित हुई है।

पद्मिनी का जोहर" की ज्वाला में प्राणा की आहुति देना इतिहास की विशिष्ट घटना है। नारियाँ की वीरता का थूँड उदाहरण है भाँसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान।

रानी दुर्गावती भस्कारी बाई एवं हाना रानी की सनाथा प्रसिद्ध नारियों के वीरतापूर्ण उदाहरण हैं। राष्ट्र के लिए सचेत नारी ने केवल वीर शिशु ही उत्पन्न नहीं किए अपितु स्वातंत्र्य-संग्राम में उसका अभूतपूर्व योगदान रहा और देश की रक्षा के हेतु प्राणोत्सर्ग करना भारत की वीर नारी के लिए कठिन कार्य नहीं है।

जाति-काल से कवियाँ ने राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित नारी को वीर प्रसविनी के रूप में देखना प्रारम्भ कर लिया था। गाँधी-युग में नारी का उन्मुक्त स्वरूप दृष्टिकोण दृष्टिगत होता है। द्विवेदी पुष्पान सुमित्रा कुमारी चौहान ने ओजपूर्ण काव्य रचना की—

बुढ़ेने हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी
लूँ लडो मरदानो वह तो भाँसी वाली रानी थी।

वीरो का घस तोलसब कसा होना चाहिए ? इस पर भी काव्य रचना की—

वीरो का कसा हो बसत ?

नवयुवको को स्वतंत्रता के लिए मर मिटने का आह्वान किया। बहिन रूप में राखी बाँधकर देग के नवयुवक माइया को चुनौती दी—

आते हो माई ? पुन पूछनी है—
जिपमता के बघन की है लाज तुमको ?
तो बदी बनो देखो बघन है कसा
चुनौती यह राखी की है आज तुमको ॥

पुरस्कार नामक कविता में मावामि यक्ति दृष्टव्य है—

आज तुम्हारी जाली से मा के मस्तक पर हो जाली ।
काली जमीरें दूटें काली जमुना में हो जाली ॥
जो स्वतंत्र होने को है पावन दुनार उन हाथों का ।
स्वीकृत है माँ की वेदों पर पुरस्कार उन हाथों का ॥

इस प्रकार सुमित्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति हुई। जागरण एवं चेतना के गीत गाये गये।

प्रगतिशील साहित्य की रचना ने उर्ध्वतन वग का निरलकृत चित्र

चित्रित किया। चन्द्रविरण सोनरिक्सा का निम्न पत्तियो मे राष्ट्र की एकता की भावना व्यक्त हुई है—

दुनिया के मजदूर भाईया, सुन लो एक हमारी बात।

सिर्फ एकता में ही बसना इस दुनिया के सुख का राज ॥

महादेवी बर्मा के काव्य का प्रमुख स्वर था बचना। हृदय का घसीम वेदना उनके काव्य में मुझर हुई। आगा एव उत्सास का भी चित्रण हुआ है—

मुस्काता सवेत भरा नम

अलि ! क्या प्रिय आने जान हैं ?

विद्यत के चल स्वर्ण-पाश में बंध हस देता रोता जलधर।

अपने मृदु मानस की ज्वाला, गोती से नहलाता सागर।

दिन निशि को देती निशि दिन को

कनक रजत के मधुप्याल हैं ॥

जहाँ हिन्दी काव्य में नारी का चित्रण केवल कवियों के ही वश का था वहीं काव्य के उस एकच्छत्र काव्य क्षेत्र में नारी ने भी अपना अधिकार जमाया। नारी हृदय की वेदना प्रणय, मिलन विरह एवं सुख-दुख सभी भावों की अभिव्यक्ति स्वयं नारी ने काव्य के अंतर्गत की। स्वतंत्रता के पदचात् तो अनेक उदीयमान प्रतिभाएं काव्य क्षेत्र में अवतरित हुई हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व ही नारी के काव्य के माध्यम से हृदयगत भावा की अभिव्यक्ति करना प्रारम्भ कर लिया था। परन्तु स्वतंत्रता के पदचात् तो कितनी कवयित्रियाँ लेखिकाएँ जन्म ले चुकी हैं। केवल गहस्थी की शिक्षा पर ही नहीं लिखा है अपितु समस्त नुरीतियों को दूर करने का प्रयास करते हुए समस्त नारी जाति को उद्बुद्ध किया है। गण-विज्ञान, पाक-विज्ञान सिलाई बढ़ाई आदि की निपुणता के साथ शिक्षण के क्षेत्र में भी उनका पूर्ण सहयोग एवं चातुर्य दृष्टिगत होता है।

नारी और राष्ट्रीय भावना—

राष्ट्रीय भावना युगानुसार परिवर्तित होती रहती है। युद्ध एवं शांति इन दोनों कालों में राष्ट्रीयता के स्वरूप का परिवर्तन होता है। राष्ट्रीयता की भावना का विकास नव आयामों को लेकर हुआ है। राष्ट्रीयता का स्वरूप सभी देशों एवं सभी कालों में एक जगह निश्चित नहीं होता परन्तु इसमें मिनती जुनती भावना की अभिव्यक्ति सभी काल एवं देशों में इतिहास में हुई है।

समस्त आय-जाति की रणाय राम का रावण से युद्ध राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित था। सोमनाथ की रणाय नरसो का संगठन भी इसी भावना का धोना है। महाराणा प्रताप द्वारा जबर की आधीनता की अस्वीकृति दशमिमान की अनुभूति से परिप्लावित है। चित्तौड़ का पद्मिनी का अन्ध राजपूत आलाभा के साथ जोहर-ग्रन" राजपूतों मर्यादा या धान का रक्षक होने हुए भी दल के लिए बलिदान की भावना से भरपूर है। गुह रागयहादुर एवं हरीशतराय का बलिदान चाह धम की रक्षा हुआ था। किन्तु सत्ये मूल में भावना एवं ही थी जाति की रक्षा, धम की रक्षा अर्थात् राष्ट्र की रक्षा। गारियो का राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति सन् १८५७ के गदर के समय से मिलती है। जन जन नारी प्रगति पथ पर अग्रसर होती गई और राष्ट्रीयता की भावना भी नये आयामों की दिशा में विकसित हुई। नारी पुरुष की पयगामिनी, अनुगामिनी नहीं अपितु कदम मिलाकर चलने वाली सहचरी के रूप में प्रस्तुत हुई है।

श्रीमती इंदिरा गांधी विजयनगमों पंडित तारकेश्वरी सिन्हा एवं पद्मजा नायक राष्ट्र के प्रमुख पदा पर कार्य करती हुई राजनतिक क्षेत्र में अवतरित हुई हैं। अभी भी पूरा जागरण नहीं हुआ है। कुछ नारियाँ अपने अधिवारा एवं कृत्य के प्रति सजग हैं तो कुछ कृत्य विमुक्त हैं। समस्त नारी वर्ग का सक्रियता आवश्यक है तभी राष्ट्र पूरुरूपेण उन्नति कर सकेगा।

आज का गीतकार नारी हृदय की समस्त भावनाओं को जागृति का स्वर देकर उन्हें प्राणवान बनाना चाहता है सक्रिय बनाना चाहता है। राष्ट्र की एकता, सुरक्षा एवं नव निमाण के लिए प्राचीन भारत की गौरव गाथा को भी स्मृति में लाना अत्यावश्यक है। जोहर की ज्वाना में भस्म होने वाली भ्रमर नारी के प्रति गीतकार बीरवानुभूति करता है। नारियों की मर्यादा की रक्षा का यह उत्सव बलिदान की भावना से अनुप्राणित करता हुआ प्रत्येक नारी को उसके आत्म सम्मान की रक्षा के लिए सजग करता है। लक्ष्मीबाई का महत्वपूर्ण बलिदान नारी-वर्ग को चेतना एवं सजगता की ओर जगसर करता है—

लोहा ने चलो। चीन ने भारत के तप को ननकारा।^१

देश पद्मिनी का यह भारत अधिक प्राण से है सम्मान
जोहर की ज्वाना में जलकर यहा नारियाँ रगती धान

यह लक्ष्मीबाई का भारत प्राण सुदाना खेल समान,
अतिम रक्त बिंदु दवर भी, रखे भारत का शान,
अमर नाम होता है जिसने समरभूमि में जीवन दारा ।
सोहा लेने चलो ! चीन न भारत के तप की ललबारा ॥

स्वतन्त्रता के पन्नाहू हाते वारा चीन आग्रहण ऐसा ध्यानमग्न था,
जिसने राष्ट्र की सुप्त सोमा रक्षा की भावना को गामत किया । गीतकारों ने
उा महान नारिषा का स्मरण किया, जिन्होंने प्राणोत्सग का खेल के समान
मममा था । उहीं वीर पद्मिनी एवं लक्ष्मीबाई का यह भारत है । यहाँ
की नारिषा की वीरता पुण्या को भी बलिदान-हनु समर्पित करने लगी ।
भारत की नारिषा जब इतना दार हैं तो उही नारिषा के संपूत कितने वीर
होंगे वार प्रसविनी माँ शिशु को पालन में ही वीरता का पाठ पढ़ाती है और
अपने तप त्याग एवं बलिदान का भारत के संपूतों में बलिदान की प्रेरणा
के लिए उरमाहू के भाव भरती है । अतिम रक्त बिंदु तब भी भारत का
शान बनाए रखने में नारी महयोग देती है । समरभूमि में बलिदान करने
वाली नारिषा अमर हो गई है । चीन से ठक्कर लेने के लिए सभी का उद्
घोषण दते हुए गीतकार सज्जन थे । चीन ने भारत की वर्षों की साधना और
तप को चुनौती दी थी । अतएव चीन से ताहा सना या युद्ध करना
आवश्यक था ।

केवल प्राणोत्सग नारी की कामना नहीं । नारी युद्ध प्राणण में अपनी
रण-चातुरी प्रदर्शित करती है । वह वीरमत्त एवं सुबुमार अर्धों वाली ही नहीं
तलवार से युद्ध करने वाला बलिष्ठ नारी भी है । सक्क काल में मुठ लेने में
तनवार भी चलाती है—

माँ दुगा का देश, यहाँ नारिषा चलाती हैं तनवार ॥^१

माँ दुर्गा शक्ति स्वरूपिणी देवी के रूप में भारत में पूजी जाती है ।
नारी में भी उसी शक्ति स्वरूपा माँ की वीरता की भावना के भाव भर हैं ।
उगा शक्ति के कारण वह तलवार जैसा शस्त्र चलाने में समर्थ है । यद्यपि
यह युग तनवारों का युग नहीं है । परन्तु वह सबर जट तथा
एनम वम का युग है । जहाँ तलवारों की वीरता का कोई अर्थ नहीं ।
मनेर पत्तियों के सहार के लिए एक वम की बपा हा बरफी हाती है ।
तथापि कवि का आग्रह नारी जाति को जाति का स्वर देने का है । उस युग

भानुवार का मन्त्र था नारियो ने उसी शस्त्र को बनाया। इस युग में जिन शस्त्रों का प्रधानता है उनका प्रयोग भी आज की नारी साख रहा है। मानवता दानी राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित नारी सभी व्यक्तियों के दुःखों में दुःखी होती है। मानवमात्र की पीड़ा से भर आने वाला हृदय गीत का सजन करने में सहायक होता है—

जो सबके दुःख से भर आय उस आँखों का बिंदु बनूगी।

+ + + + +

जो मरघन की तपन घटाये उस घनका जन बिंदु बनूगी।

जा बाग पर राह बनाये

मैं ऐसे चरणों को पून

जो जन जन की पीर सुनाये

मैं उसकी सारी बन गूँज

जो सबकी पीड़ा दुलराये उसी गीत का छंद बनूगी ॥

काँटा पर राह बनाने वाला के साथ नारी भी कदम मिलाकर चलने की आत्मु है। मानव की पीड़ा से पीड़ित होने वाली नारी की उच्च भावना मानवतावाद का समर्थन करती है।

राष्ट्र की प्रगति के लिए राष्ट्र की एकता आवश्यक तत्त्व है। एकता भावना की ही राष्ट्र की है। जाति की हो और धर्म की हो। आपसी बम नस्य धुताकर ही नूतन राष्ट्र का निर्माण एक उसकी रक्षा संभव है। स्वतन्त्रता की प्रकाश किरण न जा पथ प्रशिक्षित किया है उसके आलोक में बमनस्म का विस्मृत कर राष्ट्र का नया निर्माण करने की प्रेरणा देने में सतत धीमती विद्यावती का गीत दृष्टव्य है—

नीच न जाय प्रकाश किरण खबरदार १

भूत जाओ आपस का बमनस्य दार

या डाना अंतर न सारे प्रतिहार

द्वेष और बर सब दुवाकर इस बार

दलपुत्र रचो एक नूतन ससार।

फिर न मिली यह तुम्हें मया की धार।

नीच न जाय प्रकाश किरण खबरदार ॥

भावधान करने वाली नारी युद्ध के पश्चात् शान्ति की कामना करती है। युग परिवर्तन नवयुवका व नवयुवतियों पर निभर करता है। उनकी उमर

१ २८ व विषयिका का प्रतिनिधि रचनाएँ कुसुम कुमारी सिन्हा पृ २१

२ २८ व विषयिका की प्रतिनिधि रचनाएँ विद्यावती कविता पृ ६१

उनका उत्साह उत्त्नामपूर्ण होता है। नारी का संदेश नई पीढ़ी के लिए—

मन मंदिर में सजो लगन का भूरत ^१
पर नहीं पढ़ाओ और नयन का पानी
युग बदल रहा है तुम्हें बदलना होगा
दे रही निमंत्रण तुम का नई जवानी
बस रहा युग वं शीश शांति का सेहरा।
गा रही घरा पर जग की सरणार्थ है ॥

प्राचीन सस्कृति को नारी विस्मृति के गहन गह्वर में नहीं डाल सकती।
धर्म के प्रति निष्ठा नारी का प्रबल अस्त्र है। पुनर्जन्म कम-बाड जानि मैं
विश्वास करने वाली नारी प्राचीन भारत की गौरव-गाथा गाकर राष्ट्र के
प्रति असीम श्रद्धा प्यार एवं विश्वास को अभिव्यक्त करती है—

है जहाँ धर्म है विजय वही।^२
यह मंत्र हमारे जीवन का ॥
हम कम पान वं जानी हैं,
कत्त या के बलिदानी हैं,
हम हर जन्मा में फल पात
अपने ही दान दिय धर्म का
है जहाँ धर्म है विजय वही।
यह मंत्र हमारे जीवन का ॥

गीतकार ने नारी उत्थान की कामना करते हुए विगत बीस नारियों
को भाव मुमनाजति अर्पित की है। राष्ट्रीय भावना का तीव्र आवग का
अंगणा देने में उन प्रतिदानी नारियों का समर्थन करते हुए—

माँ के नाडना दूध की कीमत अलग करा ^३
सिर पर कमरिया कपड़ों बांध भूमो मचनों,
माताओं ! बहना ॥ तुमचण्णी बना आज
महिषासुर के मर् का मर्न करन निबना,
चामुण्डा के गुणों को भाल अघूरी है

१ श्रेष्ठ कवियत्रिया की प्रतिनिधि रचनाएँ रच० श्याम सन्निव' पृ ७१

२ अष्ट कवियत्रिया की काव्य रचनाएँ, मुमित्रा कुमारी सिन्हा पृ ११५

३ चला सिपाही चलो डा० निबममन सिंह मुमन पृ ४६.

कानी व कर का खप्पर अब भी रीता है,
जो हास हुमस से बरण मौत को बरता है ।
वह राष्ट्र अमर हो जाता युग-युग जीता है ॥

राष्ट्र की रक्षाथ नवयुवक जब प्राणोत्सव कर देता है तो वह वीर
माँ के दूध की नाज रख नेता है । माँ के दूध की कीमत चुकाने के लिए नवयुवको
को प्रेरणा देने में तत्पर भीतवार सदश देता है भरण का । नारिया को दुर्गा
धष्णी बनने का उद्बोधन देता है । राष्ट्र का दुश्मन अथ राष्ट्र महिषासुर है
उसका दमन आवश्यक है । चामुण्डा के मुण्डा की मात्र की मप्रणता तब समाप्त
हागी जब दुश्मना के शीश उसकी माना में गूथ जायेंगे । राष्ट्र की अमरता युग
युग जावित रहेगी यदि राष्ट्रीय एकता सुन्ड हुई और राष्ट्र का रक्षाथ
नारिया का भी पूरा सहयोग मिता ता । वीरता की प्रताक दुगा माँ का
स्मरण राष्ट्रीय भावना को तीव्रता प्रदान करता है । पद्मिनी के जोहर की
गाथा नव युग में भी गाई जाती है । जब स्वतन्त्र भारत पर चीन ने आक्रमण
किया तो गीतकार सजग हो उठा—

चीन नहीं है नाम तुम्हारा^१
नाम पराई घरनी चीन
भूत न शब्द की समझता
तुम हो चीन तो हम प्राचीन

सत्ता व सन्देश यहाँ तो वीरा के हैं धरोहर भी ।

भीरा के हैं गीत यहाँ तो पद्मिनिया के जोहर भी ॥

राष्ट्रीय भावना का अभिव्यक्ति नाना रूपा में हुई हैं । स्वतन्त्र भारत
पुन दूसरे राष्ट्र की आधीनता में परराष्ट्र द्वारा शासित हो यह भारतीय
स्वीकार हा नहा कर सकत । इसकी स्वतन्त्रता को अधम बनाने के लिए
अनान की गौरव गायाए यात्राकार प्रेरणा देत हैं शत्रु स वधन की । राष्ट्र
का सामा वही ही एक इव भूमि पर भी जय राष्ट्र का अधिकार न हा ।
इसके लिए दुश्मना का जनवारत हुए भीती की गनी की वीरता का स्मरण
करत हुए—

मून गत्र का आत्र माँगता^२
फिर मैं हिन्दुस्तान है ।

१ चना मित्रानी चना भरत व्यास पृ ५७

२ यही मुशान दासिन पृ ८५

माँसी से लम्बी बाई ने,
दुश्मन को लनकारा ।

० ० ०

भारत-माँ का चीर हरण
क्या समझे तुम आसान है ?
बून शत्रु का मागता
फिर स हिंदुस्तान है ।

द्वीपनी का मरी समा म चीर-हरण करने का प्रयत्न किया गया था । परंतु यह विफल हुआ । इसी प्रकार भारत माँ के चीरहरण की तयारी शत्रु ने की है किंतु वह प्रयत्न असफल होगा । भारत की विजय निश्चित है । भारत अपराजेय है । भारत को हस्तगत करना आसान नहीं है ।

भारत की प्रत्येक नारी म साम्राज्य शक्ति स्वरूपा रणचण्डी एव कानी माँ निवास करती हैं । उसकी असीम शक्ति ही दुश्मना क छक्क छुना देती है । किंतु कानी दुश्मन अभी तक उस शक्ति स अपरिचित है । इसा कारण उहोने इस काली माँ के दश म घुसन की याजना बना है । परंतु भारत की सजग दुगा चीनी दुश्मना को लनवारती है—

माँ वह दा चीनी दुश्मन स भारत की दुगा जाग उठी है ?

नहीं नात क्या काना दु मन ।।

भारत म रणचण्णा बसती

नह्रा टरा धमका माघाग ।

भारत में कानी ह रहती ॥

स्वतंत्र भारत की नारा अजना नहीं रह गई है । उसकी विवगता अशक्तता का समय गया । जहाँ बट मूक पशु क समान सभी अत्याचारों को महन कर नेती थी । सुकुमार मात की नारी सहनशील तो अब भी हैं परंतु वक्त य क के प्रति जागरूक एव अधिकारा के प्रति सचेत है । भारतीय नारी की शक्ति भयाह समुद्र का तरह है । ज्वाला की विमारा प्रज्वलित रहती है शत्रु के लिए तो राष्ट्र समाज एव परिवार क लिए नारी कल्याणमयी गीतल एव सरासार है । सिंह की तरह निर्मोह वीर सपूता का पदा करन वाली नारी न समाज म अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है । राष्ट्र का स्वतंत्रता क लिए अपन वीर पुत्रों की भेंट हसन-भुसने दी है । राष्ट्र की रसाय पत्ति न अपन गुनाग

को माता ने अपन पुत्र की बहन न अपन भाई का रोनी चावन से टीका करके भारती उतारकर बीरता की प्रेरणा देत हुए सीमा पर भजा है। नारी शृंगार के योग्य ही नहीं है। वह युद्ध का शृंगार भी करती है—

हम न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं ।^१
 कोमल कोमल फूल नहीं हम ज्वाला है चिंगारी हैं ॥
 तुम कहते हो नयन कोरे हैं मतवारे हैं
 हम कहती हैं उन नयनों में भरे हुए अंगारे हैं,
 कौन हम न समझे हम सिन्धु की जलने वाला हैं ।
 हम न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं ॥

गातकारों ने चिर-परिचित जमर एव त्यागमयी मारियों का स्मरण करत हुए आधुनिक युग की नारी को उनका समकक्ष लाने का प्रयत्न किया है और कर रहे हैं—

हम न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं,^२
 हम शकुन्तला हैं सीता हैं हम भीसी की रानी हैं
 हम लक्ष्मी हैं कमला हैं दुर्गा और भवानी हैं ।
 वीर प्रताप शिवाजी से पुनो की जनन वाली है ।
 हमें न अबला समझे कोई हम भारत की नारी हैं ।

इस प्रकार हिन्दी-काव्य में नारी विभिन्न रूपों में चित्रित हुई है। राष्ट्रीय भावना युद्ध के समय राष्ट्र की रक्षा की प्रेरणा देती है जिससे बलिदान की भावना प्रमुख हो उठती है। शांति के समय राष्ट्र की उन्नति की प्रयासी बन निमाण की प्रेरणा देती है। राष्ट्र की गतिशाली एवं समृद्ध बनाने के लिए पुरुषों के साथ नारी का भी पूरा सहयोग आवश्यक है।

निष्कर्ष

प्राचीन युग की नारी और आज के युग की नारी उसका समाज ॥ स्थान महत्त्व तथा सहयोग आदि का सही विवरण देखने के पश्चात् हम उन परिस्थितियों से अवगत होते हैं जो युगानुसृत, नारी के उत्थान पतन में परिचित करानी हैं। प्राचीन युग में नारी का जो सम्मानपूर्ण स्थान था वह बर्तमान युग के समाप्त होने के साथ ही अथ पतन पराकाष्ठा का चहुँपता

१ गीतमाला ममार मदनम्याम पृ ७६

२ वही

गया। प्राचीन युग में आधुनिक युग तक नारी के विकास का क्रम उत्थान के पश्चात् पतन की ओर अग्रसर होता हुआ पुनः करवट लेकर उत्थान की ओर अग्रसर हो रहा है। उत्थान क्रमशः जघपतन के पश्चात् नारी को नवजागृति का संदेश देता है सन् अठारह सौ में। नवजागरण का सही अभियान प्रारम्भ हुआ था सन् ३६ में।

स्वतंत्र भारत की नारी नवचेतना और नवजागृति के स्वर पाकर नवस्फूर्तिमयी होगई। अधिकांश के प्रति एवं कृत्तय के प्रति सजग होगई। शिक्षा के उचित प्रभाव से आदर्श महिला आदर्श माँ एवं देश-कल्याण के प्रति सजा नारी समाज के सुधारने में सहयोगी एवं उपयोगी सिद्ध हुई है। स्त्रियाँ का कार्य क्षेत्र परिवार तक ही सीमित नहीं रह गया है। परिवार से बाहर समाज के कल्याण द्वारा जन-कल्याण की भावना से अनुप्राणित नारी राष्ट्र के उत्थान में भी पूर्ण सहयोग दे रही है। जीवन के प्रत्येक क्षण में नारी उत्प्रेरणा से सक्रिय सहयोग देकर कार्य सलग्न है। स्वतंत्रता में पूर्व की सभी कुरीतियों को समाप्त कर नई परम्परा बनाने में नई पीढ़ी सजग है। बाल विवाह, पर्दा-प्रथा, दहेज प्रथा नारी शिक्षा विधवा विवाह निषेध आदि कुप्रथाओं का बहिष्कार कर सभी देशों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर रही है। शान, शान, विमान एवं कला के क्षेत्र में भी नारी पूर्ण अधिकार में सहभाग देकर विशिष्ट स्थान प्राप्त कर रही है।

सातव्य यह है कि नारी का प्रवेश राजनीति, घम, शिक्षा एवं स.य.स.चासन आदि सभी क्षेत्रों में हो गया है। नारी ने भी पूर्ण स्वतंत्रता का सदुपयोग किया है। विकासक्रम इससे स्पष्ट है कि आज की नारी प्रत्येक क्षेत्र में पदापेक्ष ही नहीं कर रही है अपितु अपने परिश्रम से अपनी प्रतिभा से वह नारा जाति का नाम रोशन कर रही है। नारी आज किस पद के अयोग्य समझी जा सकती है? वह अड्डा डॉक्टर, जज, वकील, शिक्षिका, प्राध्यापिका इन्जिनियर, लखिका, कवयित्री, नम, सद्गृहिणी एवं समाज संरक्षिका सब कुछ है। भारत के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने वाली सब प्रथम नारी हैं इन्दिरा गांधी जो राष्ट्र हित की कामना से अभिभूत राष्ट्र की रक्षा में तत्पर एकता, सुरक्षा, शानि एवं नवनिर्माण का संकेत प्रत्येक भारतीय का दे रहा है। भारत की नारी का भविष्य उज्ज्वल है। राष्ट्र का भविष्य भी नारी के सहयोग से अति उज्ज्वल है। नारी मदद प्रगति-मार्ग पर अग्रसर होती रहेगी और नवनिर्माण में सक्रिय सहयोग देती रहेगी। आज की नारा ररेपेक्ट्र प्रानि सजग है और शानि में परिवार में ही नहीं बठी है। उसका सीमित तायरे

स्वतन्त्रता के साथ उन्मुक्त हो परम्परा से हटकर नये उन्मुक्त परिवेश में जीने की प्रेरणा दे रहे हैं ।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है,
 ध्यात भवन में टिक रहना,
 किन्तु पहुँचना उस सीमा तक ।
 जिसके आगे राह नहीं ॥

—प्रसाद

गीत का स्वरूप—

गीत की परम्परा भारत के लिए नवीन नहीं है। गीत-काव्य का विधान लोक-गीतों के रूप में मिलता है। जैन शा. साहित्य में भी गीत-काव्य को स्थान मिला। लोक गीतों की परम्परा मौखिक रूप से जन-कण्ठों में ही धन पती रही। सब प्रथम गीतों का प्रयोग नृत्य एवं संगीत के क्षेत्र में किया गया। यद्यपि ऋग्वेद का ऋचाएँ भा सस्वर पड़ी जाती थीं इस रूप में उन्हें ही गीत के उद्भव का स्रोत माना जाता है। किन्तु सामवेद की संगीतात्मक पत्तियों का भी गीत-काव्य को सना नहीं दी जा सकती। वस्तुन साहित्यिक गीतों की रचना का प्रारम्भ सबप्रथम ब्राह्मण या लोक भाषा में हुआ। अथर्वण के सिद्ध कवियों ने गीत-काव्य को भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। विभिन्न राग रागिणियों में अथ गीत इतिवृत्तात्मकता के स्थान पर भावानुभूतिभा की अभिव्यक्ति का अधिक प्रभावी रूप में करते लोग पड़ते हैं।

गीता की परम्परा दोमेद्र जयदेव, बिद्यापति एवं सूर आदि गीतकारों के द्वारा अलङ्कार रूप से पोषित होती रही हैं। आधुनिक युग में भारत-रसिक-द्वारा यह धारा विकसित हुई और पारम्परिक प्रभाव का महत्त्व ध्यावावानी कवियों ने इसे अमोघमुक्ती बनाने का सफल प्रयास किया। किन्तु प्रगतिवादी कवियों के द्वारा बौद्धिकता एवं सामाजिकता का समावेश कर न्यि जन से इसमें गीत-काव्य के सम्पूर्ण अंगण उपलब्ध नहीं होत। राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों में गीत के प्रमुख तत्वों की उपलब्धि इस युग में भी होती है। प्रयागवादी कवि गीतों की परम्परा से दूर होते जा रहे थे। परम्परा से अलग वे कवन प्रयोग में ही सीन थे। किन्तु राष्ट्रीय-भावना-पूर्ण गीता में यहाँ भा गुड साहित्यिक गीता का सृजन हुआ है। नई कविता एवं धनकविता के युग में भी हिन्दी की मधुर गीत-काव्य धारा का स्नान सूखा नहीं है। राष्ट्र पर आये सकल के समय एवता मुरदा एव बनितान की भावना गीता में उक्त होती है। प्रारम्भ में और अब तक गीतों का परम्परा का निर्वाह राष्ट्रीय

गीत के तत्त्व—

भारतीय एव पा चात्य विज्ञानो द्वारा दी गई परिमापाओं की परिधि में गीत ने निम्नविविध मुख्य तत्त्व प्राप्त होने हैं—

- १ तीव्र अनुभूति
- २ संगीतात्मकता
- ३ सरसता
- ४ अभिप्रेतता
- ५ भावों की अविनि
- ६ सरस प्रवाहमयी कोमलकांत पदावली
- ७ आत्माभि-योजना
- ८ मानवीय भावना का रंग
- ९ गति
- १० सहज स्फुरित उद्गार

उपप्लुत तत्त्वा से निर्मित पद्यमयी रचना गीत-काव्य कही जा सकती है। जब मानव का व्यक्तिगत सुख दुःख भावावस्था में संगीतमय होकर कोमलकांत पदावली के माध्यम से तीव्र अनुभूति के कारण भावों की अविनि लिए सक्षित आकार में अभि-युक्त होत हैं तो वह मानवीय रंग से भरपूर गतिमय हृदय के सहज स्फुरित उद्गार की अभि-योजना के कारण सरस एव ताल लय युक्त संगीतमय होत हैं। हृदय के ये उद्गार जो क्षिप्र गति से मानस मयन के कारण जिज्ञा पर नश्य करत लगत हैं और मानव स्वयमेव गुनगुनाने लगता है यह प्रक्रिया आत्मानुभूतिया की सच्ची एव सहज अभिव्यजना होती है। गीता में अस्वाभाविकता अथवा कृत्रिमता का स्थान नहीं होता। परिस्थितिबश जब गुन या दुःख का आवग धरम सीमा पर पहुँच जाता है तब मानव भावुकता में डूब बिना नहा रहता। फलतः तीव्र वचना कहल रस पूरा एव गीता के माध्यम से पूरा पड़ती है जो पाठा इन्द्राणी जीर विषाद में भरपूर हृदय का हित देने वाला कन्दन का सही प्रतिबिम्ब होता है। इस प्रकार गुन के आवेग में हृदय उत्तम उमाद मात्रकता और शान्ति का प्रतिबिम्ब मुखरित होता है। वस्तुतः तीव्र भावानुभूति गीत के आवश्यक तत्त्व के रूप में स्वीकार की जानी चाहिए। इस प्रकार भाव में गात रचना उतना सशक्तता से नहा हा सकता है। भावों की अविनि भी इस प्रकार भाव में सम्मिलित नहा जाना क्योंकि भावों की अभिव्यजना सामयिक आवेश का स्मरण करता है अतएव गात का आवार विस्तृत न होकर सक्षित होता है।

भावों की विस्तृतता गाता म नहीं पाइ जाता । गात भावों का अविवर्ति के कारण गतिमय होता है । सर्वोद्भूत भावों म उपयुक्त सनी तत्वा का समन्वय रहता है ।

गात काव्य का वर्गीकरण—

सम्पूर्ण गात-का प को मुख्यतः दो वर्गों म विभाजित किया जा सकता है । (१) लोक गीत (२) साहित्यिक गात । नाच गात मौलिक होते हैं । इनकी मौलिक परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहता है । धूम धूमकर मनुष्य इसकी प्रसिद्धि करते हैं ।

पाश्चात्य विज्ञाना मे गीता का विभाजन इस प्रकार किया है । (१) चतुष्टयपदी (Sonnet) (२) सम्बोधन गात (Ode) (३) शानगीत (Elegy) (४) व्यंग्यगीत (Satire) (५) विचारात्मक गीत (Reflective) (६) पत्र-गीत (Epistle) (७) दार्शनिक एवं विचारगमक गीत (Meditative and Philosophical Lyrics) (८) वर्णनात्मक गीत (Descriptive) (९) नाट्य गीत (Dramatic Lyric) (१०) बार गीत (Ballad) आदि ।

हिन्दी में इनके अनुकरण पर अनेक गीतों का रचना हुई है । सनिट चीन्हा मूर्तियों का भावात्मक एवं सन्निभ हाता है । प्राय गाकर पना जाता है । हिन्दी में सम्बोधन गीता का सजन भी हुआ है । प्रसाद के किरण सस्रत दीप पतक आँसू छाया बापू के प्रति, अथवार तथा निराशा के सन्तुष्ट के प्रति, मिश्रक और कोफानिका आदि प्रसिद्ध सम्बोधन गीत हैं । हिन्दी म लोक गीता की रचना भी पर्याप्त मात्रा म हुई है । मूर के गीतों में सपातमम क रूप म व्यंग्य-गात मिलत हैं । भारत-दु का 'देवी मुम्हारी काशी' एक सुन्दर व्यंग्य गीत है । मूर, तुलसी एवं कबीर आदि क गीतों म दार्शनिकता उपदेशात्मकता विचारात्मकता आदि के दशन होत हैं । बौद्ध साहित्य की धर्म-भाषाओं म वराग्य के प्रति विशेष प्रेम तथा उत्साह का परिचय प्राप्त होता है ।

मेरा प्रतिपाठ विषय बार गीत (Ballad) या देश मूर्ति सम्बन्धी गीतों एवं ही सीमित है । अतएव उपयुक्त विभाजन पर विस्तृत चर्चा न करके उनका परिचयात्मक विवरण ही प्रस्तुत किया है ।

गीत का शिल्प विधान—

(१) भाव—गीत म भावातिरक का आधिक्य रहता है । संगीत भावातिरक का माध्यम है । भाव गीत का धारमा है । मानव स्वभावतः एक कल्पनागाल प्राणी है जो कल्पना के अतिरिक्त जीवन और जगत् से विभिन्न

रूपों में अनेक अनुभूतियाँ प्राप्त करता है जिनमें उसका भाव-लोक समझ आता रहता है। नाना विषयों के बाध का विधान होने पर ही उनसे सम्बन्ध रखने वाली छा की जनकरूपता के अनुसार अनुभूति के जो भिन्न भिन्न योग सगठित होते हैं वे भाव या मनोविकार कहलाते हैं।^१ 'मनुष्य के दृश्य में बाह्य जगत की सर्वनाम्ना के कारण अनेक विकार उठते हैं जो परस्पर भिन्नकर 'भाव की सत्ता प्राप्त करते हैं।^२ इस प्रकार भाव का सम्बन्ध दृश्य या अंतरात्मा से है। हृदय की समस्त रागात्मक वृत्तियाँ उद्वुद्ध होकर जब सज्ज रूप में बाहर निकलने का याकून होने लगती हैं तो तीन की सृष्टि होती है। मानवीय सर्वनाम्ना का उत्कृष्ट रूप मान है। जहाँ भाव पंचतीय भ्रम की भाँति तीव्र भक्ति से उमड़कर गीता के रूप में प्रवाहित होता है।

भावनाओं की स्थिति प्रत्येक मानव के हृदय में सज्ज रूप से होती है किन्तु उसका अभिव्यक्ति सभी के वश की बात नहीं। जिसकी सर्वज्ञ शक्ति जितनी तीव्र होती है वह उतने ही घने रूप में मुख एवं दुःख का अनुभव करता है। जब बढ़ी तीव्र भावानुभूति याता के रूप में मानव के सम्मुख आती है तो मनुष्य के लिए आनन्ददायी एवं रसास्वादन की वस्तु हो जाता है। भारतीय विचारकों ने भावों का वर्गीकरण दो रूपों में किया है—

(१) स्थायी भाव (२) संचारी या अभिचारी भाव।

स्थायी भावों की सख्या नौ और संचारी भावों की संख्या सामान्य रूप में तनीस माना गई है।

स्थायी भाव प्रत्येक मनुष्य में मूलभावस्था में रहते हैं। विभिन्न सांख्यिक विद्याओं का यह भाव जाग्रत होत हैं और रसास्वादन कराते हैं। वे सब अनुभूतियाँ जिन्हें मानव अनुभूत करता है भावों का आनन्दजनक होती हैं। परिस्थिति विनाश में भाव विक्षेप जाग्रत होना है और अस्थायी भावों की पृष्टि में संचारी भाव सहयोग देते हैं। संचारी भावों की अवस्थिति भौतिक या अस्थायी होता है। चूँकि भावों की अभिव्यक्ति रसास्वादन में सहायक होती है। अतः भाव और रस का घनिष्ठ सम्बन्ध माना जाना चाहिए। नौ रसों की रूपरेखा या उसका विधान भावों की नौ की संख्या के समान है (१) शृंगार (२) हास्य (३) वरुण (४) रोद (५) वीर

१ 'चित्तानुराग आ रामचन्द्र गुकन भाव या मनोविकार' रस

२ जावन के नव और काव्य के मिद्वान आ न मानारारण मुषांगु

(६) मयानक (७) वीमत्स (८) अदभुत, और (९) शान्त ।

हिंदी गीत काय म शृंगार करण हास्य एव शांत रस की प्रधानता पाई जाती है । गीत की कोमलकांत पदावली के लिए उपयुक्त रस की योजना की जा सकती है । किंतु राष्ट्र भक्तिपूर्ण गीतों के लिए वीर भाव एव वीर रस होना चाहिए । सुम हृदय की जागृति की प्रेरणा देने के लिए वीर भावा की प्रधानता वाले गीतों की आवश्यकता है । राष्ट्र पर आये संकट को दूर करने के लिए तथा दुश्मनों को समाप्त करने युद्ध की विभा पिका के दृश्यांकन के लिए रौद्र, मयानक एव वीमत्स भाव और रस स रिपूण गीता की रचना आवश्यक है । हिंसा का दमन करने के लिए शांत भाव की अपेक्षा की जा सकती है । राष्ट्र प्रेम का व्यक्त करने के लिए शृंगार एव राष्ट्र के दलित-वर्ग को ऊंचा उठान के लिए करुण रस पूर्ण गीतों की महत्ता भी स्वीकार की जानी चाहिए ।

अस्तु हिन्दी गीता की रचना सभी प्रकार के भावों को लेकर हुई है और होती रहेगी । राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों की सृष्टि भी विभिन्न भावों एव रसों को लेकर हुई है । प्रधानता वीर भाव एव वीर रसपूर्ण गीतों की मिलती है ।

आकार—गीत म पद विन्यास एव चरणों की समुचित योजना निश्चित नियम क अनुसार होनी है । सबसे प्रथम एक पंक्ति की रचना जिसे टेक कहते हैं गीत को प्रारम्भ करती है । तत्पश्चात् प्रत्येक चरण की तुल्य अगल चरण से मेल खाती हुई होती है । टेक इन चरणों से छोटी होती है । परंतु आधुनिक युग म इस निश्चित पद विन्यास को इतना महत्व नहीं दिया गया है । टेक की पंक्ति छोटी या बड़ी भी हो सकती है । कहीं पहले एव दूसरे चरण की तुल्य मिलती है कभी दूसरे और चौथे की तुल्य मिलती है तो कभी पहल दूसरे तीसरे की तुल्य मिलाकर टेक की पंक्ति की आवृत्ति होती है । कभी पहल दूसरे और चौथे चरण की तुल्य मिलती है तीसरे चरण की तुल्य नहीं मिलती । कुल मिलाकर इन सभी स्थितियों में भावों की अविधि का ही ध्यान रखा जाना है । गीतों म भावों की अभिव्यक्ति म बाधा नहीं है । सत्य एव तुल्यबदी से पहल भावों का अनुपासन मये गीतकारों ने भी माना है । आधुनिक युग म गीतों की रचना नास्त्यीय राग रागिनियों के आधार पर ही नहीं हुई है अपितु रुचिर एव लोकप्रिय धुनों का आधार भी ग्रहण किया गया है । पार्श्वस्थ गीतों का प्रभाव भी इन गीतों की रचना पर पर्याप्त रूप म पड़ा है । कुन मिनाकर गीतकार का आप्रह मधुर एव वरुणप्रिय धुना क लिए रखा है । अतएव संगीत का मिना-जुला प्रभाव,

नई धुनों के साथ गीता में व्याप्त रहा है। टेक का आवृत्ति भावों की सहितकृता य उनकी अविवक्ति के लिए होती है। एक गीत में एक ही भाव प्रधान होता है। प्रत्येक गीत अपना अलग अस्तित्व लिए अपने में पूरा होता है। गीत में टेक की लम्बाई धरण की लम्बाई से भी बड़ा होता है तो कभी छोटी भी होती है।

बिम्ब-विधान—

सब प्रथम बिम्ब के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वान् एजरा पाउण्ड व विचारों का उल्लेख किया जा सकता है। आचार्य शुक्ल ने भी इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये। डा. नगेन्द्र ने तो बिम्ब पर अलग से अपना मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। सुप्रसिद्ध अग्रज आलोचक सी० डे० नविस ने बिम्ब पर विचार प्रकट करते हुए काव्य विकास की प्रक्रिया के साथ बिम्बों को अभिन्न रूप से सम्बद्ध बताया। वस्तुतः काव्य एक बिम्ब का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि बिम्ब के अभाव में प्राणवान काव्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

जितने सशक्त बिम्बों का समावेश काव्य में होगा वह काव्य उतना ही समर्थ एक प्राणवान होगा। बिम्ब कल्पना निमित्त होते हैं। जिस कवि की कल्पना शक्ति जितनी प्रखर होगी उसके बिम्ब उतने ही समर्थ होंगे। कवि की दृष्टि जितनी व्यापक एक भूमातिसूत्र रूप में भावों को परखने में समर्थ होगी उसके बिम्बों का श्रेष्ठ उतना ही विशाल, तीव्र तथा समृद्ध होगा। सीमित परिधि में बिम्बों की संख्या भी सीमित होगी। कवि की तीव्र दृष्टि उपयुक्त बिम्ब रचना में समर्थ होती है।

बिम्ब का शाब्दिक अर्थ है—प्रतिमा आवृत्ति अथवा रूप आदि।

पूर्व अनुभूतियों का प्रभाव के रूप में सचित ये भूत रूप या मानस प्रतिमाएँ ही बिम्ब कही जा सकती हैं तथा इन्हीं के माध्यम से हमारे मस्तिष्क की अनेक शक्तियाँ—सुस्मृत स्मृति और कल्पना—अपना कार्य संपादित करती हैं।^१ अपने सरलतम रूप में यह (बिम्ब) शब्दों के माध्यम से निमित्त एक चित्र है।^२ काव्य के क्षेत्र में गीतकार भी बहुत से विषयों का वगण इन बिम्बों के माध्यम में करते हैं। वह एक शब्द का प्रयोग करते हैं जिससे उमक विषय का वसा ही बिम्ब पाठक के मस्तिष्क में प्रतिबिम्बित हो सक।

१. माइन ए. पूरान साइकाना था बी० एन० झा पृ० ३२

२. पाश्चात्य डमर सी डी नविस पृ १८

इस प्रकार विम्ब योजना व माध्यम से गीतकार की अनुभूति अधिक सजग एवं क्षिप्र गति से पाठक व मन तक प्रेषित होती है। वाक्यात्मक विम्ब एक ऐसा गल्प चित्र है, जो 'भाव' या 'संभव' से अनुप्राणित होता है।"

मनुष्य स्वभावतः घटना और वस्तु का विम्ब रूप में ही ग्रहण करता है और उसी रूप को विम्ब के माध्यम से सजीव से सजीव रूप में उपस्थित करता है। दृश्य में दृष्टिगत होने वाली छायावृत्ति या प्रतिछाया की भाँति ही सत्य का प्रतिविम्ब वाक्य में विम्बित होता है। जो देखा जा चुका है उसी का प्रतिरूप 'विम्ब' कहलाता है। किंतु वाक्यगत विम्ब दृश्य की प्रतिछाया से भिन्न प्रकार का होता है। कारण कवि द्वारा निर्मित विम्ब साधारण अनुभूति मात्र न होकर संवेदना का पुट लिए हुए होता है। वह कवि की प्रतिभा व इन्द्रियानुभूति का समन्वित रूप होता है जो दृश्य वाली छायावृत्ति से अधिक सजग चेतन एवं सुन्दर होता है।

गीता में तीव्र अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है इस कारण गाँवों के विम्ब भी अधिक प्राणवान् होने हैं। कवि की सूक्ष्म एवं तीव्र अंतर्दृष्टि सब ओर से जानाजान करता है। दृश्य मात्र भाववृत्ति विम्बित करने में समर्थ है परन्तु वाक्यगत विम्ब में स्वादेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय और श्रवणेन्द्रिय की अनुभूति भी उतनी ही सजगता से विम्बित होती है, जितना मानव अनुभूत करता है।

कवि जगत् की प्रत्येक वस्तु के माय सम्बन्ध जानकर उसका वाणी का नव परिधान पहनाकर उसका सदा-सर्वदा उज्ज्वल व निरंतर हुआ रूप विम्बित करता है। कवि का सशुद्ध विम्ब नाना प्रकार के भावों की उत्पत्ति में सहायक होता है। कवि मानव मन की समस्त वृत्तियों का विभिन्न अग्रस्तुतों के सहार विम्बित करता है। साधारण मानव जिसमें रूप न नहीं दृश्यता कवि अपनी प्रतिभा से उसमें सजीवता लाकर उसके सम्मुख आये वस्तुओं के सहारे स्पन्दनशील बनाकर प्रस्तुत करता है। कवि अपनी कल्पना के सहार भूत एवं वस्तुमान का चित्रित करता हुआ अविष्य की घटनाएँ भी विम्बित कर देता है। इससे अतिरिक्त प्राचीन घटनाएँ एवं आख्यानों को अग्रस्तुत के माध्यम से वर्तमान में भी चित्रित करता है। कवि अपने अपनी कल्पना से रंगारंग और रमा के माध्यम से चित्रों से सजीव करता है। गीतकार शब्दों की रंगारंग से अपने विम्बों का निर्माण करता है। श्री रामदत्त मिश्र ने विम्ब का वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है—

(क) दृश्य विम्ब (ख) वस्तु विम्ब (ग) भाव विम्ब (घ) अलङ्कार विम्ब (ङ) सादृश्य विम्ब (च) विवृत विम्ब ।^१

डा० हरद्वाराजीजी गमा न का य सौन्य क लिए पाँच प्रकार क विम्बों का उल्लेख किया है—

(१) प्रतिविम्बात्मक प्रतिभाए (२) भावावत् प्रतिभाए (३) प्रातिभासिक प्रतिभाए (४) सञ्ची प्रतिभाए (५) मृजनात्मक प्रतिभाए ।^२

किस प्रकार विभिन्न रूपा म विम्बा का वर्गीकृत करन का प्रयास किया गया है। हमारा उद्देश्य इन वर्गीकृत विम्बा का श्रीचिन्त्य सिद्ध करना या विवेचन की समीक्षा करना नहीं है। काव्य म कितन ही प्रकार के विम्बों का समावेश हुआ है, यह विस्तृत विषय है। गीतकाव्य म विम्बों का समावेश हुआ है क्योंकि इससे पूर्व ही हमने का य एक विम्ब का घनिष्ठ सम्बन्ध दृष्टिगत किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल न विम्ब विधान (रूप विधान) को तीन रूपों म विभक्त किया है।

(१) प्रत्यक्ष रूप विधान (२) स्मृति रूप विधान (३) कल्पित रूप विधान ।^३

शुक्लजी का मान्यता है कि इन तीनों प्रकार क रूप विधानों म भावों की इस रूप म जागृत करन की शक्ति हाती है कि वे रसराटि म आ सकें ।^४ पहल दो प्रकार क रूप विधानों द्वारा जागरित अनुभूति विविध दशाओं म हो रसानुभूति की कोटि म आ पाती है ।^५

आधुनिक युग क विभिन्न वादों की भूमि म गीता ने जन्म लिया है। नये गीतकार वक्त मान जीवन की विभिन्न मना साम्रा एव विषमताओं का चित्रण करत रहे हैं अतएव उनकी कल्पना कल्पना न विम्बों का चित्रण भी सहजता से किया है। विम्बा की वास्तविक साधकता भाव को आलोचित करने वस्तु को प्रभावपूर्ण ढंग से उद्घाटित करन तथा वस्तु के साथ पूर्णतः अपना सामन्तस्य बिठा लेने म है न कि अनावश्यक नवीनता उत्पन्न करने

१ काव्य में अप्रस्तुत याचना रामचंद्रिनि मिथ पृ० ८१

२ समानाचर जून १९५८ पृ० १८

३ चिन्तामणि प्रथम भाग डा० रामचन्द्र शुक्ल पृ० ०

४ वही पृ० १३०

५ वही पृ० १३

उनकी भीड़ खड़ी कराय अथवा मनोवैज्ञानिक उपायों द्वारा उनमें समत्वार्थ की सृष्टि करने में है ।^१

राष्ट्रीय भावना-युक्त गीतों का विषय विधान पौराणिक घटनाओं के अधिक निकट है । राष्ट्र की संस्कृति पर गौरव राष्ट्रोत्थान की चेतना राष्ट्रों द्वारा की गई गुणगान देश की प्रवृत्ति से प्रेम मुरझा के लिए उद्बोधन और बलिदान आदि भावनाओं के गीतों में प्रयुक्त ऐतिहासिक तथ्यों के सक्षम में पुनर्जीवित करने के लिए तत्कालीन घटनाओं पर या प्राचीन साहित्याना पर निर्भर रहना होता है । अतएव युगानुरूप विषय विधान परिस्थिति विशेष में हुआ है । बीसी की रानी लक्ष्मी बाई सुभाषचंद्र बोस या महात्मा गांधी का नाम गीत में आते ही उनका एक अस्पष्ट चित्र उपस्थित हो जाता है । प्रवृत्ति प्रदत्त विषय अधिन नसर्गिक एवं सशक्त रूप में अंकित हुए हैं । राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों के विषय भासित एवं वासनायुक्त नहीं हैं अतएव अधिक सशक्त एवं स्पष्ट नहीं हैं ।

मानव की मनोवृत्ति सहज ही सौंदर्य की ओर आकर्षित होती है और उसमें रुचि लेती है । देशभक्तिपूर्ण गीतों में निर्माण का सौंदर्य होता है युगीन विषयमत्ताओं एवं दयनीय परिस्थितियों का चित्रण होता है सामाजिक विभ्रतताओं का चित्र होता है समस्याओं का चित्रण होता है । मानवीयताओं को बाह्य रूप सौंदर्य को ऐसे गीतों में स्थान नहीं । श्रुती जटिलताओं विपरीत एक असंतुष्टि से पूर्ण भावों की अभिव्यक्ति वाले गीतों में सबसे अधिक अभिव्यक्ति एवं अस्पष्ट क्षीण विषय के दर्शन होते हैं । संस्कृति पर गौरव करने वाले गीतों के विषय अपेक्षाकृत अधिक सजावट एवं स्पष्ट देना जा सकते हैं ।

प्रतीक विधान—

विषय अपेक्षाकृत अधिक स्वच्छंद (आविर्द्वेगी) और नाना ध्येय ध्येयक होते हैं जबकि 'प्रतीक' नियत और अचूक रूप से एकाध ध्येयक होते हैं ।^२ श्री रामचंद्र वर्मा ने प्रामाणिक (शब्द) कोष में प्रतीक शब्द के अर्थ दिए हैं—चिह्न सहाय निष्ठा आदि । जैसे प्रत्येक राष्ट्र की ध्वजा पर उसका चिह्न अंकित होता है । समाज के विभिन्न वर्गों के परस्पर विभिन्नता लिए हुए चिह्न विशेष होते हैं, जिनका कारण परिचय प्राप्त करने

१ नया हिंदी काव्य डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ० ३४६

२ वस्तुता और छायावाद वेदरनाथमिह ॥ ६३

म सुविधा हाती है। इस प्रकार गौरव सूचक कोई आकृति बिना रंग अथवा चिह्न भी प्रतीक कहे जा सकते हैं यथा जहाज की लाट तिरंगा पताका आदि को देखकर ही इन वस्तुओं को भारत राष्ट्र का प्रतीक मान लिया जाता है। य प्रतीक किसी अन्य राष्ट्र के नहीं हो सकते। अन्य राष्ट्र का प्रतीक भारत से सवथा भिन्न हूँ। डाक टिकट पर व्यक्ति विशेष की आकृति, देश विशेष की प्रतीक है। मुद्राओं पर व्यक्ति किसी भा प्रकार की छाप देश विशेष की ओर इंगित करती है। भारत की मुद्रा अमरिका की मुद्रा नहीं हो सकती। ऐसा प्रकार भाषा का प्रत्येक शब्द प्रतीक रूप में है। हमारे यहाँ पृथ्वी शब्द से जो अर्थ ध्वनित होता है आवश्यक नहीं कि दूसरे देश भी उस उसी नाम से ही सम्बाधित करें। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र का भाषा का अपने अर्थ या प्रतीक होते हैं। परन्तु प्रत्येक प्रचलित शब्द को साहित्य में प्रतीक नहीं माना जा सकता। प्रतीक संक्षेप अथवा योजना द्वारा अर्थ ध्वनित करता है। अभिधेय अर्थ के लिए प्रतीक की आवश्यकता नहीं। प्रतीक मुख्य रूप से सूक्ष्म भाषा को स्थूल रूप में प्रस्तुत करने में सहायक होना है। यो तो प्रतीक शब्द अत्यधिक व्यापक है और उसका प्रयोग तब शास्त्र विधान गणित मनोविज्ञान व्यापार सभी में बहुनता से होता है परन्तु यहाँ हमारा तात्पर्य केवल उन्हीं प्रतीकों से है ^१ डा० रामअवध द्विवेदी के शब्दों में जिन्हें हम अनुभव अथवा अनुभूति की अवस्था विशेष का शाब्दिक प्रतिरूप कह सकते हैं।^२

प्रतीकों का निम्नांकित तीन रूपा में विभाजित किया जा सकता है
(१) परम्परागत प्रतीक (२) व्यक्तिगत प्रतीक (३) प्राकृतिक प्रतीक।

परम्परागत प्रतीक भूतकाल से चलते आ रहे हैं। इनके अर्थ प्रयोग साहित्य से घिसे नहीं हैं बल्कि नहीं हैं बल्कि उन्हीं पुरानी विशेषताओं या अर्थ विचारों को लेकर जाति है। सत्ता की रचनाओं में ऐसे प्रतीक उपन्यास होते हैं। राष्ट्र द्वारा राष्ट्र के लिए स्वीकृत प्रतीक मन्दिर एवं गिरिजाधरा पर अंकित प्रतीक सार्वभौमिक हान के कारण अधिक सरल एवं प्रासंगिक है। व्यक्तिगत प्रतीक के मध्य में कवि का स्वयं की अनुभूति के प्रतीक बनाने की स्वतन्त्रता होना है। कवि की प्रत्यक्ष कल्पना शक्ति पर ऐसे प्रतीकों की रचना होता है। प्राकृतिक प्रतीकों की मृष्टि प्राकृतिक उपकरणों को

१ नया हिन्दी-काल डा शिवकुमार मिश्र पृ ३६६

२ पत्रिका भाषा-रचना बुनाई १९५७ वाक्य में प्रतीक विधान पृ २५

प्रतीकत्व प्रदान करके होती है। इस प्रकार की व्यवस्था में नदी पर्वत सुमन इत्यादि का एक साकेतिक सुंदर भ्रम रहता है। इस कोटि के प्रतीक सर्वाधिक ग्राह्य होते हैं।

राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों में प्रतीकों का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है। परम्परागत प्रतीकों के माध्यम से गीतों में ऐतिहासिक सत्य एवं राष्ट्रीय महत्व को प्रदर्शित किया गया है।

भाषा—

आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा मानव में सृष्टि रूप से पाई जाती है। भाव भावना एवं विचार को अभिव्यक्त करने का माध्यम है—भाषा। अपने भावा को दूसर तक पहुँचाने की इच्छा ही सगत् भाषा को जन्म देती है। यही काव्य की प्रेरणीयता है। भाषा को शब्दाकार रूप में अभिव्यजित करना भाषा का ही कार्य है। विचार एवं भाव भाषा का परिधान पहनकर मूर्तिमान हो समाज के सम्मुख उपस्थित होते हैं। भाषा की श्रृष्टता शब्दों के उचित चयन पर ही निर्भर करती है। उचित शब्द चयन 'अद-मस्कार, शान्' प्रयोग से भाषा का सौन्दर्य द्विगुणित होता है। भाषा द्वारा ही भाव एवं विचार स्यामित्व पाते हैं। उत्कृष्ट कोटि के काव्य ग्रंथों की भाषा भाव की अनुगामिनी रही है। भाषा का सुसंस्कृत श्रौत एवं परिष्कृत रूप ही भारतीय साहित्य की शक्ति प्रदान करता है। प्रत्येक युग में भाषा का रूप परिवर्तित होता रहा है। भाषा का निर्माण करने में साहित्यकार का योगदान कम नहीं होता। भाषा के द्वारा ही भाषा को तीव्रता तथा प्रेरणीयता प्राप्त होती है। अतः भाषा का निर्दोष होना आवश्यक है। व्याकरण की दृष्टि से भाषा सही हो त्रुटिपूर्ण नहीं, अश्लीलत्व दोष से मुक्त हो, यही भाषा काव्य के लिए स्वीकणीय होती है।

गीत-काव्य की भाषा—

गीत-काव्य का उद्भव विकास तथा उसकी परम्परा पर इससे पूर्व विचार किया जा चुका है अतएव पुनरावृत्ति न करके ब्रमश युगानुरूप गीतों की भाषा का विवरण प्रस्तुत करना ही पर्याप्त होगा। यदि सामवेद की ऋचाओं से गीत काव्य का उद्भव स्वीकार करें तो निश्चय ही उस काव्य की भाषा संस्कृत का श्रेष्ठ स्वल्प लिए परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप में व्यक्त हुई है। कालिदास के "मानविश्वामित्रम्" की नायिका नल्य गान प्रतिभांगिता में "तुष्पदिवा" गाती है। उपयुक्त गीतों की भाषा प्राकृत या उत्तरापीठ लोक भाषा है। प्रारम्भ में जन-माधारण तक ही गीत का प्रचलन

था। परन्तु भारतीय साहित्य में गीत काय को स्थान देने का श्रेय अपभ्रंश के सिद्ध कवियों को है। उन्होंने अंगीकृत होने पर भी जनसाधारण की बोतचाल की भाषा को अपनाया। सिद्ध कवियों की गीतियाँ चर्मा पत्थों के नाम से प्रसिद्ध हैं। राग रागिनियों में बड़े-बड़े चर्मा-पद अपभ्रंश की बोतचाल की भाषा में हैं। चूँकि गीत का सीधा सम्बन्ध मानव के हृदय से उसकी रागात्मक वृत्ति से होना है इसलिए गीतों का प्रचलित जन भाषा के रूप में सृजन अधिक सफल होता है।

अपभ्रंश के कवियों से प्रभावित गीतकार भागवतकार जैमिन्द्र एवं जयदेव ने इस परम्परा को निभाया और सस्कृत में पद्य रचना (या गीतकाव्य की रचना) की। भागवतकार ने अपने श्रवण के दशम-स्कन्ध में गोपियाँ के विरह प्रसंग में गीत काय का सृजन किया। श्री जैमिन्द्र ने दशावतार चरित में कृष्णवतार प्रसंग में एक सरस गीत की रचना की जिसमें टेक का प्रयोग भी हुआ। तत्पश्चात् जयदेव का गीत गोविन्द कोमल मधुर शब्दावली एवं संगीतात्मकता के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। इनके पश्चात् सस्कृत की काव्य-माधुरी को लोकभाषा मधिली या हिंदी में प्रवाहित करने का श्रेय विद्यापति को है। संगीत के स्वरों का विद्यापति को पूर्ण ज्ञान था। लोक भाषा मधिली में गीत रचना करने के लिए उन्होंने कोमल एवं मधुर वण योजनापूर्ण भाषा का विधान किया। भाव संगीत एवं भाषा का सम्बन्ध उनके गीतों का लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। मधिली गीतों की परम्परा १५वीं शती से लेकर बीसवीं शताब्दी तक अक्षुण्ण रूप में प्रवाहित होती रही। मधिली के सरस गीतों का प्रचार यापकता के साथ हुआ। बंगाल बिहार जैसा आसाम आदि प्रदेशों में भी मधिली लोकगीतों का स्वर प्रवाहित हुआ। श्री चतुर्थ के अनुयायी वृत्तचरित्र में जाये तो इन गीतों का प्रचार ब्रज प्रदेश में भी हुआ। हिन्दी के शृंगार भक्त कवियों के पद्य ब्रजभाषा में रच गये। मूर के गीत ब्रजभाषा में सृजित हुए। ब्रजभाषा का गान्धर्व एवं माधुर्य इन गीतों में स्पष्ट हुआ। स्वर भक्ति-युग के मान कवियों ने अशिखा उपदेशों की वल्लभा साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की मनीषता का रक्षण करने के कारण जिस भाषा को अपनाया उसमें मरसना सरसता एवं स्वाभाविकता का अभाव था।

बकीर की भाषा की कुछ विद्वानों ने संयुक्त भाषा कहा है। जन-जागरण का मञ्ज विहित ज्ञान के कारण इस युग के गीत या पद्य में भावों की तीव्रता को अवश्य ही विन्नु अपने प्रचलित भाषाओं के शब्दों का विद्युत् भाव उमम हो गया। जन-जागरण तक पहुँचाने के लिए बोतचाल

की भाषा व शब्दा को सत काय में स्थान दिया गया । तुलसी ने अवधी भाषा में गीता की रचना की ।

रीतिकाल भी गीत परम्परा में नये स्त्रोतों का प्रस्फुटन नहीं मिलता है। इस काल में नवानता की प्रति आकर्षण होने के कारण कविता खराब पड़ती है। नवीन रचना हुई। सुन्दरदास, मन्नदास, अक्षरधर, ध्रुवदास आदि रीति-काल के कवि हैं। भयिली कृष्ण भक्त और सत कवियों द्वारा गीत की धारा में गति संप्रवाहित होती रही।

आधुनिक युग में तो गीत धारा के सात अनन्त रूपों में प्रवाहित हुए। गीता का सृजन नये युग के नये परिवेश में नया भाषा व साथ हुआ। भारते दुःहरिश्चन्द्र न पूरवर्ती कवियों के अनुकरण पर ही कवित्त-संयुक्त में भक्ति-भावना पूर्ण पदा की रचना की। नवीनता का समावेश इस धारा में नहीं हुआ। छान्दावादी कवियों की धारा पाश्चात्य प्रभाव का लेकर प्रवहमान हुई। छान्दावादी गीतकारों का दृष्टिकोण वस्तु परक न होकर भाव-पूरक था। परम्परागत राधा-कृष्ण, एव राम सीता का आलम्बन छोड़कर व्यक्तिक भावानुभूतियों का प्रकाशन इस धारा के कवियों ने विशेष रूप से किया। गीतधारा के सभी सत्त्व तो इस धारा के गीतकारों के गीतों में उपलब्ध होने ही हैं साथ ही भाषा का माधुर्य एवं उसकी सरसता के भी दर्शन मिलते हैं। इस युग के कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी का परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप अपनाया। भाषा के इस दृष्टिकोण का कारण जन-साधारण की जीवनान की भाषा को अधिक सुसंस्कृत रूप में प्रस्तुत करना रहा है। इस युग के गीतकारों के गीतों का भाषागत दृष्टिकोण नये एवं परिमार्जित दृष्टिकोण का परिचय प्रस्तुत करता है। भाषा का सरल, सहज एवं स्वाभाविक रूप गीतकारों ने स्वीकार किया। भाषा का सस्कार नये माध्यम से वेष्टित होकर सम्पन्न हुआ। जन साधारण से साधा सम्बन्ध स्थापित करने की चिन्ता में प्रत्येक कवि ने अपनी रचना के भाषा को अपनाकर भाषा का सरलतम रूप प्रस्तुत करते हुए नया सस्कार दिया।

भाषा वा कृत्रिम आचरण न आचष्टित अस्पष्ट एव आलंकारिक रूप
इस युग के कवियों ने नहीं अपनाया। अत्यधिक स्पष्ट सीधी एवं अनलकृत
भाषा में गीतों की रचना करना ही गीतकार का प्रमुख ध्येय रहा। गीतों का
आस्वादन उसी स्पष्ट भाषा के द्वारा ही संभव होता है। केवल कम विशेष
की उच्च सस्कृत शोधित भाषा वगैरे विशेष का ही आस्वादन करने में समर्थ

होती है। जन-साधारण की भावभूमि से दूर गीतों की रचना करना इस युग के गीतकारों का उद्देश्य नहीं था।

आगे चलकर समाजपरक मायताओं के आधार पर भाषा सम्बन्धी आदर्शों का निरूपण प्रगतिवादी कवियों ने किया। भाव पक्ष को प्रगतिवादी कवियों ने मुख्य माना और भाषा पक्ष को गौण। भाषा को ध्यान में रखकर काव्य-सृजन नहीं हुआ अपितु भाषा एक विचारों को उचित ढंग से प्रस्तुत करने के लिए व्यवहृत भाषा का प्रयोग किया गया। प्रगतिवादी कवि किसी भी प्रकार की भाषा के प्रयोग को अवाञ्छनीय नहीं मानते। वस्तुतः काव्य का मुख्य उद्देश्य पाठकों को रसास्वादन कराना एक उसके अभिप्रेत अर्थ से अवगत कराना तथा गीतों में निहित सदेग एक उद्देश्य पाठकों तक सही रूप में पहुँचाना है। इस रूप में उसकी प्रेषणीयता का आधार सफल सबल तथा सरल भाषा का प्रयोग है। जन-साधारण का अधिक से अधिक प्रभावित कर अभिप्रेत अर्थ से अवगत कराना इस युग के गीतकारों का उद्देश्य रहा। भाषा का सबसे समृद्ध रूप जन-साधारण की बोलियाँ में निहित होता है ऐसी इस युग के कवियों की मायता थी। युग की परिस्थितियाँ समस्याएँ एक परिवर्तनों से अधिक से अधिक मात्रा में जन-साधारण को परिचित कराने के लिए सबल जन-बोली की भाषा में काव्य रचना आवश्यक थी। अतः इस युग के गीत-काव्य में कोमल एक मधुर शब्दों का समूह मात्र नहीं मिलता अपितु प्रतिक्रिया-स्वरूप कटु एक पक्ष वहाँ का विधान भी किया गया। साथ ही तरसम शब्द प्रधान और गम्भीर भाषा के रूप के अतिरिक्त ग्रामीण और साधारण ध्वनिचान के शब्दों का प्रयोग करके काव्य में आचरित्वता को भी सूचित किया गया। ऐसी भाषा वातावरण की सजीवता में अधिक आवश्यक रूप में आई। कहा-नही शब्दों की ताड़-भरोह तथा व्याकरण के नियमों की अवहेलना एक तरसम शब्द बहुलता के कारण भाषा अधिक बाधित बन गई।

इतना ही स्वीकार करना ही पड़ेगा कि चाहे छायावादी धारा के कवि हो या प्रगतिवादी अथवा प्रयोगवादी धारा के प्रवर्तक हों उन्होंने पुरानी भाषा का नए युग की भूमिका में अपर्याप्त मानकर नवीन शब्दों का सधान किया। धिमे-पिं अथहीन शब्दों के स्थान पर नए अर्थयुक्त शब्दों का स्थान दिया। पुराने शब्दों का नया संस्कार करके भाषा में ताजगी एक स्वस्थता लाने का अर्थ आधुनिक युग के कवियों का ही है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि ने सीमित परिधि का स्वाकार नष्ट किया बल्कि नए तायरो में भी प्रवेश दिया और विशाल क्षेत्र से शब्दों का चयन किया। विश्व का कोई

भी क्षेत्र उनकी दृष्टि से नहीं बच सका। मनाविवान विज्ञान दशन, समाज राजनीति ग्राम एवं शहर सभी स्थानों में प्रयुक्त शब्दावली का ग्रहण कर उन्होंने शब्द-कोष को समृद्ध किया। यद्यपि नये प्रयोगों में नये शब्दों के चमत्कार पूर्ण समावेश ने काव्य की भाषा का एक उच्च स्तर स्थापित नहीं किया। अग्नि नव के आक्षेपों में वधे कवियों ने शब्द-कोष को समृद्ध किया। 'हिंदी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों की खिचड़ी ने उस काव्यत्व से रहित करके ही सम्मुख आत दिया है।'^१

नवीन गीतकारों की भाषा भी सरलता, स्पष्टता तथा सीधपन का आक्षेप लिये हुए ही अपने दशन देती है। × × × जनपदीय और ग्रामीण शब्दों का बहुधा ही उत्पन्न हो जाने वाला सौंदर्य इनकी भाषा की भी विशेषता है। व्याकरण सम्बन्धी अनकानेव दोष भी इनकी भाषा में प्राप्त होता है जिसका प्रधान कारण समाज तथा लोक समिति के लिए की गई शब्दों की छाड़ मरोड़ है परन्तु इस प्रवृत्ति के सूचक कुछ कवि विशेष ही हैं सार गीतकार नहीं। कुल मिलाकर नई गीत कविता की भाषा आक्षेप और ग्राह्य है × × × इस गुण की भाषा काव्य सौंदर्य और वाक्योत्पत्ति की दृष्टि से अनेक ही पूर्वयुगीन भाषा से थोड़ा नही परन्तु जहाँ तक उसके फैलाव, प्रसार और समृद्धि का प्रश्न है वह किसी प्रकार भी कम नहीं जा सकती।^२

स्वतन्त्रता के पश्चात् मृजित राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों की भाषा मात्रपूर्ण है। जिसमें परंपरा-युक्त योजना की प्रधानता है। केवल रोमन्ता इन गीतों का उद्देश्य नहीं।

वर्ण-योजना—

भारतीय आचार्यों ने मुख्य रूप से निम्नावित तीन गुणों की भाष्यता की है—माधुर्य ओज और प्रसाद। भरतमुनि ने वाक्यांश के दस गुण माने हैं, किन्तु प्रमुख रूप से तीन ही गुण माने गये हैं।

आदर्श वर्ण-योजना के मानदण्ड—

काव्य रचना में वर्ण-योजना का बड़ा महत्व होता है। राष्ट्रीय दृष्टि से अभिव्यक्ति के इस तत्त्व का अन्तर्भाव वृत्तियों अनुशास तथा वर्ण वर्णना में हो जाना है। इसी ताना प्रसंगा का विवेचन करते समय अनेक

१ नया हिन्दी वाक्य डॉ० शिवकुमार मिश्र पृ. ३५७

२ यही पृ ३५८

ग्रन्थों ने वरुण याजना के गुण-दोषों का निर्यन्त्र किया है तथा काव्य में आदर्श वरुण योजना के कुछ मापदण्ड बनाये हैं। आचार्य कुतब ने वरुण विद्यासंस्कृता के प्रसंग में वरुण-याजना सम्बन्धी जो मानदण्ड निर्धारित किए हैं वे इस प्रकार हैं — वरुण याजना सदा प्रस्तुत विषय के अनुकूल होनी चाहिए। उसका प्रयोग केवल वरुण-साम्य के यसन मात्र के कारण होना चाहिए क्योंकि औचित्य के अभाव में प्रतिपाद्य का रूप विकृत हो जाता है। वरुण याजना में आग्रह की अति नही होना चाहिए और न उसमें अमुदर वरुणों का प्रयोग होना चाहिए। प्रसाद गुण की रक्षा वरुण-योजना का प्रथम उद्देश्य होना चाहिए। श्रुति पेशनता तथा प्रतिपाद्य की अनुकूलता वरुण योजना के सब प्रमुख गुण हैं।^१

१ माधुर्य गुण—

पदों की मधुरता जब निदग्धता या विचित्रता का आभास देता हुई रचना को सौंदर्य तथा कामनता प्रदान कर आनन्द का उद्भव करती है तब उसे माधुर्य गुण कहते हैं।^२ माधुर्य गुण के अभिव्यञ्जकों में विश्वनाथ ने जो वरुण दिए हैं उनमें ट ठ ड ढ को छोड़कर के स म सक क समा वरुण आ जात है जो अपने अपने वरुण के अत्यन्त वरुण से मिलकर श्रुति मधुर ध्वनि की सृष्टि किया करते हैं। उनके अतिरिक्त अ य वरुण से असंयुक्त रेफ और ल गार भी सम्मिलित हैं। ये वरुण वदभी रीति के निमित्त हैं अतः असंयुक्त या अत्यन्त समासवन्ती रचना तथा मधुर पद्य योजना के भी निमित्त^३ माने जा सकते हैं। माधुर्य वह गुण है जिसके द्वारा अतत्करण आनन्द स प्रवीभूत हो जाये।^४ इस गुण के उत्पन्न में ट ठ ड ढ को छोड़कर के से म' सक के वरुण ड म ए न म स युक्त वरुण ह्रस्व र और ए आदि का प्रयोग अधिक होता है। समास का प्रायः अभाव होता है अथवा अल्प समास के पद्य तथा कोमल और मधुर गानावली का व्यवहार किया जाना है।^५ इन सबसे माधुर्य गुण के उत्पन्न में सन्तुष्टता मिलती है। वरुण कटु वरुणों का प्रयोग बहुत ही विरल होता है। के वरुण च वरुण त वरुण और ए वरुण तथा पञ्चमाक्षरा की आश्रुति ही अविचलित की जाती है।

१ अन्नभाषा के कृष्ण मक्ति-काव्य में अभिव्यञ्जना शिल्प डा० सावित्री मिह्रा पृ ११५

२ साहित्यशास्त्र के सिद्धांत सराजिनो मिश्रा पृ ६३७

साहित्य-रसज्ञ विश्वनाथ पृ -०१

४ तुलसीदास का भाषा डा० श्वकीनन्तन पृ २६६

२ प्रसाद गुण—

प्रसाद गुण के सम्बन्ध में सम्मत न लिखा है— प्रसादोऽपि सवत्र विहित स्थिति^१ अर्थात् प्रसाद गुण सब रसा और रचनार्थ में विद्यमान रहता है। सामान्य रूप से प्रसाद गुण रीति का एकमात्र आधार माना गया है। प्रसाद गुण के द्वारा ही वाक्य के व्यवहारात्मक से उसका असौख्य अर्थ हृदयगम हो जाता है। सूखे इधन में आग जैसे शीघ्र जल उठनी है, वस हो जो गुण चित्त में गीत व्याप्त हो जाता है अर्थात् रचना का उद्बोध करा देता है वह प्रसाद गुण है। व्यवहारात्मक से अर्थ की प्रतीति बनाने वाले सरल और सुगम प्रसाद गुण के ध्येय हैं।^२ सरल समास रहित श्रुत पदावली उस भाषा की विशेषता होती है। उगम न तो मधुरावृत्ति की ममृता होती है और न परपावृत्ति की कटुता। भाव और अभिव्यञ्जना की स्वाभाविकता तथा अव्ययिता^३ स वृत्ति का प्रधान गुण है। सरल मुबोध और प्रति प्रवृत्ति शब्दों का प्रयोग इनका ध्येय होता है।^४

३ शीघ्र गुण—

शीघ्र गुण चित्त का स्फूर्ति प्रदान करनेवाला होता है। शीघ्र गुण वह गुण है जिसमें चित्त में स्फूर्ति आ जाय और मन में एक तेजस्विता का भाव भर जाय।^५ भाषा की योजना की दृष्टि से हमने उत्पत्ति के निम्न चारों सयुक्त वर्णों और ट, ठ, ड, ढ आदि वर्णों का अधिक प्रयोग तथा समानाधिक्य आदि सहायक होते हैं।

इस प्रकार माधुर्य, प्रसाद एवं शीघ्र गुणों के आधार पर सुकुमार कामन एवं परम बल की योजना की जाती है। सामान्यतः गीत के लिए सुकुमार बल योजना (माधुर्य गुण पूरित) का विधान विद्या गया है। माधुर्य गुण के कारण ही जयदेव एवं विद्यापति के गीत इतने लोकप्रिय हुए। प्रसाद गुण तो काम्य में सवत्र पाया जाता^६। सुकुमार एवं कोमल बल योजना माना के लिए उपयुक्त है किन्तु राष्ट्रीय भावनापूर्ण गीतों में वनिदान का प्रयोग देने वाले युद्ध सम्बन्धी प्रयोग-गीत आदि में शीघ्रगुण तब पर्याप्त का प्रधानता होती है। गीत में माधुर्य अवश्य नहीं रहना किन्तु

१ साहित्य शास्त्र के सिद्धान्त पृ ६३६

२ काव्य-रसग पृ ३१४

३ प्रजभाषा के दृष्टान्त-काव्य में अभिव्यञ्जना नियम पृ ११६

४ काव्य-रसग रामदहिन निध पृ ३१३

ऐसे गीता में ओज विद्यमान रहता है। सुरक्षा के लिए उद्बाधन देने वाले गीता में जब तक तलवार नहीं होगी गीत प्रेरणास्पद नहीं होगा। गीत के भाव पर वण-योजना निश्चित की जाती है। भावा की अव्यक्ति के लिए अनुकूल वण-योजना आवश्यक है। भाव-साम्य के आधार पर वणों का सामंजस्य भी आवश्यक है। एकता के लिए संगठन की आयाज भोजपूर्ण गीतों की रचना में सहयोग देती है। वीरभाव की अभिव्यक्ति के लिए प्रसाद गुण एक ओज गुण दोनों का होना आवश्यक है।

युद्ध-सम्बन्धी गीता में परंपरायु योजना उपनय होती है तो राष्ट्र निर्माण एवं विजय सम्बन्धी गीता में प्रसाद एवं माधुर्य गुण के कारण सुकुमार वण योजना का विधान भी देखने को मिलता है। अस्तु राष्ट्रीय भावना सम्बन्धी गीता में तीनों गुण माधुर्य, प्रसाद एवं ओज पाये जाते हैं। युद्ध-काल एवं शांति-काल में इनका वण विधान भावा के अनुरूप किया जाता है। द्वित्व वण योजना या संयुक्त वणों की आवृत्ति आधुनिक युग में युद्ध सम्बन्धी गीतों के लिए कोई आवश्यक नहीं है क्योंकि आधुनिक युग में पूर्व युगों की तरह विभिन्न अस्त्र शस्त्रों को लेकर युद्ध भूमि में वीरता दिखाने का अवसर तो प्राप्त होता नहीं है जहाँ तलवारें भान धरधो कृपाण आदि शस्त्रों का भण्डार सुनाई दे। शारीरिक वीरता का आधुनिक युद्ध में उसना महत्त्व नहीं है जितना बुद्धि चातुर्य एवं हृदय के उत्साह का। महाराणा प्रताप की वीरता की तुलना आधुनिक युग के पन्थ-टंक या सबर जट विमान चालक की वीरता से की जाय तो बहुत ही असमानता दृष्टिगोचर होगी। पहन हजारों व्यक्तियों का सहारा करने के लिए उनसे अलग भ्रमण युद्ध करना पड़ता था। आधुनिक युग के उत्तम विज्ञान ने नये अस्त्र शस्त्रों का निर्माण करके हजारों बर्षों की व्यक्तियों का सहारा करने के लिए एटम बम आदि बनाये हैं जिनके द्वारा बहुत कम समय में युद्ध भूमि में क्षय विनाश ही विनाश किया जा सकता है। युद्ध की वीरता बद्धक एवं मशीनगनों की प्रयानकता की धावाज में धुनभिन गर् है। जिनकी आधुनिक युद्ध शस्त्रों का प्रयोग होता है एवं उनका संचालन बुद्धि-चातुर्य के द्वारा कर सकते हैं वही वास्तव में वीर सैनिक हैं। शारीरिक शक्ति का महत्त्व इन युद्धों में नगण्य-सा रह गया है। यही कारण है कि ओजपूर्ण गीतों में भाव ऐसी स्वरा का संचालन नहीं मिलता जिनमें युद्ध के वाद्य की ध्वनि सम्मिलित हो तलवारों की ध्वनि सम्मिलित हो। राष्ट्रीय अभिमान के लिए एकता आवश्यक है और राष्ट्र की प्रगति के लिए निर्माण। इन भावनाओं की अभिव्यक्ति में मारवाट के दृश्य नहीं हैं। दृष्या-

नुरूप भावा का चित्र अंकित करने के लिए गीतकार युद्ध भूमि में नहीं जाता । जागृति चेतना, स्फूर्ति, सक्रियता एवं ललवार के स्वर राष्ट्रीय गीतों में मिलते हैं जिनमें प्रमाण एवं भोज दोनों ही गुणों की अभिव्यक्ति स्पष्ट देखी जा सकती है । वण योजना भी तदनुरूप पाई जाती है ।

छन्द विधान—

भावमय भाषा में जो स्वाभाविक गति आती है छन्द उसी का गहरी आधार है, छन्द भाषा को भावा के अनुकूल बनाकर उसमें एक विशेष ग्राह्यता उत्पन्न कर देते हैं । 'संसार का काव्य साहित्य एक बड़ी मात्रा में छन्दोबद्ध है और वह छन्द संगीत शास्त्र के अनुसार निर्मित हैं । पश्चिम में अब तक कविता का अर्थ सम्बन्ध माना जाता है ।^१ छन्द का वधन स्वीकार करने से विशेषतः छन्दों की रुढ़ि जड़ित परम्परा को वाक्य पर आधिपत्य करने देने से कविता की भावामिव्यजना में अनेक बार बाधाएँ उपस्थित होती हैं । कभी कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है जब शब्द कविता और स्वर (संगीत) में विरोध उत्पन्न हो जाता है । ऐसी अवस्था में संगीत के नियमों को शिथिल कर देना उचित होगा क्योंकि कविता बला शब्द की जितना महत्व दे सकती है, स्वरों की उतना नहीं । कविता का प्राथमिक आधार शब्द है ।^२ परन्तु मन के आवेग का संगीतमय भाषा में व्यक्त करने से जो लानिय आता है वह छन्दमूर्त काव्य में नहीं । यदि छन्द मरत के अनुकूल गुण हों उचित संतुलन हो तो भाषा प्रत्यक्ष सुंदर तथा सम स्वार पूरा हो जाती है । रागा या वग स्वरूप मनोवृत्तियों का मृष्टि के साथ उचित सामन्त्रस्य स्थापित करके कविता मानव-जीवन से व्यापकत्व की अनुभूति उत्पन्न करने का प्रयास करती है । यदि छन्द अनुकूल नाट्य में स्वरों का आरोह-अवरोह न हुआ तो नाट्य मौल्य में कमी आ जायगी ।

कवि की लेखना में ही वह शक्ति है कि मानव के अन्तःकरण में प्रियमान रागात्मक अणु की मृष्टि के तट पर न जाकर विभिन्न वस्तुधा का सौम्य-दर्शन कराये और भरनों का बल बल नाट्य पता की ममरध्वनि पवन के संगीत से अवगत कराये । शब्द का उचित समन्वय ही छन्द है जिसमें लय गति तुल्य आदि के कारण मनाहरता और मधुरता बढ जाती है । नाट्य युक्त छन्द में ही वह क्षमता होती है कि मानव मात्र के हृदय में आनन्द का

१ साहित्यालोचन द्वायमुत्तराग पृ ७६

२ वही ७७

उल्लेख होता है : 'कविता हमारे प्राणा का संगीत है छन्द हृत्कपन । कविता का स्वभाव ही छन्द में लयमान होना है ।' छन्द विहीन कविता का कल्पना भारतीय तो क्या पाश्चात्य देशों में भी नहीं की जा सकती उसी प्रकार नव विहीन छन्द की कल्पना भी नहीं की जा सकती । आधुनिक युग की नई पीढ़ी यद्यपि अतुल्य छन्द (Blank Verse) की ओर ताव्र गति में बढ़ रही है और अल्पानुप्रास तथा अतिनियमबद्धता से मुक्त स्वच्छन्द छन्द की रचना में सतम्न है तथापि गीता में वर्णिक तथा मात्रिक धाना ही प्रकार के छन्दों का प्रयोग यति गति लय से युक्त परम्पराबद्ध रूप में हुआ है । गीतों में तुकबन्ती होती है । गीत पूरे कि गेम होते हैं संगीत का विधान होने के कारण मुक्त-छन्द में किसी रचना नहीं की जाती है । टक् और उसकी पुनरावृत्ति कई गीतों में परम्पराबद्ध नहीं है । गीत की टक् चरणा से कम मात्रा की होती थी । किन्तु आधुनिक युग में प्रथम दो चरण दीघ और चार चरण लघु या प्रथम दो चरणदीघ व अथ दो या चार चरण लघु भी मिलते हैं । अंतिम चरणों की प्रथम चरण से तुक लय यति गति भी मिलता हुई देखी जा सकती है । इस प्रकार राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीत भी परम्परागत छन्द से अथवा परिवर्तित रूप में सृजित हो सकते हैं ।

उदात्त तत्त्व और राष्ट्रीय भावना—

उदात्त तत्त्व के सम्बन्ध में सामान्यतः गम्भीरता महिमा प्रमदविष्णुता आदि की कल्पना की जाती है । उदात्त तत्त्व प्रिय जीव आकर्षक होने की अपेक्षा भय विस्मय श्रद्धा आदि का कारण समझा जाता है ।

उदात्त अपनी महानता के कारण हम अपने से भिन्न जान पड़ता है । इस भाव में कारण ही वह भय उत्पन्न करता है जो उदात्त के प्रति हमारी श्रद्धा का महत्वपूर्ण तत्त्व है । उदात्त में अभिप्राय अग्रजा के सम्मान (Sublime) से है । उदात्त के सम्बन्ध में लोकार्णव का मत यह है कि जहाँ तक विषय वस्तु का संबंध है वह अनन्त विस्तार धारण करता है तथा उसमें जमाधारण शक्ति वेग अतीव्र शक्ति तथा उत्कृष्ट प्रभावशक्ति है और उनके लिए उन्होंने प्रतिभा तथा महान कवियों के श्रया का अनुशीलन आवश्यक माना है ।

शब्दवाचक अनुसार उन्नत (Sublime) व अथ है—ऊँचा उन्नत
ऊपर उठा हुआ महान आदि।^१ विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गये उदात्त के
निम्नलिखित अर्थ उपलब्ध होते हैं—

काण्ट व अनुसार—अद्वितीय महानता^२

हीगेल के अनुसार—अपारम तत्त्व (Transcendent)

आज मास्सायन के अनुसार निर्वै की कायात्मक अनुभूति। यह ठीक है
कि उदात्त का अनुभूति नास या आतंक (Terror) में होती है कि तु स्वयं
नास या आतंक उदात्त नहीं है।^३ शब्द के अनुसार—वस्तुनिष्ठ अर्थ की
भावना उद्दीप्त करनेवाली घटना उदात्त है। बड़े शक्ति की अभिव्यक्ति
में उदात्त की स्थिति मानत हैं। लीआइनस के अनुसार^४ श्रौणाय = आत्मा
की महानता—विचारों की महानता—भाषा की महानता।

उदात्त गम्भीर और महान होता है। वह अपनी महत्ता के
कारण हम प्रभावित ही नहीं करता, बरन् एक प्रकार से अपनी महत्ता
का तुलना में हमारी सु-उत्ता का उद्घाटन करता है। इस प्रकार
उदात्त शब्द का अर्थ एक तत्त्व द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचने
हैं कि उदात्त के लिए गम्भीरता अनन्तता, विशालता असाधारणशक्ति वेग
प्रतीति ऐ वय उत्पन्न प्रभाव क्षमता अद्वितीय महानता आदि आवश्यक
गुण हैं तथा इनका अर्थ अद्भुत, प्राति तथा निश्चय आदि भावों से सम्बन्धित है।

राष्ट्रीय मानना जो कि देश के प्रति अद्भुत व भावों से प्रेरित होती
है, इसमें राष्ट्र की सम्पत्ति प्रकृति एवं मनुष्य की प्रति गौरव के
भाव उत्पन्न होते हैं। अतएव अद्भुत एक प्राति के भाव उदात्त की
पृष्ठभूमि पर आधारित हात है। इसलिए राष्ट्र व प्रति प्रीति अद्भुत
एक गौरव की भावना उदात्त पूर्ण होती है। उदात्त की गम्भीरता एवं
महानता राष्ट्रीय भावना पूर्ण योग्यता स्पष्ट रूप से अंकित हुई है। जब
'यष्टि' व लाभ से अधिक बड़ा समष्टिगत लाभ सम्पन्न जाता है यष्टि की
अपेक्षा समष्टि व हित को ऊँचा माना जाता है तब भावों की महानता की

१ आवश्यक इंग्लिश डिक्शनरी

२ Critic of Judgement Page 86-88

३ Sense of Beauty George Santayana Page 178-180

४ साहित्य विज्ञान डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त पृ २२

उपेक्षा नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय भावना को कि समष्टि^१ व कल्याण निर्माण प्रगति एवं समष्टि के व्यापक दृष्टिकोण को लिए हुए मानवतावाद की समझ होती है। यद्यपि उसकी विशालता गम्भीरता एवं महानता उदात्त का पापक है। व्यक्तिगत स्वार्थों की उपेक्षा करके यत्ति समाज से भा अधिका व्यापक विशाल राष्ट्र व स्वायत्त का पूर्ति करता है। राष्ट्र व निर्यात प्राणात्सग करने में भी सकोच नहीं करता है। दुश्मनों का मार भगान व लिए सीमा की रक्षा के लिए हसते हसते बलिबेदा पर चला जाता है। ऐसा आत्मा की उच्चता या उदात्त भावना के कारण समझ होता है। जतएव राष्ट्रीय भावना उदात्त की उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित हुई है।

प्रस्तुत निबंध की रचना करते समय तीन विशिष्ट बिंदुओं का आधार ग्रहण किया गया—

(१) समय (२) साहित्य की विभिन्न विधाओं में गीत काव्य, (३) गीत-काव्य के सार्वभौमिक गुणों का मानवनाओं का व्यापक स्वरूप ।

प्रस्तुत विषय स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी में लिखे गये गीत काव्य के अध्ययन तक सीमित था । सन् १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक लगभग बीस वर्षों में हिन्दी में गीत-काव्य का जिस रूप में प्रसूयन किया गया तथा विकास के सन्दर्भ में शरीर एवं शिल्पगत जा नवीन शिक्षा विन्दु उपलब्ध हुए, उन्हीं का अध्ययन इसका आधार बनाया गया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हुई विविध रूपा प्रगति का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा । फलतः हिन्दी में विभिन्न विधाओं का जन्म हुआ । सृजन के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किये गये । गद्य की ही भाँति हिन्दी-काव्य में भी विकास के अनवरत नये आयाम प्राप्त कर नये सृजन के घट्टरगो स्पर्श देते हैं । इसमें भी गीत-काव्य में हुई प्रगति विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसने मुझे प्रभावित किया । यही कारण है कि प्रस्तुत शोध निबंध का विषय सम्पूर्ण हिन्दी काव्य में बनाकर उसकी विधा विशेष अर्थात् गीत-काव्य की प्रगति और प्रसूयन को बनाया गया है ।

स्वाधीनता के पश्चात् भारतीय राष्ट्रमय में भिन्न भिन्न मानवनाओं का स्वरूप विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया । भावा का अभिव्यक्ति गीत काव्य में जिन रूपों में सम्भव हुई, उनका सम्यक् अध्ययन से गीत-काव्य के रूप और शिल्प विधान का तमिस्र विकास स्पष्ट होना है परन्तु प्रस्तुत अध्ययन में गीत काव्य की समस्त शाखा का समग्र सेना न ता सम्भव हो पा और न ही वह मुझे समिष्ट था । अब मैंने विषय का अध्ययन गीत-काव्य में राष्ट्रीय मानवना के अनुशीलन तक ही सीमित रखा ।

उपरोक्त तीनों दृष्टि विदुषों में आबद्ध विवचन विस्तार की अपेक्षा गम्भीरता ही अधिक चाहता था। विषय की इस अंतर्दृष्टि की आवश्यकता को अनुभव कर विषय प्रवेश के अंतर्गत गीत-काव्य का सशक्त परिचयात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय में राष्ट्र का अर्थ, राष्ट्रीय भावना की परिभाषा तत्त्व सीमा उसका उद्भव विकास और परम्परा पर विचार किया गया। उसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता से पूर्व समस्त हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना की स्थिति का भी सिंहावलोकन करने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हिंदी गीत काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के अनुशीलन एवं विवचन के लिए पृष्ठ भूमि एवं अययन दृष्टि प्राप्त हो सकी है।

राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति केवल आधुनिक युग में ही हुई हो ऐसा बात नहीं है। वास्तव में इसकी अवस्थिति प्रारम्भ से ही किसी न किसी रूप में देखी जा सकती है। जहाँ तक राष्ट्रीयता के भावनात्मक आधार का प्रश्न है वह हम सबमें एक ही रूप में मिलता है। यह दूसरी बात है कि युगानुरूप राष्ट्रीयता का रूप बदलते रहे हैं। कहना का अर्थ यही है कि राष्ट्रीयता के सदैव में राष्ट्र हित अथवा राष्ट्र समृद्धि की कामना प्रत्येक युग और प्रत्येक क्षण में समान रही है। हाँ समयानुसार राष्ट्र हित अथवा राष्ट्र समृद्धि के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों का रूप बदलता है। ये प्रयत्न कई रूपों में होते हैं— भावनात्मक एकता जातिगत एकता और धार्मिक एकता में वह शक्ति निहित है जो विदेशी शासकों के अधीन से बचाकर राष्ट्र की समृद्धि और सशक्त हितों को स्वतन्त्र बनाम रख सकती है। यही राष्ट्रीय भावना का मूल रूप है। स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्र का प्रगति के प्रयत्न होना लगते हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीयता अपने राष्ट्र की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए किए जाने वाले कार्यों में पूर्ण प्रयासों में निहित होती है। कहना न होगा कि इस अंतर् राष्ट्रीय स्तर पर व्यवहृत करने के लिए राष्ट्रीय भावना की मकील परिधि में बाहर निकालना होगा। भारत सदैव हाँ मावता का उपायन रहा है। आज भी वह उमा उन्नत भावभूमि पर प्रतिष्ठित मानवतावादी राष्ट्रीय भावना का पथ में है।

हमारा विचार अग्रजा से रहा वरन् उनकी शासन-नीति से था। भारतीय धर्म हाँ देन में दाम बनकर कार्यरता पूर्वक अमानुषिक अध्यायों को सहन करते रहे यन्त्र नानापि सम्भव नहीं था और न ही यह मानवतावादी दृष्टि से उचित

कटा जा सकता है। हमारा विराट् बुरादया से या दूर लोगी न नहीं। यही कारण है कि भारत में जब तक भी विदशा शक्तियाँ न प्रवेश किया व धुल मिलकर सब भारतीयता के रंग में रंग गये। विराट् जाति विशेष से नहीं उनकी दमन नीति से हाता है। भारत भी इसी आधार पर स्वतन्त्रता पाने को श्याकुल था। भारतीय सगठित हुए और भारत को स्वतन्त्र कराने के प्रयास किये जाने लग। अन्त में भारत स्वतन्त्र होकर रहा।

भारत विश्व के प्राचीनतम राष्ट्रों में से एक है। उसकी विशालता और अत्यन्त बर्षों पुरानी है। भूमि एवं निवासियों के बिना राष्ट्र की कल्पना ही सम्भव नहीं होती। अतः राष्ट्र के महत्वपूर्ण उपकरण हैं—भूमि भूमिवासी-जन और जन सस्कृति इस दृष्टि में राष्ट्र है भारतवर्ष भूमि है भारत की और भूमिवासी हैं भारतीय। यहाँ की सम्पत्ति और सस्कृति कोई द्विती दुः वस्तु नहीं है। इसकी श्रेष्ठ श्यामता भूमि जब-जब बाह्य आक्रमणकारियों से पराजित हुई भारत स्वयं में भारत भूमि न अपनी रक्षा के लिए राष्ट्रवातियों का आह्वान किया।

भारतीय संप्रदाय से मातृभूमि भारत का रदन एवं करण प्रदान देना न गया। वे माँ की आज्ञा बचाने हेतु सगठित हो दौरे पड़े और विदेशियों से, अत्याधिया से आजाताओं से जी खोलकर लड़ा लिया। और भारतीयों ने राष्ट्रीय सकट का निराकरण करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने में तनिक भी सक्ता नहीं किया। सभ्यता-काल में भारतीयों का सगठन आज-पूर्ण उत्साह सजगता चेतनता शीतता तथा जागृति सचमुच प्रशंसा के योग्य थी जिसके मूल में राष्ट्र के प्रति गहरी निष्ठा का रूढ़ भावनात्मक आधार था जिसे प्रदान की तनिक भी अपेक्षा नहीं थी। कहना न होगा कि इस निष्ठा के पीछे मन्त्रा उत्साह आत्मबल विश्वास, एवं राष्ट्र को स्वाधीन बनाय रंगन का गुनहना स्वप्न पूरा हो गया तो जस स्वातन्त्र्य युद्ध की समाप्ति हो गई। स्वातन्त्र्य युद्ध में निहित जागृति की विनयारी माना वृद्ध हो गई। एही स्थिति में राष्ट्रीय भावनाओं की तीव्रता में तिथितता का जाना स्वाभाविक हो जाता है। इस रूप में स्वातन्त्र्य युद्ध के उपरांत उस निष्ठा का उद्देश्य एवं अन्तिम फल प्राप्त हो गया अथवा यो उन्हें विस्मृत कर दिया गया।

स्वातन्त्र्य-युद्ध की उत्पत्ति पृष्ठ भूमि की व्यापकता सामित बनकर रह गई। पन्त स्यामनता का अर्थ भी सहीग आधार पर ग्रहण किया जाने लगा। अर्थात् अग्रजों से आज्ञाएँ एवं उनके अत्याधियों से मुक्ति प्राप्त

करना। देश की विच्छिन्न भावधारा को सगठित करने के प्रयास हुए पर राष्ट्रीयता के इस संकाए अथवा आशानुसृत सफलता प्राप्त न हो सकी। जिस क्षिप्रगति से आति की लहर उठी थी स्वाधीनता के पश्चात् वह उतनी ही शीघ्र शान्त व गम्भीर हो गई। उसके सन्दर्भ में अनेक प्रगति विदु उपलब्ध न किये जा सके। अस्पृश्यता निवारण साम्प्रदायिकता की समाप्ति जातिगत भेदभाव का निराकरण आर्थिक समानता शिक्षा प्रचार आदि स्वाधीनता के अन्तर्गत राष्ट्रीय भावना की प्रगति के अंगरे सोपान थे। इन सोपानों को पार किये बिना राष्ट्र की प्रगति राष्ट्र की सुरक्षा यहाँ तक कि स्वतंत्र एवं समृद्ध राष्ट्र की कल्पना भी नहीं की जा सकता थी।

स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के पश्चात् राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि के क्रम को बनाये रखने के लिए आवश्यकता थी नवनिर्माण की नयी मूल्यो की। परन्तु जिन मूल्यों की स्थापना होनी चाहिये वह सम्भव नहीं था सभी क्योंकि ये नये चेतनागीन मूल्य स्वाधीनता के लिए युद्ध करने के पश्चात् व्याप्त शिथिलता व कारण विस्मृति के गहन विमिर में लगे गये। कारण स्पष्ट है—आन्ति के लिए स्फुरित चेतना और नवीन मूल्यों के प्रति आसक्ति तात्कालिक थी। अर्थात् उसका उद्देश्य केवल स्वाधीनता प्राप्त कर लेना ही था। परन्तु स्वाधीनता क्या मात्र देश की ही अथवा राजनीतिक दृष्टि से ही प्राप्त कर लेना था? वस्तुतः इस प्रश्न पर 'मापन' दृष्टि से उस समय विचार नहीं किया गया। सच बात तो यह है कि राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने के उपरान्त भी उस शक्ति का नवनिर्माण के लिए नई व्यवस्था के लिए भी उतनी ही तीव्रता एवं निष्ठा के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए था। किन्तु दुर्भाग्यवश ऊँच पक्ष के प्रभोक्त सत्ताधिकारियों के लिए प्रमुख हो गये। स्वायत्त का समावेग होने ही देश की दुर्ज्ञा का चित्र पूर्ववत् बना रहा। उसमें परिवर्तन न आया जा सका। भारतीयों की गोचनीय स्थिति में जो परिवर्तन होना चाहिये था वह न हो सका।

यद्यपि आज स्वतंत्र भारत में निर्माण प्रयत्न हो रहा है परिवर्तन भी हो रहा है नवीन मूल्यों का स्फुरण भी हो रहा है किन्तु केवल सुविधा प्राप्त वगैरह ही। सब-माध्यमों की निरन्तर उपयोग की जा रहा है। इस उपयोग के प्रति यदि 'गोघ्न' ही समुचित ध्यान न दिया गया तो देश पुनः अन्धकारमय हो जाएगा और नवीन चेतना मूल्यों का स्थापित प्रमाण पुनः

अधकूप में दब जायेगा। अतः हमें सकट से मुक्ति पाने के लिए आवश्यकता है नव निर्माण की प्रतिमा का स्वागत करने की, पक्षपात रहित याय की, रिवत की प्रथा को बदल देने की, जातिवाद के खण्डन की, वग विभेद के निराकरण की और सदैव राष्ट्र की सुरक्षा के लिए निष्ठापूर्वक सभी स्वार्थों से ऊपर उठकर सजग रहने की। प्रायः जब संकट आता है तभी राष्ट्र सुरक्षा प्रहरी सजग होते हैं। ऐसे समय में गीतकार का भी कुछ पक्ष हो जाता है। वह जागृति के सुरक्षा के गीतों द्वारा जागरण का आह्वान करता है। युद्ध एवं शक्ति संचयन की आवश्यकता का भी ध्यान प्रतीता है। सच तो यह है कि राष्ट्र चाहे संकट में हो या न हो सुरक्षित रहे। सीमा पर तनात प्रहरी सजग एवं सक्रिय रहें। सत्य-व्यवस्था समुचित एवं सुचारु रूप से सक्रिय बनी रहे। प्रणय-नीतियों के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र में राष्ट्रीय भावना का ओत-प्रोत गीतों की रचना भी आवश्यक है। सदैव राष्ट्र सत्य में तत्पर सजग चेतन एवं सक्रिय होकर ही हम राष्ट्र का रक्षा करने में समर्थ होंगे। राष्ट्र की प्रगति सभी अर्थों में तभी सम्भव होगी जब नये मूल्यों को स्थापित कर प्रत्येक नागरिक की उत्तति का भाषिक-विनास का समुचित ध्यान रखा जाए। प्रत्येक राष्ट्रवासी का सच्चे हृदय से यही नारा होना चाहिये—राष्ट्र अपराजेय है, राष्ट्रीयता सर्वोपरि है जिसकी सुरक्षा के लिए बड़े से बड़े स्वार्थों का भी त्याग किया जा सकता है। यदि राष्ट्रवासी इस भावना के मूल में निहित निष्ठा की तीव्रता की सम्पूर्ण रूप में ग्रहण करें तो राष्ट्रीयता की असुरक्षा का प्रश्न ही नहीं उठ सकेगा और न ही राष्ट्रीयता की विभिन्न परिभाषाओं और आदर्शों की पुर्नार्थ देना ही आवश्यक होगा।

गीत वाक्य हिन्दी काव्य की एक सशक्त विधा है। वीरगाथा काल से अतः तक हिन्दी के सभी महान् कवियों ने इसे अपने भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। भक्ति शृंगार आदि व्यक्तित्व भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए भी यह विधा एक सशक्त माध्यम रही है। स्वाधीनता से पूर्व राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी-कवियों ने गीत वाक्य को एक लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकार किया। छायावाद रहस्यवाद और प्रगतिवाद को भी इस विधा का आश्रय लेना पड़ा था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिन्दी-काव्य प्रयोगवाद और नई कविता की नई भाव भूमियों पर अग्रसर हुआ तो इसी विधा ने राष्ट्रीय भावनाओं

के माध्यम से सावजनिक जीवन का वाणी की नवीन दिशाएँ प्रदान की।

इस समय देश के सामने निम्नांकित एव उपस्थित हैं। यह समस्याएँ दूसरे रूप में समस्याएँ हैं, क्योंकि यह भावना विवक्षित पूँजीपति सर्वोन्मूल्य भूमि वितरण जादि धि हन हो जाएगी। गांधीजी का हृदय-परिवर्त देश की चेतना की अनुभूति गीतों के मा हो सकती है।

हमने स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी-गीत-काव्य रूपों में देखने की चाल की तथा पावा के स्वर व करने

राष्ट्र

किया। २५

महिम्ना हिन्दी व

प्रयोगवादी और नई व

सहारा नकर हिन्दी-काव्य

किन्तु हिन्दी गीत-काव्य ने

दिया। देश के लिए प्राण यो

का हिन्दी गीतकारों ने विभिन्न

का विषय बनाकर जीवन की

प्रतिष्ठित किया।

हिन्दी गीत-काव्य न २

निए प्रपत्ति विस्तृत परिधि में स्व

रा सम्मिलित प्रयास नव निर्माण व

राष्ट्रीय भावना का नकर हिन्दी गीतकार

प्रश्नकर व ३। राष्ट्र निर्माण व लिए

जीवन में प्राप्त थी राष्ट्रीय भावना व रूप

प्रतिबिम्ब ही अस्तित्व नहीं हुआ वरन् उसने

भी प्रकटित व ३। हिन्दी गीतकारों ने नव नि

का गुणगान भी किया और उसका ही नव रूप

प्रदान का।

राष्ट्रीय भावना

वीरगाथा काल में उभर आधुनिक यान तक हिन्दी साध्य का विकास एक बहुत विस्तृत सांस्कृतिक परिवेश में हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रयास, नई कविता एवं अकविता के रूप में विकसित होने वाला हिन्दी काव्य उस सांस्कृतिक गौरव का बनाप न रहा सका और उससे दूर-दूर हाता चल गया। चित्त हिन्दी गीत काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति का माध्यम से राष्ट्रीय सस्मृति के गौरव को अलग-अलग रखकर देश का भाव-सम्पत्ति को समृद्धि प्रदान की। राष्ट्र की चेतनामया वाणी का सम्मानित करने के लिए हिन्दी के गीतकारों ने राष्ट्र भाषा के प्रति जात्यापना और अनुराग प्रकट किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे हुए घातक प्राकृतिक बमब मन्त्रियों, भवनों आदि के रूप में पाई जाने वाली निधि का उत्तम राष्ट्रीय गौरव का आधार बनाया। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीतों में हम भारतीय जीवन और प्रकृति का कितना अनुराग पूर्ण और उत्तम बिखरे मिलता है, यह हम प्रस्तुत निबंध के प्रकरणों में देख आए हैं। व्यक्तित्वता की सवाण भाव भूमि से उभर हिन्दी-गीतकारों की राष्ट्रीय भावना न शक्तिमान की अनुभूति को वाणी की और समग्र जनता के प्रति सन्तुष्टि के भाव जागृत किए। सना जिया से देश में साम्प्रदायिकता का जो बिप फटना जर रहा था स्वाधीनता-संग्राम के जिन में हिन्दी कविता ने उस अमृत बनाने का मनोरम प्रयत्न किया किन्तु यह सफल नहीं हो सका। हमने देखा कि जिस समय स्वतंत्रता के प्रति जन जाग्रत में अनुकूल परिस्थितिया पनप रही थी, उसी समय उस बिप का मतलब अचानक पुनः राष्ट्र के विघात का था। यह क्या और सम्पूर्ण देश स्वाधीनता के गीत गान-गात बिप दुख हा बछल म्वर में अतन्त्र कर उठा। गांधी जी ने सिविल असह्यर उस बिप का पान किया फिर भी वह बिप समाप्त नहीं हो सका। प्रयोगवाद नई कविता और अकविता ने अपनी उपगा करने व्यक्तित्वता के धरातल को मुहर दिया किन्तु हिन्दी गीत साधन ने उस बिप पर भी बड़ी जगि रक्खा और राष्ट्रीय भावना के माध्यम से उसका धन करने का सार्वभौम प्रयास किया। हम सब चुक हैं कि सशक्त स्वरा में हिन्दी गीतकार साम्प्रदायिकता का विरोध करने हुए सम्पूर्ण राष्ट्र का अग्रगण्य एवं एकता के भाव जागृत करने रहे। चिट हम गात साधन की आधुनिक भारतीय जीवन के लिए अमृतपिणा देने मान सकते हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में राष्ट्रीय भावना की धारा न पूर्वोक्त प्रकृति का रूप में प्रवाहित हुआ हिन्दी साध्य का जीवन के निकट पहुँचाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम किया। अपने राष्ट्र और अपनी सुरक्षा के लिए जन हृदय में अद्भुत स्फूर्ति उत्पन्न की। भारतवर्ष के अन्तर्गत -

के माध्यम से सावजनिक जीवन का बर्णन । उस प्रोग्राम ने हिन्दी और नवान्न सिनाए ज्ञान की ।

उस समय देश के सामान्य निमाण एवं समृद्धि की अनेक समस्याएँ उत्पन्न । यह समस्याएँ दूसरे देश में राष्ट्रीयता के सिद्धांत का ही समाधान है क्योंकि यह भावना सिद्धि होना है ना हिमान मन्दिर पूजादि सर्वोच्च भूमि विवरण जाति विभिन्न रूप समस्याएँ स्वभाव ही हो जाएँ । गीताजी का हृदय-रिक्तता बना स्वप्न पूरा होना । देश का चेतना का अनुभूति गता के माध्यम से सुखिता के अभिप्रेत हो सकता है ।

हमने स्वातंत्र्यार्थ हिन्दी-भाषा-वर्धन में राष्ट्रीय भावना का विभिन्न रूप में देवता का चर्चा की तथा पाया कि हिन्दी गायकाना न राष्ट्रीयता के स्वर का उत्थापनवा बाण प्रदान करने में कम योगदान नग्न किया है । राष्ट्र-वर्धन की ध्वजा करके उन्होंने देश के समष्टि-भाव का अभिव्यक्त किया । स्वातंत्र्यता के लिए जिन लोगों ने त्याग और बलिदान किया था यदि वह हिन्दी-भाषा मुक्त होना था वह जन-जीवन से अलग हो जाता । प्रयागवासी और नई कविता में बदलित कुष्माग्र और नयन-प्रयोग का सहारा लेकर हिन्दी-भाषा का इन उत्तराभिन्न से बचने कर दिया था । किन्तु हिन्दी भाषा-वर्धन ने उच्च स्तर का जन-जीवन से अमिश्रण नहीं होने दिया । देश के लिए प्रारंभ योजावर करने वाले व्यक्तियों और समावादाओं को हिन्दी गायकाना ने विभिन्न प्रकार से प्रेरित किया और उन्हें काम्य का विषय बनाकर जीवन की उत्तमममता उत्थापन भाव भूमि पर महज प्रतिष्ठित किया ।

हिन्दी गायकाना ने राष्ट्रीय भावना का राष्ट्रीयता का चेतना के लिए अपनी विलुप्त परिधि में स्वाकार किया । देश का जनता और शासन का अभिव्यक्ति प्रदान नव-निर्माण का विमल सिद्धांत बख्तर हो रहा था । राष्ट्रीय भावना का उच्च हिन्दी गायकाना में उनका समानांतर उभा गिया में अक्षर हुआ । राष्ट्र-निर्माण के लिए नव-चेतना का जो नई नहर भारतीय जीवन में छाई था राष्ट्रीय भावना के रूप में हिन्दी गायकाना में उनका कवित्व प्रतिबिम्ब ही अंकित नहीं हुआ बल्कि उनके साथ नई समावनाया का प्रकाश ना प्रगुलित हुआ । हिन्दी गायकाना ने नव-निर्माण में रत जन श्रम की महत्ता का प्रकाशन भी किया और उनका ही नतुव करके नव-निर्माण की प्रेरणा प्रदान की ।

वीरगाथा काल में उठकर आधुनिक काल तक हिन्दी काव्य का विकास एक बहुत विस्तृत सांस्कृतिक परिवर्तन में हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रयोगवादी, नई कविता एवं अकविता के रूप में विकसित होाने वाला हिन्दी काव्य उस सांस्कृतिक गौरव का बनाम नहीं रख सका और उनसे दूर-दूर हाता चला गया। किन्तु हिन्दी-गीत काव्य ने राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय सभ्यता के गौरव का आशुषण रखकर देश का भाव-सम्पत्ति को समृद्धि प्रदान की। राष्ट्र की चेतनामय बाणी का सम्मानित करने के लिए हिन्दी के गीतकारों ने राष्ट्रभाषा के प्रति आत्मीयता और अनुराग प्रकट किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बिखरे हुए अनेक प्राकृतिक वनस्पति भवनों आदि के रूप में पाई जाने वाली निधि का हमने राष्ट्रीय गौरव का आधार बनाया। स्वातन्त्र्यात्तर हिन्दी गीतों में हम भारतीय जीवन और प्रकृति का कितना अनुराग पूर्ण और उत्कृष्ट चित्रण मिलता है यह हम प्रस्तुत निबंध के प्रकरणा में देख सकते हैं। व्यक्तित्व का विकास भाव-भूमि से उठकर हिन्दी-गीतकारों की राष्ट्रीय भावना ने देशाभिमान की अनुभूति का बाण दी और समाज जनता के प्रति सन्तानुभूति के भाव जागृत किए। शताब्दियों से देश में साम्प्रदायिकता का जो विष फैलता जा रहा था स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में हिन्दी कविता ने उस अमृत बनाने का भरोसा प्रयत्न किया किन्तु वह सफल नहीं हो सका। हमने देखा कि जिस समय स्वतन्त्रता के प्रति जन जागरण में अनुकूल परिस्थितियाँ पनप रही थी उसी समय उस विष का कलश अचानक फूटकर राष्ट्र के विशाल क्षेत्र में फैल गया और सम्पूर्ण देश स्वाधीनता के गीत गाते-गाते विष चुम्बे हुए बरसने लगे। गांधी जी ने निब बन्द कर उस विष का पान किया फिर भी वह विष समाप्त नहीं हो सका। प्रयोगवादी नई कविता और अकविता ने उसकी उपेक्षा करके व्यक्तित्व का घरातना ना भुगकर किया किन्तु हिन्दी गीत-काव्य ने उस विष पर भी कभी आँख नहीं मारी और राष्ट्रीय भावना के माध्यम से उसका घना करने का सराहनीय प्रयास किया। हम देख सकते हैं कि सत्तक स्वरा में हिन्दी गीतकार साम्प्रदायिकता का विरोध करते हुए सम्पूर्ण राष्ट्र का अखण्डता एवं एकता के भाव जागृत करने लगे हैं जिन्हें हम गीत काव्य की आधुनिक भारतीय जीवन के लिए अमृतपिण्डा देने मान सकते हैं।

स्वातन्त्र्यात्तर हिन्दी गीत काव्य में राष्ट्रीय भावना की धारा ने पूर्वोक्त प्रकृतियों के रूप में प्रवाहित होकर हिन्दी-काव्य का जीवन के निरन्तर पहचान का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम किया। उसी राष्ट्र और उसकी सुरक्षा के लिए जन हृदय में अद्भुत स्फूर्ति उत्पन्न की। भारतवर्ष के शताब्दियों में जन जन-

वाने शीघ्र-दोषों को नई आभा में आनीरित किया। लोगो में बलिदान के भाव जगाकर सावजनिक जीवन के प्रति व्यक्ति के उत्तरदायित्व का स्पष्ट किया। इतना ही नहीं हिन्दी गीत-काव्य ने राष्ट्रीय भावना के माध्यम में राष्ट्र-दृष्टियों की निष्ठा करने अगामाजित तत्वों का बहिष्कार भी किया। अपने अध्ययन में हम देख चुके हैं कि जिस समय भारतगण पर चीन का आक्रमण हुआ उस समय भी हिन्दी-गीत काव्य ने राष्ट्र का साथ नग्न छोटा। हिन्दी गीत कारो ने अपने आजस्थी स्वरा में राष्ट्र रण के लिए उद्बोधन के गीत गाए और अब तक डाकी वाली राष्ट्रीय भावना के आजस्थी स्वरा को दसा दिगाभा में गुंजित कर रही है। आगे भी पाकिस्तानिया के विरुद्ध आवाज उठाकर बलिदान की प्रेरणा देने में गीत काय का सहयोग करना ही रहा। समय समय पर सामयिक आवण की अभिव्यञ्जना होती रही है और होता रहेगी। सकट दूर होने पर राष्ट्र निर्माण के गीत गूजते हैं और गूजत रहेगे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् रचित हिन्दी गीत काव्य की सर्वाधिक सशक्त प्रवृत्ति राष्ट्रीय भावना है। इसी प्रवृत्ति ने हिन्दी-काय को नवीन युग बोध एवं समृद्ध चेतना मूल्य प्रदान किए हैं। साथ ही जीवन के साथ माने जाने वाले उससे सहज सम्बन्धों को भी अभिव्यक्त किया है। यदि यह सत्य है कि साहित्य जीवन का प्रतिबिम्ब होना है तो हम निर्विवाद रूप से यह स्वीकार करना पड़ेगा कि गीतकारो ने स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गीत-काव्य में राष्ट्रीय भावना की विशद अभिव्यक्ति करके इस कथन की पुष्टि ही की है। आज हिन्दी काय में नई कविता के सद्भ में नये नये प्रयोगों का स्वर मुखर होता जा रहा है। वस्तुतः यह तयारी का युग है। हर प्रकार से प्रयोगवादी कवि प्रयोगों के द्वारा देश को सच्ची राष्ट्रीयता के लिए समुचित भूमियाँ तयार कर रहे हैं। अकविता ठोस कविता सचेतन कविता एक दिक् कविता आदि में समाज के निम्न स्तर के विविधरूपा चित्र चित्रित किये जाते हैं जिससे समाज के गलित दलित जग की विवशता विषमता एवं धुटन का सही परिचय जन सामान्य का होना है। जीवन के इन कटु रूपों की सत्य अभिव्यक्ति के द्वारा निम्न वर्ग की ओर सचेत करके कवि समारजोद्धारका का ध्येय इस ओर आकर्षित करने का प्रयास करता है जिससे उनका भी उद्धार किया जा सके और उन्हें भा स्वस्थ बनाकर अपनाया जा सके। यद्यपि व्यक्तिक कुष्ठाभा का अभिव्यक्ति के स्वर भी आधुनिक काय में अत्यधिक माना में मिलत है कि तु राष्ट्र के प्रति भी कवि की जागरूकता कम नहीं है।

राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता का काय राष्ट्रीय चेतना का प्रबुद्ध करना उसकी सात्विक गति मत्वर (Rapidly) उत्पन्न करना तथा सम्पूर्ण समाज व युगीन मूल्या का समाहार करना है। वस्तुतः राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता में आवश्यकता इस बात की है कि हमारा आधार विबुद्ध मानवीय हो जा वग, जाति धर्म आदि से परे कमवाट एव मानवता का संदेश देना हुआ कल्याणकारी मार्ग प्रशस्त करे। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीत प्रेम सौहार्द एव भ्रातृत्व के ताने बाना में विश्व-जननीता को प्राप्त करने में समय हीन चाहिये। यहाँ इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी प्रकार की छाया ग्रहण करते हुए भी मानवता का संदेश देना हुआ भी भाग्यशीलता का लाभ न हाने पाए। 'भारत नाम स आध्यात्मिक तपस्या, बलिदान शक्ति शीघ्र, परमाथ और पुरुषाय आदि जो भा भाव यज्जित हान हैं, वही गीत हमारे राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता की श्रेणी में आता है। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता के समस्त दो बातें स्पष्ट हैं—

१ मानव की अतन्म्यापिनी रागात्मक परिधि

२ भू-भाग से पृथक् हुए राष्ट्रों का परस्पर सम्पर्क

जस क्षेत्र में देश-कान का व्यवधान नगण्य हो जाता है। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीत राष्ट्रीयता की मकुचित समाज निरन्तर विस्तृत राष्ट्रीय क्षेत्र के रूप में विवर्धित होता है। देशभक्ति राष्ट्रीयता का मनातन स्वरूप है और राष्ट्रवाद उसका प्रगतिशील रूप। राष्ट्रीय भावना जनता के अमूल्य स्वरूप की समन्वित एवं पुञ्जीभूत करने वाली शक्ति है।

अब प्रश्न यह उठता है कि नव गीत प्रवाह किस दिशा का प्रारंभ प्रयत्नशील है? गीतकारों के अधिकांश दृष्टिकोण में प्रगतिशीलता देखा जा सकती है। नव गीतकार मानवता के समर्थक हैं तथापि राष्ट्रीय भावना का पाषाण करने में वे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में योगदान कर रहे हैं। वस्तुतः मानवतावादी भावना का प्रसार करके आज का गीतकार समस्त दशवामिया का सत्रण कर देना चाहता है। सभी राष्ट्रों के राष्ट्रीय भावनायुक्त गीता की आयु अल्प है। 'मिट्टि' की भावना छोड़ ममृष्टि की उच्च भूमि पर प्रतिष्ठित मानवतावादी भावना का अपना बाना हिन्दी-गीत-वाद्य का स्वर प्राप्त हुआ है।

शास्त्री जी का दिया हुआ मात्र जय जवान जय किसान बिलना माधव एवं उग्रगोपी मात्र है यह हममें निहित भावों का पूर्णतः स्पष्ट है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए आवश्यक है जवान और उग्र मरण-योग्य के लिए

नित हा चुकी है। उसे अज दासतय से मुक्ति मिल गई है। वन्ना न हागा कि नारी का सहयोग राष्ट्र के निमाणे अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि नारी ही राष्ट्र का कल्याणकारी की जननी है परिवार की रक्षक है समाज सुधारक है और है राष्ट्र का कल्याण का चिंतक। भारत में नारी की उपेक्षा और हीनावस्था का साथ देश की दुर्गति भी कम नहीं हुई है। वस्तुतः नारा का सहयोग आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। नारी ही जननी है और उसका सम्मान की रक्षा, भारत का क सम्मान की रक्षा है। नारा ही पुष्टि की प्रेरणा है। नारी का सम्मान और सहयोग ही राष्ट्र की उन्नति के शिखर तक ले जा सकता है। यही कारण है कि आधुनिक युग में पुरुष ने सम्मान ही नारी को भी अधिकार प्राप्त हो गया है। नारी का विश्राम नगन सहयोग राष्ट्र की समृद्धि में निश्चित रूप में सहायक है।

प्रतिम प्रकरण में गात काव्य और उसका गीत विधान पर विचार किया गया है। यद्यपि गीत का उद्भव बर्षों का ऋताभ्यास माना है, किन्तु उसका सही स्वरूप सर्वप्रथम वर्णित बर्ष ७०० वर्ष पूर्व (नृत्त गान) में मिलता है। भारत में गानों का प्रचलन लाखों प्रिय विद्या कल्प में रहा है। मनुष्य सुख में हो या दुःख में बिना गाय नहीं रह सकता। हृदय का यही रागात्मक स्वर गीतों के रूप में प्रवाहित होता रहा है। साधारणतः गीतों का भाषा जन भाषा रही है। गीतों का प्रचलन हम आज भी उतने ही उत्साह में पाते हैं, जितना आरम्भ में था। ग्रामीण गानों की आवाजें सुनने पर ही परिश्रम करते समय में वे उत्साह से भरपूर गीत गाते हैं। अथवा विभिन्न सयात्मक स्वरों का आह्वान करते हैं। ग्रामीण युवतियाँ जबकी गलत हुए पानी भरते हुए ताज-स्थानों पर समीप पर उत्साह में गीत गाती हैं। गानों गीत के मंगीत में उनकी यवान या जाती है उनका परिश्रम हल्का हो जाता है।

गीतों की परम्परा हमेशा उत्थान एवं पतन की विभिन्न भूमियों का स्पष्ट करत हुए प्रवृत्तमान बनी रनी है अग्रज्य कमा नका है। नौ गीतों में तो इसकी परम्परा अधुना रहा है। साहित्यिक भूमि में आधुनिक युग में गीतों की धारा बगलनी गनी रनी है। राग, प्रयाण, नद रविता एवं प्रकृतिता जगा विद्याओं का जन्म जिस गति से हो रहा है उसी गुणों में गीतों की रचना अनिश्चित विविध के माता रनी है। फिर भी गीत गजन बर्ष नहीं हुआ है। सिनेमा का प्रचलन कालखण्ड गीतों की चार प्रिया बर्षों में जा रहा है। साहित्यिक भाव भूमि में गीतों का सजा नवन का कम न गनी है मुग धन की परम्परा विभिन्न हो गई है। कपितव गुगगा में प्रस्तुत गुनीन समस्याओं में उनमें विभिन्न विधा की ओर ताव गति से आकर्षित बर्ष नने

ही प्रयोग में ली है किन्तु गीत ही ही भी मान-मन इस रागात्मक प्रवृत्ति की गन्धता में हट नहा सका है।

गीता का शिल्प विधान परम्परागत स्वरूप निम्न ही विरसित नहा हो रहा है। युग में प्रभावित इसके शिल्प विधान में भी नवीनता के दर्शन होना ।

राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों के शिल्प विधान को नये युग ऐसे नये परिवेश का नई मायनाओं के साथ दण्डना आवश्यक है। भारतीय साहित्य पाश्चात्य साहित्य द्वारा से प्रभावित हुआ है और प्रभाव को ग्रहण करते हुए नये विधान के साथ काव्य भूमि में प्रविष्ट हुआ है। गीत-काव्य पर भी उसका प्रभाव स्पष्ट परिनिक्षिप्त होता है। नये युग के नये मान-मन के साथ हम पुराने मान-दण्ड का उपेक्षा करके भी नहीं चल सकते। युग परिवर्तन के साथ मायताएँ और मूल्य भी परिवर्तित होकर आगे बढ़ते हैं। किन्तु, यह आवश्यक नहीं कि पुराना सब कुछ त्याग एवं उपेक्षित है और नया सब कुछ ग्रहण एवं अपेक्षित है। वस्तुतः परम्पराएँ ही आगे चलकर प्रयोगों के लिए सुदृढ़ आधार भूमि का कार्य करती हैं जिसके अभाव में प्रयोगों का अस्तित्व सुरक्षित नहा रह पाता। परम्परा और प्रयोग में समुचित सन्तुलन से ही विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। इसी सन्दर्भ में मैंने गीत-काव्य के शिल्प विधान का नयी और पुरानी मायनाओं के आधार पर विवेचन किया। पुरानी मायनाओं के समयका जो इममें बहुत घुटियाँ मिलेंगी और नई मायनाओं के समयका का न्यूनता दिखाई देगी। वस्तुतः मेरा दृष्टिकोण केवल राष्ट्रीय भावना के शिल्प विधान का विवेचन करना ही रहा है। अतः गीत-काव्य के समग्र क्षेत्रों को समझने का प्रयास मैंने नहीं किया है।

भाव के अतगत राष्ट्रीय भावना को वीर भाव के सीमित दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति को मैंने चार वर्गों में विभक्त करत हुए उसका विवेचन प्रस्तुत किया है। उन वर्गों के अतगत अन्य उपवर्गों का विधान भी हुआ है। उन सभी में केवल वीर भाव का समावेश नहीं हो सकता। राष्ट्रीय भावना पूर्ण गीतों में अन्य भावों का समावेश भी हुआ है। वीर भाव राष्ट्र के स्वतंत्र के समय ही प्रमुख रूप से अभिव्यक्ति पाता है शक्ति का न होना। इसी कारण राष्ट्रीय भावना की सीमा में अन्य भावों का समावेश भी उनका ही सहज एवं आवश्यक है जितना वीर भाव का। सभी रसों का युगानुसंगीय या प्रमुख रूप में रसास्वादन किया जाता है। चीनी-आश्रमण के समय जब कवि सम्मेलन में हास्य की निम्नान्वित पक्तियाँ

मुनाई गइ तो वाररम का आस्वादन करने वाले श्रोता एवं श्रोत्र पूरा स्वर से कविता पाठ करने वाले कवि भी इस पडे—

चीनियो के पास पायजामा ता
है नही, कहते हैं कि नफा लेंगे।

शत्रु को हतोत्साहित करने के लिये व्यंग्य वाण्य भी चलाए जाते हैं। हास्यरस के सार्वभौमिक रूप पर कही हुई पंक्तियाँ ऐसा ही व्यंग्य प्रस्तुत करती हैं। कहना न होगा कि इसके मूल में भी किसी न किसी रूप में राष्ट्र के पक्ष की पुष्टि का ही प्रयास मिलता है।

विश्व के प्रथम प्रवक्ता के रूप में पश्चात्त्य विद्वान् एजरा पाउण्ड का उल्लेख किया जाता है। आधुनिक युग में विश्व का पर्याप्त प्रयोग हुआ है और विश्व विधान का यह कल्पना अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। सशक्त विश्व के समावेश से ही समय काय का प्रणयन सम्भव हो पाता है। काव्य की समयता के लिए कवि को कितने ही उपकरण जुटाने पड़ते हैं। किन्तु सभी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उपकरणों का कवि अपनी रूचि के अनुसार अपनी कल्पना के अनुसार काव्य में सजोता है। विश्व के कई भेद किये गए हैं। राष्ट्रीय भावना युक्त गीतों का विश्व विधान पौराणिक धर्माश्रम के प्रति निष्ठ है। ऐसे गीतों में सश्लिष्ट भासन एवं वासनयुक्त विश्वों का अभाव रहता है। यहाँ अभिधात्मक विश्व विधान का प्राचुर्य मिलता है। प्रातिभासिक विश्व की योजना भी दृष्टिगत होती है।

राष्ट्रीय भावनापूर्ण गीतों की भाषा में कही कही उद्गार के शब्दों के साथ ही साथ तत्सम शब्दों का प्रयोग भी मिलता है तथा यत्र-तत्र प्रांतीय शब्दों का प्रयोग गीतों की मधुरता को अधिक आकर्षक एवं सहज बना देता है। परन्तु वहाँ का प्रमाण भाषा के अनुरूप विभिन्न रूपों में हुआ है। किन्तु इसल गीतों का माधुर्य समाप्त नहीं हो सका है। भाषानुरूप गीत की भाषा अधिक ग्राह्य एवं आकर्षक प्रतीत होती है। केवल सुकुमार वाण्य योजना में ही माधुर्य निहित हो होता है। राष्ट्रीय भावनायुक्त गीतों में आज माधुर्य और प्रसाद—तीनों ही गुणों में से प्रसाद एवं ओज गुण का प्राचुर्य मिलता है।

राष्ट्रीय भावनापूर्ण गीतों का छन्द विधान भी परम्परायुक्त नहीं है और परम्परायुक्त भी नहीं। गीतों में तुल्य लय ताल यति गति और मात्रा के कारण ही संगीतात्मकता का समावेश सम्भव होता है। इसी कारण इन सब का गीतों में होना आवश्यक है। किन्तु इनका विधान

गीता के आधार पर मार्गशास्त्र पर निर्भर होता है। स्व की प्रकृति का अनुसरण ही गीता में जहाँ तक कि दृष्टांश दिया गया है। मार्गशास्त्र की अभिवृत्ति के साथ प्रथम दो परिचय का आश्रित अथवा तत्पर मार्ग के पश्चात् भी का गन् है और वही दृष्टांश मार्ग परम्परा के पश्चात् गहन एवं या दो शब्द समूह पर अन्तर्गत समाप्त दृष्टांश का माना है। इस प्रकार परम्परागत दृष्ट विधान से ज्ञान परिचयित रूप में राष्ट्रीय मानना हुआ गीता का गृहण हुआ है।

मानव भाव का क्याण बरा की कामना भावना में प्रारम्भ से रही है। भारत की स्वतन्त्रता के समय जब कि दूमस्मिन् भावना का नारा जातीय विरोध के कारण मर पड़ गया तो देश का विभाजन हुआ। भारत जिस राष्ट्र की विभक्ति यद्यपि पतन की सूचना थी किन्तु भारतीय नागरिक मुसलमानों का जगत् राष्ट्र जनान की अनुमति देने के लिए तयार हो गए। साम्प्रदायिक दंग अवश्य हुए किन्तु सुन्दर युद्ध नहीं हुआ। हिंसा के विरोधी गांधी ने अहिंसा जगत् अस्त्र का अपनाकर मानवता का संदेश दिया। व्यवस्था तथाचार एवं अत्याचार का विरोध करते हुए अहिंसा का उपदेश दिया। भारत में स्थापित चारों धामों की माना धामिन एकता का भावना के साथ ही साथ भावात्मक एकता का संदेश भी देता है। यह भावना सभी के प्रति उत्तम मानवता का भावना है, जहाँ जानि वण और धर्म भेद नगण्य हो जाते हैं। इस भावना की ऊँचाई और गहराई को समझने के लिए उपयुक्त भाव भूमि का आवश्यकता है। कहना न होगा कि इस उच्च एवं मानव भाव भूमि के दान हम राष्ट्रीयता में ही उपलब्ध हो सकते हैं।

राष्ट्रीयता की भावना महान् एवं गरिमामयी है। जबतक सकीण राष्ट्रीय भावना की परिधि में निबन्धक तत्तराष्ट्रीय भावना की कामना जाग्रत की न जाएगी तब तक एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण करता रहेगा सहार होगा विनाश ताप व नृत्य करेगा और एक राष्ट्र के विनाश पर दूसरे राष्ट्र की प्रगति निर्भर होगी। किन्तु यह भावना सम्पूर्ण विश्व के विनाश की भावना है। जो राष्ट्र अधिभूत समृद्ध होगा अपने से निम्न राष्ट्र का शासन बनने की कामना करेगा फलतः अथ राष्ट्रों को पनपन का अवसर नहीं मिल सकेगा और मानव महार एवं यत्तिवा का जराजकता में वृद्धि होती ही जायेगा। अमरिका विस्मयनाम युद्ध चीन भारत युद्ध भारत पाक युद्ध और जगत्तरायन युद्ध क्या है? वेदों भूमि की प्राप्ति के लिए स्वयं का शासन स्थापित करने के लिए जगत् राष्ट्र का स्वाधपूर्ण समृद्धि

के लिए विजयी होने के लिए इतना रक्तपात होना है। मानव को बलिदान देना पड़ता है—आखिर प्राप्त क्या होता है ? केवल क्षणिक अहं की तुष्टि। यह आवश्यक है कि मानव संहार को रोकने के लिए एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति भ्रातृ भाव रखे ताकि सौहार्द्रपूर्ण भावना से दूसरे राष्ट्र को भी पनपने का अवसर मिल सके।

राष्ट्र की प्रगति एवं समृद्धि राष्ट्र के विस्तार पर निर्भर नहीं करती। उसी राष्ट्र के व्यक्ति सबसे अधिक सुखी हो सकते हैं जहाँ सब प्रकार के साधनों से युक्त राष्ट्र विकास के नये आयामों को पार करता हुआ प्रगति एवं समृद्धि की सही दिशा की ओर पूर्ण शक्ति से उन्मुख हो। राष्ट्रीय भावना की तीव्रता और उसकी चरम परिणति मानवतावादी भावना में निहित होना आवश्यक है। जहाँ मानवमात्र के कल्याण की कामना है मानव संहार निषिद्ध हो, वही मानवता की रक्षण इस भावना की भाव-भूमि उदात्त की गरिमा को स्पष्ट करती है। अतएव राष्ट्रीय भावना की मानवतावादी उदात्त भाव-भूमि पर प्रतिष्ठा होनी चाहिए। सभी जन-कल्याण और लोक-कल्याण की महती भावनाएँ आदर्श के सहज परिवेश में सफलतापूर्वक व्यवहृत हो सकती हैं।

आधार रा थो की सूची

गुस्तक

- १ विदम्बरा
- २ राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त
- ३ हिन्दी कविता में युगांतर
- ४ राष्ट्र भाषा रजत जयन्ती ग्रन्थ
- ५ छायावाद-युग
- ६ नया हिन्दी-काव्य
- ७ विश्व इतिहास का भलक
- ८ धरती के बोल
- ९ हिमानय के आँसू
- १० जय घाव
- ११ सधपो के राहा
- १२ नवीना
- १३ गोरव गान
- १४ जनते तारे
- १५ धार के पथर उधर
- १६ चान्द तना हुआ
- १७ विराम बिन्दु
- १८ उमंग
- १९ भूमि के भगवान
- २० शिवा पत्र कमकीन
- २१ रक्त चन्दन
- २२ स्वप्न गुप्त
- २३ भारत मारती
- २४ दगाधरा
- २५ चन्द्रगुप्त

रचयिता

- गुमिनाम न पत
डा० मन्मथ कपूर
डा० गुधान
(प्रकाशक) राष्ट्र भाषा पुस्तक
मण्डल
गम्भीरनाथ मिह
डा० विश्वकुमार मिश्र
प० जवाहरलाल नेहरू
अनुवादक चन्द्रगुप्त बाण्य
जयनाथ नलिन
आनन्द मिश्र
डा० रामगोपाल शर्मा निनग
,
गंगाप्रसाद पाण्डेय
डा० रामगोपाल शर्मा निनग
रघुवीर शरण मिश्र
बच्चन
शकुन्तला सिरोठिया
अचन
मेघराज वर्मा 'मुकुट'
रघुवीरशरण मिश्र
गिरिजा कुमार भागुर
नरेंद्र शर्मा
जयशंकर प्रसाद
श्री मधुनीशरण गुप्त

जयशंकर प्रसाद

- २६ मधु की रात और जिंदगी
 २७ कणिका
 २८ नील कुसुम
 २९ हिन्दी की सद्भाषितक समीक्षा
 ३० वाणी
 ३१ जलती रहे मशाल
 ३२ विमगिमा
 ३३ सर्वोदय के गीत
 ३४ नई पीढी नई राह
 ३५ भारत और अगार
 ३६ मनवतार
 ३७ गोनम
 ३८ शांतिलोक
 ३९ भूमि की अनुभूति
 ४० अक्षर गीत
 ४१ बलिपथ के गीत
 ४२ आज के लोक प्रिय कवि सुमित्रानन्दन पन्त
 ४३ दूसरा तार सप्तक
 ४४ नील कुसुम
 ४५ कपट का सीना फाड़ो ३
 ४६ हिमप्रिया
 ४७ यथाय की कल्पना
 ४८ ५५ की श्रुत कविताएँ
 ४९ कविताएँ १९५४
 ५० राजधानी के कवि
 ५१ आज के लोकप्रिय कवि
 माखनलाल खतुंजे
 ५२ भारतीय कविता १९५३
 ५३ रूप तरंग
 ५४ आज के लोकप्रिय कवि रामस्वर
 शुक्ल अवल

- चिरजीत
 शंकर लाल माहेश्वरी
 दिनकर
 डा० रामाधार शर्मा
 पतञ्जी
 डा० दिनेश
 बच्चन
 डा० दिनेश
 रामकुमार खतुंजे
 बच्चन
 श्री शम्भूदयाल सक्सेना
 बीरेन्द्र मिश्र
 सम्पादक गोपालकृष्ण कौन
 जगन्नाथप्रसाद मलिक
 हरीश मादानी
 जगन्नाथ प्रसाद मलिक
 बच्चन
 संपादक अर्जुन
 रामधारीसिंह 'दिनकर'
 प्र० पश्चिम रेलवे शाला अजमेर
 डा० दिनेश
 उदयशंकर मट्ट
 संपादक रामकांत
 संपादक अजीत कुमार एवं
 दवीशकर अवस्थी
 संपादक गोपालकृष्ण काल एवं
 रामावतार त्यागी
 हरिकृष्ण प्रेमी
 मू० ल० जवाहर लाल नेहरू
 डा० रामकिनास शर्मा
 पदमसिंह शर्मा कमलेश

४५	माता	श्री ज वन प्रसाद जोगी
४६	रात घपेरी सागर महारा	अप्रसाद नागर
४७	सपनचिरण	मन धनुर्वेदी
४८	सपना महक उठे	रामावनार त्यागी
४९	वनन हमारा	श्रीकृष्ण मरस
५०	जागृत भारत	चन्दावर मिश्र
५१	भारतीय जवानों की वीर गाथाएँ	श्री वासुदेव नारायण भालाव
५२	जय जवान जय किसान	श्यामनाथ मधुप
५३	हमारे रण बाँकुरे	गिरिराज शरण अग्रवाल
५४	परमवीर भारत	श्याम लाल मधुप
५५	जननी जन्म भूमि	गुरारण
५६	बाद-बापिकी	सम्पादन जगन्नीश माधुर
७	शक्ति-काय का विकास	सानधर त्रिपाठा प्रवासी
५८	मनोविज्ञान और शिक्षा	डा० सरयूप्रसाद चौध
५९	मधिलीशरण गुप्त व्यक्तित्व और काव्य	डा० कमला कान्त पाठक
६०	हिन्दी काव्य में प्रवृत्ति चित्रण	डा० किरण कुमारी गुप्ता
६१	प्रतिनिधि आवाचक	मोहनलाल व सुरेशचन्द्र गुप्त
६२	सामान्य मनोविज्ञान	डा सीताराम जयसवाल,
		श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त
७३	विकासवादी मनोविज्ञान	एम० पी० जायसवाल
७४	गुप्त जी की काव्य साधना	डा उमाकांत
७५	हिन्दी साहित्य और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ	डा० गोविन्दराम शर्मा
७६	हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य	डा गोविन्दराम शर्मा
७७	राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव
८८	आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौंदर्य	डा० रामश्वरलाल राण्डेलवाल
७९	चिन्तामणि	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
८०	जीवन के तत्त्व और काव्य के सिद्धांत	श्री लक्ष्मीनारायण सुधाशु
८१	मीटिंग एन्क्वेशन साइकलाजी	श्री बी० एन० झा
८२	पौष्टिक भोजन	सी डी० त्रिवेदी
८३	दी पायटिक पटन	राबिन स्केलटन
८४	दी माट आफ ड्रामा	रोनाल्ड पीकाक

८५	काव्य में अप्रस्तुत-यात्रना	श्री रामचंद्र मिश्र
८६	कलना और दायवाद	बनारनाथसिंह
८७	ब्रज भाषा के कृष्ण नटि-काव्य में	
	अभिषेकना-शिल्प	डा० सावित्री मिह्रा
८८	तुलसीदास का भाषा	डा० देवकीनन्दन
८९	काव्य-दर्पण	रामचंद्र मिश्र
९०	साहित्याचार्य	श्यामसुन्दरदास
९१	पल्लव	मुमितामन ५०
९२	सत्य गिव मुन्दरम्	डा० रामानन्द तिवारी
९३	साहित्य विज्ञान	डा० गणपतिचन्द्र गुप्त
९४	सेस भाषा ग्युगी	जाज साह्यायन
९५	गीति काव्य	रामसेलावन पाण्डेय
९६	आधुनिक हिन्दी कविता में	
	विषय और शली	डा० रागेय रामव
९७	साहित्य शास्त्र व सिद्धांत	सरोजिनी मिश्रा
९८	प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ	डा० रामविलास शर्मा
९९	हिन्दी गीति-काव्य	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल
१००	हिन्दी साहित्य और विभिन्नवाद	रामजीलाल बघीसिया
१०१	आधुनिक हिन्दी-कविता	डा० विष्णुमर नाथ
	सिद्धांत और समीक्षा	उपाध्याय
१०२	सांस्कृतिक परम्परा और साहित्य	तारकनाथ बाली
१०३	हिन्दी मुक्तक काव्य का विकास	जितेंद्र पाठक
१०४	आधुनिक साहित्य	नन्दुलारे बाजपेयी
१०५	जीवन व तत्व और काव्य के सिद्धांत	लक्ष्मीनारायण सुभाष
१०६	स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य	डा० राम विलास शर्मा
१०७	आधुनिक हिन्दी-काव्य में परम्परा	डा० गोपालदत्त सारस्वत
	तथा प्रयोग	
१०८	आधुनिक हिन्दी की स्वच्छन्द धारा	त्रिभुवनसिंह गुप्त
१०९	रामधारीसिंह दिनकर	भमयनाथ
११०	आधुनिक गीति-काव्य	सच्चिदानन्द तिवारी
१११	हिन्दी-काव्य की अन्तर्भावना	श्री० राजाराम रस्तोगी
११२	हिन्दी साहित्यानुशीलन	सत्यनाम वर्मा
११३	हिन्दी नीति-काव्य	डा० भोलानाथ तिवारी

११४	धली सिपाही धनो	ग० बमरनाथ गर्मा
११५	गीत भरा सगार	भरत ध्यात
११६	श्रेष्ठ कवयित्रीयों की प्रतिनिधि रचनाएँ	ग० स्नेहो नई लिखी

परिकाएँ

- १ साप्ताहिक हिंदुस्तान
- २ जीवन-साहित्य
- ३ योजना
- ४ धमधुग
- ५ मधुमती
- ६ समाज-कल्याण
- ७ रसवन्ती
- ८ कादम्बिनी
- ९ विशाल भारत
- १० नानोदय
- ११ आलोचना
- १२ सम्पदा
- १३ समालोचक
- १४ पराग
- १५ मन्द

